ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २४३ म अंक ०१ फरबरी २०१८ (वर्ष ११ मास १२२ अंक २४३)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर ६**०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी
सुपुत्र श्री ,
पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,
पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नडेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

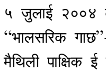
विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

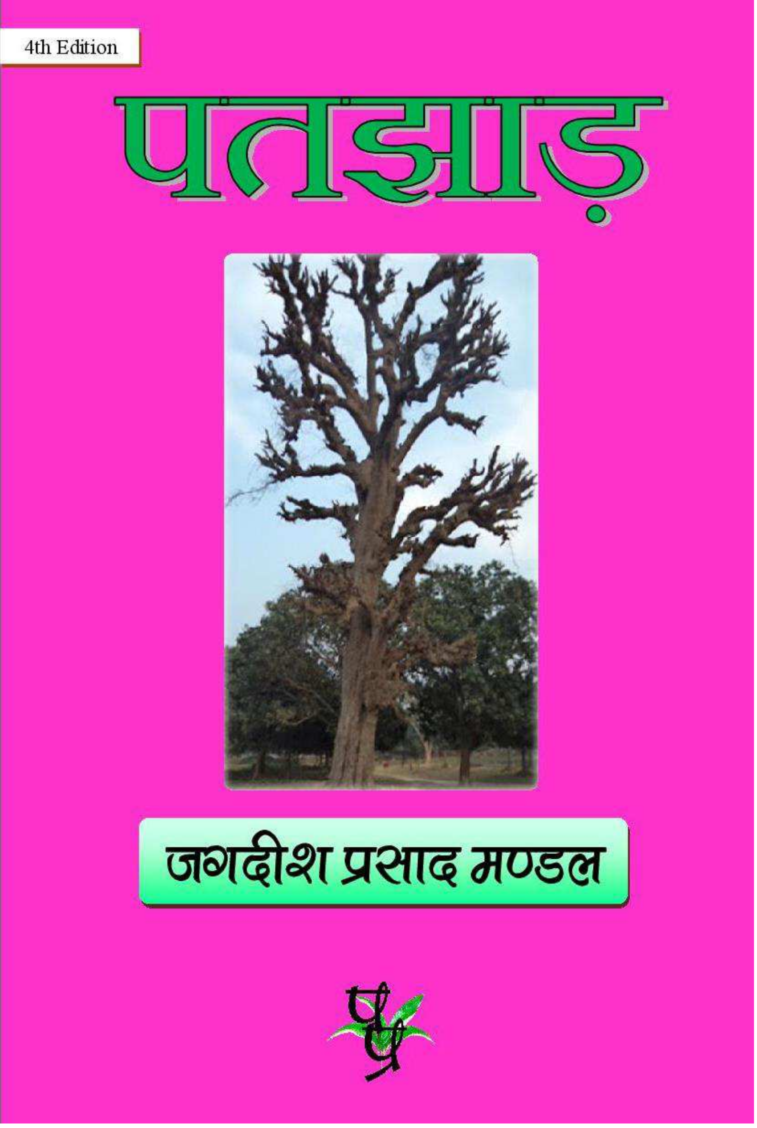
विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु



पतझाड़

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

प्रस्तुत कथा पुष्पमाल ओइ कथा प्रेमीकेँ समरपित
जे कथ्य-कथन कथाक मर्मकेँ पकैड़ कथापान करै छैथ... ।
अघटमे खसल ओइ फूल सदृश कथाकेँ कथे-प्रेमी ने कोमल पंखुर पकैड़ जलगंगामे स्नान करा, पवित्र पग पहिरा देव सिर चढ़ै सदृश बनबै छैथ... ।
ओइ मर्मभेदी शिकारीकेँ तहेदिल समरपित... ।

ISBN : 978-93-87675-12-4

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2014
चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

PATJHAR
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

पाइक मोल

हथिया नै बरसने बाड़ी-झाड़ीक काज अगते शुरू भऽ गेल। काल्हि कोजगरा छी। ओना समए रौदियाह जकाँ भऽ गेल अछि। मुदा समैयोक तँ अपन गुण-धर्म होइ छइ।

चटाएल ओस रहितो जमीनमे ठण्ढ तँ पसरिये गेल अछि। भोरुका सुरूजक जे सोहनगरता एबा चाही से तँ आबिये गेल अछि। बाध-बोनमे भलेँ रौदी बुझि पड़ैए, मरहन्ने-मरहन्ना देख पड़ैए, मुदा बोन-झाड़क रूप तँ ओते नहियेँ बिगड़ल अछि। तहूमे जाड़क उसरन थोड़े छी जे पालाक पल्ला पड़ि ठिठुरल रहत, वरसातक ने उनाड़ी छी! सरलो भुन्ना तँ रहुक दुना! लत्तियो-फत्ती आकि झाड़ो-झूड़ जे अगते अर्थात् वरसातसँ पहिने पुरना वस्त्र बदैल नव वस्त्रक संग नव कलशक नव मुड़ीमे नव फूलक संग नव फलोक जोरन तँ जोरनाइए गेल अछि।

नव सुरूजक संग रविकान्त नव दिनक नव काज दिस नजैर उठौलैन तँ देख पड़लैन जे दारीमक बाड़ी जाएब जरूरी अछि। केते रंगक कीड़ी-मकौड़ी, उपद्रव शुरू कऽ देने हएत। बिना केम्हरो तकने ओ दारीमक बाड़ी विदा भेला। बाड़ीक मुहाँनीबला गाछपर नजैर पड़िते दीपकक चिट्ठी मन पड़लैन। मन पड़लैन दुर्गापूजाक छुट्टीमे

आएल सिनेहकान्त। कलशथापने दिन चिट्ठी देने छल। जइमे लिखल छेलै जे 'बीसम दिन परीक्षाक फारम भराएत, कौलेजक पैछलो बाँकी जे अछि सेहो लागत।' नाओं लिखौला पछाइत एको-पाइ देनौं ने छेलिऐ।

दारीमक बाड़ीसँ चोटे घुमि रविकान्त दरबज्जाक चारक ओलतीक बत्तीमे खोंसल चिट्ठी निकालि दोहरा कऽ पढ़लैन। परीक्षाक फारम भराएत तइले पाइक ओरियान करब छेलैन। ईहो लिखल छेलैन जे दीपक अपने गाम आबि मात्रिकक कोजगरो पूरि लेत आ तेसर दिन आपसो भऽ जाएत। ओना केते पाइक ओरियान करब अछि से स्पष्ट नहियेँ अछि मुदा बेटाक पढ़ाइक अन्तिम घड़ीमे किछु बजलो तँ नहियेँ जा सकैए। तहूमे कौलेजक आखिरी परीक्षा छिऐ। अन्तिम परीक्षा मनमे अबिते रविकान्तकेँ खुशी उपकलैन।

बेटाक स्नातक भेने परिवारक ऐगला सीढ़ीक एकटा पजेबा जोड़ाएत। एक पजेबा जोड़ेने एक सीढ़ीक रूप बनि जाइए। तेतबे किए, ई की नै भेल जे साधारण पढ़ल-लिखल बाप, बेटाकेँ स्नातक बना दुनियाँक बीच ठाढ़ सेहो करत। स्नातक तँ स्नातक होइए। जेकरा राज-काज चलबैक बुधि भऽ जाइ छइ। खाएर जे हौउ, जेहेन मन पकैड़ मेहनत करत तेहेन बनत। अपन जे कर्मक संकल्प दुनियाँक संग छल से तँ अबस्से पूर्ति हएत। जिनगीमे सभकेँ अपन-अपन दायित्व होइ छै, तेकरा जे जेहेन संकल्पक संग पूर्ति करैए से तेहेन बनि ठाढ़ होइए।

कोजगरा दिनक सुरूज उठि कऽ एक बाँस ऊपर भेला, करीब आठ बजैत। दीपक रेलबे स्टेशनसँ गामपर पहुँचल। जहिना दीपकक मनमे तेल-बातीक जोगाड़क विचार मड़ाइत तहिना रविकान्तोक मनमे ओही तेल-बातीक चिड़ै चकभौर लैत रहैन। दीपककेँ देखते रविकान्त

बजला-

"बाउ, तोरे बात मनमे घुरि-फीरि रहल अछि बहुत दिन जीबह।"

ओना पिताक असीरवादसँ दीपकक मनमे मिसियो भरि हलचल नै उठल, कारणो स्पष्टे अछि। शब्दवाण अकास मार्गसँ छोड़ल जा सकैए मुदा कर्मवाण तँ धरतीए पकैड़ चलत। पएर छुबि प्रणाम करब तँ बिना स्पर्श भेने नहियेँ भऽ सकत। ओना दुनू हाथ जोड़ि शब्दवाणो चलैत अछि मुदा ओ अपना सीमामे। पिता-पुत्रक बीचक जे सीमा होइ छै ओ बिना स्पर्श भेने जँ हएत तँ हाथक आँगुरक अधिकारक हनन हएत। आँगुरोक अपन कर्मभूमि छै जे रणभूमिसँ रंगभूमि धरि पहुँचबैत अछि।

लग अबिते दीपक पिता-रविकान्तकेँ गोड़ लागि, बाजल-

"बाबू, काल्हि चलि जाएब। पाँचे दिन फारम भरैक बाँकी अछि संगे..?"

पीठपर हाथ दैत रविकान्त बजला-

"एना किए अदहे मुहेँ बजलह। जे खगता तोरा हेतह, ओकर पूर्ति जहाँ धरि सम्भव हएत से करनाइ अपन संकल्पक अंग बुझै छी। मुदा हम तँ पीठेपर ने रहबह, असल काज तँ तोरे हाथ रहतह। तइले जे सम्भव हएत तइमे पाछू नै हएब, तेतबे आश ने हमर करबह। अच्छा ई कहऽ जे केना-केना कार्यक्रम बना आएल छह?"

दीपक-

"मामाकेँ तँ अपन परिवारमे काज नहियेँ छी, वएह हकार देलैन, तँए हुनका रातिमे पूरि काल्हि भोरे गाम चलि आएब, भरि दिन गाममे रहब, परसुका गाड़ी पकैड़ लेब। तीने मास परीक्षाक अछि, अखन

एमहर-ओमहरमे समए गामाएब नीक नै हएत?"

दीपकक बात सुनि रविकान्त बजला-

"भने एक दिन पहिने आबि गेलह। किछु पाइ तँ अपना हाथमे अछि मुदा तोरा केते चाही, से तँ खोलि कऽ कहबह, तखने ने आरो ओरियान करब।"

पिताक प्रश्न सुनि दीपक ठमैक गेल। ठमकैक कारण भेल जे फारम भरैक हिसाब तँ बुझल अछि मुदा किछु नव पोथी कीनैक ने ठेकान अछि आ ने सबहक दामे बुझल अछि। अखन धरि तँ एके सेट किताबसँ काज चलेलौं, मुदा परीक्षा तँ परीक्षा होइ छइ। तइले सीमित दायरासँ बाहर हुअ पड़ै छइ। मुदा लगले मनमे संतोख उठि गेलै, बाजल-

"तीन मास परीक्षामे शेष अछि कोर्सक जे एक लेखकक पोथी अछि ओ तँ ऐछे तइसँ बेसी पढ़ले केते जा सकैए, तैयो किछु कीनब।"

नव पोथीक नाओं सुनि रविकान्तक मनमे उठलैन, केहेन हएत जे भोजक बेर कुमहर रोपल जाएत। मुदा धड़फड़मे किछु बाजबो उचित नै हएत। जे काज जे करैए वएह ने ओकर भूतसँ भविस धरि गौर करत। दोसर तँ अनाड़ीए भेल। अनाड़ियो तँ एके रंगक नहियेँ होइत। कियो बुझल-गमल अनाड़ी तँ कियो बिनु बुझल-गमल हेबे करैत। ओना अपनो साक्षर छी मुदा स्नातक धरि तँ नै जनै छी। तँए बुझल-गमल नै बिनु बुझल-गमल भेलौं। ओह! अनेरे मनकेँ औनाबै छी। दीपक कियो आन छी, किए ने सभ बात पुछिऐ कऽ बुझि ली। बजला-

"बौआ, हम तँ अपनो केलौं आ अनको देखैत एलिऐ जे पढ़ाइ शुरू होइते समैमे सब किताप-काँपी कीनि लइ छेलौं आ भरि साल पढ़ि कऽ परीक्षा दइ छेलौं, तूँ किए..?"

पिताक पश्न सुनि दीपककेँ दुख नै भेल एक विचार मनमे उठल। विचार ई जे कोर्समे किछु पोथी शासन पद्धतिक अनुसार चलैत आ किछु अलग। विषय एक रहितो भिन्न-भिन्न लेखकक विचारधारामे किछु दूरी रहने विषयक पोथीमे सेहो किछु दूरी बनि जाइ छै, तैसंग शिक्षकोक बीच किछु-ने-किछु रूपमे पढ़ेबा समए अपन विचार प्रस्फुटित होइते रहै छै, मुदा पढ़निहार तँ कोरा कागत रहैए जइसँ मन-मस्तिष्कमे किछु-ने-किछु भिन्नता आबिऐ जाइत अछि, तहूमे विचारक भिन्नता काँपी जाँच करबा समए सेहो मुड़ियारी दइते रहैए जइसँ किछु प्रभाव पड़िते छै, तँए आनो-आन लेखकक पोथी परीक्षा लेल जरूरी भऽ जाइए।

विद्यार्थी तँ निष्पक्ष ढंग यएह ने कऽ सकैए जे फुटा-फुटा विचारक व्याख्या करत। तइले आनो-आन पोथी पढ़ब ऐछे तखन ने परीक्षाक तैयारी भेल। किए ने पितोजीकेँ अपन विचार सुना दिऐन। बाजल-

"बाबूजी, किछु आनो-आन लेखकक पोथी परीक्षामे देखब जरूरी बुझि पड़ैए, पोथी तँ अनेको लेखकक अनेको छै मुदा जे चलैनमे अछि तेकरा देख लेब तँ जरूरीए अछि किने, तँए किछु नव पोथी कीनब अछि।"

दीपकक बात रविकान्त बुझि गेला। मुदा कम पाइबलाकेँ अधिक पाइक खर्चबला काज गरूगर भाइए जाइ छै, जे रविकान्तोकेँ भेलैन। मुदा विचारोक तँ अपन समुद्र छै जइमे रंग-रंगक हिलकोर उठिते रहै छइ। मनमे दोसर विचार उठि गेलैन। उठि गेलैन ई जे तखन ओकरे इमान बुझतै जे भाँग पढ़ै छी आकि बथुआ। अपन काज एतबे भेल जे जे खर्च कहत से देबइ। कियो व्यायाम आकि मनोरंजनक विन्यासकेँ जीविके बुझि लेत तेकर हम की करबै। समगम होइत

रविकान्त बजला-

"बौआ, फुटा-फुटा कऽ सभ काजक खर्च बुझा दएह, तइ हिसाबसँ पाइक ओरियान कऽ देबह। ई नै जे झाँपल-तोपल तहूँ बाजह आ हमहूँ दिअ। तइसँ काजमे बेवधान हेतह। घटी-बढ़ी भऽ जेतह। आगूसँ जे काज करबह ओ बढ़ि जेतह आ पैछला छुटि जेतह। जइसँ काजमे खाँच औतह। काजेक खाँच जिनगीकेँ खँचाह बनबैए।"

पिताक प्रश्न सुनि दीपक असमनजसमे पड़ि गेल जे नापल-जोखल काज अछि ओकरा तँ स्पष्ट बाजि सकै छी मुदा बिनु नपलो-जोखल काज तँ अछिए। तखन? तखन की, दू श्रेणीक काज बना बाजल-

"कौलेजमे तीन हजार लगत, महिनाक खर्चा बुझले अछि तखन नव पोथी लेल अन्दाजेसँ काज चला लेब।"

दीपकक बात रविकान्तकेँ जँचलैन। बजला-

"छह-सात हजारसँ काज चलि जेबा चाही?"

उत्साहित होइत दीपक बाजल-

"जँ कनी-मनी घटबे करत तँ मोबाइलसँ कहि देब अहूँ ए.टी.एम.मे पठा देब।"

सोझ-साझ रस्ता देख रविकान्तक मनमे काजक अँटकार तँ भऽ गेलैन मुदा हाथमे केते अछि आ केते ओरियान करए पड़त से अँटकार लगबैक विचार उठलैन।

मने-मन रविकान्त खर्चक अँटकार लगैबते रहैथ आकि पत्नी-चन्द्रावती आबि झटैक बजली-

"रस्ता-पेराक थाकल-ठहियाएल बच्चा आएल अछि पहिने किछु मुँहमे कहाँसँ दैत तँ अपन रमा-कठोला सुनबए लगलिऐ। बातो

केतौ पड़ाएल जाइ छेलै जे पहिने सएह पसारि देलिऐ।"

चन्द्रावतीक विचारक मोड़ कनी आगूए रहैन तैबीच दीपक निहुरि कऽ पएर छुबि गोड़ लगलकैन। पैछला बातकेँ ब्रेक लेल साइकिल जकाँ एकाएक रोकि, असीरवादक प्रमुखता बुझैत बजली-

"अखन हाथी सन दुनू परानी जीविते छी।"

माइक बात जहिना दीपककेँ उत्साह भरलक तहिना रविकान्तक उत्साहकेँ दबलक। दबलक ई जे जइ काजसँ दीपक आशा बान्हि आएल अछि ओकरा आगू केना जीवित राखल जाए ओ बिना बुझने केना हएत? बुझल रहत तखन ने अखनेसँ लागि ओकरा पुरबैक परियास करब आकि गुमे-गुम रहि, जेबाकाल बाजत जे एते पाइक काज अछि। कोनो कि अपना हाथमे कागतक रूपैआ छपैक मशीन अछि जे बटम दाबि देबै आ हरहरा कऽ खसत। अपना हाथक तँ ओहन मशीन अछि जे काज रूपमे जन्म लऽ समैक संग चलैत समयानुसार दइत। मुदा ई तँ भेल बुझनिहार लेल, कम बुझनिहार आकि नै बुझनिहार लेल तँ दोसर उपए अछि। बेटा सोझहामे जँ ओ बजली तँ उचिते बजली, अपन अधिकारक प्रयोग केली।

अपन अधिकार ई जे जन्मेसँ बच्चाक खेबा-पीबाक माने पेट-भरैक भार हुनके ऊपर छेलैन, जइसँ भूख अबै-जाइक बाट बुझै छथिन। ठीके कहलैन जे मुजफ्फरपुरसँ अबैमे चारि-पाँच घन्टाक समए लगले हेतै, तहूमे चुल्हिक ओरियानक आदति लगले छैन। आदति ई जे भानसक बेर उनहल जाइए घरमे नून नै अछि आ अहाँ अपना तालमे बेताल छी। खाएर जे हौउ, मुदा ई बात दाबियो कऽ राखब परिवार लेल नीक नहियेँ भेल। बजला-

"दीपक केतए आएल, किए आएल से जँ अबिते नै पुछि लेतिऐ, तखन समैपर ओकर ओरियान केना होएत?"

पतिक बात सुनि चन्द्रावती ठमकली। मन पड़लैन पाबैनक उपास। दीपककेँ खाइमे कनी अबेर भेल हेतै, मुदा अपनो तँ पाबैनक व्रत भरि-भरि दिन सहि कऽ करिते छी। कहाँ पराण छुटि जाइए। तहूमे की दीपकक रस्ता-बाटक दोकान-दौरी आकि इनार-कल बन्न भऽ गेल छेलइ। रस्ता-बाटमे तँ लोककेँ अपने आशापर ने चलए पड़ै छइ। कियो जे केतौ जाइए तैठाम जँ संगबे रहल तँ तेकर आशा भेल जँ सेहो नै रहल तँ अपने आशा करि कऽ ने चलए पड़ै छइ। एना मुँह झारि बेटा आगू बाजब नीक नै भेल।

चन्द्रावतीक मनक ग्लानि रविकान्त बुझि गेला। बुझि एना गेला जे मुँहक ठोर सिकुड़ए लगलैन। मुदा बेटा सोझहामे किछु अनर्गल बाजबो उचित नै बुझि, बात बदलैत बजला-

"पाँच हजार रूपैआ जे रखैले देने रहौं, से तँ हेबे करत किने? बच्चाकेँ हजार-पान साए आगर करि कऽ नै देबै तँ आनठाम केकर मुँह ताकत?"

रूपैआक हिसाब सुनि चन्द्रावती सकपकेली। अखन धरि जे खर्च पतिकेँ कहै छेलखिन, रविकान्त घरक खर्च बुझि टोक-चाल नै करै छेलखिन मुदा आइ! बेटाक पढ़ैक ओरियान करब अछि, जहिना पाइ-पाइक खर्च हएत तहिना ने पाइ-पाइक ओरियानो करब अछि। बजली-

"एक हजार तँ खर्च भऽ गेल?"

पत्नीक खर्च सुनि रविकान्त ठमैक गेला। मनमे उठलैन जे जहिये मातृनवमी-पितृपक्ष (आसीनक पहिल पख) चढ़ल तही दिन बजारसँ महिनो दिनक सभ खर्चक ओरियान कइए देने छेलिऐन, तखन खर्च केतए कऽ लेलैन। पचास रूपैआ फुटा कऽ दसमी मेला देखैले देनौं रहिऐन। तखन? बजला-

"कथीमे खर्च भऽ गेल?"

उत्साहित होइत चन्द्रावती बजली-

"दुर्गा-पूजाक नवमीए दिनक मेलामे एक हजार उठि गेल।"

पत्नीक बात सुनि रविकान्त बजला-

"अखन छठि पाबैनकेँ बीसो दिनसँ ऊपरे अछि तखन एते अगुरवार ई सब किए कीनि लेलौं? अच्छा ई कहू जे की सभ कीनलौं?"

चन्द्रावती-

"चारिटा कोनियाँ, सूप, डगरी, छिट्टा, कूर, हाथी इत्यादि ने कीनि लेलौं।"

मने-मन रविकान्त हिसाब जोड़ि अँटकाइर लेलैन, मुदा अनेको प्रश्न एक संग उठि गेलैन। सोझहामे बेटा-दीपककेँ देख बाजब उचित बुझलैन। बजला-

"एक तँ कोनियाँक काज सूपेसँ होइ छै तहूमे एकटाकेँ मानलो जा सकैए, ऐ जुगमे माटिक हाथीक कोन काज छै आ आब केतए चैलक काज चलैए जे अनेरे पाइकेँ पानिमे फेक देलिऐ?"

पानिमे फेकब सुनि चन्द्रावती उमैक बजली-

"पुरुख-पात्र अहिना पाबैनक वस्तुकेँ दुसै छै!"

पत्नीक बात सुनि बेसी तामस करब उचित नै बुझि रविकान्त मने-मन विचारए लगला जे काजो तेहेन अछि जे छोड़ब बेबकूफी हएत मुदा जँ अहिना मौका पाबि होइत रहल तखन जिनगीक गाड़ी केना ससरत?

लगले दोसर प्रश्न मनकेँ घेर कऽ पकैड़ लेलकैन। घेर कऽ ई पकड़लकैन जे एक परिवार एक पुरुख-नारीक बीच ठाढ़ अछि तैबीच दू रंगक विचार किए चलि रहल अछि। मुदा जे धारा चलि रहल अछि

ओहो तँ बरखा पानिक धारा नै, स्थायी धारक धारा जकाँ अछि! मन ठमैक गेलैन। तीनू गोरे दीपक, चन्द्रावती आ रविकान्त तीनू तीन दिस तकैत, मुदा मुँहक बोल सबहक हराएल। रविकान्तक मन औनाइत जे, जे काज सालतनी छी अदौसँ होइत आएल अछि ओ काज जिनगीक गाड़ीकेँ रोकि देत, ई केहेन भेल?

जिनगी चलबैक काज जिनगीए रोकि देत तखन आगू मुहेँ गाड़ी ससरत केना? लगले आगूमे ठाढ़ दीपकपर नजैर पहुँचते मनमे उठलैन, काल्हिए भरि समए अछि तैबीच दोसर काजमे समए गमाएब उचित नहि। जिनगीक बहुत पैघ काजक परीक्षा छी। काल्हि दिन बेटाक मुहेँ सुनब केते ग्लानिक बात हएत जे कहत पढ़ैक खर्च पिताजी नै जुमा सकला तँए आगू बढ़ैमे बाधा भेल। ओना जेकर पिता समैसँ पहिने मरि जाइ छथिन, ओ केना पढ़ि पौत। मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि। जिबठ बान्हि पढ़निहार तँ पढ़िये लैत अछि। खाएर जे हौउ, जैठाम एहेन परिस्थिति बनैए तैठामक प्रश्न ई भेल। ऐठाम तँ से नै अछि। अपन मनक अभिलाषा अछि जे बेटाकेँ स्नातक बना दुनियाँक बीच ठाढ़ करी। सघन बोनमे हराएल जकाँ माइक मुँह देख दीपक बाजल-

“बाबूजी, आइ जेते खर्चक पाबैन भऽ गेल अछि, ओहेन खर्चक पाबैन पूर्वज केना बनौलैन जे परिवार-लोक तंग होइत रहैए।”

दीपकक प्रश्नक गंभीरता रविकान्तक मनकेँ ओहिना घकेल देलकैन जहिना कियो धारक महारपर सँ बहैत बीच धारमे धकेल दइ छइ। मुदा अपन गुरुतर भार देख रविकान्त बजला-

“बौआ, तोहर प्रश्न ओहेन छह जेहेन मनुख आ मनुखक छापल कागतक चित्र हुअ। अदौसँ रहल जे आजुक श्रमक फल आजुक जिनगीकेँ केते फलित केलक। तँए किछु बँचा कऽ काल्हि लेल राखब अनुचित भेल, एहेनठाम पाबैन-तिहार केना हएत? मुदा...।”

विस्मित होइत पिताकेँ देख दीपक बाजल-

“मुदा की?”

एक दिस काज दोसर दिस आराम कुर्सीक बीच जहिना कियो ठकुआ जाइत तहिना रविकान्त ठकुआ गेला। बेटाक जिज्ञासा भरल प्रश्न स्वाती नक्षत्रक अमृत बून जकाँ भऽ गेलैन, जइसँ एक दिस मोती बनैत तँ दोसर दिस बिष सेहो बनैत अछि। ओना केकरो प्रश्नक उत्तर पाबि जे संतोख होइ छै ओ वएह उत्तर लदलासँ कम होइ छै, तँए दीपककेँ बुझा देब रविकान्त जरूरी बुझैथ तँ दोसर दिस जिनगीक एक सीढ़ी टपैक काज देखैथ। दुनूमे सँ कोनो छोड़बैबला नहि। कारण, जँ समैपर पाइक ओरियान नै हएत, फारम नै भराएत तँ परीक्षा केना देत? तहूमे अपना हाथमे पाइ कम अछि कोनो ब्यौंत करए पड़त। अनका हाथक काजक ठेकाने केते। मुदा दीपको तँ परीक्षामे बैसैबला विद्यार्थी छी, अखन जेते ओकरा बरावरीकेँ भरल जेतै, तेते ने परीक्षामे असान हेतइ। ताल-मेल बैसबैत रविकान्त बजला-

“बौआ, किसानी जिनगीमे किसानसँ लऽ कऽ काज केनिहार धरि अगहनमे धान घर अनैए। चाहे खेतक उपजा होइ आकि बोइन आकि आरो-आरो उपए, जेना-जेना अगहनक पछाइत समए आगू बढ़ैए तेना-तेना खर्च होइत जाइ छइ। घटबी होइ छइ। भदबारिमे जे भदइ-धान आकि मरूआ होइ छै ओकरा पाबैन-तिहारमे अशुद्ध मानल जाइ छै! दोसर दिस आसीनक पनरह दिन खएन-पीअनि होइ छै आ ऐगला पनरह दिन दुर्गापूजासँ कोजगरा धरि होइ छइ। तहिना कोजगरा प्रात जे कातिक चढ़ैए, ओकरा धर्ममास मानि अनेको तीर्थ-व्रत आ पाबैन-तिहार होइ छइ। एहेन स्थितिमे की कएल जाए। मुदा अखन बेसी कहैक समए नै अछि। केकरो हाथे बच्छा बेच पहिने तोहर काज आगू बढ़ा देबह पछाइत कहियो निचेनसँ आगूक बात कहबह।”

पतिक बात सुनिते चन्द्रावतीकेँ जेना कोजगराक पुनोचान आ दीपककेँ दिवालीक ज्योति जगि गेलैन।

OO

तिथि : 22 दिसम्बर 2013, शब्द संख्या : 2412

चोरूक्का झगड़ा

आने दिन जकाँ भिनसुरका चाह पीऐले शिवशंकर, किसुनदेव, सिंहेश्वर, राधाकान्त आ मनोहर एक्केबेर चाहक दोकानपर पहुँचला। पाँचोक जेहने मिलान चाह दोकानक तेहने मिलान बात-विचारक आ तेहने जिनगीक काजोक। ओना पाँचो पाँच टोलक, पाँच जातिक मुदा चाहक दोकानक एक्के निअम बनौने जे अपने-अपने चाहक खरचे अपनो पीब आ समाजोकेँ पिआएब। भोज हेतइ। हिसाबो सोझराएले, पाँचो गोरे छह-छह दिनक भोजक खर्चाक हिस्सा तीस गिलास चाहक दाम एक्केठाम जमा करैत रहैथ। जइसँ तीसो गिलासक दाममे अपनो तीसो दिन पीबैत आ चारू संगियोंकेँ पीअबैत। ऐ बीचमे एकटा शंका नै करब जे के कहिया पीऔलैन। बोही-खताबला दोकानदार पाहि लगा कऽ नाम बजैत जे आइ फल्लाँक भोज छिऐन।

ओना चाहक दोकान बजारक नै गामक चौक परहक। बजारक दोकानमे सिरिफ कारोबारक गप-सप्प चलैत मुदा गामक चौक अन्तर्राष्ट्रीय होइत। जैठाम ससैयो रंगक गप चलैत। केतो चीलमक चौखड़ी तँ केतौ ताड़ी-दारूक, केतो खेती-पथारीक तँ केतो शास्त्र-पुराणक। केतो पार्लियामेन्ट तँ केतो युनिवरसिटीक।

तीन दिनसँ गुलेतिया दुनू परानी सौंसे गाम केता बेर भौड़ी दऽ

देलक। भौड़ीक दइक कारण रहै जे शुरूहेक जेठुआ लगनमे गुलेतिया कबुतरीकेँ मेलासँ पटिया कऽ बिआह कऽ लेलक। कुमारि कन्या कबुतरी नै बुझि सकली जे दोती बर गुलेती अछि। मुदा जखन कबुतरी सासुर आएल तँ सासुक जगह सौतीनक गारजनीमे फँसि गेल। जहिना पड़बा नव-पुरान खोप नै चीन्हि चहरेमे लोभा जाइए तहिना। सौतीनक गारजनी कबुतरीकेँ पसिन ऐ दुआरे नै होइ जे जखन एके घरबलाक दुनू घरवाली छिऐ तखन ओकर हुकुम किए मानबै। जहिना ओकर घर छिऐ तहिना ने हमरो छी आ जँ अपन नीक दुआरे हमरासँ काज करा लिअए तखन अपना की रहत।

गुलेतिया अपने पस्त रहए। होइ जे कहुना साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए। झगड़ो फरिछा जाए आ दुनू घरवालीसँ मिलानो रहि जाए। मने-मन सोचए जे बाप-माइक बिआह केलहा पहिलुका घरवाली छी, जँ कोनो तरहक दुख हेतै आ वेचारी कलपत तँ पड़ि जाएत। हो-न-हो हाथे-पएर लुल्ह भऽ जाए तखन की दोसरकेँ धोइ-धोइ चाटब। तँए बिआही घरवालीक डर होइ मुदा दोसरसँ ऐ दुआरे डराइत रहए जे, घटकैतीकाल घरवाली लग बाजि गेल रहए जे बिआह-तिआह नै भेल अछि। रस्ते-रस्ते कबुतरियो भाँज लगा नेने रहए जे अँगनामे एकटा स्त्रीगण छइ। मुदा ई भाँज नै पाबि सकल जे सासु हएत आकि सौतीन।

गामक लोक दुनूक बातो सुनि लिअए आ अनठाइयो दिअए। अनठबैक कारण रहै जे सभ बुझैत जे सँए-बहुक झगड़ा किए होइ छइ। ओना गुलेतियो आ कबुतरियोमे सँ कियो पाछू हटैले तैयारो नहि। मरदे जकाँ गुलेतियो लोक लग बाजे आ महिले जकाँ कबुतरियो।

तीन दिन गामक भौड़ी केला पछाइत चाहक दोकानपर

गुलेतिया पहुँचल। गुलेतियाकेँ देखते चाहबला बाजल-

"अखन गाममे केकरो चलती छै तँ ओ गुलेती भायकेँ अछि।"

बेन्चपर बैसल शिवशंकर टोनलक-

"की चलती गुलेती भायकेँ छैन हौ?"

मुँह-बनबैत दोकानदार बाजल-

"अरे बा, चलती! तेहेन गुलेती भाय छैथ जे महाभारतक तीरो छोड़ै छैथ आ मेना-पौड़की मारैबला गुल्लीओ।"

चाहक दोकानपर बैसल सभ दोकानदारक बात अकानैत मुदा अर्थे ने किनको भेटैन। कियो किछु तँ कियो किछु बुझैत।

तही बीच कबुतरी पहुँचल। गुलेतियाक बिना रोच रखने बाजल-

"ऐ मरदाबाकेँ पुछियौ जे अपनाकेँ कुमार कहि किए बिआहि अनलक।"

सभ चुप। चुपो केना नै रहता। जखने मुद्दे-मुदालह सोझहामे सवाल-जवाब करत तँ पनचैतियो अपने कऽ लेत तइले पंचक कोन काज छइ। पत्नीक प्रश्नक उत्तर दैत गुलेतिया बाजल-

"ई झूठ केना भेल। जैठाम तीस-तीस, चालीस-चालीसटा लोक बिआह करैए तैठाम तँ हम दुइयेटा केलौं, तइले एकरा लगै किए छइ। कोनो कि हमहींटा अपनाकेँ कुमार कहलिऐ आकि सभ कहने हेतै?"

००

तिथि : 24 दिसम्बर 533, शब्द संख्या : 538

अपसोच

जिनगीक अन्तिम सीढ़ीपर पहुँचला पछाइत जखन पाछू उनैट तकै छी तँ रंग-बिरंगक काजक संग अपनाकेँ देखै छी। नीको आ खूब नीको आ अधलो आ खूब अधलो। तखन कहब जे हँसितो ओतबे हएब जेते कनैत हएब। मुदा अपन पनचैती जँ अपने नै करब तँ दुनियाँमे केकरा एते फुरसत छै जे एहेन घोर-मट्ठा पानिकेँ बेरौत। पनचैती केलौं, मन माफित पंचैती केलौं, पैछला सभ सम-गम भऽ बराबरीपर मानि लेलौं।

तँए मिसियो भरि सोग-पीड़ा पैछला नै अछि। मुदा कनीए खोंच रहि गेल तैपर विचार करै छी। कहब जे जखन सभ काइए लेलौं तखन खोंच कनी किए रहि गेल। जहिना किछु फलक खोंइचा फले संग जीवन-मरण बितबैए, मुदा किछु फल तँ ओहनो ऐछे जेकरा छीलि कऽ आकि सोहि कऽ कात करि देल जाइ छइ। हमर से नै अछि, जहिना देहमे नमहर घा रहने कियो ओकर इलाज करत आकि कड़ची-तड़चीक खोंचक दबाइ करत। या तँ बड़के घाक दबाइसँ छुटि जाएत आ नै तँ अपने किछु दिन पहुनाइ कऽ चलि जाएत।

खोंच ई अछि जे नीको केलहा अधला भऽ गेल। खाली जँ अपनेटा नीक बुझितौं आ दुनियाँक लोक अधला बुझितए तैयो अपन

गलती मानि लेतौं, सेहो नै भेल। अपनोसँ बेसी दोसर-तेसर नीक बुझितए। सचमुच जिनगीमे सैयोसँ ऊपर लड़का-लड़किक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित केलौं। नीक बुझि केलौं, अखनो बुझै छी मुदा तखन भोरे-भोर दुलारपुरवाली किए गरियौलैन? ई तँ गुण अछि जे लोक सोझहोमे अधला करैत रहैए, देखैत रहै छी, मुदा जँ धिया-पुता जानि नै बजै छी तँ ऊहो सभ बुढ़हाएल शरीर देख बिनु देखनिहारे बुझैए। ओना तइसँ अपनो फेदे-फेदा अछि। अनेरे मौगियाही गपो आ काजोसँ हटल रहै छी।

दुलारपुरवालीक गरियबैक कारण की?

दुलारपुरवालीक पिता संगे नोकरी करै छला। वेचारा सात्विक लोक। भलमनसाहतक चलैत दू-चारि दिनक दरमाहा बी.डी.ओ.सँ कटबा लइ छला। हुनका सन पच्चीस-तीस गोरे जे पाँच दिनक दरमाहा कटबाइयो कऽ अपना भलमनसाहतकेँ नै छोड़लैन। कहियो बी.डी.ओ. साहैब लग अपन सफाइ नै देलखिन। एक मदक खर्च बी.डी.ओ. साहैबकेँ चलै छेलैन।

बगए-वाणि, बोली-चाली दुलारपुरवला-महेन्द्रबाबूक एहेन जे कियो अपन उपस्थिति हुनका डायरीमे नोट करबए चाहैत। उपकैर कऽ कहलयैन-

"भाय साहैब, अहाँ बेटीक बिआह ओहिना माने बिनु लेने-देनक करा देब।"

अपन उपकार स्वीकारैत महेन्द्रबाबू कहला-

"जखन मनुख बनि धरतीपर जन्म लेलौं तखन जँ किछु सेवा नै केलौं तँ जिनगीए की!"

एक तँ अहुना समाजमे कथा-कुटुमैती जोड़ैमे नीक लगैए आ कन्यादानसँ जुड़ल मुख्य प्रक्रिया जँ करै छी तँ की कन्यादानक

सुफलक भागी हम नै भेलौं। जरूर भेलौं। मुदा फेर गारि किए? सेहो तँ अपने विचारए पड़त। भेल ई जे गामेक एकटा छौड़ाकेँ बाप-माए मरि गेलइ। मैट्रीक पास कऽ नेने रहए। अखुनका हवा तँ उठल नै छेलै जे पहिने नोकरी पाछू बिआह। बिआहोक पछाइत केते गोरे पढ़बो केलैन आ नोकरियो केलैन। ओइ छौड़ाकेँ बिआह करा कहलिऐ-

"सभ दिल्ली नौकरी करए जाइए, तहूँ चलि जो। कमेबही तखन ने परिवार बनतौ।"

बात मानि गेल चलि गेल दिल्ली। बंगलोर, चेन्नैइ तँ छी नै जे अनट्रेंड भनसिया हएत। एकटा कोठीमे भनसियाक काज धेलक। साले भरिमे फुलि कऽ मोकना हाथी जकाँ भऽ गेल। घरोवाली-ले रेडियो, कैमरा, रंग-रंगक गहना, साड़ी नेने आएल। आबि कऽ कहबो केलक।

ले-बलैया अपन घरवाली घर एलै आ अपने सीरा-आगूक भनसिया दिल्लीमे बनि गेल। गामे आएब छोड़ि देलक। जहिना केकरो भगबै दुआरे लोक खेनाइ-पीनाइ बन्न कऽ दइ छै तहिना दुलारपुरवालीकेँ सेहो ओ छौड़ा खरचो-पानि बन्न कऽ देलक! से की कोनो अपना विचारे केलक आकि दोसर मौगीक विचारसँ।

वेचारी दुलारपुरवालीक पिता जीवित नै छैन जे आबि उपराग देता। मुदा हमहूँ तँ दोखी भेबे केलिऐ जे एकटा नीक परिवारक कन्याकेँ गुँह-खत्तामे बोड़ि देलिऐ।

OO

तिथि : 26 दिसम्बर 2013, शब्द संख्या : 548

पतझाड़

पलंगपर पड़ल राघोबाबाक आँखि मुनाइते ताड़क छोटका पंखा हाथसँ निच्चाँ खसलैन। पंखा खसिते पसेनाक टघारसँ कोढ़ियाएल नीन अकचका कऽ टुटि गेलैन। बन्ने आँखिये दहिना हाथसँ सिरमाक बगलमे पंखा हँथोड़ए लगला मुदा निच्चाँ खसल पंखा नै अभरलैन। आँखि खोलि सिरमापर सिर सेरिया पजराक मसलनक बीच देह सेरियबैत मुड़ी उठा निच्चाँ देखैक कोशिश केलैन। चीनीपट्टा सन पेट, फीलपाँव पएर, सड़ल साँप जकाँ दुनू बाँहिक गड़ लगैबते बजला-

"की समए छल, की भऽ गेल आ की हएत तेकर कोनो ठेकान नहि।"

मड़ियाएल पतिक बात सुनि, बगलक चौकीपर पड़ल सुमित्रा बिअनि हौंकैत बजली-

"सभ कर्मक फल छी। जेहने पीसब तेहने ने उठाएब।"

कहि हाँइ-हाँइ बिअनि हौंकए लगली। चारि-पाँच हाथ हटल चौकी तँए राघोबाबाकेँ हवा नै लगैन। मुदा पत्नीक बोल जेना ओल सन कबकबा कऽ लगि गेल होइन, तहिना मनमे भेलैन। हारल नटुआ जहिना अपन कलाकेँ हारैत देख जिनगीक हार कबूल करए लगैत अछि तहिना झड़ैत जिनगी देख राघोबाबा सेहो हारि मानैक क्रममे

क्रमिक गतिये क्रमे-क्रम झड़ि रहल छला। जीवित दुनियाँक प्रेमी पति-पत्नी छी। ओना विगत दस बर्खसँ सुमित्रा पतिकेँ झूठक्कर मानि रहल छेली, मुदा पति-पत्नीक बीचक सम्बन्ध सूत्र जँ ओहन हुअए जे पतिक हाथमे पत्नीक छोर पकड़ा देल जाए आ पत्नीकेँ बिना छोरक जिनगी बना देल जाए तँ की ओ पत्नी पतिक बराबरी कऽ सकत? नीच कर्म केनिहार पुरुखकेँ ऊपर रखि सकत? मुदा..?

एहेन स्थितिमे सुमित्रा, तँए मुँह झाड़ि तँ नै बाजि पबै छेली तैयो उचित बुझि लग्गी लगा तँ कहबे करै छेलखिन। पत्नीक बात सुनि पलंगक निच्चाँ खसल पंखा उठा राघोबाबा हाँइ-हाँइ मुँहपर पंखा हौंकए लगला। पसीनासँ भीजल देह हवाक सिहकी पैबते मन सिहैक कलशलैन। जिज्ञासा करैत बजला-

"से की? से की?"

पतिक जिज्ञासु प्रश्न सुनिते सुमित्राक मनमे उठलैन, की जिनगी छल आ आइ की भऽ गेल। जहिना पुरान देह अपन भेलैन तहिना ने हमरो भेल। तखन तँ हल्लुक-फल्लुक देह अछि, आसकैत नै लगैए, मुदा जे जीता जिनगी अपनो फुहराम भऽ उठि-बैस नै सकैए तँ के केकरा देखत। बेटा-पुतोहु सहजे सात सागर दूर चलि गेल, ओकर कोन आश, तखन? मुदा उपाइए की?

नीक आकि अधला पति तँ यएह छैथ, हिनके आशा ने करए पड़त। ओना तीत-मीठ बात सभ दिनसँ होइत आएल, होइत रहत। लगले मन पाछू घुसैक गेलैन। दस बर्ख पहिने की रोब छेलैन, की बुझै छेलिऐन आ आइ की छैन आ की बुझि रहल छिऐन।

ऐ दस बर्खक बीच, जहिना गाछक पात एका-एकी झड़ए लगैत अछि तहिना राघोबाबा हारैत निच्चाँ उतैर रहल छला। सुमित्रा जीतैत ऊपर चढ़ि रहल छेली। दुनियाँक बीच नै पति-पत्नीक बीच। बजली-

"किछु ने, बुढ़िया फूसि।"

पत्नीक झँसाएल बात सुनि राघोबाबाक मन झड़झड़ा कऽ उड़ि गेलैन। उड़ि कऽ स्मृतिक ओइ दुनियाँमे पहुँच गेलैन जेतए गुलावक फूल सन ललिचगर आ कोइलीक वसन्ती मदमस्त भरल बोल सन बोली सुमित्रामे पबै छला, तेतए आइ कौआक बोल आ काँटक गाछ गुलाव देख रहल छैथ। देख रहल छैथ बिनु पतवारिक जिनगीक नाह, जे पतवारि छोड़ि धारमे भँसि रहल अछि। जिनगीक जालमे अपनाकेँ ओझराइत जालक एक-एक सूत देखए लगला। केना छोट कोठली बनल चारूकात गीरहसँ गीरहाएल अछि।

खींचाइत जाल जकाँ राघोबाबाक मन खींचा कऽ दस बर्ख पाछू खींचा गेलैन। चाइनिक पसीना आँगुरसँ काछि निच्चाँ फेकते रहैथ आकि मन ऊपर तकलकैन। यएह घर छी जइमे पाल पंखा[1] चलैत रहै छल, छतमे इजोतक झालैड़क बीच दुनू बेकती सौनक हरिअर साड़ीक बीच लटपटाइत टहलै छेलौं, टहलै छेलौं ओइ विरूदावली वनमे जैठाम मन्द-मन्द हवा अपन मस्तीमे नचैत, पुरस्कार देल नर्तकी जकाँ देहमे लटपटा गुदगुदबै छल, केतए गेल! लोक कहैत धन देने धन बढ़बे करै छै, मुदा से कहाँ भेल, उनैट केना गेल! जिनगीक घटल घटना आन नै बुझलक तँ नै बुझलक, कोन जरूरी छै अनका बूझब, अपनासँ उगारे नै तँ अनका की देखैत, मुदा अपन तँ अपन छल, से के बूझत, मुदा अपनो कहाँ बुझलौं..?

मन एकमात्र बेटापर पड़लैन। ओकर कोन आशा, मुदा ओकरो गलती कहाँ देखै छिऐ, बढ़ैत समए, बढ़ैत परिवार आ बढ़ैत पीढ़ीक तँ उचिते हक बनै छै किने जे पैछलासँ बेसी सुख-भोगक जिनगी

[1] धरैनमे कपड़ाक नमहर हवा पसारैबला

जीबए। जैठाम अपने नोकर-चाकर, जन-बोनिहारक संग रीनियाँ[2] सँ घेरल रहै छेलौं तैठाम जँ ओ (बेटा) अपन सम्पैत उठा विदेश जा कारखाना बैसा नोकर-चाकरक बीचक जिनगी बना लेलक तँ उचिते केलक किने। आगू घुसकैत मनमे महाजनी एलैन। बोरा लऽ लऽ लोकक ढबाहि लगल रहै छल, बखारीसँ धान निकालि नोकर तौल कहै छल आ अपने ब्रह्मा जकाँ लिखै छेलौं। चाहे तीन सेरकेँ तीन पसेरी लिखौं आकि तीन पसेरीकेँ तीन मन। मुदा ईहो तँ भऽ सकै छल जे तीन मनकेँ तीन पसेरी आ तीन पसेरीकेँ तीन सेर लिख सकै छेलौं से कहाँ लिखाइ छल। केना लिखाइत? अपन ब्रह्मा अपने छेलौं किने, जँ शराबी, जुआरी अनका बहु-बेटीकेँ नै गरिया अपनाकेँ गरियौत तँ ओकर बदचलैन केते दिन चलतै। यएह गाम छी, तीन मनक उपजा साढ़े चारि मन दइ छल। तैपर खेतक उपजाक संग बुधियारीक माने लेन-देनक बेइमानीबला आमदनी सेहो छल। केतबो नोकर-चाकर जन-बोनिहारकेँ दइ छेलिऐ तैयो कहाँ घटै छल, सभ किछु चमकै छल...।

..अपना परिवारमे कहिया माछ-मासु तहूमे मिथिलांचलक ललमुहाँ रोहू आ खस्सीक कलेजी आकि दूधे-दही-छालहीक अभाव रहल। भोलो बाबाकेँ माने भाँगमे दूध-परसाएल गौरिया केरा, मुनक्का-किशमिश, मिसरी तँ चढ़ैबते रहलयैन, तखन किए आइ सभ बेपाट भऽ गेला। की सुरूजे भगवान गाछमे टुसिया हरिअर-हरिअर डारि-पात, फड़-फुलक संग देबो करै छथिन आ समए आनि सभटा केँ झाड़ियो दइ छथिन। कंठमे सुखौनक आभास भेलैन। पानिक तृष्णा भेलैन। तेहेन जनमारा रौद अछि जे चैलो-बाल्टीनक पानि इन्होरा गेल हएत, जरल लेल ठण्ढ-शीतल चाही, जँ जरलपर जरल पड़त तँ आरो

[2] खौदका, कर्ज लेनिहार

जड़ा कऽ जड़िया जाएत। मुदा..? अपने केना लगक बाल्टीन छोड़ि कलपर आनए जाएब। से नै तँ पत्नीकेँ कहिऐन जे पियास लागल अछि। मुदा लगले मनमे एलैन जे जँ कहीं, जेना चाह पीबैकाल गिलास नेने आबए कहै छैथ तहिना कहि दैथ जे बाल्टीनमे अछि, लऽ कऽ पीब लिअ, तखन? पलंगपर बैसल राघोबाबा ने पानि पीबए उठि रहला अछि आ ने पत्नीकेँ कहि रहल छैथ मुदा नजैर पत्नीएक चौकीपर नाचि रहल छैन। दुनियाँक बोनसँ हाथ पकैड़ सिरजनक दुनियाँ बसबैक वचन देने छिऐन, रोग-वियाधिक बीच सहयोगीक संग पुरैक वादा केने छिऐन जेकर बदला ऊहो अपन दिन-रातिक जिनगी समरपित केने छैथ, तैठाम जहिना अपन तहिना ने हुनको भूख-पियासक संग मन-मनोरथ सेहो छैन। से केते धरि पुरा रहलयैन अछि?

फेर मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे पुरुख हुअए आकि नारी, दुनू शक्ति सम्पन्न होइते अछि तँए ओंगठबो नीक नहि। ओंगठलो नै जा सकैए मुदा रोग-वियाधि, भूख-पियास तँ शक्तिकेँ हिला-हिला दोसराक सहयोगक अपेछा कराइए दइ छइ। तहीले ने संगीक प्रयोजन होइ छइ। अखन तँ कियो आन नै अछि, अपने दुनू बेकती छी, दुनियाँक संग लोककेँ छल-प्रपंच करए पड़ै छै, दुनियेँ छल-प्रपंचीक छी। अपना लेल तँ वएह ने नीक जे जेहेन बेवहार करत, सम्बन्ध बनौत तेकरा संग तेहने बेवहार करी। जँ से नै करब तँ दुनियाँक केतौ आदि-अन्त छै जे जड़ि पकैड़ ठाढ़ हएब।

एहनो लोक तँ छैथे जे सत्यकेँ संकल्प-तीर बना नदीमे तैर रहला अछि आ शब्द-वाण छोड़ैत रहला अछि, मुदा तँए कि झूठ छी जे एहनो लोक तँ ऐछे जे बजैकाल वेलगाम घोड़ा जकाँ सत्य-फूसिकेँ एके बुझि दूधपनियाँ पीबैए। ओह! अनेरे मनकेँ बौअबै छी, अपन बात अपना लूरिये-बुधिये नै बुझि पेने लोक पौल जाइए। तहिना तँ अपनो

भेल! मन ठमकलैन। दस बर्ख पूर्व यएह पत्नी छेली जिनका अपराजित कली सन आँखिक नजैर मिलिते प्रेमसँ उपोउप भऽ जाइ छल आ यएह आइ कारकौआ सन बुझि पड़ि रहल छैथ, आखिर एना किए भेल? लोक बजैए ओल्ड बेटल ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ उत्तम होइए अर्थात् पुरान पान तहिना पुरान शराब अपन सहयोगीक संग घुलैत-मिलैत एक रस भऽ जाइत तहिना विचारवान पत्नी सृजनसँ पतिपालक भार उठा चलैत, से कहाँ भेल? की ई झूठ जे प्रेमी पाबि प्रेम प्रेमास्पदक सीमा पकैड़ कदमक गाछमे राधा-कृष्ण जकाँ यमुना किनहरिक गाछक डारिमे झूला झूलि बरहमासा गबैत। मुदा एहेन प्रेम भऽ कहाँ पएल जे होइत! अपन दस बर्ख पहिलुका जिनगी केहेन रहल जे होइत। की परिवार छल, केते सेवा करै छेलिऐन। घरक भार भनसिया, पैनभरनी संग जिनगीक कोनो काज बाँकी नै छल जइमे सहयोगी नै छेलिऐन। मुदा आइ? आइ तँ ओहिना ने ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेल छैथ जइमे एकोटा पात नहि। सभटा झड़ि गेल। पातक-संगबे छूटने मुड़ीक टुस्साक संग ठौहरियो सुखि खसि पड़लैन। जे सजल सजाएल गाछ नै सुखल-टटाएल ठूठ गाछ भऽ गेल छैन। इजोतमे भलेँ लोक भूत-प्रेत नै देखह मुदा अन्हरिया राति हुअए आकि झलफलाएल इजोरिया, ठूठ गाछ भूत जकाँ तँ देखे पड़ैत। मन घुमलैन, जँ ओ -पत्नी- ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेली तँ अपने की रहल। रहल खाली एक क्वीन्टल सताइस किलोक देह। देहपर नजैर पड़िते मनमे खुशी उपकलैन।

साठि-सत्तैर किलोबला देह जखन क्वीनटलिया बोरा पीठ आकि माथपर उठा लइए, तैठाम ओइसँ दोबर उठबैक तागत तँ अपनो देहमे अछिए। हूबा जगिते राघोबाबा उठि कऽ झाँपल बाल्टीन उघारि लोटामे पानि ढारि गिलाससँ पीबए लगला। एक गिलास पीविते कौआ जकाँ मन कड़कड़ेलैन। जहिना भरि दिन चरौड़ कएल कौआ साँझमे

एकठाम भेला पछाइत निअम बनबैत जे, देख काल्हिसँ कियो ने अधला वृत्ति करिहेँ आ ने अधला बौस खइहेँ। जेहेन खेमे तेहेन बुधि हेतौ। नीक बात रहने एकमुहरी सभ मानि लइत। मुदा अधरतियाक अधपेटिया विचारो ने अधविचरिया होइत। सौंझुका निअम बदैल संशोधित निअम बनबैत जे अदहा नीक करिहेँ आ अदहा अधलो खइहेँ। मुदा वएह कौआ भोरमे ओहू निअमकेँ बदैल निअम बनबैत जे खाइ-जोकर जे भेटौ से खहिहेँ आ जे मन मानो से करिहेँ। तहिना एक गिलास पानि पीला पछाइत राघोबाबाकेँ सेहो विवेक आगू बढ़ि मनकेँ कहलकैन। सुनिते निर्णए केलैन जे जखन गरम चाहो लोक सुआदि-सुआदि पीविते अछि तखन तँ हमहीं एकरत्ती ठाढ़ मारल पानि पीलौं तँ कोन अधला भेल। निआसल मनकेँ पानि चाही आकि शीतल-ठंढा जल। मनमे विचार अबिते दोसर देवदूत अपन तरकशसँ तीर निकालि छोड़लक, बैसाख जेठमे जँ ठरल पानिमे सुआद होइ छै तँ पूस मासमे गरमे ने नीक होइ छइ। किए कियो इन्होर पीबैए। तर्कक मजगूती देख राघोबाबाक मन मानि गेलैन जे ई सभ सभटा मन भड़छब छी जँ से नै छी तँ एक चीज सभकेँ एके रंग नीक किए ने लगै छइ। तर्कक बोनमे राघोबाबाक नजैर पत्नीपर गेलैन। पोचाड़ा दैत बजला-

"बड़ पियास लगल छेलए।"

पतिक पियास सुनि सुमित्रा बजली-

"तँ बजलौं किए ने?"

एकबटुआ देख राघोबाबा बजला-

"कहुना भेलौं तँ अहूँ बूढ़े भेलौं किने। किए अनेरे अहाँकेँ हरान करितौं। अपन काज अपने करी, सएह ने केलौं।"

अपन काज अपने करी सुनि सुमित्राक विचारमे धक्का लगलैन। धक्का ई लगलैन जे जँ अपन काज अपने करी तँ कियो केकरो भार

बनत किए? मुदा उमेर पाबि शरीरोक तँ रूप बदैलते छै, तैठाम दोसराक जरूरत तँ हेबे करत। मुदा..? मुदा ई जे नोकर-चाकरपर जीनिहारक जँ अपनो बेटा-पुतोहु दूर चलि जाए तँ तखन बुढ़ाड़ीमे की हएत। नजैर बेटापर गेलैन। आइ जँ अपन बेटा-पुतोहु लगमे रहैत तँ की अहिना जिनगीक रूप रहैत। ऐ अवस्थामे चुल्हिफुक्की केहेन भेल! जेते सम्पैत बेच गामसँ चलि गेल तेते सम्पैतसँ की गाममे पेट नै भरितै। तखन? तखन तँ यएह ने जे छी तहीमे जीबैक अछि। बजली-

“पैछला सभ किछु बिसैर जाउ, नीक भेल आकि अधला, जे भेल से भेल। आब केना जीब, तइ दिस ताकू।”

पचास बर्ख पूर्व राघोबाबाक बिआह सुमित्रा संग भेलैन। राघोबाबाक पिता देवानन्द गामक जेठरैयत। बीस बीघा जमीन। किसानी जिनगीक जे स्तर होइ छै तइ स्तरक जिनगी। बाहरसँ कम सम्पर्को आ समाजमे पैंच-पालट तँ करैथ मुदा महाजनी नै रहैन। पाहीपट्टीक गाम। जइ जमीन्दारक गाम तिनका संग देवानन्दक कुटुमैती केलैन।

ओना किछु गोरेक ईहो कहब अछि जे समतुल्य सम्बन्ध अधिक नीक होइ छै मुदा विधातोक किरदानी तँ किरदानीए छिऐन। ने दूटा मनुखकेँ एकरंग मुँह-कान बनबै छथिन आ ने कलमक दूटा नोक एकरंग करै छथिन। जेते लोक तेते मुँह आ जेते लिखिनिहार तेते रंगक लिखाबट। खाएर जे हौउ, जहिना देवानन्दकेँ राघवक सम्बन्ध जोड़ब नीक लगलैन तहिना ठाकुरो प्रसादकेँ सोहनगर बुझि पड़लैन। जमीन्दार घराइनमे बाधा ई उपस्थित भेल रहैन जे दियादीक सम्बन्ध रहैन। दोसर विकल्पो नै बुझि पड़लैन। कारण कुटुमैती तँ जातियेमे हएत, तखन तँ गोरगर-कन्हगर देख कऽ करी, से जँचलैन। देवानन्दो दुनू परानीक मन खुशीसँ भरि गेलैन। के ने ऊपर उठए चाहैए, दुनू

परानी देवानन्द विचारि लेलैन जे जँ एको पाइ दहेज नहियोँ भेटत तैयो कुटुमैती कइए लेब। भने बेटाकेँ नै बेचने रहब, मुँहदानो दइले तँ रहत। जखन ठाकुर प्रसादक सिपाही देवानन्द बेटाक बिआहक गप-सप्प उठौलैन तखन देवानन्दो पत्नीक विचारक आशा छोड़ि ‘हँ’ बजला। ओना विचार भेले रहैन। सिपाही तँ सिपाही छल, ठाकुर प्रसाद लग बाजल जे कुटुमैती करै-जोकर अछि। कुटुमैती करै-जोकर सुनि ठाकुर प्रसादक पत्नी- सुनीता, पुछलखिन-

“से केना बुझलहक?”

जहिना इन्टरभ्यूक समए विद्यार्थी निर्भीक भऽ कोनो प्रश्नक उत्तर करैत तहिना सिपाही बाजल-

“पुरुखाह लोक देवानन्द छैथ।”

पुरुखाह सुनि सुनीताक मनमे खुट-खुटी उठलैन। खुट-खुटी ई जे जखन परिवारमे पुरुख आ महिलाक काजक बीच सीमांकन अछि तखन एहेन बात सिपाही किए कहलक। पुछलखिन-

“से की?”

अपन बढ़ैत मान देख सिपाही तिलिया-फुलिया लगबैत बाजल-

“एक तँ जाइते देरी बिना किछु पुछने दरबज्जापर बैसा अपने आँगन जा लोटामे पानि अनलैन। पएर धोनौं ने रही आकि चाह-जलखै पहुँच गेल।”

सुनीताक नजैर बेटी बिआहपर रहैन तँए सिपाहीक बातसँ कानमे झड़ पड़ए लगलैन। बजली-

“ई सभ छोड़ह, काजक गप करह?”

काजक गप सुनि सिपाही पट बदैल दोसर दिस मुँह बनौलक। बाजल-

“जखने कुटुमैतीक गप-सप्प उठेलौं आकि धाँइ दऽ बजला जे निसचित जूड़बन्धन हेबे करत। जाति-पाँजि कोनो छीपल अछि। एक्कैस पुरुखाक इतिहास अछि। कहियो कियो इज्जत गमा कऽ पाँजि नै बनौलैन। परिवारक काज छी किनकोसँ किछु विचारैक प्रश्ने नै अछि।”

सिपाहीकेँ भँसैत देख पुन: सुनीता दोहरौलैन-

“सुमित्राकेँ कोनो दुख-तकलीफ तँ ने हएत। लड़का केहेन अछि?”

“मलिकाइन, सएह ने कहै छेलौं, सम्बन्धक प्रश्न अछि, सविस्तर बात बूझब जरूरी अछि किने।”

ठाकुर प्रसाद आ देवानन्दक बीच कुटुमैती भऽ गेल। कुटुमैती भेला पछाइत दान-दहेजक ठेकान नै रहलैन। मुदा दूटा प्रमुख रहैन। पहिल गामक सरकारी जमीन आ दोसर, महाजनीबला बोही सुमझा देलकैन। जहिना लछमीक आगमण भेने छप्पर फाँड़ि धन-बरखा होइत तहिना देवानन्दोकेँ भेलैन। बढ़ैत कारोबार देख, जन-बोनिहारक अतिरिक्त तीनटा नोकरो रखलैन। दोसर दिस सुमित्रा लेल तीनटा नोकरनी सेहो नैहरेसँ आएल छेलैन। दुनू परानी देवानन्दो मरि गेला आ ठाकुरो प्रसाद दुनू बेकती। रहि गेला राघव आ सुमित्रा। ओना तीनटा बेटियो-जमाए आ बेटो-पुतोहु छथिन। जिनगीक चारिम पड़ावपर पहुँचते राघोबाबाकेँ चारू दिससँ धक्का लगलैन। धक्का लगिते अपन देह देखलैन।

जेना जुग बदलै छै तहिना राघोबाबाकेँ साठि बर्खक अवस्थामे भेलैन। तीन-चारि सालक रौदी महाजनी खा गेलैन। करताइत दुआरे खेती टुटि गेलैन, तैपर महाजनी आ जमीनक विवाद सेहो समाजमे पसैर गेल। राघोबाबा डेगे-डेग पाछू मुहेँ ससरए लगला। ससरैत-

ससरैत आइ पचहत्तैर बर्खक अवस्थामे पहुँच गेल छैथ।

जहिना गाछक फुनगीक डारिपर चिड़ै-चुनमुनी बैस अपन जिनगियोक गप करैए आ नचैत-गबैत-हँसैत-हटैत-सटैत सभ मस्त रहैए, तहिना तँ मनुखोकेँ हेबा चाही, से कहाँ होइए?

मन ठमकलैन। किछुकालक पछाइत ठकुआएल मन कुड़कुड़ेलैन। कुड़कुड़ेला-

“जहियासँ दुनू गोरे एकठाम भेलौं, तहियासँ अहाँ कोन नजरिये देखलौं?”

पतिक आक्षेप सुनि सुमित्रा डहकली-

“निरलज जकाँ बजैमे लाजो ने होइए?”

पत्नीक इशारा राघोबाबा नै बुझि सकला। धड़फड़ा कऽ बजला-

“हमर लाज अहाँक लाज नै, तखन एना किए बजै छी।”

जहिना बोन-झाड़मे माए-बाप अपन बच्चाकेँ केतौ ठाढ़ कऽ अपने गाछक अढ़मे नुका रहैए आ औनाइत बच्चाकेँ देख कखनो थोपड़ी बजा तँ कखनो बौआ-बौआ कहि बोल-भरोस दइए, तहिना सुमित्रा बजली-

“गुड़क मारि धोकड़ेसँ लोक बुझैए, हाथी जकाँ जे अखनो लगै छी, से केकरा केने?”

दबैत मन राघोबाबाक आरो दबा गेलैन। दबाइत मनमे एलैन हाथी जकाँ तँ ठीके खुआ-पीआ कऽ बना देलैन मुदा ई किए ने बुझलैन जे एहनो दिन देखए पड़त। प्रकृतिकेँ अजीव खेल छै, जँ गरमी मासमे ठंढा पानिक मान बढ़ि जाइ छै तँ जाड़मे इनहोरक। तहिना पतझड़ मास होइतो सभ गाछमे एकेबेर थोड़े पतझड़ो होइ छै, कोनो पालाक पल्ला पड़ि झड़ि जाइए तँ कोनो रौदक तीक्ष्ण गरमीसँ,

तँ कोनो बरसातक रोग-वियाधिसँ। रोग वियाधि अबिते मन अपना दिस बढ़लैन। अपन जिनगी.., गाछे-बिरीछ जकाँ मनुखोक पतझड़ होइ छै, जे भेल? नहि, रोग-वियाधिक फल छी। गाछो-बिरीछमे तँ मौसमक अतिरिक्त रोगो-वियाधिसँ पतझाड़ होइते अछि। भरिसक सएह भेल। बजला-

"रोग-वियाधि काबू केने अछि, नै तँ अपन पेट जखन कुतो-बिलाइ, चिड़ैओ-चुनमुनी पालि लइए तखन हम तँ मनुख छी। मुइला पछाइत देखए एबै।"

सामंजस करैत सुमित्रा बजली-

"की नवे-नौताड़ि पति-पत्नी भेली आ बुढ़-बूढ़ानुस नै हेती। जे पतिकेँ मानए सएह सोहागिन।"

पत्नीक प्रेम भरल बात सुनि राघोबाबा घरसँ बाहर सुरूज दिस देखलैन। बेर टगि गेल छल। साँझो लगिचा गेल छल। पुन: बाहरसँ घर आबि बजला-

"बेर टगि गेल, चलू रतुका ओरियान करए।"

पतिक बात सुनि सुमित्रा बजली किछु ने, सिहैक कऽ मन कलैश मुड़-मुड़िया गेलैन। जेना जीवनक नव शक्ति सिरजित भऽ गेल होइन। सिरजिते ने जीत-शक्ति छी, असिरजितेक हरल ने हारल-मारल भेल।

OO

तिथि : 31 दिसम्बर 2013, शब्द संख्या : 2587

झीसीक मजा

जेठ मास। मलमासक चलैत जूनक अन्तिम समए काल्हिसँ कोटो-कचहरी बन्न हएत जे अदहा जुलाईमे खूजत।

बीस बर्ख पुरान, अन्तिम केसक फैसला हएत। सेहो जँ फास्ट ट्रेक कोर्ट नै खुजैत तँ दस-बीस बर्ख आरो चलैत। ओना केसक चिन्ता तँ सोभाविक छै, मुदा जहिना पैजामा सिऔनिहार निकासक जोगार बना लैत तहिना केसो लड़निहार तँ बनाइए लैत अछि, से छेलैहे। बनाई लैत अछि जे जखन निचला कोर्टमे बीस-पच्चीस बर्ख लगैत अछि तखन ऊपरकामे तइसँ बेसी लगबे करत, तहूमे तीन-तीनटा कोर्ट ऊपर अछि। तँए ईहो तँ कम खुशीक बात नहियेँ भेल जे सरकारी रेकर्डमे मृत्यु घोषित हएब। तइले जहलकेँ किए लग आबए देब।

चारि बजे भोरे साइकिलसँ मधुबनी विदा भेलौं। ओना विदाहे होइकाल मन छह-पाँच करए लगल जे साइकिलसँ जाइ आ ओतए सजा भऽ जाए तखन साइकिल तँ लुटाइए जाएत। अपना संग लगल वेचारीकेँ किए जहल जाए देब, एकर कोन कसूर छै...।

फेर हुअए जे जँ सजे भऽ जाएत, तैयो तँ जमानत हेबे करत, फेर घुमि कऽ एबे करब। हँ-निहस करैत साइकिलसँ विदा भेलौं। भोरूका समए, कनी-कनी पूर्वाक सिहकी रहबे करै, किरिण फुटैत-

फुटैत मधुबनी पहुँच गेलौं। ओना राँटीक पुबरिये घार लग फ्रेस भऽ गेल रही। राँटी चौकपर पहुँचते चाह-पान केलौं।

भरि दिनक उमसमे दू बजैत-बजैत वेदम भऽ गेलौं। एहेन वेदम भऽ गेल रही जे निर्णऐ नै कऽ पाबी जे जहल कष्टकर होइ छै आकि कोर्ट। अढ़ाइ बजे जजमेन्ट भेल। केस खारिज भेल। ओकील मुंशीकेँ भोज-भात करैत सूर्यास्त भऽ गेल। अन्हरिया पख गाम जाइमे दू घन्टा लगत, एक तँ अन्हार दोसर गर्मी-उमस, तैपर साइकिल चलाएब। मुदा कएले की जाएत। जमातक बीच रही, प्रजातंत्र शासन छिऐहे।

सूर्यास्तक पछाइत विदा भेलौं। भगवतीपुर तक एक्के झोंकमे आबि गेलौं, मुदा पसीनासँ बुझि पड़ए जे देहक वस्त्र मोटा कऽ भारी भऽ गेल अछि। चाह पीब विदा भेलौं आकि विजलोका लौकलै। टुकड़ी-टुकड़ी मेघ छिड़िया लगलै। पछबाक सिहकी चललै, कनीए पछाइत झीसी झहरए लगलै। तरेगन चोरा-नुक्की खेलए लगल। मेंहथ-छहर लग आबि साइकिल चलबसँ हिया हारि गेल। भिनसुरका देखल घारक कतवाहिक बालु आ खेतसँ निच्चाँ बनल रस्तामे महींसिक खुड़क खुड़ेटल। दिनोकेँ होशियार एते होशियारी करिते छैथ जे भरि कमला पेट साइकिल गुड़कबैत पएरे टपै छैथ।

रातिक नअ बजैत। दू घन्टाक रस्ता गामक। देहक गंजी-कुरता निकालि, ठेहुनसँ ऊपर धोती खोंसि पएरे विदा भेलौं। पछबाक लहकीक संग मेघक झकास, कमलाधार लग अबैत-अबैत सुधि-बुधि हेरा गेल। ठेहुनसँ निच्चाँ कमलाक पानि, बीच धारमे पैसि जिनगीकेँ हियाबए लगलौं, अन्तिम केसक मुकदमाक खुशी, साँप जकाँ छछाड़ी कटैत धारक धारा, बर्खाक बदला झकस, झाँट-विहारिक जगह हवाक लहकी पैरक पथिककेँ दू कोस आरो जाए पड़त। एगारह बजे पहुँचते पत्नी हलैस दौगल आबि, जेना जहलसँ पड़ा कऽ आएल होइ तहिना

दरबज्जा-आँगनक बीच दुहारिपर मोथीक बिछान बिछबैत बजली-

"पहिने जिरा लिअ। तखन खाएब-पीब। अपना हाथक राति छी, सुतैएमे कनी देरीए हएत ने।"

अपन मस्तीमे मस्त रही। सटले उतारा देलिऐन-

"अहाँ अपन ओरियानमे जाउ, अखन झीसीक मजा उठबए दिअ।"

OO

तिथि : 1 जनवरी 2014, शब्द संख्या : 453

मति-गति

रूपलालकेँ देखते राधारमण बाजल-

“रूप भाय, गाममे नै छेलौं की, बहुत दिनक बाद नजैर पड़लौं हेन?”

राधारमणक प्रश्नक उत्तर रूपलालकेँ जेना ठोरेपर रहै, बाजल-

“गाममे छी। केतए जाएब। हमरा ले तँ गामे सभ किछ छी, स्वर्ग-नर्कसँ लऽ कऽ हाट-कसबा धरि।”

रूपलाल आ राधारमण एक उमेरिया, संगे दुनू गोरे कौलेज तक पढ़ने। केते दिनपर दुनूकेँ भेँट भेल से तँ निसचित दिनक ठेकान नै छल मुदा मौसममे परिवर्तन जरूर आबि गेल छल। ई बात राधारमणकेँ बुझल जे रूपलालक छोट भाए मोतीलाल पनरह-बीस बर्खसँ एम.ए. करि कऽ महानगर कोलकातामे नोकरी करैए। आगू भऽ कऽ भैयारीक बात पुछब अनुचित बुझि राधारमण बाजल छल। ओना पेटमे रहै जे जहिना अपनो गामक आ आनो गामक पढौल-लिखौल छोट भाए, केना पिता तुल्य जेठ भाइक संग बेवहार करै छैथ। मुदा आगू भऽ कऽ बाजब एहेन प्रश्न अनुचितो होइ छइ। जे भाए पिताक परिवार बिसैर जाइए तेकरा लेल तँ उचितो भऽ सकैए मुदा जे से नै मानि चलैए तैठाम तँ अनुचित हेबे करत।

अनुचित ई जे केकरो भैयारीक बीच केहेन बेवहारिक सम्बन्ध छै, परिवारक भीतर किछु एहनो काज होइ छै जे गोपनीय रखल जाइ छइ। ओहेन काज जे परिवारकेँ समाजसँ जोड़ैए ओ, आ जे परिवार जोड़ैक काज छी, दुनूमे अन्तर होइ छइ। जँ सम्बन्धसँ हटि कऽ किछु प्रश्न धोखासँ एहेन उठि जाए, जइसँ बेवघात पैदा लइ तेहनो तँ भऽ सकैए। मुदा गपोक तँ कड़ी होइ छै, जइ कड़ीक बीच सभ बात जुड़ि सकैए, मुदा कड़ीक बीचक बातकेँ जँ पहिने रखल जाए तखन तँ एहेन बेवघातक स्थिति बनियेँ जाइए।

राधारमणक पेटक प्रश्न पेटेमे रहि गेल, मुदा बात तँ अँकुर गेल छल, कोनो-ने-कोनो गरे बाहर निकलबे करत। किए नै निकलतै, केकरो आँखि नै ने सीअल छै जे भैयारीक जिनगीमे आर्थिक विषमता एते दूरी बना देलक अछि जे एक भाँइक धिया-पुताकेँ उच्च कोटिक विद्यालय भेटै छै तँ दोसरकेँ ओहन भेटै छै जइमे ने नियमित पढ़ाइ छै आ ने पढ़ैक दोसर बेवस्था पुस्तकालय, वाचनालय, डिबेट इत्यादि छै, जइसँ ओकरा साधारणो स्तरक बोध होइ, यएह छी भैयारीक सम्बन्ध। पाशा बदलैत राधारमण बाजल-

“दुनू भाँइक परिवार आनन्दसँ छी किने?”

राधारमणक गोटी सुतरल। रूपलाल उत्तर देलक-

“हँ, बड़-बढ़ियाँ छी, मोतियोलाल गाममे अछि, चलू कलकतिया विस्कुटो खाएब आ चाहो पीब।”

ओना राधारमणकेँ केतेको काज सिरपर सवारी कसने रहै मुदा नवलोकसँ भेँट करब जरूरी बुझि सभ काजकेँ ठेलैत बाजल-

“ओना एकटा काजे बौआइ छी मुदा चलू। पछाइत बुझल जेतै।”

दुनू गोरे संगे विदा भेल।

दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बिछाएल मोथीक बिछानपर बैसल मोतीलाल अपनो तीनू बेटा-बेटी, बहिनक सेहो दुनू आ भाइक चारू बेटा-बेटीकेँ एकठाम बैसा, बीचमे बैसल। रूपलालक छोटका बेटाकेँ मोतीलाल पुछलक-

“बौआ, की नाओं छियौ?”

मोतीलालक प्रश्न सुनि दजबाक मन बौआ गेलइ। मनमे उठि गेलै परिवारक सभ। बाप बौआ कहै तँ माए नूनू, दीदी धींगरा कहै तँ जेठ भाय घुसका। पित्ती टून कहै आ पितियाइन टूनटून। सबहक अपन-अपन नाओं रखैक पाछू अपन-अपन कारणो। पिता ऐ दुआरे कहैत जे हम बौआ कहबै तखन ने बौआसँ बाउ सीखत। तहिना माएकेँ लोभ जे नूनू कहबै तखने ने नानी सीखत, जे जड़िये पकैड़ लेत। मुदा दीदीक आधार जे बच्चेसँ बेसी खुएलहा-पीएलहा देह, डेढ़ बर्खक पछाइत उठि कऽ ठाढ़ भेल। तहिना जेठ भाय नअ महिनामे डेग नै बढ़बैत देख घुसका नाओं रखि देलक। मोतीलाल घुघड़ूबला डोराडोरि छठियारेमे देने, तँए टून नाओं रखने। पितियाइनो तहिना हैँठा-हैँठीक मालामे छोटकी टुनटुना लगौल देने रहथिन तँए टून-टून नाओं रखने।

पित्तीक प्रश्न सुनि, जहिना खले-खल काजक हिसाबसँ रूपैआक खल लगा लोक रखैए आ काज अबिते निकालैए तहिना टून बाजल-

“टून।”

जेठ भायकेँ देखबैत मोतीलाल बाजल-

“ई के हएत?”

“बड़का भैया।”

बहिनक छोटकी बेटीकेँ देखबैत पुछलक-

“ई के हएत?”

“बहिन।”

“हम के हएब?”

“कलकतिया काका।”

मोतीलालक रग-रगमे गाम समाज समाएल मुदा जहिना कोनो बोनक फल अपन प्रेमी जीव-जन्तुक बासभूमि बनैत आ नै रहने ओकरा[3] भगेबो करैत तहिना मोतीलालक जिनगीमे भेल छल। शिक्षक पिताक समझ रहैन जे शिक्षा तँ शिक्षा छी चरम लक्ष्य होइते हेतै, अपने एकरा बुझि केना पाएब, एक ढंगक शिक्षा पाबि शिक्षक बनलौं आ वएह विषयक शिक्षक बनलौं, दोसरकेँ बुझि नै पेलिऐ। जखन बुझि नै पेलौं तखन दुसब अनुचित तँए शिक्षा शिक्षार्थीक विचारसँ हुअए। मुदा सेवा निवृत्ति भेला पछाइत महसूस केलैन जे किछु कमी जरूर भेल। सेहो तखन भेलैन जखन दुनू भाँइ रूपलाल-मोतीलालक जिनगी शुरू भेल। जेना रूपलाल अपना संग परिवार आ समाजकेँ जोड़ि मस्तीमे चलि रहल अछि तेना मोतीलालकेँ नै भऽ पाबि रहल छइ। पिताक विचारक लाभ मोतीलाल उठौने रहए। नीक विद्यार्थी रहने नीक-नीक विचार हाइए स्कूलसँ उठए लगलै। डाक्टर बनब, इंजीनियर बनब, एम.बी.ए. करब इत्यादि। सुतरबो केलै। एम.बी.ए. केलक। डिग्री लेला पछाइत जखन उनैट पाछू तकलक तँ बुझि पड़लै जे गाम छुटि जाएत! हमरा-जोकर काज कहाँ छै!

गामक जे बात बुझए चाहै छेलौं से आब केना हएत!! किए लोक मातृभूमि-मातृभूमि अनेरे रट लगौने रहैए। मुदा दोसर उपैयो तँ नहियेँ अछि। तखन? तखन तँ यएह ने जे जइ भूमिक दर्शन चाहै छी

[3] प्रेमीकेँ

ओ अन्तौ रहने कएल जा सकैए, मुदा नोकरीक किछु दिनक पछाइत ई बात बुझलक जे जेते दिन गाममे रहि गाम देखलौं ओहने चित्र ने मनमे अबो-अन्त रहत। जइ गाममे धार नै बोहै छल तइ गाममे धार आबि गामक भूगोल बदैल देलक, जइसँ उपजाबारीसँ लऽ कऽ जिनगीक क्रिया-कलापकेँ तहस-नहस कऽ देलक तेकरा जँ बीस बर्ख पहिलुका चित्र आगूमे देबै तँ की नवका तूरक लोक आन्हर नै कहत! आन भूमि दर्शन तँ ओतुक्का अनकूल छइ। जँ जीविते अन्हरा जाएब तखन देखलौं की आ देखेलौं कथी!

अपनाकेँ बलि चढ़ैत देख मोतीलाल जिनगी-काजमे किछु संशोधन केलक। संशोधन ई जे मास दिनक छुट्टीमे गाम आएब छोड़ि खुदरा-खुदरी छुट्टी बना मोसमे-मौसम आबए लगल। अपन सारोक डेरा लगेमे जइसँ सुविधो रहइ। पाँच दिनक छुट्टी दुर्गापूजामे सपरिवार गाम आबए लगल बाँकी असगरे मोतीलाल तीन दिन-चारि दिन लेल आबए लगल। मुदा से ऐबेर नै भेल। बंगालक पिकनिक छोड़ि गामेमे सालक पहिल दिन सपरिवार मनाबैक विचारसँ आबि गेल। पाँच तारीखकेँ चलि जाएत। ओना मनमे द्वन्द्व कोलकतेसँ उठि गेल रहै, मुदा गाम अबैत-अबैत आरो बढ़ि गेलइ। बढ़ि ई गेलै जे एक दिस लोक देशी-विदेशी संस्कृतिक ढोल पीटैए तँ दोसर दिस नगेड़ा बजा स्वागत करैत विदेशी आनियौं रहल अछि, ई केना हएत! घाओक दबाइयो खेबै आ कदीमो खेबै तखन तँ खलीफाक भीड़ानमे किछु बेसी समए लगबे करत। विचित्र स्थितिमे मोतीलाल बच्चा सबहक बीच अपन माथक बोझ उतारि रहल छल। एकटा नमहर समैक इतिहास रहल अछि केतौसँ मुड़ी आ केतौसँ नाँगैर जोड़ि नै हेतइ। कालखण्डक अनुरूप समाजिक ढाँचा बनैत रहल अछि। जँ से नै तँ जनकक इतिहासकेँ केना आधुनिक बना देल गेल अछि।

रस्तेपर रूपलाल आ राधारमणकेँ अबैत देख मोतीलाल उठि कऽ आगू बढ़ि बाजल-

"प्रणाम, भाय साहैब?"

मोतीलालक प्रणामक उत्तर दैत राधारमण बाजल-

"मोतीलाल, तोरे नाओं सुनि कलकतिया बिस्कुट खाइले एलौं हेन।"

बाँहि पकैड़ मोतीलाल राधारमणकेँ बैसबैत भातीजकेँ कहलक-

"बौआ, जाबे चाह बनतह ताबे जलखै लाबह।"

बहरवैया भाए-भावोकेँ अबिते रूपलाल अपनो बहरवैया भऽ गेल। चुपचाप चौकीपर बैस देखए लगल। राधारमण बाजल-

"केते दिन गाममे रहबह?"

राधारमणक प्रश्न सुनिते मोतीलाल बाजल-

"तीन दिन भाइए गेल परसू चलि जाएब। फेनो ऐगला महिना फगुआमे आएब।"

फगुआ सुनि राधारमण ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे एक दिस अंगरेजिया नववर्ष, दोसर दिस अनेको अपन नववर्ष, केतौ चैती तँ केतौ बैशाखी, केतौ सौनी तँ केतौ दिवालीक। मुदा प्रश्न तँ उठबे करत जे सात समुद्र पारक मनबै छी, अपन देशी किए छुटि जाइए? प्रश्न तँ सामंजसक अछि जे एकरा केना सामंजस कएल जाए। अपन सनातनी संस्कृति प्रेममय परिवर्तनीय अछि। जेकर फल छिऐ कण-कणमे ब्रह्मस्वरूप दर्शनक रूप तैंतीस करोड़ देवी-देवता, तेकर कोन नजरिये समावेश हएत। विचारकेँ आगू बढ़बैत राधारमण बाजल-

"पढ़ाइ-लिखाइक काज केहेन चलै छह?"

मोतीलाल-

"गाम आ महानगरमे बहुत अन्तर भऽ गेल अछि। गाम जेते आगू घुसकल तइसँ पाछूओ कम नै घुसकल। तेकर कारण भेल अछि नैतिकताक ह्रास। सए-सैकड़ा रूपैआक मोल मनुखक जिनगीक बनि गेल अछि। भाए-भैयारीक सम्बन्धमे चलैने बनि गेल अछि जे जखने जन्मल तखने भीन! यएह छी रामायणिक चारू भाँइक परिवारिक सम्बन्ध। गाम-गाम रामायणसँ अकास गूँजि रहल अछि, दोसर दिस परिवारिक सम्बन्ध नष्ट भऽ रहल अछि तैठाम समाज आ समाजिक सरोकार केहेन हएत, से तँ सोझहे अछि।"

ओना राधारमणक प्लेटक रसगुल्ला सठबो ने कएल छल मुदा मनमे एहेन सुआद जरूर आबि गेल छेलै जे जे प्रश्न मोतीलाल उठौलक ओ केकर प्रश्न भेल। हजार हाथ मंगनिहारकेँ एक हाथ केते दऽ सकैए। मुदा लाजिमी बात ईहो ऐछे जे मातृभमिक सेवामे अपन कथी योगदान अछि। देश-विदेशक बीच अनेको भाषा-भाषी क्षेत्रमे रहि एतबो नै कऽ सकै छी जे ओइ भाषाक साहित्यकेँ मैथिलीमे आनि सकी। अपन पहिचान अपन राशन कार्डपर मैथिली भाषी दर्ज करा सकी। खाएर जे हौउ, कोउ काहू मगन, कोइ काहू मगन। मोतीलालक गंभीर प्रश्नक उत्तर राधारमण नै दऽ बाजल-

"छेनाक छी किने?"

जहिना पानिक डुमडुमी खेलमे हरदा बजा चोर बनौल जाइ छै तहिना मोतीलालक मनमे भेल। मुदा शब्दवाण कलेजाकेँ बेध देने छेलइ। बेधने ई छेलै जे किछु प्रश्नक विचार करब, मुदा पाहीपट्टी बुझि राधारमण भाय प्रश्नकेँ टारि देलैन। अपन मजबूरी देखबैत मोतीलाल बाजल-

"भाय साहैब, अपन बेथा जे नहियौं कहब तँ बुझबै केना। किछु पढ़ै-लिखैक इच्छा मनमे ऐछे, मुदा जइ धरतीपर बास करै छी ओकर

रूप रंग अपन गाम जकाँ नै अछि, जेहेन जरूरत छै तेहेन देख नै पबै छी, एहेन इसथीतमे फँसि गेल छी। की करब से बाटे ने देख पबै छी।"

मोतीलालक प्रश्न फेनो राधारमणकेँ घुरियाएल बुझि पड़ल। अपन इच्छा जे एक गामक परिवारकेँ शहरक परिवार संग केना सामंजस बनौल राखल गेल अछि। केकरो कहैसँ पहिने अपन बिसवास अपनापर रखए पड़ै छै, जँ से नै हएत तँ शब्दजालमे ओझरेबे करत। बाजल-

"परिवारक की सभ भार अहाँ ऊपर अछि आ की सभ भाय साहैबकेँ देने छिऐन?"

राधारमणक बात मोतीलालकेँ लागल नै, एक विचारधाराक धार बहैत बुझि पड़ल। बाजल-

"नोकरीक दरमहे केते होइ छै तखन तँ गामक हिसाबे बेसी होइते छै, तइमे अदहा-अदही कऽ लइ छी। अपनो आगू मुहेँ ससरैक अछि आ परिवारोकेँ ससारैक अछि। भाय साहैब कहियो किछु ने मंगै छैथ, अपन ढंग चलैक छैन, तइसँ परिवारक भारो ने बुझि पड़ै छैन मुदा तैयो बाल-बच्चाक पढ़ब, बर-बेमारी आ लत्ता-कपड़ाक भार उतारिये देने छिऐन।"

राधारमण-

"एतबे किए उतारने छिऐन, कहुना तँ श्रेष्ठ भेला किने?"

राधारमणक बात सुनि मोतीलाल मुस्की दैत बाजल-

"भाय साहैबकेँ घुमै-फीड़ैले मोटर साइकिल लइले कहै छिऐन से मानिये ने रहला अछि। अहाँ संगतुरिया छिऐन कहियनु।"

चौकीपर बैसल रूपलाल दुनू गोरेक बात सुनि बाजल-

“अहाँ सबहक विचार अछि जे मोटर साइकिल कीनि ली। मुदा आब हम ओइ-जोकर रहलौं जे ड्राइवरी करब। जइ गाममे रहै छी तइमे सभ तरहक जरूरैत तँ गामेमे पूर्ति भऽ जाइए तखन अनेरे सवारी लऽ कऽ की करब।”

रूपलालक विचारकेँ राधारमण टारैत बाजल-

“गाड़ी-सवारी रहलासँ अपनो सुविधा हएत आ अनको बेर-बेगरतामे काज औत। अच्छा सवारीक बात छोड़ू, रहै-जोकर घर ऐछे, तखन तँ कोनो मलिनता भैयारीक बीच नहियेँ हएत।”

रूपलाल-

“मलिनता किए रहत। भैयारी होइ आकि दियादी आकि समाजिक, सबहक बीच सीमा अछि अपन सीमाक बीच अपन जिनगी अछि तखन किए कोनो मलिनता औत। बेजान गाड़ियो-सवारी सड़कपर चलिते छै मुदा कहाँ केतौ बलउमकी ढाही लइए। केतौ जँ एक दोसरसँ टकराइतो अछि तँ ड्राइवरक गलतीसँ टकराइए।”

चौकीपर सँ उठैत राधारमण बाजल-

“बाउ मोती, बड़ बेर भऽ गेल। जाइ छी। जखन गाम अबै छह तखन एको-आध घन्टा लेल भेँट होइत रहिहऽ।”

मोतीलाल-

“मनमे तँ अपनो रहैए, मुदा जिनगी ने दूदिसिया बनि गेल अछि, किछु जे गपो-सप्प करब, से की करब। तखन तँ लोकक जिनगीए केतेटा होइ छइ। कहुना-ने-कहुना कटिये जाइ छइ।”

राधारमण-

“एना नै बाजह। सदिकाल मनमे रखि मनुख-परिवार-समाज,

देश-दुनियाँक बीच अपनाकेँ ठाढ़ करैक परियास करह।”

OO

तिथि : 07 जनवरी 2014, शब्द संख्या : 1807

अपन सन मुँह

रेलबे स्टेशनक प्रतीक्षालयक कुरसीपर बैसल विष्णुमोहनक मनसँ अनायास खसलै-

“जहिना अपन सन मुँह लऽ कऽ आएल छेलौं तहिना अपने सन नेने जाइ छी।”

मनसँ खसिते विचारक रस्ता बुधि पकड़लक। रस्ता पकैड़ते मुहसँ खसलै-

“कोन मुहेँ आएल छेलौं आ कोन मुहेँ जाइ छी। हे स्टेशनक विश्रामालय अन्तिम प्रणाम!”

परोपट्टामे बड़ी लाइनक गाड़ी आ बिहारकेँ महानगरसँ जुड़ैक बाटक चर्च सुनिते लोक, सूतल गाए जकाँ कान पटपटौलक। एन.एच.57क दूरबीनक काज शुरू होइते अन्नक संग कुअन्नो सौनक मेघ जकाँ सिसकए लगल। दूरबीनसँ देखिनहार इंजीनियर सभसँ गामक लोक सभकेँ भेँट भेलै। जहिना साँपक मुँह साँप चटैए तहिना लोक पुछब शुरू केलक। गामक लोको तँ बुधिक बखारीए छी, मरूआक छी आकि तीसीक, धानक छी आकि चाउरक से बुझैक काजे कोन छइ। सरकारी छी सरकार बनबैए। कमीशनक कारोबार

हेबे करतै। जहिना सीढ़ीनुमा ढाल अछि तहिना कमीशनो चढ़बे करत। मुदा से बिनु चाह-पान खुऔने थोड़े हएत। भाइ! मिथिला छिऐ, हमरा गाम अहाँ काज करए एलौं आ कुशलो-छेम नै पुछी, चाहो-पान नै कराबी तखन हमरा सबहक सेखीए की रहत। बहरवैया इंजीनियर मिथिलाकेँ पवित्र भूमि बुझबे करैए। भाषा नइ बुझैए तँ नै बुझह मुदा पवित्र बुझि पावन तँ करबे करत। सोझ मतिये बजबो करैत-

“विदेशी पूजीक सहयोगसँ बनि रहल अछि, पाइक कमी नै छै, इलाका धुधुआ जाएत।”

नक्शा बनला पछाइत जखन जमीनक प्रश्न उठल तँ हजारो बर्खक मुइलहा जमीन सबहक मुँहमे स्वाती नक्षत्रक अमृत खसल। सए-सैकड़ा रूपैआक कट्ठा जमीन हजार-लाखमे कूदल। गाम-गाम चाह-पानक दोकान चौकक निर्माण केलक। सड़कक बीच जे जमीन पड़ल ओकर हस्तान्तरण शुरू भेल। भेल दुनू, किछु गोरेक जमीन लूटा गेल तँ किछु गोरे लूटबो केलक। लूटलक ई जे ताल-मेल बैसा टटघरकेँ कोठा मकानक दाम लेलक। खाली जमीनक दामेक लाभ भेल से नै, गाम-गामक रस्ता-बाटक सम्पर्को बनल। मुदा गाम-गामसँ पड़ाएल लोक दुआरे पाइक जेहेन मोल हेबा चाही से नै भेल। संगे जइ गतिये हेबा चाही सेहो नै भऽ रहल अछि।

पाँच कट्ठा घराड़ीक जमीनक अढ़ाइ कट्ठा इन्द्रमोहन आ विष्णुमोहनक सेहो पड़ल। ओना सड़कक कातक जमीनक मोल तखने उचित होइत जखन सड़क बरोबरि आ किछु ऊपर उठा ओकरा कारोबारमे आनल जाए, नै तँ सिरकट भऽ ओहेन बनि जाइए जइमे सड़कक कूड़ा-कड़कटसँ लऽ कऽ बर्खाक पानि धरि बसए लगैए। इन्द्रमोहनोक जमीनक हाल सएह हएत। इन्द्रमोहन आ विष्णुमोहन

सहोदर भाए। पिताक नाओं कृष्णमोहन।

कृष्णमोहन गामक बगले गामक लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक छला। ओना लोअर प्राइमरी स्कूलोक शिक्षकक एक सीमांकन भाइए गेल जे मैट्रिक पास शिक्षक हेता। मैट्रिकक सर्टिफिकेट तँ कृष्णमोहनकेँ नै रहैन मुदा निच्चाँसँ ऊपर श्रेणी धरि स्कूलक पढ़बैक लूरि तँ रहबे करैन। लूरिक दोसरो कारण रहैन। कारण ई रहैन जे ओना स्कूलक शिक्षा नै भेटल रहैन मुदा नाना अपना लग रखि पढ़ै-लिखैक एहेन लूरि बना देने रहैन जे धुड़झार सभ किलासमे पढ़बै छला। जइसँ विद्यार्थियो आ अभिभावकोमे मान-समान रहबे करैन, जेकर जीवंत प्रमाण छल जे सिरिफ पढ़ौले विद्यार्थी नै आनो-आन प्रणाम करिते छेलैन। सुबुधिये ने प्रणम्य होइत से तँ अपन काजक ओकाइत धरि रहबे करैन। नोकरीक शुरूमे सरकारी दरमाहा कृष्णमोहनकेँ नै रहैन हुनकेटा नै रहैन से बात नै आनो शिक्षककेँ नै रहैन। मुदा तँए पढ़ौनिहार बेइमान रहए से नहि। अरबा चाउर शनिचरा आ एकटा दूटा पाइ तँ अठबारे शैने-शनि दैते रहैन। ओना किछु विद्यार्थीकेँ शनिचरो माफ रहए। तैठाम कृष्णमोहन सबुर करैथ जे जेहने दान तेहने ने पुन। माफक कारण आर्थिक स्थिति छेलइ। ओना ओहन विद्यार्थीक संख्या कम रहए।

दस बीघा खेतबला कृष्णमोहन सोलहन्नी पठने-पाठनक बीचक जिनगी धारण कऽ लेलैन तइसँ खेतीक आमदनी सेहो कमि गेलैन। ओना खेत बँटाइ लगौने रहैथ मुदा उपजा दूधक-डारही जकाँ रहैन। कारणो छल, एक तँ समैपर खेती नै भऽ पबै, दोसर खेतीक खोराक तँ पानि छिऐ से नै रहैन, तैसंग कोनो साल बीड़ारेमे बिहैन रौदी भेने जरि जाइत तँ कोनो साल बेसी बरखा-बाढ़ि एने गलि जाइ। जरन-गलन खेतीक प्रमुख बीमारी भाइए गेल रहइ। ओना कृष्णमोहनक किछु

बँटेदार खेतीमे पूजी लगा उद्योग बनबए चाहै छल मुदा खेतीक पूजी दू-दिसिया होइत। एक दिस खेतकेँ चौरस करब, पानिक ओरियान करब, जीव-जन्तुक उपद्रवक बचाव करब, तँ दोसर दिस होइत नीक बीआ, खाद, दबाइ कीनि उपजा बढ़ाएब। मुदा तइमे कृष्मोहन पाछू हटि जाथि। हटैक कारण रहैन जे पानि लेल बोरिंग-दमकल जे कारखानाक समान छी, तइमे मनमाना दाम रहने अधिक पूजीक जरूरैत पड़ैत, तहिना खेतो चौरस आकि छहरदेवालीसँ घेरब आकि कँटहा तारसँ बेरहब सेहो तहिना। आब ओ समए रहल नै जे टल्ला-छिट्टासँ लोक खेत सेरिऔत, गामक लोक भागि कऽ शहर-बजार पकैड़ लेलक तखन केना सेरिऔल जाएत। टेकटर सभ बढ़ियाँ काज करै छै मुदा ओकर तँ खर्चो बेसी छैहे। ओना कृष्णमोहनकेँ एते जमीन छेलैन जे किछु जमीन बेच जँ पानिक प्रबन्ध करए चाहितैथ तँ कऽ सकै छला मुदा बाप-दादाक देल जमीन केना बेच सकै छला! प्रतिष्ठाक प्रश्न तँ रहबे करैन। भूमिए ने भूमा आ भूषण दुनू छी। बँटेदार अपन पूजी अहू दुआरे नै बेसीयबऽ चाहैत जे उपजाक बँटबारा उचित नै छइ। खेतीमे उपजाक अदहासँ बेसी बँटेदारकेँ लगते लगबए पड़ैए, तैठाम जँ अदहा बँटाइ भेटत तँ घाटा हेबे करत। आब कि कोनो सतयुग छी जे लोक अपन पूजी गमा दोसराक उपकार करत। आब तँ ओ जुग आबि गेल अछि जे लोक दानो-पुन अपने धिया-पुता धरि करैए। जँ से नै तँ महारथीक बेटे किए महारथी बनला, दोसर किए ने बनि सकला, जखन कि ओ सभ दानीए नै महादानी छला।

कृष्णमोहनक पहिल सन्तान इन्द्रमोहन। इन्द्रमोहनक जन्मक समए हुनकर मातो-पिता जीविते रहथिन। परिवारमे इन्द्रमोहनकेँ पैबते बाबा-दादी हृदए फाड़ि असीरवाद देने रहथिन जे कुलमन्त बनि जिनगी जीविहऽ।

समए बीतल हराइत-ढराइत कृष्णमोहनोकेँ स्कूल भेटलैन। शनिचराक आशा रहबे करैन तैपर पैंतालीस रूपैआ दरमहो भेटए लगलैन। मनक आशा पुरबै दुआरे इन्द्रमोहनकेँ इमानदारीक संग पढ़ौलैन। अपन कोठीक जे धान-चाउर रहैन ओ खोलि कऽ दऽ देलखिन। मुदा इन्द्रमोहनकेँ डिग्री-डिप्लोमा नै भेट सकलै। अछैते बुधिये इन्द्रमोहनकेँ अपना बरबरि काज नै देख कृष्णमोहन चिन्तित रहबे करैथ मुदा उपैये की। सरकारमे जे अछि ओकर तँ अपने लगुआ-भगुआ सड़कपर बौआइ छै, अनका कथी देखत। मुदा एते उपए तँ कृष्णमोहनकेँ कइए देलखिन जे खेत बँटाइए रहए दहक, अपनो दरमाहा भेटते अछि, पेन्शनोक गप-सप्प चलिये रहल अछि जाबे जीब ताबे तोरा तकलीफ नै हुअ देबह। जइसँ इन्द्रमोहनकेँ अपना सिरे काज किछु ने। मुदा शिक्षकक बेटा रहने परिवार तँ प्रतिष्ठित भाइए गेल छेलैन। केना ने होइत, जँ सरस्वतीक बास भूमि स्वर्ग भूमि नै बनै तँ केकर बनइ। अपनो दरबज्जापर लोकक आवाजाही आ अनको ऐठाम आएब-जाएब इन्द्रमोहनक रहबे कएल। पढ़ल-लिखल रहने गामक लोक इन्द्रमोहनकेँ काजक भार दिअ लगलैन। खेती-पथारीक समए आ ओकरा करैक लूरि तँ लोक पुछए लगलैन। समाजमे झूठो केना बाजल जाए तखन तँ महिना-तीर्थ बुझैले किछु जरूरत पड़बे करत। तैसंग खेती करैक तरीका सेहो बुझए पड़त, जँ से नै बूझब तँ लोक अनेरे कहत जे मास्टरक बेटा तास्टर भऽ गेल। तइले जँ सोलहन्नी नै तँ चौअन्नियोँ सत् नै रहत तँ सोलहन्नी झूठो आँखिक सोझहामे केना देखल जाएत।

ओना पोथीओ-पत्रा प्रमाणिक अछि मुदा तेतबेसँ काज चलैबला नहियेँ अछि। जेना वायुमण्डलक रूप रेखा बदलने मौसमक रूप-रेखा बदैल जाइत तेना तँ पोथी-पत्राक तानी-भरनी नै बदलैत, तँए किछु आरो पढ़ैक जरूरैत अछि। इन्द्रमोहनकेँ मनमे उठिते बुधि

बिचरलै, बिचैरते भूगोल-इतिहास दिस बढ़ल। मुदा प्रश्न फँसि गेलै दुनूक साल-मासक हिसाबमे मलमास। तीन सालपर होइए। जेकर कोनो मोजरे ने छै, जखन पूजा-पाठ, पाबैन-तिहार हेबे ने करत तखन खेती-पथारी केना कएल जाएत। मुदा विचारलो केकरासँ जाए। भूमि छेदन अधला भेल। मुदा भूमि तँ देहो होइए, मनो होइए। समाजक निरमौत समाज होइए। तइमे समाज तेहेन चालैन जकाँ भऽ गेल अछि जइसँ परदा बनब कठिन अछि। घोर-मट्ठा भेल मनमे इन्द्रमोहनकेँ उठल जे अनेरे दूध-दही फुटाएब आकि घोर-मट्ठा, तइसँ नीक जे दूधे उठा कऽ पीब जाइ। सबहक मट्ठी भऽ जेतै। विचारमे मनो मानि निर्णए कऽ लेलकै जे जेते बुझल अछि ओ बुझलाहा भेल बाँकी बिनु बुझल भेल, दुनू बात लोककेँ कहबै। जे मन फुरतै से मानि करत। मुदा लगले मनमे दोसर धक्का लगलैन। ओ ई जे बुझबो तँ एक रंग नै होइए। कोनो दोसराक मुँहक सुनल होइए तँ कोनो किताबक पढ़ल तँ कोनो अपना हाथे कएल रहैए तखन तीनूमे केकरा की कहबै। हरि अनंत हरि कथा अनन्ता' कहि राम-राम कऽ जिनगीकेँ रामरो बना समाजिक लोक इन्द्रमोहन बनि गेल।

नोकरीक अन्तिम दस बर्खक बीच पिता-कृष्णमोहनक जिनगीमे उछाल एलैन। पाँच सन्तानक बीच परिवारमे तीनू बेटियो आ जेठ बेटा-इन्द्रमोहनकेँ बिआह-दुरागमन कऽ निचेन भऽ गेल छला। गामसँ थोड़े हटि दोसर गाममे हाइस्कूल बनने विष्णुमोहन मैट्रिक पास कऽ नेने छल। एका-एक पैंतालीस रूपैआक काजक मूल्यो हजारमे बदैल गेलैन। बेटाक मनमाना शिक्षा लेल हृदए खोलि देलखिन। एते जरूर केलैन कृष्णमोहन जे इन्द्रमोहनसँ सेहो पुछि लेलखिन। सोझमतिया इन्द्रमोहनकेँ प्रश्नक उत्तर दइमे मिनटो नै लगलै। मन कहलकै-

"अनकर दालि-चाउर अनकर घी हमरा परसैमे की। जेठ भाइक

मान-मर्यादा तँ अपने बनबए पड़त। से तँ अनके सिरे भेट रहल अछि। एते हल्लुक माटि तँ बिलाइयो खुनि सकैए, मनुख तँ सहजे मनुख छी जे पाताल खुनि जौमैठ गाड़ि सीमांकन कऽ लइए।"

जहिना पिताक उल्लासक प्रेरणा आ सहयोग तहिना भाइक पाबि विष्णुमोहन एम.बी.ए. केलक। एम.बी.ए. केला पछाइत बैंकक मैनेजरक ग्रेजुएट कन्या संग बिआह भेल। आमजन जकाँ बन्हाएल जनक जिनगी नै होइत। चारित्रिक प्रमाणपत्रक रूपो-रेखा बदैल जाइ छै, जेना बैंक-कारखानाक बीच चरित्र निर्माण भेने परिवारमे नोकरीक आगमन भाइए जाइत अछि। नोकरीक आश्वासनपर विष्णुमोहनक बिआह कृष्णमोहन करा देलखिन। बिआहक किछुए दिनक पछाइत विष्णुमोहनकेँ भोपालक बैंकमे नोकरी भऽ गेल। नीक दरमाहा नीक सुविधा। मुदा सुविधो तँ सुविधा चाहैए।

जहियेसँ कृष्णमोहन सेवा निवृत भेला तहिये हराएल-भोथियाएल बीमारी सभ आबि दाबए लगल रहैन। जेते दरमाहा रहैन ओ टुटि कऽ अदहा भऽ गेल रहैन। इन्द्रमोहनक बेटो-बेटी पढ़ै-लिखै, बिआह-दान करै-जोकर भेले जाइत रहैन।

असगरे दरबज्जापर बैसल कृष्णमोहन पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन। पतिक अबाज सुनि राधा लगमे आबि बजली-

"की कहलौं?"

जेना हारल-मारल-थाकल बटोही कोनो गाछ लग बैस जिनगीक दुनू छोर पकैड़ते रगड़ाए लगैए तहिना कृष्णमोहनक स्थिति छैन। परिवारक जे मान-प्रतिष्ठा एक लोटा पानिक अछि ओ केना उलटा कऽ उलटा देब। केहेन अतिथि दरबज्जापर औता, पतिपाल कठिन हएत। मुदा जँ नै बाजब तँ पुराएब केतए-सँ। अपने बीमारीसँ ग्रसित छी जेते अन-पानि नै खाइ छी तइसँ बेसी दबाइ खाइ छी। अखन धरि

जे भार बेटा इन्द्रमोहनक कान्हपर नै आबए दिअ देलिऐ ओ केना सम्हारि पौत! मुदा लगले मनमे उठिते कृष्णमोहन बजला-

"दू साल विष्णुमोहनकेँ नोकरी भेना भऽ गेल, पहिल साल दू-तीन बेर गाम आएल मुदा दोसर सालसँ नै आएल। परिवारक नीक-अधला पुछलक। मुदा..?"

पतिक थकथकाएल गति देख राधा बजली-

"जाधैर सामर्थ छल ताधैर अपना जकाँ परिवारक केलिऐ, मुदा आब ने ओ सामर्थ रहल आ ने शक्ति, तखन तँ जे अछि तेकरे कान्हपर ने दिअ पड़त। से जँ नै देबै तखन अन्हराएल माए-बापक तीर्थाटन केना हएत। तइले तँ श्रवणकुमारक परीक्षा लिअ पड़त किने?"

पत्नीक विचार कृष्णमोहनकेँ जँचलैन। दुनू बेकतीक बीचक बात तँए ने इन्द्रमोहन ने किछु बाजए चाहै छल आ ने पुतोहु। विष्णुमोहनकेँ पत्रक माध्यमसँ भेँट करए कहलखिन। एबासँ विष्णुमोहन नासकार केलक।

बेटाक असहयोग देख कृष्णमोहनकेँ अपन केलहामे दोख भेटलैन। कहुना घीचि-तीड़ि साल भरिक अगाति आठ बर्खक बिच्चे दुनू बेकती मरि गेला।

अखन धरि दुनू भैयारी इन्द्रमोहन-विष्णुमोहनक बीच दू अलग-अलग समाज बनि गेल छल। ओना गामक समाजसँ बाहरक समाजक डारि फुटल मुदा दूरी एते बनि गेल जे समकक्षपर आबि गेल। सासुरक सम्बन्धक संग विभागीय तेते हित-अपेछित विष्णुमोहनकेँ बनि गेल छै जे अपन सालक छुट्टीए हरा जाइ छइ।

ओना विष्णुमोहनक बिआहमे कृष्णमोहन नगद-नारायण लऽ कऽ बैंकमे जमा नै केने रहैथ, मुदा तँए विष्णुमोहनक नामे बेटी-

जमाइक नाओंपर जे सासुरक परिवारमे बजट बनि गेल छल ओकर हकदार तँ बनियेँ गेल छल। भोपालमे जइ दिन डेरामे विष्णुमोहन पहुँचल, तीनू कोठरी तँ भरिये गेल रहइ। केना नै भरितै, जइ परिवारक बिआहक बजट पचीस लाखमे चलि रहल अछि तइमे जिनगीक उपयोगी वस्तु केना छोड़ल जाएत। अखन धरि विष्णुमोहनकेँ तेना भऽ कऽ कोनो जिनगी नै समाएल छेलइ। नै समाएब भेल, जहिना किसान हुअए आकि वेपारी आकि नोकरिहारा, आर्थिक स्तरक हिसाबसँ जिनगी बना जीवन धारण करैए। अगुआएल-पछुआएल साल भरिसँ लऽ कऽ जिनगी भरिक किछु आवश्यक वस्तुक पूर्ति सासुरसँ भाइए गेल रहइ। जहिना ग्रीन रूममे पात्र अपन, सात्विक हौउ आकि राजसी आकि तामसी, मेकअप केला पछाइत स्टेजक अधिकारी तँ भाइए जाइत अछि। विष्णुमोहनकेँ सएह भेल। एक तँ ओहन परिवारक लड़की संग बिआह भेने जहिना परिवारसँ हराएल विष्णुमोहन तहिना अनुभवी पत्नी। ओना रेखा अखन धरि माने बिआहसँ पहिने धरि, कौलेजक छात्रा रहली मुदा परिवारक क्रिया-कलाप देखने अपन जिनगीक ऊपरक अनुभव तँ भाइए गेल रहैन। ईहो कोनो हराएल बात थोड़े छी जे बिआहसँ पहिने, बेटा भलेँ पिताक छत्रछायामे रहि नै बुझि पाबए मुदा बेटी तँ सभ जनिते रहैत जे हमरा ऐ घरसँ जेनाइ अछि। आन घरकेँ अपन घर बनाएब अछि...।

तखन तँ घर बनबैक केहेन कारीगर अछि निर्भर करैए तैपर। जहिना सभ शक्तिकेँ हाथमे रखि करए चाहैए तहिना रेखो दुनू परिवारमे केलैन। समैयो अनुकूल। समए अनुकूल ई जे ऊपरक परिवारसँ आएल रहने ऊपर चढ़बैमे ढलान रहैत। ढलान ई जे जहिना सभ आगू बढ़बकेँ उचित उदेस बुझैए तहिना रेखो किए ने बुझती। जखन ऊपर श्रेणीक सुआगत मध्यसँ नै करब तँ सुआगत की भेल? भलेँ अपमान नै कहबै मुदा सुआगतो तँ नहियेँ भेल।

परिवारक डोरकेँ रेखा ऐ तरहेँ पतिकेँ खींच धकिया नेने जे विष्णुमोहन दिन-राति वौआए लगल। एक तँ बैंकक नोकरी समैपर आफिस पहुँचब अछि, नहाइ-खाइ, रस्ता-बाटक समए अपन। तैसंग काजक भार एते जे एको मिनट देरी भेने काजक सम्पादनमे कमी औत जे अतिरिक्त समैमे पुरबए पड़त। खाएर जे हौउ, विष्णुमोहनक साख तँ आफिसमे छैहे।

नोकरीक शुरूक सालमे विष्णुमोहन एक-आध बेर गाम एबो कएल मुदा रसे-रसे एक नव समाजक पकड़ आ दोसर गाम-समाजसँ बिछोह हुअ लगलै। भाइए गेलइ। बिछोहक अनुकूल परिस्थिति बनि गेल रहइ। अनुकूल ई जे, सालमे मात्र पचीस दिनक छुट्टी भेटै, जेकरा छुट्टी नै मानल जाइ छेलइ। एक तँ गामक रस्ता, सवारीक असुविधासँ तीन दिनक, दोसर गाड़ी-सवारीक रस्ता भरिगरो आ उकड़ुओ होइते छइ। तइमे छोट-छोट बच्चाक चलब आरो भारी होइ छइ। दोसर जइ नव समाजमे आगमन भेल छेलै ओइमे दू तरहक एहेन भूमि छेलै जे भरपुर उर्वर छेलइ। ओ भूमि छल सासुरक परिवारक सम्बन्धीक संग सम्बन्ध बढ़ब आ दोसर छल बैंकक संगीक संग। दुनूक बीच एहेन उत्सवी माहौल बनल रहै छल जे पचीस दिनक छुट्टीक पते नै पाबि पबै छल। किछु मेडीकल सेहो चलि जाइ छेलइ। जइ सभसँ गाम छुटि गेलइ।

ओना अपन भार हटबै दुआरे इन्द्रमोहन पत्रक माध्यमसँ जानकारी दैते छल मुदा जहिना काजक अनिच्छाबलाकेँ रंग-बिरंगक बहाना फुरैत तहिना बहाना बना विष्णुमोहन खेप जाइ छल। ऐ तरहेँ पनरह बर्ख बीति गेलइ। ओना पनरह बर्खक बीच विष्णुमोहनक डेरामे वस्त्र-जात, इलेक्ट्रोनिक वस्तु, बरतन-बासन इत्यादि तेते भऽ गेल छेलै जे अपन सातो कोठरीक मकान भरि जकाँ गेल छेलइ।

अपन मकान, अपन गाड़ी भाइए गेल छेलइ। लोकोक आएब-जाएब रहने, मकानक ऊपरमे पहिने समियाना तेकर पछाइत ऊपरो मकान बनाएब जरूरी भेलै। कियो जमीनपर बैस जिनगीक रस-रहस्य बुझैत तँ कियो तीन तल्ला-पँच तल्लापर, दुनूक उदेस एक केना!

बीचमे एकटा आरो भेल। भेल ई जे गामो आ अगलो-बगलक मिडिल स्कूलक शिक्षक दस दिन घुमैक विचार मध्य प्रदेशक केलैन। भोपालसँ यात्राक आरम्भक विचार केलैन। गौंआँ विष्णुमोहन तँए असुविधा नहियेँ हेतैन। तैसंग ईहो विशेष जिज्ञासा जे तीन दिसम्बर 1984 इस्वीक महुराएल गैस घटनाक फल-कुफल देखब सेहो छेलैन।

दसो गोरेक बैच भोपाल स्टेशन उतैर विष्णुमोहनकेँ फोन केलैन-

“हम सभ घुमैक विचारसँ आएल छी।”

गौंआँक बात सुनि विष्णुमोहन जवाब देलकैन-

“अखन हम भोपालसँ अस्सी किलोमीटर हटि मित्रक ऐठाम छी। बैंकक डायरेक्टरसँ लऽ कऽ सभ छैथ। तँए नै किछु कऽ सकब।”

ओना दसो शिक्षक मिडिले स्कूलक रहैथ मुदा विचार दस रंगक रहैन। किनको विचारमे झंझ-मंझ भेनौं अपनामे एकमत सेहो भाइए जाइत, मुदा एकाध घन्टा घमर्थनमे चलिये जाइ छेलैन। विष्णुमोहनक उत्तरक प्रतिक्रिया भेल? पहिल शिक्षकक विचार-

“अस्सी किलो मीटरपर रहए आकि साए किलोमीटरपर, मुदा अँटकैक जोगार तँ कऽ सकै छल, सेहो कहाँ केलक।”

दोसर गोरेक कहब-

“नोकरिहारा अनका हाथक भऽ जाइए तँए अपना जुतिये चलब कठिन भऽ जाइ छइ। अपना सभ अपना भरोसे ने आएल छी, बड़बढ़ियाँ विष्णुमोहन गौंआँ छी अपन समाचार कहलिऐ।”

अहिना दसो गोरेक विचार दस रंगक आएल। अन्तमे तँइ भेल जे अनेरे बक्-बातमे समए गमाएब उचित नहि। कियो अपना लेल करैए, सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, अपन-अपन काज छइ।

सहमति बनिते नहा-धो कऽ स्टेशनसँ निकैल होटलमे खेनाइ खा टेम्पू पकैड़ गैस कारखाना देखए विदा भऽ जाइ गेला। तीन दिसम्बर उन्नैस साए चौरासी इस्वीमे मिथाइल आइसो साइनेट गैसक रिसाव भेल जइमे दू लाख पचास हजार लोक मरल। जहिना 6 अगस्त 1945 इस्वीकेँ जापानक नागाशाकीमे आ हिरोसिमापर घटना भेल आ तीन पीढ़ी तक लुल्हा-नेंगराक जन्म होइत रहल तहिना ने भोपालोमे भेल। साँची-स्तूफ, अन्नपूर्णा देवीक मन्दिर, शिप्रा तट (पहाड़ी घाट) हॉडी खोह, जे तीन साए मीटर गहींर छै, भेड़ाघाटक चौंसैठ जोगिनी मन्दिर, दुर्गावतीक संग्राहालय, माइक बगिया जे नर्मदा आ सोनभद्रा नदीक उद्गम स्थल छी, खजुराहो घुमैत-घुमैत दसो दिनक छुट्टी बीति गेलैन। स्कूलो खुजैक समए भेने सभ कियो गाम चलि एला।

गाम एला पछाइत विष्णुमोहनक काज समाजक मंचपर आएल। जेते मुँह तेते विचार। मुदा भेल ई जे जहिना राज मिठाइ जिलेबी आ मुरहीक प्रेमी कचड़ी घीउक आकि तेलक लोहियामे पएर रखते आँगन-अगनेय छुबि प्रणाम करिते शक्ति पाबि ऊपर आबि अपन रूप सजबैए तहिना विष्णुमोहनक बेवहारक प्रतिक्रिया भेल। एहेन नै भेल जे पुरी जकाँ लोहियाक मठौठे पकैड़ छलछला, खेनाइ पूर्ति करैत। एक स्वरसँ समाजक स्वर सुर-सुरा उठल। जे समाजक संग जेहेन बेवहार करत ओकरो संग समाज ओहने बेवहार करतै। जघन्य अपराध जँ समाजक बीच निंदित नै हएत तँ कागजक बीच लिखल कानून-कायदा कथी कऽ सकैए। भेल ई जे विष्णुमोहन समाजसँ अघोषित वहिष्कृत भऽ गेल।

जहिना जेठुआ बर्खा भेने माछक अवार चलै छै तहिना एन.एच 57क बनने गामो-घरमे अवार चलल। जइ सोभावक इन्द्रमोहन छैथ ओ लूटेबे करता। मुदा से नै भेल। पाँचो कट्ठाक घराड़ीमे अढ़ाइ कट्ठा पड़ने भैयारी केतौ बाधा नै भेलै। कारबारी इमानदार भेटलैन। एक तँ घराड़ी तैपर घर। निच्चाँ पजेबा ऊपर चदरा घर, कोठा भावक संग घराड़ी भावमे बिकाएल। करीब दू करोड़क सौदामे सबा करोड़ इन्द्रमोहनकेँ हाथ लगलैन।

जमीनक सभ काज सम्पन्न भेला पछाइत विष्णुमोहनकेँ उड़न्ती जानकारी भेल। भैयारीक हिस्सा, तहूमे मरौसी जमीन। तैसंग इन्द्रमोहनक सबा करोड़ पाँच करोड़ बनि गेल छल। भूख तँ भूख छी, नै तँ बैंके किए दिवालिया भऽ जाइए। जइमे रूपैआक ढेरीए रहै छइ। तीन दिनक छुट्टी लऽ विष्णुमोहन ई ठेकना गाम विदा भेल जे पहुँचते भैयाकेँ कहबैन, बाँटि लेब। नै तँ समाजकेँ बैसा बँटबा लेब। एक तँ ओहिना बैंकक दरमाहा, तैपर कमीशनक संग उपहार पाबि विष्णुमोहनक चसकल मन! तैपर पाँच करोड़ सुनि मनसूबा आरो बढ़ौलकै। जहिना पत्नी विचारक तहिना समाजक लोक, उपकारक छोड़ि अपकारक विचार किए देतैन। एतबे किए, बैंकक सहाएब गामक सहाएब नै? ओही गामक बेटा ने भोपालमे बैंकक सहाएब बनल अछि, तोहूमे ओहेन राजक बासी छी जइमे बैमानी-शैतानी छइहे नहि।

ई बात विष्णुमोहन बुझि नै पौलक जे झगड़ा भेने गदहो मारि-मरौबैल करा दइए तँए कि गदहाक बीआ उपैट जाएत। जेते समाज तेते रंगक गदहा। जत्ता उठबैसँ ओटोमेटिक मशीन धरि दसटा गदहाकेँ मिला बना देल जाइ छै आ पहाड़ी क्षेत्रमे पाथर लादि घुमबैत रहै छइ। तेतबे नहि, समाजक नारी पकड़ैक थर्मामीटर बनाएब सेहो सीखनहि

छल। गाम कि अखनो शहर-बजार भेल अछि जे फटका-फुटकीमे (जुआ) करोड़क सौदा भऽ जाइए। हजार-बजार बेसीसँ बेसी भेल अछि तइमे जँ किछु आगू बढ़ि वेपार बढ़ाएत तँ अनेरे मानो-प्रतिष्ठा बढ़ि जाएत आ कारोबार असानीए-सँ चलि जाएत। मनो गवाही दइये देलक।

विष्णुमोहन गाम आएल। गामक सीमानपर पएर दइते विष्णुमोहनकेँ अनभुआर जकाँ बुझि पड़लै। मनमे उठलै जइ समए पढ़लौं पिताक देल खर्चमे भैया-इन्द्रमोहन एकोबेर नकारि नै सकारि लेलैन। ओहूमे तँ हुनकर हिस्सा छेलैन्हे। मनमे उठिते जेना कम्प्यूटर हिसाब जोड़ैत तहिना जोड़ा गेलइ। फेर मनमे भेलै जे अनेरे मन बौआइए। ओइ दिन सझिया परिवार छल, अखन हिस्सेदार छिऐन। दुनियाँमे अपन हिस्सा के छोड़लक जे छोड़ब, पाँच करोड़ सुनलौं, चारियो करोड़ तँ सत् हेबे करत। बड़ करता आ सप्पत खा कऽ कहता तैयो तीन करोड़सँ निच्चाँ नहियेँ हएत। मने-मन हिसाबक गरो अँटबैत आ टेम्पूसँ रस्तो तँइ करैत।

दरबज्जापर विष्णुमोहनकेँ अबिते इन्द्रमोहनक नजैर पड़ल। ओना विष्णुमोहन अपन अदा अदए करैत पएर छुबि इन्द्रमोहनकेँ प्रणाम केलक मुदा नजैर अँकड़ाएल रहइ। जहिना अँकड़ाएल चाउरक आँकड़ होशियारि भनसीआ अदहन लगबैसँ पहिने निकालि लैत तहिना इन्द्रमोहन नजैरसँ निकालि लेलक। मुदा कि ओ बिसैर गेल जे अपन हिस्सा पेट काटि जइ भाएकेँ पढ़ेलक, वएह भाए केते पेट काटि परिवारकेँ देखलक। अपना पाछू बेहाल अछि। ओ बेहाल भेल अछि तइसँ हमरा? तखन तँ ओकरो घर-घराड़ी छिऐहे, परिवार अछिए।

खेला-पीला पछाइत विष्णुमोहन इन्द्रमोहनकेँ पुछलक-

“भैया, एन.एच.बला पाइ की भेल?”

पाइक नाओं सुनिते इन्द्रमोहनक मन ठमकल। ठमैकते बाजल-

"देखते छहक जे घराड़ियो घुसैक गेल। पुरना घराड़ीक आगूए-सँ तेना कटि गेल जे घराड़ीक रूपे बिगाड़ि देलक। बान्ह सड़कक काजे एहेन होइए जे केकरो नाक कटैए तँ केकरो बनबैए। खाएर जे हौउ, जे पाइ भेटल तइमे दोसर घराड़ी कीनि घर बनबैत खर्च भेल।"

विष्णुमोहन-

"सभ खर्च कऽ देलिऐ, हमर हिस्सा?"

इन्द्रमोहन-

"तोहर हिस्सा तँ छेबे करह। पाँच कट्ठा घराड़ीमे अढ़ाइ कट्ठा पड़ल, ओते तँ हमरे भेल किने?"

"जेते पाइ अहाँकेँ भेल ओते पाइक चीज रहल।"

"चीजक उदए-प्रलए अहिना होइ छै, जँ से नै रहल तँ अढ़ाइ कट्ठासँ कम थोड़े भऽ गेल।"

विष्णुमोहनक मनसूबामे धक्का लगल। मुदा उत्तरो तँ हल्लुक नहियेँ अछि जे धड़फड़मे किछु भऽ जाएत। बाजल-

"भैया, ईहो तँ नीक नहियेँ भेल जे, नीक अहाँक भेल अधला हमर रहि गेल।"

बुझबैत इन्द्रमोहन बाजल-

"देखहक सरकारी काज छिऐ, सभ काज पछुआएले डेटमे चलै छइ। तैठाम जँ सतर्क भऽ काज नै करितौं आ बुड़ि जाइत तँ केकर बुड़ैत।"

"हमरो तँ जानकारी दइतौं?"

"जहियासँ गाम छोड़लह तहियासँ बुझियो कऽ की केलह। ओहेन भारी भुमकम भेल जे घरक देबाल राँइ-बाँइ भऽ गेल, तैपर

बाढ़ि आबि तेना-झमाड़लक जे सभ परानी मिलि ओसारक चौकीपर बैस यएह विचारि लेलौं जे सभ तूर संगे मरब। कियो जीबैत रहब तखन ने दुखक दुख हएत, जँ सभ संगे चलि जाएब तखन के केकरा ले कानत।"

पोखैरक माटि, जमीन नै पाबि विष्णुमोहनक क्रोध जगल। बाजल-

"अदहा हमर छी हम लइये कऽ रहब!"

छोट भाइक बात सुनि इन्द्रमोहन सकदम भऽ गेल। बकार बन्न भऽ गेलइ। मनक बेथाकेँ मनेमे मसोरि मोरिया देलक। बिनु किछु बजैत मुड़ी गोंति परिवारक भूत-भविस पढ़ए लगल। पढ़ए लगल ई जे गाम छोड़ि जे बाहर बसि गेल ओकरा की मानल जाए। मुदा मानैसँ पहिने सम्बन्ध तँ देखए पड़त। कियो गामक बेच बाहर कीनि घर बना अपनो रहैए आ भड़ो लगबैए। कियो गामक उत्पादित पूजी खड़का उत्पादित पूजी ठाढ़ कऽ लइए। कियो बैंकमे सूदिपर लगा दइए। मुदा विष्णुमोहन तँ से नै केलक। मन ठमकलै, ठमैकते ठमठमाएल। ठमाइते जेना कोनो पौध-गाछ जगह बदलब स्वीकाइर लइए तहिना इन्द्रमोहनक मनमे उठल, परिवारसँ समाज चलैए समाजक गति परिवारमे निहित छै तैठाम विष्णुमोहनक की छै, जँ से नै छै तखन तँ गाम-समाजसँ हराएल-भुतियाएल रहल। हराएल-भुतियाएलक की हेबा चाही। एक तँ ओहुना बारह बर्खक हराएलकेँ कुशपूत बना मटिया देल जाइए, विष्णुमोहनो तँ सहए भेल। अपन सहोदर भाए छी, जरूर छी, मुदा दुनूक जिनगीक सम्बन्ध कहाँ अछि। ने खाइ-पीबैक आ ने रहैक। ने बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइक आ ने बर-बेमारीक संग परिवारक काजक। हमरो बेटा अछि, सिदहा दऽ अस्तुरासँ जन्म केश कटा मुड़न करेलौं। ओकरो बेटा छै लाखसँ ऊपरे

खर्च केलक। अपन बेटा पनरह बर्खक उमेरमे मैट्रिक पास केलक ओकर दसे बर्खमे कौलेज पहुँच गेल। जेते इन्द्रमोहन पाछू उनैट परिवार दिस तकैत तेते ओझरौठमेमे पड़ल जाइत।

अन्तमे यएह विचार उठलै जे पहिने परिवार अलग हएत तखन ने हिस्सा-बखड़ाक प्रश्न उठत। जाधैर से नै भेल ताधैर तँ परिवार चलल। बाजल-

"बौआ, आबेशमे नै आबह। छोट भाए छिअ, बुझा कऽ कहै छिअ। पहिने ई कहऽ जे परिवारकेँ फुट-फुट मानल जाए आकि समलित। जँ समलित मानबह तखन तँ परिवार चललह, जँ अलग मानबह तँ कहियासँ मानबह से पहिने परिछा लेबह तखन ने?"

इन्द्रमोहनक विचारक कोनो असैर विष्णुमोहनकेँ नै भेल। जहिना कियो आगूमे बैसल रहैए मुदा मन मेलामे घुमैत रहै छै, जोरोसँ बजला पछाइत नै सुनि पबैए तहिना विष्णुमोहनक मन करोड़क केलकुलेशन करैत। दर्जनो नवका गाड़ी कीनि रोडपर दौगा देबइ। भोपालक समाजमे भलेँ नै मुदा भोपालक परिवहन समाजमे तँ अपन उपस्थिति दर्ज कराइए लेब! वएह ने लतड़ैत-चतड़ैत भोपालक समाज बनत। अवसरक चुकल मनुखकेँ डारिक चुकल बानरक गति होइ छइ। पाछू हटब कायरता हएत। बाजल-

"भैया, जइ विचारसँ आएल छेलौं ओइमे अहाँ बाधा उपस्थित करै छी, कियो अपन जिनगीक मालिक होइए।"

विष्णुमोहनक विचारकेँ स्वीकारैत इन्द्रमोहन बाजल-

"हँ, होइए।"

विष्णुमोहन-

"तखन?"

"बेकतीक सामुहिक रूप परिवार छी। बेकतीगत विचार सामुहिक रूपमे बदैल जाइ छै, जइमे सबहक जिनगी देखल जाइ छइ।"

एक दिशाक बाटमे आगू-पाछूक दिशा बोध असानीसँ होइए मुदा विपरीत दिशामे असंभव भऽ जाइत अछि। वैचारिक रूपमे दुनू विपरीत दिशामे। तँए सहमत हएब कठिन। विष्णुमोहन बाजल-

"भैया, सभ दिन आदर करैत एलौं, अखनो कहै छी जे ओहेन परिस्थिति ने बनि जाए जे थाना-पुलिस दरबज्जापर आबए!"

विष्णुमोहनक बात सुनि इन्द्रमोहनक मन मुस्कियाएल। बाजल किछु ने। मनमे उठलै नककट्टा दुसै नाकबलाकेँ। आदर करैए आकि समाजमे नाक कटा देलक जे समाजक प्रवुद्ध वर्ग घुमैले गेला आ चोर जकाँ गएब भऽ गेल! सएह आदरक बात करैए। छोट भाएकेँ परिवारक अंग बुझि अपन बाल-बच्चाक हिस्साकेँ जेकरा पाछू गमा देलौं सएह आदरक बात करैए। हराएलो-भुतियाएल जँ अनठियो दरबज्जापर आबि जाइ छैथ तँ एक लोटा पानिक आग्रह करिते छिऐन आ परिवारक अंग भेल ओ! मुदा हाथक आँगुरो तँ अपन महत रखते अछि। नीक हएत जे समाजकेँ मानि बेकतीकेँ समूह दिस बढ़ा दिऐ। बाजल-

"बौआ, थाना-पुलिस अबैत-जाइत रहत मुदा गामक खेत-पथार केतौ ने जाएत, जएह गाममे रहत ओकरे हिस्सामे रहतै। वृद्ध-वेवा जकाँ केतए जाएत। नीक हएत जे जहिना समाज हमर छी तहिना तोरो छिअ किने, समाज जे कहता से मानि लेब।"

इन्द्रमोहनक विचार विष्णुमोहनकेँ जँचल, जँचिते बाजल-

"तीन दिनक छुट्टीमे आएल छी, काल्हि समाजकेँ बैसा पाइ-पाइक हिस्सा बाँटि लेब।"

विष्णुमोहनक विचारकेँ इन्द्रमोहन चुपचाप सुनि लेलक। समाज दिस हियासि विष्णुमोहन सोचए लगल। केतेमे सौदा पटत। एहेन तँ नै हुअए जे घानीसँ बहतौनी भारी भऽ जाए। कोनो कि राज-पाटक झगड़ा छी जे दखला-दखली हएत। पूजीक विवाद छी पच्चीस प्रतिशत तक पूजी लगौल जा सकैए। कोट-कचहरीक भाँजमे जाएब बूड़िबकी हएत। अकासमे उड़ैत चिलहोरि जकाँ ऊपरेसँ लूझि लेत। सेहो नीक नहि। गाम कि कोनो शहर बजार छी जे घटनाक दाम-दिगर होइ छइ। गाम छी खुदरा-खुदरी कारोबारक। सम्हैर कऽ विष्णुमोहन गाम दिस विदा भेल।

हाइ स्कूलक संगी सूर्यमोहन छैथ। पुरान संगी। महाभारत केतबो पुरान हएत तैयो संग पुरबे करत। सूर्यमोहन विद्यालय जेबाक तैयारीमे जुटल रहैथ। नहाइले डोल-लोटा नेने कलपर पहुँचल छला। विष्णुमोहनकेँ देखते मन भनभना गेलैन। की एहेन मनुखक मुँह देखब नीक हएत? मुदा मुहोँ घुमाएब तँ नीक नहियेँ। जँ कहीं अपने आदति जकाँ बुझि लिअए जे फल्लाँ मुँह चोरा लेलक। आँखि उठा बजला-

"विष्णुमोहन!"

विष्णुमोहन-

"हँ भाय, तोरेसँ काज अछि।"

काज सुनि सूर्यमोहन बजला किछु ने मुदा मने-मन विचारए लगला जे कोन काज छइ। ने एक गाम-समाजमे रहै छी, ने एक बेवसायसँ जुड़ल छी आ ने एक परिवारक छी, तखन कोन काज हेतइ। तँए पुछि लेब नीक हएत। मुदा जइ काजक तैयारीमे छी, बीचमे जँ दोसर काजक चर्च उठाएब तँ अनेरे अपन काज धकिया कऽ घटिया जाएत। नै बुझने मनमे खुट-खुटी बनि गेने सभ काजकेँ खुटखुटौत। अँटाबेश करैत बजला-

"अधखरूआ नहाएल छी, ताबे दरबज्जापर बैसह। दुनू गोरे खेबो करब आ बीचमे गपो कऽ लेब।"

सूर्यमोहनक बात सुनि विष्णुमोहनक मनमे ओहेन आशा जगल जेहेन नोनक सेरियत लोक दइए। झूठ-फूस बजैले आ करैले दिन-राति तँ पड़ले रहैए, खाइकाल किए कियो करत। मुदा खाएब तँ गड़बड़ हएत। तैसंग ईहो भेल जे केकरो नहेबाकाल लगमे ठाढ़ रहब उचित नहि। जखन काजे आएल छी तखन काजेक महत ने मानए पड़त। जौं से नै काजक बेर जँ धड़फड़ा जाएब तखन तँ काजेमे विघनेस हएत।

दरबज्जाक ओसारपर रखल कुरसीपर बैस विष्णुमोहन अपन सतरंजक गोटी मने-मन पसारिते छल आकि सूर्यमोहन डोल-लोटा रखि, चारपर धोती पसारि डेढ़ियेपर सँ बजला-

"दू गोरे छी, तँए दूटा थारीमे परसने आउ।"

सूर्यमोहनक बात पत्नी सुनि कऽ खखैस देलखिन। सूर्यमोहन बुझि गेला जे समाद पहुँच गेल। मुदा बिच्चेमे विष्णुमोहन बाजल-

"हम नै खाएब, अखन खेबाक इच्छा नै अछि।"

विष्णुमोहनक नकार सुनि सूर्यमोहन दोहरबैत बजला-

"एकेटा थारी आनब।"

कहि विष्णुमोहनकेँ पुछलखिन-

"कोन काजे आएल छह से पहिने बाजह। जँ छोट-छीन हएत तँ बिच्चेमे कऽ लेब।"

जहिना कियो रचनाकार अपन रचनाक सविस्तर भूमिका लिखैत तँ कियो अपन रचित रचनाकेँ भूमिकाक प्रयोजने ने बुझैत तहिना विष्णुमोहन चौहद्दी बन्हैत बाजल-

"भाय, अपन सभ तँ एक्के हाइ स्कूल तक पढ़ने छी, हमर दिन

घटल तँ आन राजमे कमाइ छी तोहर बढ़लह तँ गामेमे मौजसँ रहै छह।"

विष्णुमोहनक बातक अर्थ नीक जकाँ सूर्यमोहन नै बुझि सकला। नि:प्रयोजन बुझि बजला-

"अखन हमहूँ धड़फड़ाएल छी तँए समैक हिसाबसँ बाजह?"

विष्णुमोहनक मन अँटैक गेल। तैबीच सूर्यमोहनक मनमे उठलैन, कहिया केतए हाइ स्कूलसँ निकललौं। तैबीच गंगा धारक केते पानि बहि समुद्रमे चलि गेल, ई कथी कहए चाहैए। माथक टेटर देख नै रहल अछि। गाममे हमरो घर-परिवार अछि एकरो छै, मुदा जखन भोपाल घुमए गेलौं, ओइठाम तँ ओकरेटा घर छेलै, तैठामक बेवहार बिसैर गेल। तैबीच अदहासँ बेसी भोजन सेहो कऽ लेलैन। परीक्षाक वारनिंग घण्टी जकाँ बजला-

"झब दऽ जे कहबाक छह से कहऽ, नै तँ विद्यालयसँ आएब निचेन रहब तखन कहिहऽ।"

कहि लोटा उठा पानि पीब अधढ़कार करैत विष्णुमोहन नजैरपर नजैर देलैन। नजैर पड़िते विष्णुमोहन बाजल-

"भाय, भैयारीक पनचैती करेबाक अछि।"

पनचैती सुनि सूर्यमोहनक मन ठमकलैन। बात बुझैसँ पहिने बजला-

"हम कि कोनो गामक पंच छी। हाइ स्कूलक शिक्षक छी। किए लोक हमर बात सुनत। गामक झगड़ा दन पड़िछबै दुआरे सरपंच छै, ओकर कमिटीक पंच छइ।"

विष्णुमोहनकेँ बुझैमे देरी नै लगलै जे संगी भऽ कऽ टारि रहल अछि। मन ममोड़ैत बाजल-

"भाय, तीनियेँ दिनक छुट्टीमे आएल छी, तइमे दोसर दिन बीतिये रहल अछि, तँए चाहै छी जे जल्दवाजीमे काज निपटा समैपर घुमि जाइ।"

विष्णुमोहनक विचारकेँ ठेलैत सूर्यमोहन कहलखिन-

"परिवारक बीचक बात छी। एना धड़फड़ेने थोड़े हेतह। खैर हम संगी छिअ तँए एते गछै छिअ जे साँझूपहरक समए देबह। मुदा असगरे नै, गाममे जे बुझनुक लोक छैथ हुनको सभकेँ संगोरि लिहऽ।"

सूर्यमोहनक विचारकेँ अपन समैसँ विष्णुमोहन मिलबए लगल। गाममे जेते बुझनुक लोक छैथ, सबहक संगोर तँ असान नहियेँ अछि। मुदा जँ अपने विचारे चलब तँ सूर्यमोहनो कहीं छिटैक जाएत तखन तँ आरो पहपैट हएत जइसँ बानरक करहर उखाड़ब भऽ जाएत। उखड़लहो भँसिया जाएत आ बिनु उखड़लोहो पानिक तरक माटिमे सीरबेधू भेल रहत। तैबीच सूर्यमोहन कपड़ा पहीर साइकिल निकालि ओसारक निच्चाँ भऽ बजला-

"जहिना तूँ बुझैत हेबह जे संगी भऽ कऽ नीक जकाँ कान-बात नै देलक तहिना तँ अपनो कानपर बात लधले अछि। जेकर काजक भार उठौने छिऐ, जँ उचित समैपर ओकरा नै पुड़ेबै, से केहेन हएत। तैयो एते कहै छिअ, सौंझुका समए देलियह।"

कहि साइकिलपर चढ़ि सूर्यमोहन विद्यालय विदा भेला। सूर्यमोहनक बेवहार विष्णुमोहनकेँ जेते नीक लगक चाही तेते नीक नै लागल। मुदा उपैयो तँ दोसर नहियेँ छइ। अपना काज बेरमे लोक गदहोपर चढ़ैले तैयार होइते अछि। फेर मनमे उठलै जखन एते दिनक पुरान संगीक एहेन बेवहार भेल जे संग नै रहल तखन अनकर केहेन हएत। नीको भऽ सकैए, अधलो भऽ सकैए। ओह! दुनू भाँइक बीच कोनो कि झगड़ा झंझट अछि जे अनेरे समुद्र उपछब, आपसी बुझारैत

छी। एको गोरेसँ काज चलि सकैए।

साइकिलपर चढ़िते सूर्यमोहन धड़फड़ा गेला। खुशीसँ मन चढ़ि गेल रहैन। दिलक धड़कन सेहो तेज भऽ गेल रहैन। एहेन लोककेँ एहने बेवहार उचित छी। गामक पूजी उठा-उठा लोक शहर-बजार गढ़ि रहल अछि! गाम जेतै-क-तेतै पड़ल रहि गेल अछि। आब कोन गाम एहेन अछि जेकर बाहरी आमदनी करोड़क नै छइ। एक तँ दैवी प्रकोप दोसर मनुखक प्रकोपसँ उजैड़ रहल अछि। तरोटा जाँत जकाँ माटिपर कीलमे गाड़ल अछि, मुदा सभ हितैषीक सोहर गामेक गाबि रहल अछि।

गाम दिस विष्णुमोहनकेँ बढ़ैत देख इन्द्रमोहन सेहो चिलहोरि जकाँ टोह लगबए लगल। पहिल समदिया कहलकैन जे ओ सूर्यमोहन मास्टर साहैब ऐठाम गप-सप्प करै छैथ। ओना समदियाक बातपर इन्द्रमोहनकेँ सोलहन्नी बिसवास भेल, मुदा अपन आरो मजगूती दुआरे ओही रस्ते पार सेहो कऽ लेलक, दूरेसँ सूर्यमोहनोक नजैर इन्द्रमोहनोपर पड़ल आ इन्द्रमोहनोक सूर्यमोहनपर, मुदा विष्णुमोहन उतरल नजैर नै पौलक। सूर्यमोहनक सोझहासँ हटिते इन्द्रमोहनक अबाज कानमे मोबाइलिक घण्टी जकाँ टनटनए लगल।

टनटनए ई लगल जे भोपालसँ घुमला पछाइत भरि ढाकी विष्णुमोहनक उपराग सूर्यमोहन सुना चुकल रहैन। जँ दुनू भाँइ दू छेलौं तखन अनकर उपराग हम किए सुनी। मुदा जँ अपन समाजक परिवार बुझि कहलैन तँ उचित-उपकार दुनू केलैन। परिवारक बीच अधला वृत्तिक प्रवेश जँ अपने नै बुझि पाबी आ दोसर जँ बुझहा दैथ तँ ओकरा की कहबै। कहुना तँ पितेतुल्य छी किने। जँ ओहेन जघन्य वृत्ति भऽ जाए जे माफी मंगैक जरूरत भऽ जाए तँ किए ने मांगि ली। भीख मांगब थोड़े छी जे कलंक लागत। भिक्षाटन छी, समैक दोख

भेल। सबहक मति सदिकाल एक रंग थोड़ै रहै छै, तहूमे नवकवड़ियाकेँ तँ आरो बेसी होइ छइ।

सूर्यमोहन ओइठामसँ घुमैकाल विष्णुमोहनक मनमे उठल। भैया संग ने गप-सप्प भेल, मुदा भौजी थोड़े बुझलैन जँ भैया-भौजी लग बाजल हेता, सेहो भाँज लगि जाएत जँ से नै बाजल हेता तँ अपन विचारक अनुकूल बना किए ने दुनू बेकतीमे ओझरी लगा दिऐन। तेतबे किए, जँ पक्षमे बाजि जेती तँ हुनके पंच बना लेब। एक तँ परिवारक बात परिवारेमे रहि जाएत दोसर तीनमे जँ दू एक दिस भऽ जाएब तखन आगूओक दुआरमे धक्का मारि सकै छी। घरपर अबिते भैजी लग बाजल-

“भौजी, मनसँ चाह बनाउ, दुनू गोरे एकठाम बैस चाह पीब।”

हँ, हूँ बिनु किछु बजने श्याम सुनरि चाह बनबए लगली। दुनू भैयारीक बात मनमे उठलैन। अपनो पतिक चेहरा, धिया-पुताक पढ़ाइ-लिखाइक संग जिनगी, ओना घर-दुआर आ परिवारक रहन-सहन नै देखने तँए तइ दिस नजैर नै गेलैन। मुदा अंगरेजिया देह तँ सेझहामे रहबे करैन। मुदा ई सभ तँ कर्मक खेल छी। जेहेन जगह रहै छै तेहने ने कर्मो खेलै छइ। चाह बनि गेल। दिअरक आग्रह श्याम-सुनरि कटलैन नहि। किए कटती। एकठाम बैस खाएब-पीब अधले कथी भेल। ई तँ भनसियाक इमानक परीक्षा भेल जे जँ जहरे-माहुर मिला देने हेबै तँ अपनो मरब किने। तेतबे किए, केतेको दिअर भौजाइक दूध पीब मातृवत जिनगी सेहो ठाढ़ केने अछि।

दोसर चिस्की चाहक लैत विष्णुमोहन बाजल-

“भैया, बिगड़ल छैथ।”

“किए बिगड़ता?”

“से अहाँ नै सुनलिऐ?”

“भैयारीक बात किए सुनब?”

ओना सूर्यमोहन स्कूलसँ आबि साँझ पड़िते इन्द्रमोहन ऐठाम जाइले तैयार भेला मुदा पहिल साँझ अकलबेर होइए तँए दोसर साँझ अबिते पहुँचला। दुनू भाँइ दरबज्जेपर, मुदा बाजा-भुकी किछु ने। जेना मने-मन दुनू गुर-चाउर मुँहमे रखने हुअए। दरबज्जापर पहुँचते सूर्यमोहन बजला-

“हमरा होइ छल जे पछुआ गेलौं, मुदा अगुआएले छी। आरो के सभ औता विष्णुमोहन?”

विष्णुमोहन-

“दोसर कियो ने औता। अहाँ जखन आबिये गेलौं तखन अनेरे अनकर कोन काज अछि।”

विष्णुमोहनक बात सुनि सूर्यमोहनक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे भैयारीक विवाद अदहा गाम होइए। अनेरे एते भारी मोटा अपना माथपर लेब उचित नहि। बजला-

“देखू, गौआँ छी, तहूमे शिक्षक छी। गामक कोनो जवाबदेह लोक नै छी, तँए भार नै उठाएब मुदा अपन विचार देब। बाजू की कहैक अछि?”

विष्णुमोहन-

“अहाँकेँ तँ बुझले हएत जे एन.एच.मे घर-घराड़ी पड़ल जेकर मुआबजा भेटल, तइमे भैया हिस्सा नै देलैन।”

विष्णुमोहनक बात सुनि सूर्यमोहन बजला-

“ई तँ अहाँक बात भेल। इन्द्रमोहन अहाँ बुझा दिअनु।”

इन्द्रमोहन-

“पहिने तँ परिवार बुझए पड़त। अखन धरिक जे परिवार रहल

ओकर संचालन तँ हमहीं करैत एलिऐ। जहियासँ विष्णुमोहन गाम छोड़लक तहियासँ एक्को पाइक सहयोग नै केलक। बाढ़ि-रौदी, भुमकमक झमार हमरा लगल। खेतमे मोनि फोड़ि देलक तेकरा खेत बनेलौं, भुमकममे घर चिड़ीचोंत भऽ गेल, तेकरा बन्हलौं, कुटुम-परिवारकेँ जिआ कऽ रखने छी तखन हिस्सा कथीक आ हिस्सेदारी कथीक?”

जलाएल प्रश्न देख सूर्यमोहन बजला-

“हम समाज छी कखनो नै चाहब जे समाजकेँ नोकसान होइ।”

सूर्यमोहनक विचार सुनि इन्द्रमोहन बाजल-

“एक तँ सबा करोड़ रूपैआ भेटल तइमे घराड़ी कीनि घर बनेलौं। घरो देखते छी जे केतबो परिवार बढ़त तैयो पचास बर्ख अभाव नै हएत। एते करैमे सभ रूपैआ सठि गेल।”

बमैक कऽ विष्णुमोहन बाजल-

“अहाँ झूठ बजै छी? पाँच करोड़ रूपैआ भेटल?”

सूर्यमोहन-

“केना बुझै छी?”

“जानकारी भेल।”

विष्णुमोहनक बेवहार सूर्यमोहनकेँ नीक नै लगलैन। बजला-

“जखन गाम छोड़ि अनतए चलि गेलह, तखन गामक सम्पैत अनतए जाइ! ई हम कखनो नै कहबह। एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक जालक माध्यमसँ गामक सम्पैत जाइए रहल अछि, तैपर सोझहा-सोझही भैयारीक जाए, ई कखनो उचित नै भेल। तहूमे जखन भैयारीक विभाजन नै भेल अछि तखन लेनी-देनी कथीक। परिवार ठाढ़ भऽ चलैत रहत तखन ने समाज ठाढ़ हएत।”

आशा तोड़ि विष्णुमोहन बाजल-

"तखन हम गामसँ चलि जाइ?"

सूर्यमोहन-

"से किए कहबह। तूँ तँ अपने छोड़ि कऽ चलि गेलह।"

तेसर दिन विष्णुमोहन भोपाल विदा भेल।

ОО

तिथि : 25 जनवरी 2014, शब्द संख्या : 5696

माघक घूर

नरक निवारण पाबैन अन्हरिया चतुरदसीक दिन, सतैहिया शीतलहरी अपन कड़कड़ाएल मस्त जुआनी पाबि पछिया हवाक संग विहुँसैत गतिये गुनगुनाइत बहि रहल छल। ओना दुनू मीलि दिन-राति बहैत मुदा भोरहरबामे आबि आरो विकराल रूप पकैड़ लइत। विकरालक पाछू तेज हवा बहब नै मौसमक अपन सकल-सरूप अछि। दिनमे कनी-मनी तँ सुरूजक असैर पाबि कमबो करैत मुदा रातिक चारिम पहर अबैत-अबैत ऊहो असैर हारि-थाकि, जहिना धारक किनछरिक मरियाएल पानि कतवाहि पकैड़ चलैत तहिना कतवाहि पकैड़ नेने अछि। पाँच थान मालबला रघवा कक्काक सिरसिराएल मन सीरको तरमे सिरैस कऽ तरैस रहल छैन। कनारथपर असुआएल बैसल नजैर नोर सिरैज रहल छैन। सिरैज रहल छैन अपन जिनगीक बेथा-कथा। तेहेन बीखाह समए भऽ गेल अछि जे जहिना माटिक पँखाएल दिवारकेँ कुदि-कुदि बेंग मुहसँ पकैड़ सुगबुगाइयो ने दैत तहिना अन्हार इजोत बीछि-बीछि बिछौन केने जा रहल अछि।

देह परहक सीरक उतारि रघवा काका जिनगीक समर भूमि लेल मन बनबए लगला। जँ लड़ि मरब तैयो दुखेक निवारण जँ जीवित रहब तैयो सएह। आखिर पाँचो थानक पोसिनिहारो तँ छीहे। ओकरा

मुँहमे कोनो बोल छै जे अपन बेथाक कथा कहत। ओना कहियोकाल खेबा-पीबा लेल आकि अनठिया जीव-जन्तु देख आकि दुहै-गाड़ैकाल मुँह खोलैए मुदा मनुख जकाँ तँ नै कहि सकैए। नहियोँ कहत तैयो तँ एते बुझबे करै छी जे अखन जे दुरकाल समए अछि तइमे की सभ शक्तिशाली अछि। जाधैर हथियार नै पकड़ाइ छै ताधैर शक्तिहीनो शक्तिशाली होइते अछि। सुकाल पाबि भलेँ वएह शक्तिहीन शक्तिशाली किए ने बनि जाए मुदा कुकाल तँ कुकाल छिऐ जेकरा मुँहमे अवाज भलेँ हौउ, मुदा जेकरा बोल नै छै ओ अपन बेथाक कथा कहिये केकरा सकैए। देह लगा मारब छोड़ि उपैये दोसर की छइ। मुदा जानसँ जाए आकि सोग-रोगसँ पकड़ाए, अपन जिनगीक संग हमरो जिनगी तँ तोड़बे करत।

टुटैत जिनगी देख मन थकथकेलैन। थकथकाएल मन बुदबुदेलैन। जिनगी टुटि कऽ फेर ओहिना खसि पड़त जहिना दस बर्ख पहिने छल। जे दस बर्खक बीच ज्ञान-कर्मक संग कठिन श्रम केला पछाइत भेटल, ओ छीना रहल अछि, छीना जाएत। मुदा बँचाइयो तँ नहियेँ सकै छी। टुटैत मनकेँ हुथैत विचार कहलकैन-

"की यएह सोचि एते समैयो आ श्रमो गमेलौं जे छनेमे छनाक भऽ जाए? जखन जिनगीए टुटि कऽ खसि पड़त तखन कोन जिनगी लऽ कऽ ठाढ़ रहब!"

अनायास उत्साह जगलैन। जहिना सूतल लोककेँ साँस भलेँ चलैत रहौ मुदा रहै तँ निष्प्राणे अछि। तँए कि ओकरा मरलो तँ नहियेँ मानल जाएत। अहुना तँ लोकक नीन टुटबो करैए, तोड़लो जाइ छै आ तोड़ाएलो जाइ छइ। उठल उत्साह धकललकैन। देह परहक सीरक ओछाइनपर उनटा दुनू कानकेँ तौनीक मुरेठा बान्हि चद्दैर ओढ़लैन। दुनू डेनो आ दुनू पएरो बैसले-बैसल झाड़ि कऽ सोझ केलैन। सोझ

होइते हल्लुकपर पहुँचते उत्साह सकसकेलैन। विचार जगलैन, जगिते विचार मन फुरफुरेलैन। बारहो मासक बारहो रूप अछि जे अरूप-सरूप दुनू अछि। ओहिक बीच ने जिनगियो अछि। ओही जिनगीक जनक ने मनुख छी। तखन लगले हारि मानि लेब पीठ देखाएब भेल। नै पीठ देखाएब तँ जिनगीक हारि भेल। केना लगले सेहो मानि लेब। जँ लगले मानि लेब तँ केकरा लेल मानि लेब, रहबे के करत जे तेकरा लेल मानि लेब। उठि कऽ रघवा काका ओछानइनपर ठाढ़ भेला।

केबाड़ खोलि रघवा काका बाहर तकलैन तँ अन्हार छोड़ि किछु ने देखैथ। घर अन्हार, बाहर अन्हार तखन केना डेग आगू बढ़त। चोरबत्तीक स्वीच दबलैन तँ पसरल अन्हारमे छुहिया इजोत किछु दूर धरि भेलैन। देखते बिसवास जगलैन जे चोरबत्तीक इजोतक बले आगू बढ़ल जा सकैए। जहिना बाट-बटोही आकि राह-राही गाम घर छोड़ि कोनो गामक रस्ता–बाट पकैड़ आकि कोनो धार-गाछी-बिरछी बाध-बोनसँ हटि अपन पेटे चलि गंगामे मिलैए तहिना एक-दोसर गामक सीमान टपि राही-बटोही अपन गण्तव्य दिस बढ़ैए ओहिना रघवा काका माथ-कानमे मुरेठा बान्हि, चद्दैर ओढ़ि दहिना हाथमे चोरबत्ती नेने ओसारसँ निच्चाँ होइत नजैर खिरौलैन।

जहिना अल्हुआ-सुथनीसँ लऽ कऽ साग-पात, भात-रोटी होइत, खीर-पुरी धरि भोज्य होइत तहिना तँ घूरोक अछि। बैशाख जेठक घूर थोड़े छी जे बिनु बीखक माछी-मच्छर भगबैले हएत। ओ तँ घासो-पातसँ लगौल जा सकैए। लगौले किए जा सकैए ओइसँ बेसी जरूरते की छइ। जहिना तपाएल समए रहै छै तहिना अगियाएल हवो चलै छै, तेहनामे वएह ने नीक भेल जे जँ आगि हवामे उड़बो कएल तँ उड़िते-उड़िते हवेमे मिझाइयो जाएत। तखन? तखन तँ बरसातो नहियेँ छी जे खढ़ो-पात आ जरनो-काठी बरसातक भीजान भीजल रहने धुकुर-

धुकुर धुआँ होइत रहत आ ने कखनो घूरक आगि लहसत आ नहियेँ मिझाएत। ओना माछी-मच्छरक बंशो बढ़ि गेल रहै छै आ सौनक नाग-पंचमी पाबि बीखाहो भऽ गेल रहै छइ। ओकरा भगबैले तँ कड़ुआएले धुआँ उपयुक्तो होइ छै आ अनुकूलो छइ। फेर रघवा कक्काक मन पाछूसँ ससरैत लगमे पहुँचलैन। पहुँचते देखलैन जे ई तँ माघ छी। तहूमे अधडरेरक छी। जहिना राति कड़ुआएल अछि तहिना शीतक रूप बदैल पल्ला पकैड़ नेने अछि। एहेन पल्ला पकैड़ नेने अछि जे भीतरसँ बाहर धरिक जारैन सिमैस गेल अछि। बरसातक जरना तँ अधसुखू रहैए। हल्लुक-फल्लुक भलेँ सामान किए ने भीज गेल होइ मुदा एहनो तँ रहिते अछि जे ऊपरसँ भलेँ भीजल हुअए मुदा भीतरसँ सुखल रहबे करैए। भीतर-बाहरक जोड़ बीचलाकेँ धकिएबे करै छइ। मुदा माघक तँ ओहेन होइए जे हवेमे धोरा भीतर-बाहर एकबट्ट कऽ दइए। भीतर-बाहर तँ ओकरा एकबट्ट करैए जे झाँपल घरसँ बाहर रहैए, जे घरमे झाँपल रहैए ओ किए सिमसत।

मनक उत्साह कलशलैन। गठूलाक गोरहा-चिपड़ी तँ सुखल हेबे करत तहूमे ओ कि कोनो गाछक चेरा छी जे पल्लाक डरे तरे-तर सिमैस जाएत। बरद-गाएक गोबरक गोइठा-गोरहा छी जे ओस-पल्लाक के कहए जे पानिक झीसियो-झकासकेँ थोड़े गुदानैए। ओकरो अपन रस छइ। मन पड़लैन बैशाख-जेठमे गोरहा-गोइठा कएल घर। बाँसक मचान बना सैंति-सैंति रखने रही, तीन मास बरसातमे सठल तेसर मास जारक गुजैर रहल अछि। तेसरोक अदहा बीतिये गेल, हो-ने-हो कहीं ऊहो ने सठि गेल हुअए। तीन मास बरसात रहितो अदहासँ कमे खरचा भेल हएत, मुदा जारक तँ तीनू मासमे बेसी होइते अछि। मन ठमकलैन। मुदा लगले मन कमला गेलैन। ऐगले सपता तँ वसन्तक आगमन भऽ रहल अछि। जँ लगिचाइयो गेल हएत तैयो पाँच-दस दिन बेसी थोड़े भेल। तहूमे जे शीतलहरी लधने अछि

ओकरो कि सीमा-नाँगैर छइ। आगू बढ़ि गठूला दिस विदा भेला। डेग उठिते मनमे उठलैन, उठिते मन कहलकैन-

"पत्नीक जोगौल घर छी, पुछि लेब नीक हएत। ओ थोड़े कहती जे हमर छी हम नै छुबए देब। जखन ओही गाए-बच्चाक जीबैक ओरियान कऽ रहल छी, तखन किए रोकती तहूमे कि ओ नै बुझै छैथ जे ओही लक्ष्मीक देलहासँ घर भरि सुख करै छी।"

मनमे अबिते रघवा काका पत्नीकेँ पुछब खगता नै बुझि गठूला पहुँचला। घरक मुँहथैरपर धन-उसनियाँ टीन राखल। चोरबत्तीक इजोतमे तेना टीन चमकल जे रघवा कक्काक आँखि चोन्हिआ गेलैन। पैरक ठेँस टीनमे लगि गेलैन। तेते जोरक अवाज भेल जे सुगिया काकीक नीन टुटि गेलैन। नीन टुटिते ओछाइनसँ उठि सुगिया काकी गठूला दिस बढ़ली। केना ने बढ़ितैथ, बैशाख-जेठमे भलेँ कम्मल-चद्दैर बैसकी बनि जाए, गोरहा-गोइठा बाध-बोनमे छिड़ियाएल रहए मुदा माघक तँ गिरथानि वएह ने छी। ओसारसँ निच्चाँ उतैरते चोरबत्तीक इजोतसँ गठूलामे देखलैन। बुझि गेली जे कियो जारैन लइले आएल अछि। भरिसक जाड़ बरदाश नै भेलै तँए घूर करत। मुदा चुपचाप आगू बढ़ब उचित नै बुझि बजली-

"गठूलामे के छी?"

पत्नीक अवाज सुनि रघवा काका ओहिना सहैम गेला जहिना कियो पति पत्नीक पौती-सखारीमे हाथ दैत सहमैत अछि।

ओना सुगिया काकीक बोलमे चोरक ध्वनि नै छेलैन मुदा मनमे जरूर रहैन जे एते राति कऽ घरमे किए औत। मुदा लगले मन गवाही देलकैन जे एक तँ एते राति दोसर एहेन दुरकाल तहूमे गठूला घर, अन-पानिक असवावक घर नै, बिनु बुझने-परखने केकरो चोर कहब उचित नहि। तँए सोझे बजली जे के छी। एहनो तँ भऽ सकैए जे केकरो जाड़

नै बरदाश भेल होइ, आगिक दुआरे जारैन लइले आएल हुअए। मुदा लगले मनमे आबि गेलैन जे अनका घरमे बिना पुछने कियो किए औत। बड़ जाड़ भेलै तँ मांगि लइत। फेर मनमे उठि गेलैन जे एहनो तँ भऽ सकैए जे कियो दुनियाँकेँ झूठ बुझि नीक-अधलाक विचारे ने करैत हुअए।

पत्नीक अवाज सुनि रघवा काका बजला-

"हम छी।"

रघवा काका तेते दाबि कऽ बजला जे नीक जकाँ सुगिया काकी सुनबो ने केलैन। तँए कि ओ सोलहन्नी नै सुनलैन, सेहो बात नहि। शब्द आ शब्दक भाव नै बुझलैन मुदा अवाज तँ कानमे पड़िये गेलैन। जहिना गंभीर शास्त्रीय संगीतक भाव कियो बुझैत वा नै बुझैत मुदा अवाजक कम्पन्न तँ कम्पित काइए दइ छइ। जँ से नै तँ ओहन ध्वनिपर जंगलसँ मोर आबि आकि बोनसँ हरिण आबि नाचए किए लगैए।

मने-मन सुगिया काकी विचारबो करैथ आ गठूला दिस बढ़लो जाथि। मिरमिरा कऽ रघवा काकाकेँ बजैक कारण रहैन, पत्नीक झगड़ाउ प्रवृत्ति। नान्हि-नान्हिटा काजक बात लेल सुगिया काकी ऐ रूपे रक्का-टोकी करए लगै छथिन जइसँ नोकसाने-नोकसान होइ छैन। ओना जहिना निआसमे आशाक जन्म, अन्हारमे इजोतक जन्म होइत तहिना रक्का-टोकीसँ छोट-छोट गलती सहैट कऽ सहीट बनि जिनगीकेँ चिक्कन बना दैत मुदा से रघवा काकाकेँ नै रहैन। माल-जालक जराएल मन तेना कऽ मनकेँ जरबैत रहैन जे क्षण-क्षण छनकैत रहैन।

दोहरा कऽ सुगिया काकी बजली-

"गठूला घर छी, साँप-कीड़ा रहैए तखन एती राति कऽ किए एलौं। के छी?"

सुगिया काकीक बोलक मिठास रघवा कक्काक आत्माकेँ हौंड़ि

देलकैन। देखल देह चिन्हल चेहराक चुनचुनाएल स्वर, बजला-

"अपने छी।"

"एती राति कऽ एहेन जगहपर किए एलौं, एक तँ जाड़सँ ठिठुरल बोन-झाड़, बिलक कीड़ी-फतिंगी आबि कऽ राति विश्राम करैत हएत तैपर ओकरा देहपर हाथ कि पएर पड़त तँ ओ थोड़े अहाँक दुख बूझत आकि लपैक कऽ अपन बीखसँ बिखा देत।"

"हँ, से तँ अपनो बुझै छी, तहीले ने हाथमे इजोत रखने छी। हाथ-पैरमे इजोत रहनै ने लोक पएरे-पएरे दुनियोँ टहैल लइए आ हाथसँ करबो करैए।"

बजैत-बजैत रघवा काका बाजि तँ गेला मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे अनेरे काज विलमबै छी। जँ गपे करक हएत तँ माले-घरक घूर पजारि बैस गप-सप्प करब। मालो-जालक आत्मा बुझतै जे जहिना जाड़ हमरा होइए तहिना तँ पोसिनिहारोकेँ होइ छइ। एहेन पोसिनिहारक प्रेमसँ जीवि। बजला-

"बड़ दुरकाल भऽ गेल अछि, थोड़े गोरहा-चिपड़ी लऽ लिअ आ मालक घरमे घूर कऽ दियौ।"

पतिक बात सुनि सुगिया काकी किछु ने बजली। मन मानि गेलैन जे किछु छैथ तँ छैथ मुदा गृहस्वामी तँ यएह छैथ। हिनके ऊपर ने खेत-पथारसँ लऽ कऽ माल-जाल आ मनुख धरिक रक्षाक भार कन्हापर छैन। लग आबि बजली-

"उसरै बेर तेहेन ई शीतलहरी लाधि देलक जे जेहो जरना-काठीक ओरियान कऽ रखने छेलौं सेहो निङ्घैठ गेल, तैपर तेहेन लधान लाधि देलक जे कोनो ठेकान अछि जे केते दिन लधने रहत?"

सुगिया काकीक जनगर बात सुनि रघवा काका गुम भऽ गेला,

मुदा लगले मनमे फुरलैन-

"कौल्हुका चिन्ता आइ किए करै छी, काल्हिले काल्हि छइ। कोनो ठेकान अछि जे एहने समए कौल्हुको हएत।"

दूटा गोरहा आ चारि-पाँचटा चिपड़ी उठा, मटिया तेलक डिबिया आ सलाइ आनि आगू-आगू सुगिया काकी आ पाछू-पाछू रघवा काका आबि मालक घरमे घूर केलैन। सुखल गोइठा, तइमे ढाड़ल मटिया तेल सलाइक लपकी पकैड़ते लपैक लेलक। घूर धधकि गेल।

OO

तिथि : 06 फरवरी 2014, शब्द संख्या : 1683

खर्च

ओना समैया काका भोरेसँ ठोह फाड़ि-फाड़ि कनै छला मुदा हम बुझलौं नअ बजेमे। सेहो ओना नै बुझलौं, रबि रहने गामक अपनो टोलवैया आ आनो-आनो टोलवैया सभकेँ, जेरक-जेर काकाकेँ देखए जाइत-अबैत देख जखन पुछलिऐ तखन भाँज लागल। पहिने भेल जे माघक तेसर मकड़ छी लोक हरड़ी मेला जाइत हएत मुदा लगले घुमि किए रहल अछि। भाँज लगिते मनमे उठल जे काम-धाम तँ जिनगी भरि चलिते रहत मुदा जँ कहीं बिच्चेमे कक्काक परान छुटि जेतैन तखन तँ भेँटो ने हेता। मात्र चेतनशून्य देहसँ भेँट हएत। ओना देहोक महत तँ ऐछे, जँ से नै अछि तँ जिनगी भरि एकरे पाछू किए लगल रहै छी।

टोहियबैत-बीहियबैत विदा भेलौं। रस्तामे जेते लोकसँ पुछिऐ तेते रंगक बात सुनिऐ। पहिल गोरेसँ पुछलिऐ तँ बाजल-

"अपने करमे ने कियो हँसैत मरैए तँ कियो बपहारि काटि मरैए।"

एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक मनक विचारमे ओझराएल रही तैपर कर्मक फल हँसब भेल आकि कानब, भाँजे ने बुझलौं। मन भेल जे फेर पुछिऐ मुदा फेर भेल जे जँ कहीं कहि दिअए जे समैक फल पाबि कयो हँसैए तँ कियो कनैए। तखन तँ एकहरी घुरछी दोहरा

जाएत। जखने दोहराएत तखने आरो सक्कत हएत तइसँ नीक जे दोसर-तेसरकेँ पुछबे ने करिऐ। जखन भेँट करए जाइए रहल छी तखन पहुँचला पछाइत जे पुछैक आकि बुझैक हएत से मुखौत्रीए भऽ जाएत। जहिना छिड़ियाएल-बीतियाएल पानि आकि गनहाएल-मनहाएल वायु मुखात्र होइते अपन गति पकैड़ लइए तहिना ने भवैत भव मुखात्र होइत भवसागरमे समा समाधि लैत अछि।

नजैर पड़िते देखलयैन जे समैया काका घौना पसारि कऽ कानियोँ रहला अछि आ घुन-घुना कऽ अपन जिनगीक गीतो गाबि रहला अछि। एक तँ ओहिना ओझराएल मन तैपर आरो ओझरी लगि गेल। चलचलौ देख दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत पुछलयैन-

"काका, मन केहेन लगैए?"

ले बलैया! जिज्ञासा करए जिज्ञासु बनि गेल छेलौं मुदा ओ तँ जेना विहाड़िमे उधिया गेल होथि तहिना बजला-

"जेते धएल-धड़ल छल सभ सठि गेल, मुदा मनक ताप नै मेटाएल, जे घड़ी जे पहर छी, छी। भने भेँट-घाँट भऽ गेल।"

समैया काका जेना कालचक्रक पूजापर बैसल होथि तहिना बाजए लगला। भुजंगप्रयात जकाँ सुनैत रहलौं, सुनैत रहलौं।

OO

तिथि : 07 फरवरी 2014, शब्द संख्या : 330

अखरा-दोखरा

देवघरसँ अबैत रही, जसीडीहक मुसाफिर खानामे एक गोरे भेटला। भेटला कि सिमटीक जे कुरसी बनल छल ओइपर पहिनेसँ असगरे बैसल रही, ऊहो आबि कऽ बैसला। कनीकाल तँ ऊहो चुपे रहला आ हमहूँ चुपे रहलौं मुदा जखन चुनौटी निकालि तमाकुल चुनबैक सुर-सार केलौं आकि बजला-

"एक जुम बढ़ा देबइ।"

पहिल दिनक भेँट, केना कऽ पुछितिऐन जे छोट जुम खाइ छी आकि नमहर। अपने अनुमान करए लगलौं जे मुँहक एकोटा दाँत नै टुटल देखै छिऐन तइसँ भरिसक छोटे जुम खाइत हेता। सएह करैक मन भेल, मुदा खुएला पछाइत जँ अजश भेल तखन खुएलहा फले की हएत!

तँए अहगरसँ तँ नै मुदा मझोलका घानी लगा देलिऐ। तरहत्थीपर औंठा चलए लगल। धिया-पुताक खेल जहानि एतए-सँ चलिहेँ बुढ़िया, धोकड़ी समैइहेँ बुढ़िया...। बाँहिपर ओंगरी चलए लगल।

घन्टा भरि गाड़ी पछुआएल। भरिपोख दुनू गोरेक बीच गपो-सप्प भेल आ दूबेर चाहो-पान चलल। गाड़ीक एके कोठलीमे बैस कऽ

भरि रस्ता गप-सप्प करैत एलौं। दरभंगा अबैक रहए। हायाघाटमे जखन ओ उतरए लगला तँ कहलैन-

"फेर कहिया भेँट-घाँट हएब आकि नै हएब।"

हमहूँ टोकारा देलिऐन-

"ऐ देहक कोनो ठेकान अछि, अखने डिब्बासँ खसि पड़ब, परान तियागि देब।"

हठ करि कऽ अपना संग उतारि लेलैन। दू दिन पहुनाइ चलल। दू दिनक पछाइत जखन गाम एलौं तँ बेटा पुछलक-

"दू दिन केतए हराएल छेलौं?"

जेना-जेना भेल, सभ बात सुना देलिऐ। सुनि कऽ बाजल-

"एना जे अखरा-दोखरा-तेखरा दोस्ती हुअ लगल तँ दुनियेँ अछन भऽ जाएत।"

जहिना गबैया, खिस्सकर शुरू कम स्वरमे करैए तहिना बेटो मुँह दाबि कऽ बाजल छल। दोखरा-तेखरा तँ नीक जकाँ सुनलौं मुदा अखरा कहलक आकि सखरा से नीक जकाँ सुनबे ने केलौं।

मनमे उठल दोखरा बालु तँ पाइनो बनबैए आ हवो मुदा तेखरा तँ पाथरेटा बनबैए। ओ चाहे कोइला कहबए आकि पाथर मुदा दुनूक (बालु-सिमटी) प्रेम केते प्रगाढ़ होइए जे जुग-जुगान्तर के कहए जे जन्म-जन्मान्तर धरि ओहिना ठाढ़ रहैए जहिना शुरूमे ठाढ़ होइए।

ओना बेसी थकान नै रहए हायेघाटसँ आएल रही, मुदा पाछू पुछड़ी जोड़ि बजलौं-

"बौआ, थाकैनसँ देह भरियाएल अछि, पहिने नहा-खा कऽ किछु समए आराम करब तखन मन खनहन हएत। पछाइत सविस्तर बात करबह।"

थकान सुनि बेटा अपन जवाबदेही बुझि गुमे रहि गेल।

OO

तिथि : 10 फरवरी 2014, शब्द संख्या : 342

पेटगनाह

कौल्हुका भोजक अजशसँ सौंसे गामेक लोककेँ चोट लगल मुदा सभसँ बेसी लगलैन कुसुमी काकीकेँ। बेसी चोट लगैक कारण भेल जे भोजक अगुआ नेतेजी काका छेलखिन।

घरवैया तँ अपन माइयक सराध लेल खर्चक जे मन बनौने छल ओ पाइ-चुक्ती केलक। किए ओकर मन कहतै जे दुआरपर सँ पंच अकची-दोकची बजैत गेला। मन तँ यएह ने कहतै जे समाज जेतेक खर्च मंगलैन से तँ दइए देलिऐन तखन काजक भार समाजक ऊपर गेल। जँ कियो नै बुझत बलधकेल अगुऔत तँ अगुआबऽ, अपन मुँह दुइर करता। देखै छी जे केतौ वारीक[4] समाने चोरा कऽ अपना ऐठाम साहि दइए तँ केतौ देखै छी भनसीए अपन कनारि चुका तीमन-तरकारीमे नोनेक गड़बड़ी कऽ दइए। केतौ देखै छी बजारसँ सड़ल-पाकल समान कीनि दुइर करैए। तइसँ घरवैयाकेँ की? जानए जौ आ जानए जत्ता। सातु सने घून किए पिसाएत? बलजोरी जँ कियो पीसिनिहारि बिना उलौने-फटकने घुनाएल अन्न पीसत तँ दोख केकर हेतइ। बलधकेलकेँ कोनो जवाब होइ छै, जेकरा जे फुरै छै से बजबो करैए आ करबो करैए। कियो जँ अजशक दोख घरवैयाक माथपर देत

[4] भोजमे परसैबला

से थोड़े मानत, अपनो मन ने गवाही दइते हेतइ।

काकीक मन ठमकलैन, ठमकलैन कि मानि गेलैन जे भोजैत निर्दोख अछि। जहिना कोनो न्यायालयक न्यायाधीश दूध-पानि बेड़ा अपन पदक संग अपन गरिमा बढ़ा आत्म–परमात्ममे जोड़ि लैत अछि तहिना कुसुमी काकी भोजैतकेँ घिनमा-घीन भेला पछाइतो पैनपत बना कमल फूल जकाँ फुला देलैन। मुदा मन असथिर नै रहलैन, आगू बढ़ि गेलैन।

कुसुमी काकीक नजैर समाज दिस गेलैन। समाजक एहेन दुरगति भेल जे अनगौंआँ पंच सभ जे यत्र-कुत्र बाजल से तँ बजबे कएल मुदा ई जे बाजल जे एहेन रही तँ पूजापर बैसबे ने करी। गामक रखलक की! कोनो कि जइ गामक पंच रहए तही गामक लोकटा बाजत आकि साँझ-भोरक तरेगन जकाँ एकटा नढ़िया टाँहि देत आकि गामसँ आन गाम धरिक नढ़िया हुआँ-हुआँ करए लगत। आनो-आन गामक लोक बाजत। लोको तँ लोके छी किने, मान न मान हम तोहर मेहमान।

जहिना बजै छी तहिना लील समाज अपन समाजक फरिच्छ रूप सोझमे देखब से नीक? आकि बजै छी काग जकाँ आ करै छी कौआ जकाँ से नीक। दुनूकेँ नाँगैर जोड़ि काग-भुसुंडी मानब, अपन-अपन मन मानब भेल। समाजे गाम भेल आ गामे ने समाज, मुदा गाम तँ ब्रह्म स्वरूप निरविकार नीरब अछि ओकर कोन दोख। मनुखे ने समाज बना सूनसँ शून्य धरि फड़ैत-फुलाइत अछि। मुदा समाजो टुकड़ी-टुकड़ीमे तेना कटि-खोंटि गेल अछि जे नीक-अधलाक विचार जटिलसँ जटिलतर बनि गेल अछि। कुसुमी काकीक मन ठमैक गेलैन। मुदा सुदर्शन चक्र जकाँ मन तेना नचैत रहैन जे कोनो दिशा नीक जकाँ बुझिये ने पबै छेली। तखने नेताजी काका आँगन पहुँचला।

जेना साँढ़-पारा अपन कनारि असुलैत तहिना कुसुमी काकी बघुआइत बजली-

"केते दिन मनाही केलौं जे एहेन काजमे[5] नै पड़ू, आब ने ओ राजा भोज छैथ आ ने हुनकर दरबार छैन।"

जहिना टुटल घरमे अकासक बून सोझे लगैत तहिना कुसुमी काकीक बोल नेताजी कक्काक हृदैकें बेध देलकैन। छटपटाइत मन अवाक भऽ गेलैन। नजैर काकीक आँखिमे नाचए लगलैन। बजला किछु ने। दोहरबैत कुसुमी काकी बजली-

"जखन अहाँ देख नेने छी जे अही समाजमे केते भोज-काज भेल अछि जइमे केतेकोकें जशो भेलैन आ अजशो। मुदा जश-अजशक भागी के?"

'जश अजश' सुनि नेताजी काका गोबर सुंघौल मुसरी जकाँ मुँह खोललैन। बजला-

"अपनो नै अखन धरि बुझि पेलौं अछि जे हिसाबमे गलती केतए भेल, जे एना भेल!"

'हिसाब' सुनि कुसुमी काकी बजली-

"कागत परहक हिसाब काजमे नै काज करै छै, केतौ वारीक समाने अपना घर साहि दइए तँ केतौ भनसीए अपन कनारि असुलि नोनगरे-अनोन बना दइए, तँ केतौ खेनिहारे कोनो वस्तुक नाँगैर पकैड़ चपैत-चपैत चापि दइए।"

पत्नीक विचार सुनि नेताजी कक्काक मन मानि गेलैन जे भरिसक सएह भेल हएत। बजला-

"ठीके कहै छी।"

[5] भोज काज

"ठीके की कहब। अहाँ अपने पेटगनाह छी, तेकरे फल भेल।"

○○

तिथि : 14 फरवरी 2014, शब्द संख्या : 593

बड़की माता

"अनसोहाँत भऽ गेल! एहेन कहियो ने देखने छेलिऐ!"

-ओछाइनपर पड़ल, अपन कुहरब छोड़ि अठासी बर्खक मंगली दादी बजली।

जहिना बाट चलैत बटोही हारि-मारि थकान पीड़ासँ पीड़ाएल बजैत तहिना मंगली दादी सेहो बजली। दोसराइत लगमे नै तँए कियो नै सुनि पौलक। जहिना अकासमे मेघक टुकड़ी उड़ि-उड़ि सुर्जक प्रभाकें झँपैत तहिना सोगाएल सोग दादीक बोलतीकें झाँपि देलकैन। जइसँ बोलती तँ बन्न भेलैन मुदा विचार भीतरे-भीतर सुरकुनियाँ मारि बिचड़ए लगलैन। जुग बदैल गेल वृन्दावनक गोपी एक सेकेण्डक सतरह सौमा भागकें जुग मानि कृष्णसँ अलग नै हुअ चाहैत, मुदा से थोड़े अछि। अनेरे कियो बजैए जे कलयुग अखन ढेरबे भेल अछि, समरथाइयो पछुआएले छै आ औरुदो बहुत बाँकी छइ। केता हजार बर्ख आरो रहत।

मनमे बिचैरते रहैन आकि दुबटिया लग पहुँच गेली। पहुँचते विचार उचड़लैन, ऐ बीच तँ मनुखक केता पीढ़ी गुजैर जाएत! मनुखक जिनगीए केतेटा होइ छै! तहूमे चारि टुकड़ी अछि। जँ साए बर्खक मानब तँ पचीस-पचीस बर्खक टुकड़ी भेल, नै जँ अस्सी मानब तँ बीस

बर्खक भेल आ जँ सरकारी मानब तँ साठि बर्खक पनरह बर्ख भेल। तइ हिसाबसँ कलयुगक किए ने बेसी औरुदा पछुआएले छइ। तैबीच पोता मनोज आबि अँगनामे बाजल-

"दछिनबरिया टोलमे बड़की माता एलखिन, तँए ओइ टोल दिस नै जाएब।"

आँगनमे दोसराइत नै, ओछाइनपर पड़ल मंगली दादी जोरसँ पोताकें सोर पाड़ि पुछलखिन-

"बौआ की भेल दछिनवारि टोलमे?"

दादीक प्रश्न मनोजक मनकें जेना धक्का मारलक। धक्का मारलक ई जे दादी पुछलैन। लगमे आबि मनोज बाजल-

"दादी, दछिनवारि टोलमे बड़की माता एलखिन, लोक सभ बजैए जे ओइ टोल नै जइहें।"

एक तँ झूनाएल पाकल टूर खसैत दादीक स्मरण शक्ति, तैपर 'बड़की माता' सुनि असल अर्थ नै बुझि सकली। बुझबो केना करितैथ माएसँ दादी ने बनि गेल छेली। पोताक बातकें सुनि मनमे रखि लेली जे बेटा औत आकि पुतोहु तँ पुछि लेब। बालवोध क्याँने गेल जे बड़की माता केकरा कहै छइ। देवियो होइए आ दानवियो होइए। जीवनदानियो होइए आ लेनिहारनियों होइए। भेल ई जे रोदियाएल सौन भऽ गेल। खाली सौने नै, रौदियाएल अखाढ़ो ने बरिसल। फागुन-चैतक मधुआएल रौद बढ़ैत-बढ़ैत अग्नि स्वरूपा बनि पृथ्वीकें गरैस लेलक। अग्नि स्वरूपा बनबो केना ने करैत? पानिक छुतिये ने समापत भऽ गेल।

अपन सहयोगीक भरपूर सहयोग भेटबे केलै। रस्ता–बाटक बैसल माटि गर्दा-धुरा बनि धुरिया पकैड़ अकासक रसकें चुसि लेलक, गाछ-बिरीछ अपन हरितमा तियागि पीड़ासँ पीड़ा धरतीपर झड़ि गेल।

पोखैर-इनार, धार-धूर माटिक खाधि बनि गेल। सुरूजक प्रखर प्रभाकेँ धरती-अकास बीचक सेना नै रोकि हारि मानि कतबाहि धऽ लेलक, एहेन स्थितिमे कालचक्रक पूजा केहेन हएत? गामे-गाम रंग-बिरंगक तपाएल तप रोग-वियाधिक संग छोटकी मातासँ सैझली, मैझली बड़की माता[6] पसैर गेल! एक तँ ओहिना समैक गरुआएल गरमी तैपर देहक तपित तापसँ तपीआ जिनगीक कठिन परीक्षामे गामक-गाम लोक फँसि गेल।

शुरूमे जखन दछिनवारि टोलमे चेचकक आगमन भेल आकि एके-दुइए मुहेँ-काने सौंसे गाम समाचार पहुँच गेल। मैयाक आगमन होइते ओझहा-धामिक संग झालि-मिरदंग उठि कऽ ठाढ़ भेल। रंग-रंगक प्रहार टोलपर हुअ लगल। ओ सभ तीन सालसँ गहवर खसा अनठौने अछि। तेकरे फल भेट रहल छइ। तेतबे नहि, आनो गामक आ आन टोलोक आएब-जाएब घटैत-घटैत घटिया गेल। एक्कैसो घरक टोलकेँ जेना गामो आ आनो गाम जरै-मरैले छोड़ि देलक।

छोटकी माता[7] अपन रूप बढ़बैत गेल। जहिना शरीरमे बढ़ल तहिना मौसमो बढ़ैत संग-संग चलए लगल। एक्कैसो परिवार रोगसँ आक्रान्त भऽ गेल। ओना दछिनवरिये टोलटा नै गामक आनो टोल आ आनो-आनो गाममे वियाधि पसैर गेल।

ओछाइनपर पड़ल मंगली दादीक मन फड़फड़ेलैन। मैयाक[8] आगमन तँ चैत-बैशाख आकि आसीन-कातिकमे होइ छेलै, जखन रीत-बेवहार बदलै छइ। अखन तँ सौन छी तखन किए भेल? अखन तँ बाध-बोन हरिआएल रहैत, पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ चर-चाँचड़

[6] खसरासँ लऽ कऽ बड़की गोटी धरि

[7] खसरा

[8] चेचक

जलजलाएल रहैत, से किए ने अछि? मासक ठेकान तँ दादीकेँ मन पड़लैन मुदा मौसमक ठेकाने ने रहलैन। ठेकानो केना रहितैन, घरहटिया घरहटक समैक लछन-करम ठेकना नक्षत्र मन रखैए, किसान किसानी आ बेपारी बेपारक, से तँ आब दादीमे नै रहलैन। तँए मन नै बुझि पेलकैन। मुदा सुनाएल मन सपनए लगलैन। सपनाइते खापड़िक मकैक लाबा जकाँ चनैक धरतीपर खसलैन। खसिते चनचनेली-

“कहाँ दन साते-आठेटा मखानक फोंका जकाँ देवसुनराकेँ तेहेन निकैल गेल अछि जे तनो-भगन-वेनग्र भऽ गेल अछि। बापो-माए डरे लगमे नै जाइ छइ। जेबो केना करतै। जखन एक्के घरक सातटा स्त्रीगण सात सीढ़ीमे तेना बँटा जाइए जे मनुखक शक्ले-सुरैत बदैल जाइ छै, तहिना ने बरो-बेमारीक अछि। साधारण पेटझड़ीबला जँ रद-दसबला टोल जाएत तँ जानियेँ कऽ ने ढोढ़ीया बीखकेँ गहुमनेक बनौत...।”

एक्कैसो घरक टोलमे ने एकोटा परिवार नागा रहल आ ने एक्कोटा मनुख। जहिना दुनियाँक सभ पुरुखकेँ नारीक संग कऽ देल जाइ छै, तहिना। टोलक सभ चेचक वियाधिसँ व्यग्र भऽ गेल। के केकरा देखत। सबहक मन कहै, जान रहत तखने ने जहान। जँ जाबे से नै रहत तँ जहाने की। सभ दिन सभ काल दुनियाँक उदए-परलए तँ होइते छै, तँए कि सभले एक्के होइ छइ। दुनूक फेँट-फाँटमे जे जेहेन बीछिनिहार रहल ओ ओहेन कऽ बीछि लइए। अनायास स्मृति जगलैन। जगिते मन पड़लैन अपना देहमे भेल चालीस बर्ख पहिनुका चेचक। मझिली मैया मन पड़िते देह ओहिना सिहरि गेलैन जेना बर्खाक बून पड़िते अकासमे उड़ैत चिड़ैकेँ होइत। एक तँ उमेरक जर्जर अंग तैपर चालीस बर्खक स्मृति तेना कऽ मंगली दादीकेँ गरैस लेलकैन

जे गराँसक चोटसँ जहिना अंग भऽ जाइत तहिना भऽ गेली। बेथाएल तन-मन तेना अकैड़ दबलकैन जे मुँह भरभरेलैन-

“हे भगवान! अनेरे कोन नरकमे रखने छी, कहिया धरि राखब।”

मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे जाबे आँखि तकै छी ताबे अहिना ने होइतो रहत आ देखबो-भोगबो करैत रहब। तइसँ नीक जे लऽ चलू जिनगीक ओइपार जैठाम ई सभ नै देखब।

ओसारक दछिनवारि भागमे मंगली दादीक ओछाइन, तहीबीच बेटा बुधियार आँगन पहुँचल। माइक सभ बात तँ बुधियार नै सुनि सकल मुदा अन्तिम बात, ‘लऽ चलू...।’ सुनलक। सुनिते बुधियारक मनमे उठल, माए की बाजि रहल अछि! झब-दे लऽ चलू केतए लऽ चलू? मन मुड़ियाएल। मुड़ियाइते भेल जे भरिसक रोग-पीड़ासँ रोगाएल-पीड़ाएल मन तड़ैप रहल छइ। फेर भेलै जे अनेरे मनकेँ औनाबै छी। माइयो कियो आन थोड़े छी जे पुछैमे संकोच हएत। बाजल-

“माए, की भेलौ, एना किए बजै छेँ?”

बुधियारक बोल सुनि मंगली दादीक हूबा जगलैन हूबगर होइत बजली-

“सुनै छी जे गाममे मैयाक आगमन भेल अछि?”

माइक बात सुनि बुधियार तारतम करए लगल जे माए लग झूठ केना बाजब? तहूमे जखन कहियो ने बजलौं, मुदा प्रश्नक जवाबो केना देब। जहिना दछिनवारि टोलक रस्ता छोड़ि देलौं, तहिना तँ उतरवारियो टोलक। फेर तखन केना हँ कि नै कहबै। जहिना चिड़ै लोलसँ बोल मिलबैत तहिना बुधियार माइयक बोलसँ बोल मिलबैत बाजल-

“हँ, माए ठीके भेल अछि।”

बेटाक बोल सुनि मंगली दादीकेँ सुआस पड़लैन। दोहरबैत बजली-

“आनो-गाममे भेल अछि आकि अपने गामटा मे?”

दादीक मन बढ़ैत देख मनमे भेल जे अखन धरि सुनलेहे बजलौं, आन गामक जँ बाजब आ अढ़ा दिअए जे अपनो कुटुम-परिवार तँ ओइ गाममे अइछे, कनी जिगेसा कऽ आबह तखन तँ भारी पहपैट हएत। रस्ता–पेरा केतए फँसि जाएब तेकर ठीक अछि। बाजल-

“माए, कनी नीक जकाँ भँजियबै छी तखन नीक जकाँ कहबौ। सुनै छी जे कहाँदन ओझहा-धाइम भाउ खेलाएल तँ कहलकै, गामक सीमान बान्हि देलियह, तखन तँ जानक बदला जान दिअ पड़तह।”

मंगली दादी पुछलखिन-

“वैद की कहलकै?”

ओझहा-वैदक नाओं सुनि बुधियारक मन मानि गेल जे बिना झूठ बजने काज नै चलत। मुदा जहिना बाल-वोध तहिना थाकल-ठेहियाएल बुढ़-बुढ़ानुसकेँ बौसब बड़ भारी नहियेँ अछि। बाजल-

“अनेरे कोन फेड़मे पड़ै छेँ। राम-राम कर सभ नीक भऽ जेतै।”

‘राम-राम’ सुनि मंगली दादी तारतम करए लगली जे ‘राम-राम’ की कहलक। मरैकाल राम-रामकेँ सत् लोक मानैए। अधला काज केला पछाइत राम-राम कहि दुतकाइर दइ छइ। शुभ काजक बेर जँ राम-नाम सत् छी बाजब तँ कपर फोड़ौबैल करा लेब, तखन बुधियार की बाजल। माइयो रगड़ी बजली-

“बौआ, ओझहो-गुणी नै देखलक-सुनलक हेन?”

माइक रगड़गड़ बात सुनि बुधियार रगड़ाइत बाजल-

"नेति-नेति कहि कातेसँ छुअब छोड़ि सतदिना रोग कहि जीबै-मरैले छोड़ि देलक।"

OO

तिथि : 18 फरवरी 2014, शब्द संख्या : 1224

धरती-अकास

सुधीराक बिआहक गप-सप्प उठल। तीन दिन पहिने बी.ए.क रिजल्ट निकलल छेलइ। राजनीतिशास्त्र आनर्स पाबि सुधीराक मन मानि गेल छल जे राज-काज बुझै-चलबैक लूरिक प्रमाणपत्र युनिवर्सिटी दऽ देलक।

सुधीराक पिता प्रोफेसर साहैब संगी-बीच बैस चाहो-पान करैत रहैथ आ ठहाका-पर-ठहाका सेहो दैत रहथिन। ठहाकाक कारण भेल जे अपन टारगेटक भीतरे बेटीक बिआहक गर लगि गेलैन। बरो राजनीतिशास्त्रेक प्रोफेसर छथिन। साल भरि पहिने नोकरी भेलैन। बर-कन्या जँ एक विषयक जानकार हुअए तँ ओ जिनगीक लेल सोनाक सुगंधे भेल। संगी सभकेँ बजबैक कारण प्रोफेसर साहैब सबहक बीच सुधीराक बिआहक चर्च उठा, बेटीक विचार जानए चाहलैन।

गद-गदाएल मने प्रोफेसर साहैब सुधीरा दिस देखैत संगीक बीच बजला-

"बेटीक बिआह पसिनगर घरमे हएत।"

संगी सभ जेना बाँसक एकटा चोंगरामे अनेको गोरे पकैड़ सह दइए तहिना मने-मन सभ देलकैन। मुदा सुधीरा राजनीतिशास्त्रक

छात्रा छी, अपना लगसँ लऽ कऽ दुनियाँ धरिक राज-काजक प्रक्रिया जनैए। बाजल-

"बाबूजी, केहेन परिवारमे पठबए चाहै छी?"

पिता चुपे रहला। दोसर जे संगी रहथिन ओ बजला-

"बाउ, संयुक्त परिवार, खानदानी परिवार, तहूमे सातो भाँइक भैयारीमे सभसँ छोट भाइक संग।"

सुधीरा-

"जहिना सात तल अकास ऊपर अछि तहिना सात तल पतालो। भैयारीक सातम तलकेँ ऊपर-निच्चाँ तजबीज केलिऐ?"

OO

तिथि : 19 फरवरी 2014, शब्द संख्या : 184

बकठाँइ

ओछाइन छोड़िते दुनू परानी लाल भायकेँ बकठाँइ शुरू भऽ गेलैन। बरहमसिया बकठाँइ तँए शुभ-अशुभक मद्दी नहि। मद्दी तँ ओतए होइए जेतए नियमित किरिया-कलाप चलैत। ओना दोसरो कारण छेलैन, से छेलैन पति-पत्नीक बीच जिनगीक सम्बन्ध। तँए कहियो एहनो भाइए जाइ छैन जे सुतलियो रातिमे आ कहियो अकलबेरोमे तेहेन परोड़क मुड़ी जकाँ सरेड़ निकलै छैन जे अड़ोसियो-पड़ोसियो आ दियादोवाद गामसँ फाजिल कहि अपन मुँह बरैज लइ छैथ। ओना से ओहिना नै कियो बरजलैन, किछु दिन पहिने जोतखी भायसँ निसभेर रातिमे तेहेन बजरान बजरलैन जे सौंसे गामक लोक जमा भऽ गेलैन।

गौआँकेँ चाबस्सी दी जे जोतखीए भायकेँ दोखी बना मुँह बन्न करैले कहि, छोड़ि देलकैन। बात कोनो कि किछु रहै, एतबे रहै जे किछु एहनो काज होइए जेकर बरजित अकलबेरामे कएल जाए। तँए छुट्टा साँढ़ जकाँ दुनू परानी लाल भायकेँ गौआँ बुझि, एक घर डाइनो बरजै छै कहि बिनु नीनक पकड़ल ओछाइनपर कर घुमि-घुमि कछमछ करितो, कानमे झड़ पड़बितो अड़ोसिया-पड़ोसिया ने लगमे पहुँचैक साहस करैत आ ने सुतले-सूतल कियो मनाही करैबला। तेकर

कारण ई नै रहै जे लाल भायसँ आन कम तागैतबला छैथ आकि दउगर-पेंचगर कम छैथ।

मुदा कारण जहिना धानक झड़ केतौ धाने झड़ भऽ जाइए आ केतौ झड़ाह बनि झड़ बनैए। माने ई जे एक धानक खेतीक बीच जँ दोसर धान आबि गेल तँ ओ धानो भेल आ झड़ो भेल। धान भेल जे जँ एकरंगाह दोसरमे चलि गेलौं, मुदा फुटै-पकैक, नमती-मोटाइ आ गुद्दाक रंग जँ एक हौउ, तँ किए ने धान भेल। मुदा तुलसीफुल आकि कनकजीर धानक खेतमे जँ उलाँक धान मिझड़ा जाए तखन की कहबै? एकटा धान दोसरसँ दस बड़ नमहरो आ दस बड़ मोटो होइए। खाइकाल तँ पारखी ओकरा पकैड़ घरनीकेँ दसटा सोहर सुनबैक अधिकारी तँ बनियेँ जेता किने। बनबाको चाहिए। जैठाम एक-एक दाना पकड़ैक बात अछि तैठाम जँ पँचमुखी रूद्राक्षमे गो-मुखी नुकबए चाहबै तँ की छोड़बो उचित? खाएर जे हौउ...।

बरहमसिया बकठाँइ तँए दुनू परानी ओहेन अभ्यस्त जे घण्टो भरि एके आसन एके टाँगे धेने रहै छैथ। ओना लाल भाय आ लाल भौजीक विचारक दूरी नमहर छैन मुदा बिना दूरी पार केने सीमोपर नहियेँ पहुँचल जा सकैए। तहूमे मनुख समाजिक प्राणी छी, जँ दूटा मनुखकेँ एकठाम रहैक सूत्र नै बनल रहत तँ सदिकाल भैंसा-भैंसी होइते रहत। विवाह सूत्र तँ दुनू परानी लाल भायकेँ बान्हिए देने छैन।

दुनू परानी लाल भाइक औझुका बकठाँइ छेलैन लाल भाइक ओ विचार जेकरा ओ सिद्धान्तसँ जोड़ि रखने छैथ। तैबीच भौजीक सुमति जगलैन आ बेड-टी केर ओरियानमे लगि गेली मुदा लाल भाय ओछाइनेपर पड़ल रहला। जेना अस्सी मन पानि विचारपर पड़ि गेल होइन तहिना। जहिना बच्चाक शुरूक शिक्षा जिनगीक संग अधिक दूर तक संग पुड़ैए तहिना लाल भाइक विचार सेहो संगे चलि रहल छैन।

सिद्धान्तक बीच फँसल रहैन लाल भाइक विचार! चाह पीबैसँ पहिने लाल भाइक मन तुरैछ गेलैन। तुरुछैक कारण छेलैन जे अखन धरिक जे जिनगी रहलैन ओ ई रहलैन जे जँ घर-बाहर एकरंगाह काज हुअए तँ पहिने बाहरक कऽ ली, पछाइत घरक। तहिना दोसर विचार रहैन जे जँ अपनो काज रहए ओहने काजक भार जँ दोसराइतोक होइ तँ पहिने दोसराइतक करब नीक। मुदा..।

तइ विचारमे फँसल। मनमे रंग-रंगक बात गाड़ीक पहिया जकाँ चलैत रहैन। पैनपत जहिना बीज रूपमे एक दिस पाँकमे गड़ल रहैए तँ दोसर दिस कमल सदृश आँखि सेहो बनौने रहैए तहिना लाल भाइक विचार ऊपर-निच्चाँ होइत रहैन। बच्चेमे एक गुरु नै अनेक गुरु माए-बापसँ लऽ कऽ साहित्य धरिक गुरुक उपदेश कानमे पड़ैत रहल छेलैन जे 'सत् बाजी, केकरो अनुचित नै करिऐ', सत्-धर्मक पालन करी! मुदा देख की रहल छी।

मन बमैछ गेलैन, बुदबुदेला-

“कियो अपन कर्ता-धर्ता छी, सिद्धान्तक संग कोनो समझौता नहि।”

शिवलिंग जकाँ विचारक बीच खुट्टा गाड़ि देलैन।

ओछाइनपर पड़ल लाल भाय जिनगीक परीक्षाक बीच फँसल छला। चाहमे कनी चीनी बढ़बैत लाल भौजी गद्-गद् जे दुनियाँक के एहेन पुरुख अछि जे अपन स्वेच्छासँ जिनगी बना लेत? तैठाम तँ अजमौल पुरुख छैथे। लगले पाछू घुसकिये जेता। धुआइत चाहक कप दहिना हाथसँ उठबैत लाल भौजी बजली-

“किए, महींसिक मोड़ जकाँ ओछाइन पकड़ने छी, उठब चाह पीब आकि पड़ले रहब।”

लाल भौजीक बात लाल भायकेँ जँचलैन। फुरफुरा कऽ उठि

जेबीक पाइ सेरियबए लगला। चाह लाल भौजीक हाथेमे। पाइ सेरियबैत देख भौजी टीपली-

“भोरे लोक राम-नाम करैए, अहाँ पाइए सेरियबै छी।”

लाल भौजीक मनोवृति भैया नीक जकाँ परेखने। परेखने ई छैथ जे अनकर काजक किछु हौउ, अपन कुरथी बलुआ जाए। तैपर दूधबलाक काजक समैपर सेहो नजैर रहैन। दूधबला बेटी बिआहक सरंजाम कीनए भोरे बजार जाएत। लाल भाइक हाथमे पाइ नै रहैन, तँए घुमबैत कहने रहथिन-

“नअ-दस बजे राति तक पाइ औत, काजक घरमे अनेरे नै बैसह, बजार जाइसँ पहिने तोरा पाइ पहुँचा देबह।”

छअ बजेक समए देने रहथिन। अँखिमुना बिसवासू दूधबला, तँए पाइक चिन्ता मनसँ हटा नेने रहए। जहिना भक्तक मन भगवानपर सँ हटि भगवान बनि जाइए, तहिना।

चाह पीब लाल भाय सोझे दूधबला ओइठाम विदा भेला। विदा होइते लाल भौजी टोकि देलखिन-

“केतए जाइ छी?”

“दूधबलाकेँ पाइ दइले।”

“भोरे-भोर अहूँकेँ किछु फुरल नै जे अनेरे विदा भेलौं?”

“की अनेरे?”

“जेकरा खगता रहै छै, ओ अनेरे दौगल अबैए।”

“हमहूँ खगता बुझलिऐ तँए ने दौगल जाइ छी।”

पतिक सकताएल विचार सुनि लाल भौजी ठमैक गेली। बजली किछु ने। मुदा नजैरक लाली कतियाए लगलैन। जहिना बाघक आगू

पड़ने दुनूकेँ[9] ज्वर लगि जाइ छै तहिना दुनू गोरेकेँ हुअ लगलैन।

मुदा दुनूक ज्वरक दू कारण छेलैन। केकरो रौद-बसातसँ एला पछाइत नहेलासँ अबैत तँ केकरो नहेला पछाइत रौद-बसातमे गेला पछाइत अबैत। लाल भाय अपन विचारक पाछू अपन मानक संग परिवारक सम्मानक रक्षाक बातमे डुमि कलियाएल जाइत रहैथ तँ लाल भौजी अपन मान-सम्मानमे।

ОО

तिथि : 24 फरवरी 2014, शब्द संख्या : 883

[9] बाघो आ आदमीओकेँ

चैन-बेचैन

नव हवाक वेगमे गौँआँ सभकेँ मन फुरफुरेलैन। फुरफुरेबोक चाही। फुरफुरेलैन ई जे वृन्दावनमे गीताक जानकार ज्ञानी दास छैथ, हुनकासँ पनरह दिन प्रवचन करौल जाए। गामक धर्मक काज तँ गौंए-क भेल तँए सबहक भागीदारी होइ। अद्रा नक्षत्रक मेघ जकाँ समाजमे हुमरल। ओना ज्ञानी दास भागवतो आ गीतो-रामायण कहिते छैथ तँए हुनके आनल जाए। चन्दाक गुम-गुमी चलिते छल आकि एक गोरे बाजि गेला-

“सोलहन्नी खर्च देब, अहाँ बेवस्था करैक भार लिअ।”

मुदा प्रस्तावपर सहमत नै बनल ‘जेकर चून तेकर पून’ भऽ जाएत। तखन ई हुअए जे ‘चन्दा सौंसे गामसँ हुअए आ जे घटतै ओ देथुन।’

मुदा बिच्चेमे दोसर प्रश्न उठि गेल जे घटतै तखन ने ओ देथुन मुदा जँ बढ़ि जाए। घमरथन शुरू भेल, होइत-हबाइत फेर सहमत बनल जे धर्मोक काजक कि कमी छै, फेर दोबरा कऽ भऽ जाएत।

ज्ञानी दासक आगमन भेलैन। प्रवचन शुरू करैसँ पहिने सामुहिक रूपे सभकेँ पुछि लेलैन जे भागवत सुनैसँ पहिने गीता सुनि लेब नीक हएत। ज्ञानी दासक प्रश्नपर घोचालि शुरू भेल। घोचालि ई

जे नीक-अधला तँ वएह ने बुझि सकैए जे दुनूकेँ जनैत होइ। जइ गाममे कहियो भेबे ने कएल, तइ गाममे नीक-अधला कथी हएत। नीक हएत जे हुनकेपर माने ज्ञानीए दासपर छोड़ि दियनु, जड़िसँ कहथिन।

कौलेजमे पढ़ैत रमेशकेँ इन्टरनेशनल वेपारी जकाँ बेसी लाभ बुझि पड़ल। बेसी बुझैक कारण जे गीताक कर्म-ज्ञान जोगक बात घरे बैसल बुझि लेब, सेहो समाजक बीचमे, तहूसँ नीक जँ परिवेशक अनुकूल प्रवचन होइ तँ सभसँ नीक। स्कूल-कौलेजक विद्यार्थी जकाँ रमेश प्रवचन शुरू होइसँ दस मिनट पहिने पहुँच गेल। पहिलुके प्रवचन सुनि रमेशक मन जिनगी जीबैले तेना उताहुल भऽ गेलै जे नअ बजे रातिमे जखन घरपर घुमती अबै छल तइ बिच्चेमे तीन बेर सप्पत खेलक। पहिल सप्पत सुनितेकाल खेने छल जे ‘आइसँ जीवन-पद्धति बदैल लेब।’

घरपर आबि रमेश मने-मन संकल्पो अजमाबै आ खैयोले गेल। गुम-सुम। जहिना संकल्पी खेबाकाल नै बजै छैथ तहिना तीत-मीठक बात रमेश किछु ने बजैत।

जहिना कोयला-पानि इंजनमे पड़ला पछाइत शक्तिक संचार हुअ लगैत तहिना रमेशोक मनमे हुअ लगल। बिनु लछनक अनेको विचार बर्खाक बुलबुला जकाँ उठै आ फुटै। दुनियाँ दिससँ सूत ससारि, जलिवाहक जाल जकाँ, पत्नीपर एकाग्र केलक..।

..साल भरि पहिने दुरागमन भेल। जेतेकाल पीढ़ीपर बैस भोजन करै छी जँ तेतबोकाल दुनू परानी बैस विचारी जे भोजनक कि प्रयोजन जिनगीमे अछि, केना जुटा पाएब? मुदा से कहाँ होइए। बुझलो बात, परिवारक हिसाबसँ सिदहा लगै, जँ खेला-पीला पछाइत समगम भऽ जाए तँ नीक-बेजाए पुछैक प्रयोजने की? अधला जँ बनल रहैत तँ

खेनिहारेक काजसँ ने पता चलि जाइत। एक तँ अहुना चाहक दोकान जकाँ उलझल अछि जहिना एक केतलीमे बनल चाह एक रंग हएत, मुदा पीनिहार रंग-रंगक, तैबीच नीक-अधला बनबे करत। कियो मीठगर पीबैए, तँ कियो गाढ़ लीकर। तहिना परिवारोमे ऐछे, कियो मीठ नोन खेनिहार तँ कियो नोनगर। विचारक विरामो नै भेल छेलै आकि दोसर विचार रमेशक मनमे उठि गेलइ। उठि गेलै जे पुरुख सबल होइ छैथ आ नारी अबल। एहेन स्थितिमे अबलकेँ केना सबल बनौल जाए? मुदा अबल सबल बनै-बनबैसँ पहिने सबल अबलक बाट देखए पड़त। केना अबल आ केना सबल मानल जाए। रंग-रंगक अवलो होइए आ रंग-रंगक सवलो होइए। ज्ञान, धन, जन, मन सेवा तँ बीचमे अछिए। पानि-मक्खन मिलल दूध घोड़ाएल घोड़ जकाँ रमेशक मन घोर-घोर भऽ गेल। बाजल किछु ने चुपचाप खा कऽ ओछाइन दिस बढ़ल।

ओछाइनपर अबिते रमेशक मन रमेशकेँ पुछलक-

“जीवन पद्धति की?”

जहिना रोगक घरमे, अगिलगुआ घरक, पेटजरूआक नीन पड़ा जाइ छै तहिना रमेशक नीन पड़ा गेल। पानिक बुलबुलामे इन्द्रधनुषी रंग देखैत मुदा लगले फुटि गेने छिड़िया जाइ। कछ-मछ करैत ओछाइनपर लगले-लगले कर फेड़ैत। नीन अबैक केतौ दरस नहि। फेर ज्ञानी दासक प्रवचनपर पहुँचल। आइसँ जीवन बदलत? मुदा जँ नीने अबैबेर नीन नै औत, आ जगै बेर नीन चलि औत तखन जागब केना..?

..दस बजेक समए भऽ गेल, बारह बजे रातिक पछाइत दिनक आगमन भऽ जाइ छइ। करियाएल-कजड़ाएल अन्हारमे सुरूजक रोशनीक प्रवेश हुअ लगै छइ। जिनगी बदलैक पाछू समए तँ पकड़ए

पड़त। जँ से नै पकड़ाएत तँ जिनगी केना पकड़ाएत। रातिक बारह बाजल। देवालमे टाँगल घड़ीकेँ देखते रमेश उठि कऽ बैस गेल। घड़ीक सुइया नाचि रहल छइ। बारहक अन्त भऽ गेल मुदा रमेशकेँ अन्हारमे किछु देखे ने पड़ैत जे की करत?

अन्हार-अनहेरसँ भरल दुनियाँ। कोठरीक बीच लालटेनक टिमटिमाइत इजोतमे रमेशकेँ किछु सुझिये ने रहल अछि जे डेग केमहर उठौत। समैक संग घड़ीक सुइया नाचि रहल अछि। घन्टा-डेढ़ घन्टा बीति गेल मुदा रमेशकेँ किछु फुराएल नहि! घरसँ बाहर किछु करैक अनुकूल नै अछि घरक भीतर काज नै अछि तखन? अतस-बितस करैत विचारलक, जे इजोत अछि तेहीमे ने किछु करैक जगहो अछि।

ठमैकते मनमे उठलै- लीढ़ वा समाढ़सँ भरल पोखैरमे केना स्नान कएल जाए?

सोचैत-विचारैत तँइ केलक जे जेते पानिक जरूरत अछि तेते दूरक घाटक लीढ़-केचली-समाढ़ हटा देने तँ नहाइक काज भाइए सकैए। मनमे आशा जगलै, आशा जगिते विचारल, जाबे सुरूज धरतीपर देखाइ नै देत ताबे तक लालटेनेक इजोतमे पढ़बो करब आ पढ़लाहाक रस निचोड़ि लिखबो करब। काजक नक्शा बनिते रमेशक मन प्रसन्न भेल।

पोथी खोलि रमेश पढ़ब शुरू केलक। एक तँ जगरनाक आँखि-मन तैपर विषयक गंभीरता, चाह पीबैक मन भेलै। बढ़ैत-बढ़ैत मन छुछुआ लगलै जे कखन चाह भेटत जे पीब।

जहिना बाढ़िक पानि निच्चाँ दिस एकमुहरी बहए लगैए तहिना चाहक भूख एकमुहरी भऽ गेलइ। मुदा एते रातिमे चाह औत केतए-सँ। जँ पत्नीकेँ उठा चाह बनबए कहिऐन तँ ओ रपैट कऽ कहबे करती

जे चाह कोन नीक पेय छी जे एती रातिमे पराण छुटैए। पराण तँ नै छुटैए मुदा काजो तँ आगू नहियेँ कऽ पाइब सकै छी।

असोथकित भऽ रमेश निर्णए करैत बाजल-

“काजक दौरमे जइ-जइ वस्तुक जरूरत होइए ओकर ओरियान शुरू करैसँ पहिने जँ कऽ नेने रहब तखने ओइ काजकेँ बिसवासू बना सकै छी। नै तँ अभावगक आगि मनकेँ थीरे ने हुअ देत।”

दोसर दिन जानियेँ कऽ प्रवचन सुनए रमेश नै गेल। अपने मन धिक्कारैत रहै जे जेतबो सुनि बुझि करैले डेग बढ़ेलौं, से तँ समहरियो ने रहल अछि आ तैपर सँ आरो सुनि माथकेँ भरियाएब नीक नहि।

OO

तिथि : 09 मार्च 2014, शब्द संख्या : 936

अलपुरिया बरी

फागुनक लहकी लगनक धुमसाही, बटोहीसँ बाट बोनाएल रहैए। फगुआ मनबए दिनेश भाइ काल्हि साँझू पहर गाम पहुँचला। लगनक धुमसाही देख अपने फुरने बजला-

“अखन तकक जिनगीमे दुइयेटा घरदेखिया भोज पइर लगल अछि।”

अकछाइत पुछलयैन-

“एना किए सुमारक होइए, दिनेश भाय?”

‘सुमारक’ सुनि सुमरला-

“पहिल पइर लगल पचही आ दोसर पइर लगल अलपुरा।”

बजैक फुरफुरी देख टोनि देलिऐन-

“मने-मन गुर-चाउर फँकै छी आ...।”

एतबे सुनैत बजला-

“घरदेखिया भोज कहै छेलौं, घरदेखीमे अपनैत चलै छै जइमे लोक जमाए-वर्गसँ ममियौत तक पुरा लइए। मुदा तेतबे से थोड़े अछि।”

टोकारा देलिऐन-

“से की?”

बजला-

“जाति-जाति बीच समाज बनि टुकड़ी-टुकड़ी टुटि रहल अछि, मुदा गुण अछि जे केकरोसँ दोस्तीए ने अछि।”

दिनेश भाइक खुशी देख पुछलयैन-

“पचहीक बरी बिसैर गेलिऐ?”

बजला-

“बिसरलिऐ कहाँ, एकटा बात कहि दइ छी, ओना अपनो खोंटाह छी। खोंटाह ई छी जे सभकेँ गाममे पेट भरै छै अपने बंगलोर धेने छी।”

बिस-बिसाइन मन होइत देख कहलयैन-

“छोड़ू, ऐ सभकेँ।”

जेना प्राश्चित भऽ गेल होइन तहिना बजला-

“दस बर्ख पहिने सुतरल पचहीक बरी। एँह भोजक नाक। नाको केना ने बनत, जे दालि तेल-फोरन छौंकसँ उड़ि जाइए, तेकरा जँ नहा-धुआ, मेहीसँ महिया बरी बनौल जाइए ओ केना ने नाक भेल। नाक तक ठेका कऽ खेलौं। थारीपर सँ उठिये ने हुअए, कहुना कऽ उठि घरवारीकेँ पीठ ठोकि जश देलिऐन। एहेन जश जिनगीमे केकरो देनौं ने छेलिऐ।”

दिनेश भायकेँ भँसैत देख पुछलयैन-

“दोसर?”

मकै-लाबा जकाँ हँसैत भरभरेला-

“दोसर खेप अलपुरिया बरीसँ भेँट भेल। गोलगर-गोलगर,

फुलल-फुलल। पैछला भोज धक-दे मन पड़ि गेल। बरीक संग बर। भरिसक तहिना फुलल-फुलाएल अछि। मुदा ले बलैया अँठियाएल रसगुल्ला जकाँ तरमे आँठी बुझि पड़ल। भोजपुरिया लिट्टी जकाँ, मुदा सेहो कहाँ भेल, ओ सुखल जिनगी जीबैए। बड़ हएत तँ ओ जलखै हएत मुदा ई कल्लौ भेल।”

OO

तिथि : 12 मार्च 2014, शब्द संख्या : 287

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742
मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-12-4

4th Edition

समरथाइक भूत

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

समरथाइक भूत

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि
दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल...
तैठाम देखिनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बनियेँ जाइ छै..!

कथाक सत्तैर

ISBN : 978-93-87675-11-7

दाम : ₹ 251/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SAMARTHAIK BHOOT
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

खुदियाएल

जिनगीक तीसम बर्खमे जइ नजरिये धीरेन्द्र आ महेन्द्रकेँ जिनगीक अकलवेरामे भेँट भेल ओ अखन तक नै भेल छल। भेँट होइते धीरेन्द्र बाजल-

"महिन्दर भाय, केते जुगक पछाइत दुनू संगी एकठाम भेलौं!"

जहिना लुल्हा-नेङ्गराकेँ भगवानक भेँट जगरनाथमे होइए तहिना महेन्द्रकेँ मनमे उठलै- केमहर सुरूज उगल जे एहेन विचार धीरेन्द्रक मनमे एलइ। सदिकाल संग रहैबला संगी भेल आकि तीस बर्खक पछाइत भेँट भेला पछातिक संगी भेल? भरिसक केतौ-ने-केतौ जिनगी खुदियाएल अछि। मुदा दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ रहि-रहि, मुँह खोलाएब शंकाकेँ जन्म देत। जखन संगी छी तखन धारक हेलिनिहार जकाँ चीत हेलह आकि पट मुदा हेलह धरि। अपने ने धारक धारा चीतसँ पट आ पटसँ चीत करैत रहतै।

चीत-पटक बीच पड़ल महेन्द्रक मनमे धीरेन्द्रक मुहसँ खसिते जहिना जेठुआ तबल जमीन बिहरिया पानिकेँ ऊपरे लोकि लइए तहिना लोकैत महेन्द्र बाजल-

"भाय, दिन-ठेकान तँ डायरी लिखिनहारक हिसाबमे लिखाइ छै, ऐ मानेमे हम सिलौट-लोढ़ी छी। मर-मसल्ला नै खाइ छी तँए ने

बुझै छी, मुदा बहू दिनक पछाइत भेँट भेलौं ई तँ मन मानिते अछि।"

धारक वेगमे जहिना नहेबाकाल हियासए पड़ैत जे केते वेग आकि केते धारा तकमे अपनाकेँ थीर रखि नहा सकै छी, आ कखन अगम भेने डुमि जाएब। मुदा से तँ समतल-सरोवर पानिमे नै होएत। धीरेन्द्रक मन गवाही देलक। गवाही पेबते मन मोहियेलै। बाजल-

"भाय, किछु विचार करब अछि।"

'विचार' सुनिते महेन्द्र बाजल-

"भाय, अगुताएल ते ने छह। देखबे केलह जे बाड़ीसँ ऐबते छेलौं, हाथमे खुरपियो रहबे करए आकि तोरापर नजैर पड़ल। खुरपी ने ओतै पटैक देलिऐ आ दरबज्जाक कुरसी सोझ केलौं, मुदा हाथो-पएर धोब आ कनी चाहो पीबैक मन ने होइए।"

महेन्द्रक रूखि अनुकूल देख धीरेन्द्रक मन मानि गेल जे ह्रदै रूपी मनक बात करै-जोकर स्थानपर पहुँच गेल छी..!

बाजल-

"भाय, तोहर-हमर देह आकि परिवार, कोनो दू छी जे तोहर बात हम नै बुझिऐ आ हमर बात तूँ नै बुझह। हमरा सबहक काजे कोन गाममे रहि गेल जे औगताइ रहत?"

धीरेन्द्रक बात सुनिते महेन्द्रक मन मानि गेल जे ओतेकालक पलखैत भाइये गेल जेतेकालमे चलैत-फिड़ैत अपन काज सम्हारि लेब। काजे जकाँ विचारो ने सम्हारल जाइए। जँ बैसब तखन ने दोखी हएब, ई तँ भेल अपन जिनगीक दिनकेँ उसारब ताबे गोधूल वेलो मेटाइ छइ। संध्याबन्धनक बेर सेहो होइए। तैसंग ईहो मनमे होइ जे जखन बैस कऽ किछु सोचब तखन ने कोनो शंको धीरेन्द्रक मनमे उठतै। जाबे अनमेनामे लागल रहब ताबे तँ बुझबे करत जे सेना जकाँ

थोड़े चलत, बड़ चलत तँ मेना-अनमेनाक चालि चलत। तँए अपन जिनगी आ अपन परिवारक जिनगी की रहल, जेकर उपज अपने छी, आ ओहो[1] अछि। ओना, जिनगीक भौको तँ हरही-सुरही नहियेँ अछि, ई तँ ओहन अछि जेकरा पकड़बो असान नहि। असानो केना रहत, जहिना लोकक बुधि छै तहिना ई दुनियाँ अछि। मरूओ भरिसँ कम बुधि किए ने हौउ, मुदा ओकरो मन तँ कहिते छै जे दुनियाँमे ऐ बुधिक जोड़ा नहि। टिटही जकाँ ओहो बुझिते अछि जे अकासो आ दुनियाँ हमरेपर ठाढ़ अछि। जँ से नै अछि तँ किए कियो बजैए जे दुनियाँमे जहिना चोर अछि, तहिना साधुओ अछि, जहिना बेइमान अछि तहिना इमानदारो अछि, जहिना पापी अछि तहिना धरमतमो अछि, मुदा अपने की छी से बुझी की नै बुझी...।

तेतबे किए, जहिना बुधिक भण्डार–मनुखकेँ भगवान निरमा कऽ दुनियाँ भरि देने छथिन तहिना दुनियाँकेँ सेहो तेते झमटगर बना कऽ रखि देने छथिन जे केतए माटिक तर सीर छै आ केतए ऊपर, से थाहबो कठिन अछिए। जइमे लोक औनाइत रहैए। मुदा सभ कियो की औनेबे करत? जेकरा ई सबुर छै जे मुट्ठी बान्हि कऽ आएल छी पसरल हाथ नेने जाएब, तइले अनेरे भरि दिन रोडपर आकि गाड़ी-सवारीमे आकि धुँआ-धुकुर होइत कारखानामे भूत बनि किए भुतिआइत रहब...। भाय! लोढ़ि लाएब, कुटि खाएब, निरोग बनि काल्हि फेर जाएब। केकरो ज्ञान ने ज्ञान-शक्ति पबैए, मुदा भक्ति-शक्ति तँ श्रमे पबैए।

ओना दुनू तेहेन एक-दोसरमे सटल अछि जे एकक बिना दोसर नै चलत मुदा दुनूक बीच ई रस्सा-कस्सी तँ छैहे जे एकटा कहै छै दुनियाँक मालिक छी आ दोसर कहै छै मालिकक कामतक कमतिया

[1] धीरेन्द्र

अपने छी। अनेरे अनका पाछू जे हरान रहब से कि ओकरा अपना बुते अपनाकेँ सम्हारि चलल नै हेतै जे कन्हापर लधने चलब...।

गाइक थैरक घूरपर नजैर पड़िते महेन्द्र देखलक जे खढ़-पात जरि कऽ झोली भऽ गेल अछि मुदा गोरहा-करसीक आगि सुनगिये रहल छइ। घूर लग जा खोंरनासँ करसीकेँ उसका देलक। दरबज्जापर बैसल धीरेन्द्र अपनो दिस देखैए संगे अपना परिवारो आ समाजोकेँ देखैए तँ काजर घोरल रातिक अन्हार जकाँ बुझि पड़इ। जहिना दिनमे कियो अनेको कोस धरि देखैए आ अन्हारमे अपनो देह-हाथ हेरा जाइ छइ। तहिना धीरेन्द्रो हेराएल जकाँ वौआइत रहए। मन पड़लै अपन पनसल्ला संगी- महेन्द्र। जखन दुनू गोरे गामक लोअर प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखेलक। मुदा लगले मन आगू बढ़ि अपन तीन दिनक गाम-बास दिस बढ़लै। एका-एकी पचासोसँ ऊपर लोकसँ विचारक समुचित उत्तर पाबए चाहै छी, मुदा भेट कहाँ रहल अछि। राँड़-बाँड़ जवाब दैत अन्तमे सभ यएह कहै छैथ जे तोरा मनकेँ महेन्द्रेटा मना सकैए...।

फेर उलैट कऽ मन घुमलै अपन लोअर स्कूल दिस। शुरूहेसँ नीक विद्यार्थी रहलौं, शिक्षको परिवारेमे रहै छला, दिन-राति स्कूलसँ घर धरि पढ़बै छला, इंजीनियर बनलौं, हमहींटा नै बनलौं तीनू भाँइ नीक जगहपर पहुँचल छी। तइ बीचक विवाद अछि। विवादो तँ विवादे छी। केतौ विचारसँ विचारि हल कएल जाइए, तँ केतौ कपार फोरेलोपर बे-हले रहैए। तहूमे अपना तँ आरो साँप-छुछुनैरक पइर भऽ गेल अछि। भैयारीमे जेठ छी, सभ दिन पिता तुल्य ओहो–दुनू छोट भाए–सभ बुझैत आबि रहल अछि अपनो ओहने–पिता जकाँ–बेवहार बना निमाहैत एलौं।

मुदा अखुनका जे घुरछी-ओझरी तीनू भाँइक बीच सम्पैतक अछि ओ जँ विचारसँ नै सोझराएत तँ एक सीढ़ी निच्चाँ खसबे करब।

पितृ तुल्यसँ भातृ तुल्य भैयारीक सीढ़ी दियादीमे बदैल जाइ छइ। सोगाएल धीरेन्द्रक मनमे फेर उठल- अनका लग जह-पटार हाथो तँ नहियेँ पसारल जा सकैए, ओ तँ ढंगेसँ पसारल जाएत...।

घूरक करसी उसका खोंरना महेन्द्र रखबो ने केलक आकि मन चनैक गेलइ। चनैक ई गेलै जे दरबज्जापर धीरेन्द्रकेँ बैसा आएल छी, हाथ-पएर धोइक बहन्ने। तैठाम घूर, खोंरैमे समए लगि गेल। चाहोक बहन्ना जे बनबए चाहब सेहो की आब ओ जुग-जमाना रहल जे काँच-सुखल जारैनसँ लोहियामे बनत जे कनी बेसी देरियो लगत, आब तँ तेहेन गैस परहक चुल्हि अछि जे केतलीमे दूध-पानि-चाहपत्ती दियौ आ गिलास कि कपमे चीनी दऽ छन्ना लिअ हाथमे, नै लेब तँ दूधे-पानि जरि जाएत...।

उठि कऽ कलपर महेन्द्र पहुँचबो ने कएल छल आकि मनमे उठलै- जुगो पछाइत भेटलोपर धीरेन्द्र संगी बनि बाजल, दरबज्जापर किछु विचारए आएल अछि, एहना स्थितिमे अपन केहेन स्वरूप हेबा चाही। ओना संगी, भैयारी, दोस्ती, मित्रताक मिलल-जुलल प्रयोग होइए जे सभ जनैए मुदा सबहक अपन-अपन जगह छइ। की एकरा नकारि सकै छी जे एके समाजक दुनू गोरे छी? तहूमे गामक स्कूलसँ साल भरि कौलेजोमे संगे बितेलौं, जबारी भोज आकि सौजनिया आन गामक संगे-संग गामक सराध-बिआहक भोज एक सत्तैरमे बैस कऽ खेनौं छी आ खाइयो सकै छी। तैठाम तँ विचारणीय ऐछे जे जोल्हाक बनौल वस्त्र जकाँ केतौ सूते ने कहीं घुरछी लगा गिरह बना दिअए..!

मुदा लगले महेन्द्रक मन उड़ि कऽ आगू बढ़ि गेलइ। बढ़ि ई गेलै जे समुद्र जकाँ संगियोँ, भैयारियो, दोसो-महिम आ सरो-समाज अछिए। चाहक संगी, पानक संगी, गपक संगी, काजक संगी, यात्राक संगी। ने जानि केते रंग-बिरंगक संगी होइए। तहिना भैयारियो अछि।

सहोदर भाए, बेमातर भाए, पितियौत भाए, पिसियौत भाए, ममियौत भाए। ने जानि केते रंगक अछि। तहिना ने दोसो-महिम आ सरो-समाज अछि। तखन तँ भेल जे ओ एक बेर संगी कहलक हम हजार बेर संगी कहबै। संगियोँ तँ संगियेँ भेल, एक कल्प-लोकक भेल तँ दोसर भाव-लोकक, तेसर अभाव-लोकक भेल तँ चारिम विचार-लोकक आ तेतबे किए! तखन? तखन तँ यएह ने जे पुरबा-पछबा ने रेड़ दिअए। जँ अपने रेड़ैत रस्ता नै चलब तँ केतौ ओंघरा जाएब। तहूमे बिनु देखैत हवा धरतीसँ अकास धरि घेरने अछि...।

हाँइ-हाँइ कलपर हाथ-पएर धोइ महेन्द्र दरबज्जापर पहुँचबे कएल आकि दस बर्खक मझिली बेटी चाह नेने पहुँचलैन। थारीमे सँ गिलास उठा महेन्द्र धीरेन्द्रक हाथमे देलक। हाथमे चाह तँ धीरेन्द्र पकैड़ लेलैन, मुदा मनमे ई नै उठलैन जे दस बर्खक बच्चिया कियो आन भेल, जँ दुनू गोरेकेँ हाथमे दैत तँ बराबरीक विचार तँ आबिये जाइत। मुदा तँए कि धीरेन्द्रो चुकल। नइ, नइ चुकल। दुनूक अपन-अपन तीर-कमान, गुल्ली-गुलेती। जहिना महेन्द्र धीरेन्द्रक विचार पकैड़ लेलक तहिना अपना विचारे धीरेन्द्रो अपन विचार पकड़ने। पकड़ने ई जे लोअरे स्कूलसँ सभ तरहेँ महेन्द्रसँ बीस रहलौं। जेहने पढ़ैमे बीस, तेहने पढ़ैक बेवस्था बीस, किए कहियो किताबक ऊपर चढ़ि चारू दिस नजैर खिड़ा किताब लेल कानए पड़ैत। गामक जेठ-रैयतिक परिवार। नोकर-चाकर परहक जिनगी।

एक घोंट चाह पीवितै महेन्द्र, ओना एका-एकी धीरेन्द्रक तेसर घोंट छल, बाजल-

“संगी चाह केहेन बनल, हमर परिवार तँ गमैया रहल, तहूमे परिवारमे चाह हाले-सालमे आएल अछि। पोतीकेँ अखन नीक जकाँ बनौलो ने होइ छै अभियास नहियेँ जकाँ छइ।”

महेन्द्रक विनीत विचार सुनि धीरेन्द्र फर्मेल्टी निमाहैत बाजल-

“बड़ सुन्नर! बड़ सुन्नर चाह अछि!!”

मुदा जिनगीक खान-पान सेहो तँ मनमे एकटा सीमा बान्हिये लइए। जे एक-रंगाह स्तरेटा मे सम्भव छइ। जँ कम स्तरक परिवार देखौंस करए लगत तँ परिवार दिशाहीन हुअ लगतै। चाह सठलो ने छल आकि धीरेन्द्रकेँ महेन्द्र फेर पुछलकैन-

“संगी, हम तँ चाहक बाद पान खाइ छी, अहाँ की खाइ छी?”

महेन्द्रक आग्रह सुनि धीरेन्द्रक मनमे उठल जे खाइ छी से जँ मुहसँ निकैल जाए जे ऐठाम उपलब्ध नै होइ, तखन तँ घरक महतपर पड़त, तैसंग अपनो परीक्षा तँ भाइये जाएत, तेतबे नै ओइसँ दुनू परिवारक दूरी सेहो बढ़त। तरे-तर धीरेन्द्रक मन पसिज गेल, पसिझते बाजल-

“भाय, मन अछि की नै जे अहूँकेँ पिताजी आ हमरो पिताजी एक्के दिन स्कूलमे नाओं लिखौने रहैथ?”

धीरेन्द्रक स्मृतिक संग भाषा सुनि महेन्द्रोक मन हलचलाएल। हलचलेबो केना ने करैत, बाल-स्मृति भेल! तहूमे डायरी मेन्टेन नै करैए। सेहो तँ जखन खर्चासँ बेसी आमद फेकए लगैत तखन ने डायरीक खगतो होइत। जन्म, मुड़न, बिआह, दुरागमन किए लोक डायरीमे लिखत, ओ तँ विधातेक डायरीमे छैन। किछु मन पाड़ैत महेन्द्र बाजल-

“भाय, कनी ठेकना कऽ कहह तँ, कनी-मनी मन अछि आ कनी-मनीक बीचमे कटारि जकाँ भऽ जाइए।”

महेन्द्र जे विचारि बाजल हुअए, मुदा विचारक दुनियाँक भारी प्रश्न तँ उठिये गेल। उठि ई गेल जे स्कूलमे पिता एक्के दिन दुनू गोरेकेँ

दाखिल करौलैन, मुदा विद्यालयमे दुनूक बीच केते दूरी बनल रहल आकि नजदीकी रहल?

धीरेन्द्रक सम्पन्न परिवार, दियादो-वाद तहिना। मुदा जेहेन परिवारक महेन्द्र छल, ओ छेहा श्रमजीवी किसानक परिवार। श्रमजीवी किसान ओ भेला जे अपन नियमित समए किसानी जिनगीमे लगबैत रहला। अतिरिक्त काज भेलापर अतिरिक्त उपजो-वाड़ी बढ़ैए आ अतिरिक्त लोकक खगतो बढ़ै छइ। मुदा अपनाकेँ आगू बढ़ैसँ पहिने रोकि महेन्द्रक मनमे उठल जे जरूर धीरेन्द्र किछु बजता। ओ की बजता अही गुमा-गुमीमे महेन्द्रक बोल बाधित भऽ गेल। स्कूलमे संगे नाओं लिखेलौं, सभ लिखबैए तइसँ सभ संगियेँ थोड़े होइए? संगी तँ वएह ने हएत जे संगे-संग एकठाम बैस गुरुजीक विचार सुनि अपनोमे विचारि एक मत बनाएत, से तँ कहियो ने भेल। जैठाम धीरेन्द्रक घरमे किताबक अलमारी भरल, तैठाम महेन्द्रक दरबज्जाक ओसारक खुट्टीमे गीता, रामायण ललका कपड़ामे बान्हि ओइ आशासँ टाँगल जे हमरो घरमे घर्म-ग्रन्थ अछि...।

मिथिलांचलक मिथि-मालिन किसान परिवार ओ परिवार रहल अछि जैठाम अतिथि-अभ्यागतकेँ ओकाइत अनुसार सुआगत-सत्कार खेबेटा-ले नै, जिनगीक क्रिया-कलापकेँ सेहो मथि-मथि एक-दोसरक विचारकेँ अनुकूल बनबए लेल सदैत अग्रसर रहै छल। बाढ़ि आएल आकि रौदी भेल, एक संग एक गामेक लोककेँ नै एक इलाका भरिक लोककेँ विपैत पड़ैत, तैठाम तँ ई ने विचार कएल जाए जइसँ दुनूक नीक समाधान होएत। जइसँ समए पबिते बाढ़ि-रौदीक कोनो झटका-झुटकी शेष नै रहैत। गाछ-बिरिछ जँ खसबो करैत तँ नवका लगा पोसि-पालि फड़ै-जोकर बनौल जाइत। अपन दस पीढ़ीक इतिहास[2]

[2] जिनगीमे घटित मुखौटी इतिहास

एक-दोसरसँ महेन्द्र पबैत आएल छल। केना केते मेहनैतसँ खेत कीनल गेल आ धुआँ जकाँ हवामे उड़िया गेल, फेर केना भेल आ केना गेल। दैवी प्रकोपसँ बेसी दानवी प्रकोप किसानकेँ झेलए पड़लै...।

फेर लगले मनमे उठलै- अनेरे खनदानी थीसिसमे ओझरा गेलौं। जइ दिन पिताजी दुनियाँ छोड़लैन पाँच बीघा जमीनबला परिवार देने गेला। ओही पाँच बीघाक सीमामे गामक सम्पन्न परिवार बनौने छला। जोतसिम जमीनक संग गाछी-कलम, बास-अगबास सभ किछु...।

दरबज्जापर गुमा-गुमी देख अगुरवारे महेन्द्र बाजल-

"भाय, गामेक स्कूल किए मन पाड़ै छी, हाइ स्कूल आ कौलेज किए बिसरै छी। पढ़ला-लिखला पछाइत ने अहाँ गाम छोड़लौं?"

सह पबैत धीरेन्द्र बाजल-

"जहिना सभ बात तोरा मन छह तहिना ने हमरो अछिए।"

धीरेन्द्रक सहटैत विचार देख महेन्द्र बाजल-

"भाय, तूँ साइंस पढ़लह, हम हायर सेकेण्ड्री तक एवरी-डे-साइंस[3] पढ़लौं सएह ने, तँए कि संगी नै भेलौं?"

संगीक सह पबैत धीरेन्द्र बाजल-

"भाय, परिवारमे एहेन मारूख स्थिति ठाढ़ भऽ गेल अछि जे किछु केने किछु ने बनैए!"

जिज्ञासु होइत महेन्द्र बाजल-

"से की! से की भाय?"

धीरेन्द्र बाजल-

"भाय, चिक्कारी-चौकारीसँ बहुत भेँट भेल अछि। गामो तँ एहने

[3] सामान्य विज्ञान

सबहक छिऐ। मुदा मननुकूल समाधान केना हएत, सएह नै बुझि पाबि रहल छी।"

धीरेन्द्रक विचारमे महेन्द्रकेँ किछु बुझैक जिज्ञासा बढ़िते मनमे उठलै। उठिते गाछक जड़िक लगल गराड़-पिल्लूकेँ जहिना कोनो खोंरनीसँ खोरि निकालल जाइए तहिना खोंरनी चलबैत बाजल-

"भाय, एना झाँपल-तोपल बातसँ काज नै चलत।"

महेन्द्रक प्रश्न सुनि धीरेन्द्रक मन चोट खएल साँप जकाँ छटपटाए लगल। परिवारक बात छी, केना दोसरकेँ कहब जे भाए-भैयारीमे सामंजस[4] अपना बुते नै होइए। कहू जे तीनू भाँइ, ऊपरा-ऊपरी छी। जहिना पढ़ल-लिखल तहिना पद-प्रतिष्ठामे सेहो। तखन किए ने परिवारक ओझरी सुलैझ रहल अछि..!

धीरेन्द्रक मन ओझरा गेल। आगू किछु बजैक फुड़बे ने करइ। धीरेन्द्रकेँ चुपी साधल देख महेन्द्रक मन महैँक गेल। महैँक ई गेल जे भाय, पढ़ल-लिखलकेँ इशारा काफी। अपने ने बी.ए. पास करि खेती-पथारीमे लगने स्कूल-कौलेजक बात बिसैर गेलौं, मुदा धीरेन्द्र तँ से नै रहल। ओ तँ सभ दिन कागजेक कीड़ा बनल रहल। तेहेन ठाम लिखतन-बकतनक भेद तँ अछि। तइसँ नीक हएत जे पाँचो ओंगरीसँ इशारा कऽ दिऐ, जे आरो ओझरा जाएत। जइसँ चाहे तँ अपने ऐगला समए मांगत, नै तँ अपन पनचैती अपने करत। जँ लोक अपन पनचैती अपने करए, ई तँ घीबोसँ चिक्कन हएत किने। मुदा से हएत केना..?

बाजल-

"धीरेन्द्र भाय, खेत-पथार जमीन-जाल छी। अनेरे सब ओइमे ओझरा जाइए। खेतेक बात सुनि लिअ। गाम-गामक माटि भिन्न-भिन्न

[4] समान जश, साम्य जश

अछि आ गाम-गामक कोन जे एक्को गाममे सेहो तेहनो अछि आ एक-रंगाहो अछि। ई तँ भेल माटि।

आब चलू माटिक उर्वरा शक्तिक पाछू- उस्सर आ बाउल, सभसँ गेल गुजरल अछि, मुदा तँए कि ओहो आँखि नै देखौत? एतबो तँ बजबे करत जे केते प्रतिशत तागत अधिक अछि आ केते प्रतिशत कम अछि। बेसी उस्सर हएब तँ सज्जी उपजत, तइसँ कम हएत तँ कुश उपजत, तहूसँ कम हएत तँ मरूआ-कुरथी उपजत, नै जे तहूसँ कम हएत तँ धारक कातक खेत जकाँ दोसर माटियो पचा कऽ अपन बना लेत। जहिना डोह-डाबर, नदी-नालाक ठेकान नै तहिना ने माटियोक अछि। पानिक सोहे-सोहे धनीक जकाँ घराड़ी दफना लइए। तहिना तँ बाउलो अछि, ओकरो खचरपनी कम छै, एक दिस जहाँ कहिऔ जे 'हाथी पिआसल, घोड़ा पिआसल, दल-दल पानि।' आकि दलदला कऽ थभैक जाएत, जहिना लिखैकाल कलम बोकैर ढबैक जाइए। तँ दोसर दिस पानिक बदला तेल निकालैए! ओहो केना अपने हरदा बाजि देत जे कियो मरूभूमि कहतै..?

भाय, दुनियाँ अनन्त छइ। अनेरे मनमे सोग-पीड़ा रखने छह, निकालि कऽ फेक दहक।"

महेन्द्रक बात सुनि धीरेन्द्रक हबटुटु मन हूबगर भेल। हूबगर होइते हूबा करैत बाजल-

"भाय, पचास-पचपनक उमेर भऽ गेल, तोरो भाइये गेल हेतह, केते दिन जीबे करब। मुदा तेतबो दिन बाप-दादाक घराड़ी नै बँचा सकब, मान-समान नै बँचा सकब, तेकरे दुख बुझह आकि सोग..!"

धीरेन्द्रक पसिझैत हृदए देख महेन्द्रक मन मसैक गेल। मसैकते तोष-भरोस दैत बाजल-

"भाय, की ओझरी भैयारीमे भऽ गेल अछि से सोझरा कऽ

बाजू।"

धीरेन्द्र-

"अहाँकेँ बुझले अछि जे अपने सरकारमे इंजीनियर छी, सुरेन्द्र बैंकमे छैथ आ छोट भाए अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसीमे छैथ।"

धीरेन्द्रक विचारमे सहमत जतबैत महेन्द्र बाजल-

"हँ से तँ छैथे। भगवान कोन कमी देने छैथ। अखन तँ अहीं सबहक दिन-दुनियाँ जागल अछि।"

मलसारि भरल महेन्द्रक विचार नीक जकाँ धीरेन्द्र नै बुझि पेलक। महेन्द्रक झाँपल विचार रहै जे 'राम नामक लूट अछि लूटि सके से लूटए' आ दोसर दिस तेकरे ओझरी! खेतोक की अधिकारे-टाक ओझरी होइ छै, ओकरा तँ अपने जोत-कोर करए पड़ै छै, फसिल लगौल जाइ छइ। आ जखने फसिल धरतीसँ उठै छै आकि खढ़-पात दाबए लगै छइ। कीड़ी-फतींगी भिन्ने अबै छै, तैपर सँ भेल जअ मे पाथरो खसिते छइ।

धीरेन्द्र-

"भाय, की दिन-दुनियाँ जागल रहत, ओ ते ने जागल अछि आ ने सूतल। जँ सुतलो रहैत तैयो निचेन रहितौं, सेहो ने अछि। ने घरक रहलौं आ ने घाटक।"

महेन्द्रक सिनेह उमैड़ पड़ल, बाजल-

"भाय, एना नै काज चलत, तीनू भाँइक जीवन देखए पड़त। जेहेन लोकक जीवन होइ छै तेहने विचार ओकरा मनमे अबै छइ। तँए थामि-थामि मनक बात बाजू।"

हृदए खोलि धीरेन्द्र बाजल-

"भाय, मनक बात कहै छी नोकरी करए बाहर गेलौं मुदा सेवा-

निवृत्तिक पछाइत गामेमे रहैक विचार अछि।”

बिच्चेमे लोकैत महेन्द्र बाजल-

“ऐसँ नीक विचार की हएत! आइए नै, अदौसँ मिथिलाक लोक ढाका-बंगाल तक कमाइ-खटाइले जाइ छला, तँए कि हुनका सबहक परिवार बिलैट गेलैन? अखनो ठाढ़ छैन!”

अपन सह पबैत सौनक मेघ जकाँ धीरेन्द्रक मन उमैड़ घनघोर वर्षा जकाँ बरिसए लगल-

“भाय, मझिला भाए- सुरेन्द्रक विचार अछि जे अपन हिस्सा सभटा जमीन बेचि बैंकमे जमा कऽ लेब। तहिना दोसरो भाइक विचार सएह छै, मुम्बैमे फ्लैट कीनब तँए गामक जमीन बेचि लेब।”

महेन्द्र-

“अपन हिस्सा कियो किछु करता, अहाँक हिस्सा कियो थोड़े लेता?”

धीरेन्द्र-

“तेतबे बात रहैत तँ कहितिऐन जे जेते कुल्लम जमीन अछि, भाग लगा बेचि लिअ, मुदा तीन-तसिया सभ तेहेन भऽ गेल अछि जे घराड़ीए पर डाक करए चाहैए। आब कहू जे अखन अपने तँ पान-सात बर्ख गाम नहियेँ आएब, तेकर पछाइते आएब। मुदा जे तीन-तसिया डाक करत ओ बहरबैया बुझि घराड़ीक नाके-कान नै काटि लेत?”

महेन्द्र-

“भाय, बहुत नमहर घुरछी अछि। एक दिने नै फरिछाएत कल्हुका समए फेर रखू।”

बजैक वेगमे महेन्द्र तँ तत्काल टारि देलक मुदा काल्हि तँ फेर वएह चर्च हएत। सम्पैत, सम्पैत छी, मुदा ओकरो अपन विभिन्न रूप

छइ। चालबाजक तँ चालि चलिते अछि। ओना ओहो अपना गतिये ओइ संस्कारमे आबि गेल अछि जे खेत-पथार इज्जत-प्रतिष्ठा छी। केना इज्जत बुझल गेल, ई भिन्न बात। आइ ओइ मोड़पर पुश्तैनी सम्पैत[5] परिवारक बीच पहुँच गेल अछि जेकरा नव सिरा चाही। जँ से नै भेल तखन भँसियाइत-भँसियाइत तेते भँसिया जाएत जे बेकाबू भऽ जाएत...।

बेकाबू भेलासँ जहिना चुल्हि परहक दूधकेँ खुदियाइते जिनगी बदलए लगै छै, भलेँ ओहने छेना किए ने भऽ जाए जेकर रसगुल्लो ने बनत, तहिना चाउर टुटने खुदियाइए, जेकर फल वेचाराकेँ भोगए पड़ै छै जे भातक जगह छोड़ि रोटीक जगह पकड़ैए! तहिना ने जिनगियो अछि।

○○

17 नवम्बर 2014, शब्द संख्या- 2887

[5] जमीन-जयदाद

खटहा आम

तीन मास पहिने अर्थशास्त्र विभागक प्रोफेसर छीतन भाय रिजाइन लगा गाम आबि गेला। गामेमे रहब, रट लगि गेलैन। रट ई लगलैन जे अनेरे नगद-नारायणक फेड़मे पड़ि अपन देव-पितर बिसैर गेल छी, मुदा कौलेजक भाषामे बजै छला, जइसँ गामक लोक बुझिये ने पबै छल जे की बजै छैथ। भाय! गामो-घरक लोकक तँ जिनगी बदललै आब, टी.भी.मे नांगट नाच देखैत रहैए आ मने-मन गुनगुनाइत रहैए-

‘नन्द भवनसँ निकलल हे गिरिधर गिरधारी...।’

भाय! कोन गिरिधर गिरधारी से तँ ओ जानए। बहुरूपिया कृष्ण कखनो महाभारतक शंख फुकै छैथ, तँ कखनो गोपीक संग वृन्दावनक रास करै छैथ, कखनो मक्खन चोरा कऽ खाइ छैथ, तँ कखनो घाट परहक साड़ी लऽ कऽ भगै छैथ, तँ कखनो गाइयक चरबाहि करैत गोबरक पहाड़ बनबै छैथ...।

दरबज्जापर बैसल छीतन भायकेँ अपन नोकरी छोड़ब मनमे उठलैन। दस बर्खक अनुभवी शिक्षक जखन अप्पन अर्थशास्त्र पढ़लैन तखन मन उड़ैज गेलैन जइसँ उर्जावान भऽ गेला। अपन शक्तिक बोध होइते अपन भवितव्य देखलैन। देखते तियाग पत्र दऽ कऽ गाम चलि

एला...।

छोट भाए बुझि अपन फर्मेल्टी निमाहैले छीतन भाय लग पहुँच, चिक्कारीमे कहलयैन-

“भाय, असगरे की विचारि रहल छी?”

चिक्कारी ई जे बुझल रहबे करए जे प्रोफेसरक जिनगी असगरूआक भऽ जाइ छइ। गाम थोड़े छी, जे चाहक चौखरी, पानक चौखरी, ताड़ीक चौखरी, तासक चौखरी हजारो किसिमक चौखरी लगा दस गोरे एकठाम हब-गब करैत रहता। एकांत बुझि पड़लैन तँए, कि की, आकि मन बेथाएल रहैन तँए, हमरो अर्थशास्त्रेक बात कहए लगला! आकि बजैक वेगमे जनु अपन कौलेजक किलास धियानमे चलि एलैन तँए, ओही लहजामे बाजब शुरू केलैन-

“बौआ, पहिने चाह पीबह। जेते हल्लुक माथ रहतह तेते नमहर मोटा उठबैमे हल्लुक बुझि पड़तह।”

जहिना चिल्होरिक टाँहि सुनि लोक बुझि जाइए तहिना भोजियो बुझि गेल रहथिन। भौजीकेँ अपन काजपर बिजलोका जकाँ नजैर रहै छैन। सेरिया कऽ नीक जकाँ बैसबो ने कएल रही, माने सोझहा-सोझही बैसी आकि कनछिया कऽ बैसी, ई सोचिते रही। कहुना भेला तँ जेठ भाय भेला तैपर पढ़ौनीक काज करै छैथ। तहूमे बामा भाग किनछिया कऽ बैसी आकि दहिना भाग। अही तारतम्यमे रही। तइ बिच्चेमे भौजी चाह नेने आबि बजली-

“गामक पुरुखकेँ बैसैयोक लूरि नै!”

मुदा धड़फड़ा कऽ किछु बाजबो नीक नहियेँ होइए। एके शब्द अगियाएलमे अगिया जाइए आ पानियाएलमे पनिया जाइए। तँए कखन रज तम भऽ जाएत आकि सत भऽ जाएत, तेकर कोन ठेकान। तेतबे किए, तमो रज आ सत बनिते अछि...।

मुदा चुटकी तँ चुटकी छी। एक बेरे थोड़े फरिआइए, ओ तँ दोहरा कऽ फरियाएत नै तँ तेहरा कऽ। जँ एक बेरे फरियाइत तँ तुलसी पात तोड़ैकाल तीन बेर चुटकी किए बजबए पड़ै छै..?

बजलौं-

“भौजी, आब वसन्ती रंग चढ़ल हेन। बिआह मन पड़ैए की नै, हमहीं परोफेसर-भैयाक लोकनियाँ रहिऐन।”

तइ बिच्चेमे छीतन भाय बजला-

“तहूँ केते नाङैर भारी केने छह। एते दिन प्रोफेसर छेलौं, आब भैयारी भेलौं।”

हमरो सुतरल कहलयैन-

“भैया, अहीं सभ गाममे कटा-कटी कऽ गामकेँ दुइर कऽ देलिऐ, सभ दिन भैया कहैत एलौं जँ आब प्रोफेसर भैया नइ कहब तँ अहूँकेँ मनमे की हएत। भैयाक पाछू प्रोफेसरक नाङैर सटि गेल किने।”

छीतन भायकेँ बजैक मन रहैन, तँए हँसी-मजाककेँ हटबैत बजला-

“बौआ, हम तियाग-पत्र किए देलौं से तँ कहबे ने केने छेलिअ आ तोहूँ ने पुछलह?”

कहलयैन-

“भैया, अहाँकेँ की कहब, सभ गप लोक सभठाम बजैए मुदा पाइ-कौड़ीबला बात थोड़े बजैए। तँए अगुरबार पुछब अहूँकेँ थोड़े नीक लगितए।”

एकमुहरी विचार छीतन भाइक मनमे अँटकल रहैन तँए दोसर बातपर मने ने टिकैन।

बजला-

“बौआ, जड़ियेसँ कहै छिअ। जइ दिन नोकरी छोड़लौं तइसँ आठ-नअ दिन पहिलुका गप छी। मखना तारीकपर लहेरियासराय गेल रहए, घुमतीकाल डेरापर आएल। ऐबते बाजल ‘प्रोफेसर साहैब, अहाँ तँ राजा भऽ गेलौं...।

‘राजा’ सुनि अपन मन तँ कनी आगू-पाछू करए लगल जे राजा तँ भेल भूपति! से कहाँ अछि! मनमे भेल जे भरिसक राति-बीच दुआरे, गाम नै जा हेतै तँए, रहत। अपन डेरा अछि, ओढ़ना-बिछौना सभ अछिए। किछु ने बजलौं।”

बिच्चेमे टोकि देलिऐन-

“भैया, ई तँ धरमक काज भेल। अनका जकाँ नै ने जे गौआँ-घरूआकेँ देखब तँ मुँह घुमा लेब जे दस टाका खरच ने भऽ जाए।”

हमर गप छीतन भायकेँ नीक लगलैन। बाढ़िक पलाड़ी जकाँ मन उमैड़ गेलैन। अपने मने बाजए लगला-

“राजा सुनि अपन मन तँ नै तर-ऊपर भेल मुदा पत्नीक मन भऽ गेलैन।”

मुस्की दैत पुछलयैन-

“की भऽ गेलैन, भौजीकेँ?”

बजला-

“भऽ ई गेलैन जे जहिना बिनु पढ़ल-लिखल गुरुक पत्नी गुरुआइन आ डाक्टरक पत्नी डाक्टर-साहिबा बनि जाइ छैथ। तहिना हुनको भऽ गेलैन। हमरा लगसँ मखनाकेँ उठा चुल्हिये लग बैसा फदर-फदर गपो करए लगली। बीच-बीचमे हँसबो करैथ आ नेपो झाड़ैथ। तैसंग केता बेर चाह दुनू गोरे पीलैन तेकर ठेकान नहि।”

बुझि पड़ल जेना छीतन भाइक मन औरो पला गेलैन अछि।

टोकलयैन-

“मखनासँ कोनो गप भेल की नै?”

बजला-

“बड़ीकालक पछाइत जखन भानस लगिचा गेल, चुल्हि-चीनमार बहारै बेर भेल तखन ओ लगमे आएल। पुछलिऐ- सोझे भाटक राजा मखन बना देलह आकि भाटिक जैड़ोमे किछु छै?”

मखनोक मन फुलाएल रहबे करइ, बाजल-

“भाय साहैब, करोड़-पति भेने लोक राजा भऽ जाइए, से ते अहूँ भाइये गेल छी।”

मखनाक बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं जे की कहि देलक। मुदा अपनो मन धिक्कारए लगल जे एकटा साधारण आदमीक बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं! मुदा दोहरा कऽ पुछबो नै सोहाएल। नै ऐ दुआरे सोहाएल जे केना कऽ एकटा बुझौनिहार[6] अपने मुहेँ बाजी जे बातक गूढ़केँ नै बुझलौं। मन ठमकल। ठमैकते कनियेँ ठहरलौं आकि मन जिराएल। जिराइते उठल। किए ने मखनाक बाजल बात बुझलौं! मुदा जहिना ‘बाउ’ शब्दक अर्थ बुझैले आगू-पाछूक शब्दक ताल मिलबए पड़ै छै, नै तँ ‘बाउ’क माने बेटा भेल आकि ‘बाप’ से बुझिये ने पेबै तहिना भऽ गेल...।

चपाड़ा भरैत मखनाकेँ कहलिऐ-

“मखन, तूँ ते बड़का कवि बनि गेल छह। तोहर दोहाइ जरूर पड़बे करत। हमरा सबहक कमाइये की अछि जे तोरा सन-सन लोकक सुआगत करब।”

एक दिस जहिना पत्नीक मन रानीक गद्दीपर बैसल तहिना

[6] विद्यार्थीकेँ पढ़ौनिहार

मखनोक। तहूमे केता बेर चाह पीलक तेकरो ठेकान नै, मन गरमाएल रहबे करइ, बाजल-

“भाय साहैब, अपने तँ आब राजा भऽ गेलिऐ। कोन चीजक कमी भगवान देने छैथ जे अनेरे बजरूआ लोहा महींसिक दूध खाइ छी, सुच्चा दही भोजे-काजमे खाइत हएब? ललमुहाँ रहुओ तँ बिसरिये गेल हएब?”

मखनाक एक-एक शब्द जेना हमरा छातीकेँ बेधैत रहए। विद्यापतिक उगना जकाँ अनेको विचार मनकेँ अलगा देलक। आगू की बाजी से विचारेमे उपरौंझ हुअ लगल। विचारक क्षेत्र आ सच्चाइक क्षेत्रक बीच एते दूरी बनि गेल अछि जे बेसी गोरे अही कटारिमे खसिते अछि। मुदा पत्नीक फुलाएल मन फगुआ-जोगिराक भोलाबाबा जकाँ अन-धन सोनमा लूटबैले तैयार रहैन। तैयारो केना ने हेती वा रहितैथ, राजगद्दीक खुशनामामे जँ पमरियोकेँ साड़ी पहिरा नै नचैबतैथ तँ खुशीए की भेल। केबाड़क अढ़ेसँ बजली-

“मखन, भगवान अहाँ मुँह अमरीत बरसाबैथ।”

मखना की जानए गेल जे अमृताएले मुँह ने अमृत वरिसौत। अमृत सुनियेँ कऽ मन उधिया गेल छेलइ। कहलकैन-

“भौजी, अहूँ ससैर कऽ लगमे आउ। जे बात काना-कानीक छी ओ दोसराइतकेँ सुनब नीक नै हएत।”

मखनाक बात सुनि विस्मित भेल रही। मुदा पत्नीक जिज्ञासा आगूए-आगू गाइक ओइ बच्चा जकाँ रहैन जे दौड़ कऽ गाएसँ दू-लग्गा-चारि-लग्गा आगू जा ठाढ़ भऽ पाछू माए दिस तकैए आ आँखि मिलिते गाए अपन मातृत्व शक्तिक बोधक अमृत पीब आगू डेग उठबैत रहैए...। तहिना पत्नीकेँ लगमे ऐबते मखना बाजल-

“हम बीचमे बैसब।”

ओना मखनाक मनमे उचड़ैत रहै जे हिनके सन-सन लोक ते गामो उजारलक आ भैयारीक सम्बन्धोकेँ मेटौलक...। मुदा लगले मनमे एलै जे ई कु-नजरिये देखब भेल। सती-सावित्री, सीता, अहिल्या, सुनयना इत्यादि सन-सन किए बिसरा रहलौं अछि। मुदा लगले मनमे एलै जे शहर-बजारमे के केकरा रहए दइए, तैठाम जँ भाय साहैब एते सुआगत केलैन ई हम हिनका विचारकेँ बधाइ दइ छिऐन। बाजल-

“भाय साहैब, अहीं सन-सन धरमतमा लोक सबपर ई दुनियाँ ठाढ़ अछि।”

बैशाख-जेठमे जहिना गैवार-महींसवार बाधमे तामल खेतक गोलापर गोला चढ़ा देबाल ठाढ़ करैए, तहिना हमरा मनपर गोला चढ़ल जाइत रहए, तँए गुम्मी लधने रहलौं। मुदा पत्नी अपना मनक फुलवाड़ीमे माइलिक बीच अपनाकेँ देख आरो भकराड़ भऽ कऽ फुलाए लगली। तैपर चाहक चुमकी सेहो चढ़िये गेल रहैन।

बजली-

“मखन बौआ, अहीं सभ ने भाए-बोन भेलौं, हाथ-पएर भेलौं। अहिना जहिया-जहिया दरभंगा आबी तहिया तहिया अबैत रहब।”

ओना पत्नीक जेहेन बोल निकललैन तेहेन बेवहार नै छैन। भलेँ वृन्दावनेक राधा अपनाकेँ किए ने मानैथ, मुदा अधलो केना कहेती। जे बेवहार मखनाक संग कऽ रहली अछि, ओकरा कम नै आँकल जा सकैए। भलेँ जँ काज आगूओ शेष अछि तँ आगू समैयो तँ शेष अछिए। की हुनका मनमे आबो नै आबि सकै छैन जे रोगाएल-टटाएल परिवारक मखन छी, किछु भड़ो-किराया-ले आकि किए कचहरीक चक्करमे पड़ल अछि, ओकरो मेटबैक उपाय सोचितैथ। खैर जे से...। हमहूँ गुम्मे रहलौं।

ओना हमर गुम्मी आ हुनकर चढ़ल मन देख मखनोक मनक मृदंग, मृदंगे नै ढोल-मृदंग दुनू चढ़ल जाइत रहइ। कहलकैन-

“भौजी, देखले दिनमे जइ जमीनक दाम तीन हजार रूपैए कट्ठा छेलै ओ आइ तीन लाख रूपैए कट्ठा भऽ गेल। तहूमे अहाँकेँ तेहेन ओ चौक परहक बड़का कोला अछि, ओ तँ बुझू जे रजधानी भऽ जाएत। तेहेन जगजियार चौक भऽ गेल जे ओइठाम चाहब तँ बजार लगा देब। कमसँ कम बान्हक कात दिससँ दू साए घर बना दिऐ तँ लाखो भाड़ा हएत। अनेरे भाय साहैबकेँ अहाँ अपनो नोकर आ अनको नोकर बनौने छिऐन।”

मखनाक बात सुनि अपने उठि कऽ टहलए लगलौं। मने-मन विचारए लगलौं जे हजार-लाखमे फानि गेल! मुदा तखनो जँ अपने नै ताकब तँ केकरा के तकलक जे हमरे ताकत। मुदा अखन दरबज्जापर आएल गामक भैयारीकेँ छोड़ि.., विचारो करैक उचित समए नहियेँ अछि। फेर घुमि कऽ आबि बैसलौं। तैबीच मखना बाजि चुकल छल, ‘भौजी, उ बड़का खरहोरि जे अछि, ओइमे एकटा बोरिंग गड़ा देबै आ बीघो भरि हमरा खेती करैले जहिया दऽ देब तहियासँ दुनू साँझक तरकारीक भार अखने गछि लइ छी।’

मने-मन मखनाक बातकेँ हमहूँ नोट कऽ लेलौं। मुदा लगले मन उछैट गेल। उछैट ई गेल जे यएह मक्खन चोरि तँ वृन्दावनक लीला छी! मुदा घड़ीक चालिसँ चालि मिला पत्नीकेँ कहलयैन-

“दुनू भैयारी एकेठाम बैस कऽ खेबो करब आ किछु गाम-घरक गपो-सप्प करब आ अहाँ रूक्मिणी जकाँ बिअनि हौंकब।”

‘बिअनि’क नाओं सुनि पत्नी उठैत बजली-

“मखन बौआ, अहूँ की पानिक मक्खन थोड़े छी, बकेनमा महींसिक ने दूधक मक्खन छी। ऐठामसँ गाम पहुँचते कोला-कोली

सेरिया जोत-कोर करए लागब। जहिया हम सभ गाम आएब तहिया देखब।”

जेहने भूख जगल हुअए तेहने अनुकूल जगह जँ भोजनो-आरामोक हुअए तँ एहने संयोग संयमक बाटे चलैए। सएह भेल, चौपेतल कम्मलक आसनपर बैसते जहिना अपन मन मखनाक मन पढ़ए लगल तहिना पत्नी हाँइ-हाँइ कटोरा-कटोरी साँठए लगली। पानि ऐ दुआरे चढ़ि गेल रहैन जे मखनाक संग जखन भोजनक दौन[7]मे ओझराएल रहब किने तैबीच अपन मैलकियतक गप पत्नी चला लेती। किएक तँ हमरा परोछेमे मखनाकेँ खेतक जुआन दऽ देने छेलखिन। मखनो खेती करैक भार उठा नेने छल...।

मनमे बेर-बेर उठए लगल जे अनेरे लोक अपन सम्पैतकेँ नै जगा दुनियाँ घुमि रहल अछि। मुदा से अपने बुझने हएत आकि अनको विचारमे विचार साटि विचारैत करैयो पड़त? तहिना मखनोक मन जगलै। जगबो केना ने करितै, जखने दूध तखने मक्खन, जखने मक्खन तखने घी। मुदा भेड़ी-घी आब केतए भेटत जे माथमे लगा दरद भगाएब। भानसे बेर मखना माछक कुटियापर हीक गाड़ि अँखिया नेने छल।

भाय, भोजमे तँ वएह खेनिहार ने ठकाइए जेकरा पातपर भोजनक विन्याश आगू-पाछू परसल जाइए। मुदा मखनाक सोझमे भानस भेल, जीबलाह रहैत तँ लोहियेसँ निकालि-निकालि लोलक पानि मिझा नेने रहितए, मुदा मखनो अपनो अपन अस्तित्व तँ जनिते अछि। आखिर किछु छी तँ पुरुखक बेटा पुरुख तँ छीहे। एतबोकाल धिरित नै राखल हेतइ। एक तँ ओहिना अनठिया चाह पीनिहार जकाँ लोभे पेट फुला नेने अछि। मुदा भानसक संगी सेहो मखन रहबे करैन।

[7] मुँहक दौन

केते खिस्सा-पिहानी कहि-सुनि दुनू गोरे एकबट्ट भऽ गेल, तँए अपनाकेँ भनसिया बुझि मखना आदर करैत कहलक-

“भाय साहैब, केतए गेल ओ पीढ़ी सेरसोक तेल-मसल्ला[8] आ केतए गेल ओ ललमुहाँ रहु आ बुआरीक पेटी?”

तैबीच पत्नी थारी नेने आबि गेली। जहिना हाट लगौनिहार हटवार अपन-अपन चीज-बौस पसारि हाट सजा तराजू पकैड़ हाथ पसारैए तहिना अपन काज उसारि पत्नी ओइ ताकमे लगि गेली जे पहिने दुनू गोरे मुहमे लऽ मुहकेँ बरदाबौथ ने तखन खुलल मुँहक सोहर केहेन होइ छै से सुना देबैन। जे कोन सोहर छी, जन्मौटी छी आकि मूड़नक, बिआहक छी आकि असमसानक। मुदा हमरा ऊपर एकटा आरो बड़का चेका माटिक चढ़ि गेल। चढ़ि ई गेल जे केना अपनो पिताक देल पनरह बीघाक किसान परिवारक छी, हमरा सन लोक[9] अपनो आर्थिक विश्लेषण जँ अपने नै करत तँ जे कहियो स्कूल-कौलेजक आँखि नै देखलक ओ केते दूर धरि आगू लऽ जा सकैए? अपना सभ किछु अछि। मुदा मखना कोन नजरिये देख रहल अछि! ई तँ भने दुनू गोरेक[10] बीचक बात छी भने मुहोंक काज नै बरदाएत आ जीहो चलबे करत। तँए सुनबे नीक। अपने चुप भऽ गेलौं...।

मुदा पत्नी तँ अपने नियारे तबाह जे धान-दौनक बरद जकाँ जहाँ दाँत, ठोर, जीह चौकल्ला चलए लगलैन आकि अपन प्रस्ताव पेश कऽ देबैन। प्रस्ताव ई जे अखन तक पुरुखक बिनु विचारल बात अछि तँए तीनू गोरेक बीच विचारो पक्का-पक्की भऽ जाएत आ काजोमे हाथ लगत। हेबो तँ अहिना ने करतै जे जे जहिना कले-कले लोक गाम

[8] तेल- रस, मसल्ला- सौँस सेरसोक पीसल

[9] अर्थशास्त्रक विद्वान

[10] पत्नी आ मखन

छोड़लक तहिना कले-कले धरबो करत। प्रश्न तँ ओतए अँटैक गेल अछि जेतए संकल्पक दृढ़ताक बात अछि...।

पत्नी मखनाकेँ कहलखिन-

"मखन, अहाँ हमरा जे बीघो भरि खरहोरि उपजबैक बात कहलौं, से अखन मालिको छैथे, मुहाँ-मुहीं कऽ लिअ।"

पत्नीक बात अपना कोनो उझट नै बुझि पड़लैन, मुदा खरहोरियो तँ खढ़क खेतीए छी, तखन ओकरा उपटौल किए जाएत? प्रश्न मनमे उठलैन। मुदा तइमे अपन कोन दोख। जहियासँ हाइ-स्कूल धेलौं आ गाम छोड़लौं तहियासँ छोड़नहि छी, जँ कोनो काज उदेममे गाम एबो करै छी तँ काजे भरि अपनाकेँ समेट खँति नेने छी, मुदा परिवारो तँ पाँच सदस्यक देशे छी, जखने मातृ-भूमि भेल तखने राष्ट्र-भूमि सेहो भेल। जँ से खत्ती दऽ कऽ नै राखल जाएत तँ हूरारेक चालि पकैड़ ने मनुखो चलत जइसँ केमहर हुरैक जाएत तेकर कोनो ठेकान छइ। तँए गुमे-गुम सुनैक जिज्ञासासँ कान ठाढ़ केने रहलौं।

पत्नीक प्रश्न नीक जकाँ धरतीपर खसलो ने छेलैन आकि बानर जकाँ मखना बिच्चेमे लोकैत हमरा दिस तकैत बाजल-

"भाय साहैब, परिवारक भार जँ अहाँ उठा ली तँ अहूँक परिवारक भार हम उठा लेब।"

मखनाकेँ निच्चाँ-ऊपर देखए लगलौं। मनमे छगुन्ता लगल जे कहू एते पढ़ि-लिखि कऽ एतेटा नोकरीक आमदनी अछि तखन ते सदिकाल भूर फुटले रहैए, जे धिया-पुताक पढ़ौनीक फीस पछुआ गेल अछि तँ भारामे नून सठल अछि...। माल टेनक डिब्बा जकाँ ढकर-ढकर करैत परिवार चलैए। छगुन्तामे पड़ल रही तैयो मखनाकेँ पुछैक विचार भेल मुदा सोझे नै, कैरम-बोडक उल्टा गोटी जकाँ। अपन दुखसँ लोक आनोक दुख बुझैए आ आनेक दुखक उपायसँ अपनो दुख

मेटबैए, मेटबैक लूरि सीखैए। पुछलिऐ-

"मखन, केते खर्चसँ तोहर घर चलि सकै छह?"

प्रश्न सुनिते मखन बकरी-घी जकाँ टभैक कऽ फद-फदाएल-

"दिन-रातिक समए तँ दिन-रातिक काजसँ चलै छै, भाय साहैब। तखन भेल धिया-पुताकेँ जिनगी चलै-जोकर बना दुनियाँकेँ देब। ई कोन बड़का खर्चक काज भेल।"

गमैया पनचैतीमे जहिना मुँह-दुबरा पञ्चकेँ रेलबे स्टेशनमे टिकट कटौनिहार जकाँ धकियबैत धकिया अपन काज मुँह-गरहा ससारि लइए तहिना पत्नी हमरा धकिया मखनाकेँ अपना दिस करैत बजली-

"बौआ, ओइ बीघो भरि खरहोरिमे की सभ उबजेबै?"

एक तँ ओहिना मखनाक मन थारीक आगत-भोगसँ गद्-गद् रहैए। तैपर एक विचारवान जकाँ विचारै-जोकर काज सेहो आगूमे आबि गेलइ। मुदा कोनो प्रश्नक जवाब ओइठाम देब भारी होइ छै जैठाम हजारो प्रश्न छै मुदा ओइठाम किए भारी रहत जैठाम एकेटा प्रश्न रहत। यएह तँ भेल हल्लुक आ भारी मनक ओझरी-सोझरी। एक तँ ओहुना मखनाक छोट जिनगी, तीन गोरेक परिवार। दू गोरे समकस कमौनिहार तेसर दू सालक बच्चा तँ अपने देह झाड़ि हँसुआ-खुरपी लऽ कऽ संगे-संग खेलाइत रहै छै, तँए किए मनपर कोनो भर पड़ल रहतै। पत्नीक बात सुनि मखनाकेँ कि कोनो विधाता जकाँ विचारैक जरूरत रहइ, जे देरी लगितै ओ तँ मात्र खरहोरि तोड़ि खेती करैक रहइ। बाजल-

"भौजी, बारहो मास तीमन-तरकारीक धनमण्डल घरमे लागल रहत। जक्खैन जे मन फुरत तक्खैन से अपना बाड़ीसँ तोड़ि आनब आ टटका-टटकी खाएब।"

मखनाक बात सुनि पत्नीक मन लोहियामे पड़ल मक्खन जकाँ टभकलैन। विहुँसैत बजली-

"से केना बारहो मास तरकारीक धनमण्डल लागत। ऐठाम बरसातमे तरकारी खाइले जी-जरैत रहैए आ अहाँ केना धनमण्डल लगा देब?"

प्रश्न सुनि मखनाक मनमे कोनो हिलकोर नै उठलै। एतबे उठलै, उपजाक बात तँ अन्तिम भेल, पहिने खरहोरि, जे कहियोक कहियौ आकि अखुनका कहियौ, घर बनबैमे आकि बरैब छाड़क भार उठौने छल आकि अछि, ओ आब कमि रहल अछि। घरोपर सीमटी, गिट्टीसँ लऽ कऽ चदरा-खपड़ा धरि चढ़ि रहल अछि, तैठाम खढ़क उपजाक की उपयोग? मुदा माटि उपयोगी नै अछि एहनो तँ नहियेँ कहल जाएत। तहूमे माटियो अपन-अपन गुण अपन-अपन शक्तिक अनुकूल सेहो होइते अछि। खेतक अनेको किसिम अनेको गाममे अछि। केतौ पानिक बाढ़ि तँ केतौ माटिक। मुदा अखन खरहोरिक बात अछि। कोनो गाममे गाछी-कलम आकि खरहोरि ऊँचरस जमीनमे लगौल जाइए, नीचरस जहिना पताल दिस ससरैत अन्नसँ निच्चाँ उतैर माछक उपजामे पहुँच जाइए तहिना ऊँचरस जमीन उपजाक अकास लगबैए आ तहिना घर ठाढ़ कऽ घराड़ी सेहो बनबैए। मखनाक मनमे, जेठुआ फुलाएल धारक अवारि जकाँ रंग-रंगक बात उठए लगलै। उठबो केना ने करितै, बारहो मास उपजबैबला खेतमे नजैर वौआइत रहै किने। वौआइत ई रहै जे जगहो तँ जगहे छी। मुहसँ फुटल तँ कहलयैन करोड़ पति राजा छी, मुदा अपनो तँ ओइसँ कम नहियेँ हएब। जे जमीन भौजी देलैन, ओ तँ घराड़ी छी, दस लाख-पनरह लाख रूपैए कट्ठा। जँ दसो लाखे कट्ठा जोड़ै छिऐ तेयो 16x10= 160 लाख भेल। एक करोड़ साठि लाख...।

मुदा लगले मखनाक मन घुमलै बाजल-

"भौजी, भैयाकेँ तइले तामसो उठतैन। तहूमे खाइकालमे। अनेरे मनमे हेतैन जे केहेन पतित अछि जे खेबो करैए आ घिनेबो करैए। मुदा से बात नै भैया। खटहा आमक गाछीमे पड़ि गेल छी। यएह ने सोचैत हेबै जे विद्या-दान करै छी। मुदा विद्या केतए हेराएल छैथ? जैठाम नै छैथ। कोनो काज बिना बुधिये थोड़े चलैए, जेते अहाँ नोकरीक दरमाहा उठबै छी तइसँ बेसी हएत। ओना अपन सम्पैत बैंकोमे जमा रखि सकै छी, मुदा अनका हाथक काजो आ सम्पैतोक अशे केते। मुदा दुनूसँ नीक जे अपन सम्पैतकेँ सम्पैत बना जिनगीमे ठार करी।"

कहलिऐ-

"बौआ मखन, बिनु विचार केने किछु निर्णए करब उचित नै, मुदा भौजीसँ पुछहुन जे गाममे रहथुन?"

ता अपन मनक उष्मा उष्मित भऽ उर्जवान बनबए लगल। एक-एक वस्तुपर नजैर उमड़ए लगल। जँ केकरो किछु बुझबैक अछि आकि कहैक अछि ओकरा बान्हि कऽ किए बाजब। किए ने अपन बोधक परीक्षण करैत चलब। पत्नीकेँ अपन गामक आ बजारक बाससँ पहिनेक, एक-एक कौशल जे माए जिनगीक लेल सीखौने रहथिन जे सागो खोंटि कऽ खेनिहारक जिनगी मिथिलाक धरती दैत आबि रहल अछि। चाहे वेपारीक दृष्टिए बारहो मास साग देखिऐ आकि भोजनक रूपे, मुदा होश तँ अपने राखए पड़त जे जाड़क मासमे पटुआ-पोरो आ गरमी मासमे सूआ-मेथी खाइ आकि नै खाइ। एक तँ ओहुना घरक बान्हल स्त्रीगण बाहर घुमबो-ले आ देखबो-ले फड़फड़ाइत रहिते छैथ तैपर अपन नव शक्ति जगैत जमीन, तैपर सासुरक गाम, जे अपन गाम भेल, तैपर हमर आग्रह सुनि दस-अनियाँ मुस्की दैत बजली-

"ऐमे पुछैक आ विचारैक कोन खगता अछि। जहिना पति घर जेबाले पत्नीकेँ कियो रोकिनिहार थोड़े होइए तहिना ई अप्पन घर छी। अइले पुछै आकि विचारैक कोन प्रयोजन अछि।"

बिच्चेमे ढकार करैत मखना कहलकैन-

"भौजी एतेकाल अपना मने कहियौ आकि भूखल पेटे कहियौ मुदा आब अहाँक बलजोरी खेनाइ खाएब। ओना आगूमे आबि गेल अछि, छुताएब अन्नक अपमान भेल, तहूमे जे अन्न सभसँ ऊपरक ईश्वरत्वक शक्ति पौने अछि, तेकर अपमान करब मनुखता नै ने हएत।"

दोसर दिन कौलेज गेलौं, पढ़बैमे मन ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे जे किछु किताबमे पढ़ने छेलौं सएह विद्यार्थीकेँ पढ़बैत रहलौं! मुदा आइ अपना नजरिये दुनियाँ दिस देख पढ़बए चाहलौं। जइमे सामंजस[11] नै भेने ओझरी लगि जाइ छल। मुदा जहिना नव ओझरी मनमे लगैत रहए, तहिना दोसर ओझरी खुजितो छल। खुजैत ई छल जे जइ बच्चाकेँ मनक विचारसँ मन भरैत रहलौं, कहि देब जे बौआ मन आइ बेधाएल छह तँए पढ़बै दिस मन नै बढ़ि रहल अछि।

अनमनस्क भेल डेरा आबि पत्नीकेँ कहलयैन-

"कनी नीक जकाँ कॉफीबला चाह बनाउ।"

जहिना लाबा भुजनिहारि उड़ैत लाबाकेँ लारैन सँ मारि-मारि दबैत रहैए तहिना लारैन चलबैत कहलैन-

"एकर माने आन दिन मनमाफित चाह नै बनबै छेलौं।"

पत्नीक लारैनपर धियान नै दैत कहलयैन-

"किछु विचार करबाक अछि, तँए अखन दोसर बात नै करू।"

[11] समन-जश

अनायास हुनका मनमे सौनक गुम्हरैत मेघक शंका भेलैन जे भरिसक ठनका खसत। बजली किछु ने। गैस-चुल्हि, लगले चाह आनि आगूमे ऐ आशासँ कान ठाढ़ केली जे आगूक की आदेश होइए। मुदा जेना-जेना चाह पीबैत गेलौं तेना-तेना विचारक गम्भीरता बढ़ैत गेल। चाह पीब गिलास रखैत पान मुँहमे लेलौं। जेना-जेना पान मुँहमे फुलाए लगल तेना-तेना मनो फुलाए लगल...।

पुछलयैन-

"स्वतंत्र जिनगी की?"

मुँहक फटाहि तँ छथिये, हमरे प्रश्नक पुछरियो पाछूसँ पछुआएले रहैन, बिच्चेमे पकैड़ बजली-

"हमर की स्वतंत्रता। एतबे ने जे अहाँ संग कखनो बाल-बोध लग बैस भाए-बहिन जकाँ रहब, कखनो बाबा-दादी जकाँ घर-परिवारक विचार करब, कखनो संगे-संग आगि-पानिमे मरब, मुदा सभ कथुक बाबजूद एक मनुख बनि केना जीब, यएह ने भेल स्वतंत्र जिनगी। जाबे स्वतंत्र जिनगी नै ताबे स्वतंत्र नन्दन वन केना?"

पत्नीक विचार आरो ओझरा देलक। जेना मनक कोनो ससे-बस ने चलए दिअए। दौगैत घोड़ा जकाँ पत्नीक विचारक घोड़ाक छोर खिंचैत बजलौं-

"गाममे नीक लगत?"

अपन सम्पैतक आर्थिक विश्लेषण मने-मन कऽ रहल छेलौं जे जहिना भारत सरकारकेँ माटि छै, पानि छै तहिना तँ गाममे पनरह बीघाक चास-बास अपनो अछि। जेकरे अमार लागल अछि तेहीले नोकरी-चाकरी करै छी। मुदा तखन लोक जँ नोकरी नै करता तँ संस्था चलत केना? ऐठाम संस्था नै चलबक प्रश्नक पाछू वेरोजगारी सेहो देखए पड़त। तँए बौद्धिक समुचित बँटवारा। आठ बजैत-बजैत रातिमे

निर्णएपर पहुँच गेलौं जे खटहा जिनगीसँ मीठहा किए ने जीब। कोनो कि अपना ओकाइत नै अछि जे स्वतंत्र जिनगी बना स्वतंत्र देशक नागरिक बनि बिनु मोलक ज्ञान-दान करब! मन दृढ भऽ गेल। काल्हि नोकरी छोड़ि देब। लगले मनमे भेल जे काल्हिक बीच राति शेष अछि तँए ओते बिलमब उचित नहि। नीक रहत जे अखने फोनसँ कार्यालय सूचित कऽ दिऐ। जँ कनियोँ भनक बहराएत तँ रंग-रंगक दूत-भूत पहुँच मन-मोहैन चलबए लगत। मुदा तइसँ की, कियो अपन काजक मालिक अछि। काजे ने नीक बनैत-बनैत कर्म बनैए आ कर्म बनि धर्मक संगे चलए लगैए।

दोसर दिन कौलेजक ठीक समैपर घरसँ निकलैसँ पहिनहि पत्नीकेँ कहलयैन-

"अहाँक मनक बात मन मानि लेलौं। आगूक बात घुमि एला पछाइत कहब।"

OO

22 नवम्बर 2014, शब्द संख्या- 3515

ढकरपेँच

बैशाख मासक बारह बजे दिन। बाधसँ आबि एकचारीमे ई सोचि छहराइत रही जे रौदाएलमे नहाएब उचित नै तँए कनी जिरा लइ छी, पछाइत नहा-खा अराम करब। ओना पानिक तरास सेहो लगल रहए मुदा रौदाएल दुआरे पानियोँ ने पीने रही। भीतरसँ मनो तबधले रहए। तबधल ऐ दुआरे रहए जे सजमैनक खेत पटबए गेल रही, वोरिंग-बलासँ रेटक[12] दुआरे कहा-कही भऽ गेल, गरमाएलमे बजा गेल 'सजमैन उपजए वा नै उपजए मुदा पैछला रेटसँ एको पाइ बेसी नै देबह।' जहिना अपन खेतीकेँ जुआ-पाशापर रखि देलौं, तहिना बोरिंगबला अपन वेपारकेँ पाशापर रखैत बाजल-

"गनगुआरिकेँ एकटा टाँग टुटने की बिगड़तै, तूँ जे दू कट्ठा खेत नहियेँ पटेबह तइसँ हमर वेपार चलि जाएत? तोरा सन-सन सौंसे बाध लोकक खेत पसरल छइ।"

मन ऐ विचारमे ओझरा गेल रहए जे जखन एक रूपैआ डीजलक दाम बढ़ल तखन पाँच रूपैआ घन्टा बढ़ा कऽ साए रूपैए घन्टा पटौनी दर लगा लेने छल। हिसाब मिला कऽ देखलिऐ तँ बुझि पड़ल जे उचिते दर छइ। महिनामे दू बेर मिसतिरिआइ लगै छै, पार्ट-

[12] पटौनीक दर

पुरजा लगै छै, तेल लगै छै तैपर सँ अपनो बरदाइए। मुदा जखन तीन रूपैआ डीजलक दाम घटल तखन तँ पनरह रूपैआ रेट कम कऽ देबा चाही। सएह कहलिऐ, तहीपर बाता-बाती भेल रहए...।

थारी-बाटीक डोलैत पसरल पानि जकाँ डोलैत मन असथिर भेल जाइत रहए आकि उतरबारि टोल दिससँ सोनमा काकाकेँ अबैत देखलयैन। देखते टोकलयैन-

"काका, तमाकुल खा लिअ।"

हिसाबेसँ बजलौं। किए कहितिऐन जे बड़ झूर-झमान देखै छी आकि मन तरताएल जकाँ अछि। मुदा दुनियोँक तँ अजीव खेल अछि, जहिना गीत गौनिहारि आकि नचनिहारि अपन नाचो आ गीतो दोसराकेँ देखबैत-सुनबैत रस पीबैत रहैए तहिना दुखाएलो-दबाएल तँ अपन बेथा-कथा दोसराकेँ कहि-सुना रस पीविते अछि...।

रस्तासँ उतैर सोनमा काका एकचारी दिस बढ़ला। भुयैंमे बैसल रही। उठि कऽ कोणमे रखल पीढ़िया आनि आगूमे बैसैले देलिऐन। एकाएक बुझि पड़ल जे जहिना रौदाएल लोकक मनमे उठै छै, 'हे भगवान एकटा छाहैरक गाछ मेघसँ आगूमे खसा दिअ।' तहिना कक्काक चेहरा...। मुदा चेहराक सुरखीमे हरियरी उतरलैन, ठोरपर हाथ चलबैत बजला-

"भातीज, की कहियऽ बड़का ढकरपेँचमे फँसि गेलौं हेन!"

सोनमा काका जे सोचि बाजल होथि, किएक तँ केतौ लोक ओरियानकेँ ढकरपेँच बुझैए आ केतौ ओझरीकेँ बुझैए। तँए ढकरपेँचक माने नीक जकाँ बुझबे ने केलौं। बुझिमे आबि गेल, 'मुसकल'। जहिना गोटे बोल्ट नटसँ ने निकलबे करैए आ ने कस-कसा कऽ बैसबे करैए तहिना भऽ भेल। मुदा एते संयोग नीक रहल जे अगर-मगर नै जोड़ि सोझे बात उनटबैत पुछलयैन-

"की ढकरपेँच लगि गेल काका?"

ओना दुनू कान ठाढ़ कऽ सोनमा काका सुनलैन मुदा परिवारिक विचार मनपर जेना चाप दैत रहैन तहिना बुझि पड़ल। पाइक लेन-देनक जनु बात अछि जे चर्च लोक सभठाम नै करए चाहैए। ओना यएह भीतरिया घाव समाजकेँ सड़ा देने अछि। मुदा समाधानो तँ असान नहियेँ अछि। जँ प्रश्न उठत जे सबहक लेन-देन समाजमे सभ बुझहौ। मुदा आपराधिक समाज सेहो तँ ऐछे...।

सोनमा कक्काक पीड़ाएल मन भीतरे-भीतर जरैत रहैन। दोहरा कऽ टोकलयैन-

"काका, समस्तीपुरबला तमाकुल छी, बड़ टीपगर अछि। मुँहमे पड़िते मन मस्त भऽ जाएत।"

मनमे ई रहए जे हमहीं किए अगुआ कऽ किछु पुछयैन। परिवारिक लोककेँ साइयो ओझरी लगले रहै छइ। कखनो धिया-पुताक तँ कखनो पति-पत्नीक, कखनो माल-जालक तँ कखनो खेत-पथारक। वनवासी ऋृषि-मुनी जकाँ थोड़े छै जे एकपेरिया जिनगी बना एकरस बनि चलैत रहत। जैठाम बारहो मास एक्के मौसम रहैए, चाहे जाड़क हौउ आकि गरमीक, तैठाम तँ जोगी-फकीरीक बढ़वारि अछि। मुदा जैठाम रंग-रंगक मौसम सालमे अछि, तीन-तीन रंगसँ लऽ कऽ छह-छह रंगक अछि, तैठाम की जोगी-फकीरी, आकि परिवारिक एके रंगक हएत..?

'टीपगर तमाकुल' सुनि सोनमा काका टीपलैन-

"भातीज, सभ किछु हेराएल जा रहल अछि। अपने जेहेन छोटकी तमाकुल उपजबै छेलौं, तेहेन टीपगर थोड़े समस्तीपुरबला हएत।"

ओना हमहूँ ओही तमाकुलक स्कूलमे पढ़ि अ-आ-सँ-ककहारा

सीखने छी, मुदा आब ते ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहल। मुदा असथिर पानिकेँ पाछूसँ दोसर पानि धक्का मारि जहिना रेत आकि वेग आकि धार बनबैए, चाहे ओ पानिक हौउ आकि बाउलक, तहिना पुछलयैन-

"से की काका?"

जेना अपन उपारजित अमलक नशा मनमे चढ़लैन तहिना बजला-

"भातीज, तमाकुलक गुण जेकर जेहेन हौउ, मुदा अपन हाथक उपजौलक गुण दोसर होइ छइ। भलेँ की उपजाबी की नै उपजाबी, ई दीगर भेल।"

कक्काक मन टोबाएल जे भरिसक काका सम-गमपर आबि रहल छैथ...।

कहलयैन-

"काका, नहाइबेर भऽ गेल, चलू स्नान करि लिअ आ जे रूख-सुख हेतै, दुनू-बापूत खा कऽ अराम करब। बड़ रौद भऽ गेल।"

कहि हाथमे तमाकुल देलिऐन। बुझि पड़ल जे कक्काक मनमे कोनो विचार घुरिया रहल छैन, मुदा तेकरा जेना छिपबए चाहै छैथ, से भेल नहि। काका ओहन तमाकुल खबैया जे ठोरोमे रखै छैथ आ नाकमे नोइसो लइ छैथ। नाकमे नोइस लइते मन सुरसुरेलैन। छिक्का भेलैन। पहिल खेपक थूक फेकते मन सर्ड़ास जकाँ बुझि पड़लैन। मन पड़लैन ढकरपेँच। बजला-

"बौआ, हम-तूँ ते बाप-बेटा भेलौं, अपन बात तोरा नै कहबह तोहर बात हम नै सुनब तखन समाजे की भेल।"

बजलौं-

"हँ, से तँ ठीके।"

जेना सोनमा काकाकेँ रस भेटलैन। बजला-

"बौआ, देखहक जे चौक परहक जे तीनिकठबा चौमास अछि ओकरे बेचैक गप केने छेलौं। पच्चीस हजार वेनो देने छल। आठम दिनक दिन बेटी बिआह ठेकने छी से आब मुँहमे धान दइ छी तँ लाबा होइए!"

एक्के रसमे हलुआ सोखर जकाँ तेते सोनमा काका सुना देलैन जे बुझबे ने केलौं, जे काका की कहलैन। कसमीरा सूत जकाँ जँ एक-एककेँ नै विलगाएब तँ बुझब कठिन अछि। मुदा तइले तँ समए चाही। अखन नहेबाक अबेर अपनो होइए आ दुआरपर कियो-भूखल-पियासल रहैथ सेहो नीक नै बुझि पड़ल...। आग्रह करैत दोहरौलयैन-

"काका, नै खाएब तँ कमसँ कम नेबोक शरबतो पीब लिअ।"

सोनमा काका चुपे-चाप बात सुनि लेलैन। मनमे उठलैन, केतौ पहुँचैक जगहपर अपना मने ने पहुँच सकै छी, मुदा विदा तँ घरवारीए मने ने हएब। अपना मने विदा भेने जँ किछु ढेंस लगा दिअए! अपनाकेँ समटैत सोनमा काका बजला-

"बौआ, मनो पीताएल अछि। तहूमे तूँ तेहेन तमाकुल खुएलह जे आरो पीता देलह। जेतेकालमे शरबत बनेबह तेतेकालमे गपे खतम भऽ जाएत। तोरो मनमे किए हेतह जे काकाकेँ पानियोँ पीबैक आग्रह केलिऐन तँ नै पीलैन। पानि तँ कखनो लोक केतौ दू-घोँट पीब सकैए। एक गिलास पानि नेने आबह।"

मनमे भेल जे केकरो पानि आनए कहिऐ मुदा फेर भेल जे सोझहासँ हटने किछु नव विचार अपनो मनमे आ हुनको मनमे एबो करतैन आ किछु जेबो करतैन। तँए किछु समए एकान्त भेने विशेष बात हएत। अपने उठि कऽ आँगनसँ गिलास-लोटा लऽ कलपर पहुँच

नीक जकाँ चिक्कैन माटिसँ माजि-धोइ पानि नेने पहुँचलौं। देलिऐन। भरि छाँक पानि पीलैन। पीविते आरो असथिर भेला। बजला-

“भातीज, ओना काज उनटा भेल, मुदा आब दोहरा कऽ तमाकुल नै खेबह।”

कक्काक अधखरूआ बात नीक जकाँ नै बुझि पेलौं। की उनटा कहलैन? आ दोहरा कऽ तमाकुल नै खेता? बीचमे कोन एहेन बात चलि आएल जे काका विगैड़ गेला। ‘दोहरा कऽ नै खाएब’ तेकर तँ दोसरो रूप अछि। रूप ई अछि जे कोनो काजक बाता-बाती भेने लोक, चाहे कुटुमैती होइ आकि दोसतियारे, आकि आने जगह, जँ दोहरा कऽ पानि नै पीब, आकि कोनो साधारणो बेवहारमे छोटो-छीन गीरह जँ दऽ दैत तँ ओ सबदिना गीरहा जाइत...। कहीं से तँ ने भेल! मुदा आब उपय? हँ उपाइयो तँ अछिए। पुछलयैन-

“की उनटा भेल, काका?”

एक तँ काकाकेँ पेट रसेलैन तैपर मनुओं जागिये गेल रहैन, बजला-

“बेटा, जेहने अपन कुल-खनदानक बेटा-भतीज तेहने समाजोक, तँए जगह पेब जँ एकटा नीक बात नै बाजि भेल तँ अधले बजेक कोन दरकार अछि।”

अपना रसकेँ काका धऽ लेलैन, मुदा अपन सवालकेँ तर पड़ैत देख मनमे भेल जे कहीं एहेन ने हुअए जे सन्दूकक धड़ाउ कपड़ा जकाँ तर पड़ैत-पड़ैत तेते तहक निच्चाँ ने चलि जाए जे सड़िये ने जाए आकि उचरीने ने काटि दिअए। मुदा दरबज्जापर आएल आगन्तुक मुँहक बातो नै सुनब, अनुचित...।

अपन गलती व्यक्त करैत बजलौं-

“काका, कहुना भेलिऐ अहाँ तँ बखारी भेलिऐ, जेते विचार अहाँ-मनमे अँटल अछि ओते हमरा थोड़े अँटत। अहाँ-आगू हम कहुना भेलौं तँ कोठीए-भुरकुड़ी भेलौं किने?”

ओना अपनो मुँह झाड़ि नै बजलौं, जे काका यौ पहिलुक बात छुटि रहल अछि.., मुदा खग तँ खगक भाषा बुझिते अछि...। काका बुझि गेला जे पानि पीला पछाइत जे तमाकुल खाएब मनाही केने छेलिऐ..!

सम्हरैत काका बजला-

“भातीज, बिना तोरा बातक जवाब देने नै जेबह। मुदा भरिसक तूँ अगुताएल छह, तँए पहिने तोरे बातक जवाब दइ छिअ।”

कहि चुप भऽ निहारए लगला जे सुनैले सोल्हो-अना तैयार अछि की नहि। मुदा से मन मानि गेलैन बजला-

“बौआ, पहिने लोक पानि पीबैए तखन कोनो अमल मुँहमे लइए, अखन से नै भेल, पहिने तमाकुल खेलौं पछाइत पानि पीलौं।”

बजैक सूढ़िमे काका बाजि गेला। मुदा मन पाछू घुच-पुच करए लगलैन। घुच-पुच ई जे जँ हमरा पियासे रहए तँ रस्तोमे केतेको चापाकल छेलै, किए हम एतुक्के भरोसे अपना मनकेँ जरबैत रहलौं, मुदा, सभ ठामक पानियोँ हितकरे होइ छै सेहो बात नहियेँ अछि। केतौ पानि मक्खन छनैए तँ केतौ शरबत, केतौ नोन छनैए तँ केतौ अपने हजारो तरहेँ छनाइए...।

बातकेँ सम्हारैत घुचपुचाइत बजलौं-

“काका, अहाँ अपना जकाँ किए बुझै छी जे एते खोंइचा छोड़ाएब। अनेरे झूठ-फूसिमे मनकेँ लगौने रहब।”

हमर बात काकाकेँ नीक लगलैन। नजैरसँ बुझि पड़ल जे

कक्काक मन कहि रहल छैन जे धिया-पुताक बीच बैस अहिना उनटा-सुनटा खिस्सा-पिहानी चलै छइ। जँ नै चलै छै तँ किए कियो चिक्कारी भाषा जनैए तँ कियो दृष्यकुटीय...।

बजला-

“बौआ, तमाकुल तेना ने मन घुमा देलक जे पानियेँ असथिर केलक नै तँ कण्ठो सुखाइत आ मुहसँ खखरियो उड़ैत।”

कक्काक बात सुनि बुझि पड़ल जे सिल्ली परहक धान जकाँ गरदे नै, खढ़ो-पात मनसँ उड़ि गेलैन। तखन तँ कनी खोंरना चलबैक खगता अछि। खोंरनो कि लकड़ीए टाक होइए, ओ तँ रूपोक होइए। रूप माने अंगीय भाषा। मुसकुरी मुँह बनेलौं। पारखी काका छैथे, बुझि गेला जे मनक बेथा बुझए चाहैए। ओहो मुस्की भरैत बजला-

“बौआ, आठम दिन कन्यादानक दिन छी। चौक परहक खेतक विकरीक गप राधेश्यामसँ केने छेलौं।”

बिच्चेमे टोकि देलिऐन-

“तेहल्लो कियो छला।”

‘तेहल्ला’ सुनिते जेना सोनमा कक्काक मन तरंगलैन। मुदा दबैत बजला-

“ओइमे तेहल्लाक कोन काज छै, एकटा होइ छै लोककेँ समाजिक काजमे लगाएब आ एकटा होइ छै समाजकेँ अपना काजमे लगाएब।”

पुछलयैन-

“जँ बेक्तिगत काज भारी हुअए तखन?”

जेना हमर गप कमल फूल जकाँ धारक ऊपरे-ऊपर काकाकेँ भँसा देलकैन। मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछि। मुदा जे काज जमीन परहक भेल ओ ओहन नै भेल जइमे समाजकेँ लगौल जाए।”

गर बुझि पड़ल। बजलौं-

“काका, मोहना तीन लाखमे एक कट्ठा खेत बेचैक गप केलक, भरिसक अहूँकेँ बुझले हएत, अदहा रूपैआ वेनाक रूपमे डेढ़ लाख लऽ लेलकै आ जमीनक दखल देबे ने केलकै, जहियाक समए लेनिहार बनौने छेलै, तेकर पराते पनचैती बैसा, बितलाहा समैक दोख लगा वेना बेइमानी कऽ लेलकै! कनी बलगर तँ ऐछे, छजि गेलै!”

सोनमा कक्काक मन ठमकलैन। मुदा जखन अपन काजकेँ निहारला तँ बुझि पड़लैन जे अपन काज ओहेन नै अछि। दोसर रंगक अछि। तँए केतौक पजेबा केतौक मसल्ला लगा जोड़ब उचित नहि। बजला-

“बौआ, मोहनाक काजसँ भिन्न हमर अछि।”

कहलयैन-

“काका, उड़ैत चिड़ैकेँ परखब चिड़हारक काज छी, सभ थोड़े परखत। जखन अपने दू गोरे गप करै छी, तेसर नै अछि तखन एते तेलिया-फुलिया लगा कऽ बजैक कोन खगता..?”

मने-मन सोनमा काका गाँजा पिआक जकाँ विचारकेँ मनमे घोँटलैन। घोँटिते मुँह सिहकलैन-

“बौआ, तीन भाँइक भैयारी अछि से ते बुझले छह?”

लगले बजलौं-

“एकरा के काटत।”

जेना अपन पनचैती अपने केलैन, तहिना बजला-

“तीनू भाँइक हिस्सा हएत किने?”

ओना कक्काक मनमे दोसर बात रहैन। दोसर बात ई रहैन जे अखन तक समाजमे एहनो चलैन अछिए। भलेँ कियो नोकरी करैले गाम छोड़ि किए ने केतौ बसि गेल होथि, घरवाली डेरावाली किए ने बनि गेल होथि आकि लोके बहरबैया किए ने कहैन, मुदा ओ तँ अपनाकेँ गामक बसिन्दे मानै छैथ...।

कक्काक भक्क हम नै बुझि पेलौं जे हिनका मनमे ईहो छैन जे भैयारीक बँटवारा कोलो-कोली होइ छै आ प्लौटो-प्लौट। भलेँ शहरक लोक प्लौटक माने कोला-कोली बुझए आ गामक लोक बाधकेँ कहए। कक्काक भकुआएल बातमे ओझरा गेलौं। गपक सूढ़िमे कहा गेल-

"हँ से तँ होइते अछि काका।"

मनमे ई भेल जे भरिसक टटका विचार काकाकेँ नीक लगतैन मुदा से भेल नहि। कक्काक मन तुड़ैछ गेलैन। तुड़ैछ ई गेलैन जे दुनू भाँइ[13] करीब बीस बर्खसँ गाम छोड़ने अछि। ने कहियो खेतक आड़िपर गेल आएल आ ने ओकर खेनाइ-पीनाइ देलक, ओना उपजा सोल्हो-अना अपने खेलौं, मुदा ओ सभ तँ लगतो नहियेँ लगौने छल, जँ ओहुना जोड़ल जाए तँ तीन कट्ठामे एक-एक कट्ठाक हिस्सा भेल। सरकारी हिसाबे चारिअना-बारहअनाक बँटवारा अछि, गमैया हिसाबे अदहा-अदही अछि। मुदा गामो-गामक तँ चलैन छै, केतौ मनखप चलै छै तँ केतौ मलगुजारीक हिसाब। सभ दिन मलगुजारी हम देलिऐ। रौदी-दाहीमे खेतक उपजा गेल! लगतो गेल! मुदा मलगुजारी थोड़े गेल? ओहुना रज-राजवारामे दू साल मलगुजारी नै देने खेत निलाम भऽ जाइ छेलइ। सरकारी भऽ जाइ छेलइ। जेकरा लोक निलाम चुका अपनो आ आनो लऽ लइ छल। तैठाम भैयारीक मलगुजारी-तरे हमरे ने भेल...।

[13] सोनमा काका तीन भैयारी छैथ, बाँकी दू भैयारी।

अपन जीत सोनमा काकाकेँ बुझि पड़लैन। मनक तुड़छाहैट भागि गेलैन। विहुँसैत बजला-

"बौआ, कहुना भेलह ते बाले-बोध भेलह किने, सभ बातपर अखन तोहर नजैर नै दौड़ै छह।"

कक्काक विचार सुनिते मनमे भेल जे हिनकर मन करूएलैन नै मधुएलैन। हूँहकारी भरैत बजलौं-

"काका ईहो की कहब तखन बुझबै, बुझिते छिऐ जे अहाँ कोरा-कन्हा नेने छी। अहीं सभ ने सिखेलौं अमरूद माने लताम। माए-बाप तँ सोझे लतामक गाछ रोपि कहलैन जे बौआ ऐ गाछक नाओं लताम छी, जे पहिने लतामक बीआ अँकुरि आँखि फोड़ि गाछ भेल, जखन फड़ै-जोकर भेल तखन लताम भेल। ओना दोसर-तेसर फलक बीच लतामक फल भेल मुदा असगरमे वएह लताम भेल। मुदा ओहीमे ने कोनो लतामक पात भेल तँ कोनो लतामक फूल, कोनो थुर्ड़ी लताम भेल तँ कोनो डम्हाएल, कोनो पाकल भेल तँ कोनो अधपक्कू। कोनो सुखल डारि भेल तँ कोनो जीत डारि।"

हमर बात सुनि जेना बुझि पड़ल जे काका अकछा रहला अछि। मुदा से बुझैमे भरम भेल। भरम ई भेल। जे हुनका पेटमे तँ ढेरो विचार उधकैत रहैन। बजला-

"बौआ, दुनियाँमे बहुत बात अछि, अनेरे कोन मगजमारीमे लगल रहबह। नहाइ-खाइबेर भेल।"

बुझि पड़ल जे काका अधडरेरेपर गपकेँ छोड़ए चाहै छैथ। कहलयैन-

"यौ काका, से भेल जाइए आकि खतम भऽ गेल। अहाँकेँ कहै छी जे चलू नहाइले सेहो ने तैयार होइ छी।"

खाइक आग्रह सुनि सोनमा कक्काक मन हरियेलैन। बजला-

"बौआ, कोनो बाँटल छी, मुदा जे गप उठल तेकरा बीचमे छोड़बो नीक नै ने हएत। तँए ओइ गपकेँ झब-दे उसारह।"

ओना मन भेल जे की कहि देलैन। उसारबक माने भेल विसरजन। मुदा जँ काजेक विसरजन भऽ जाए तँ बाँकी की रहल तइले समए लगाएब। मुदा फेर मनमे भेल जे काका जे बजै छैथ ओ तँ अपना ताले बाजि रहल छैथ तँए ओइ तालपर खाली नजैर खिरबैक अछि जे कोन तालमे बाजि रहल छैथ...।

कहलयैन-

"काका, अहाँ ते तेहेन तितम्हाबला छी जे ने नहाइके बेर बुझै छिऐ आ ने खाइके। गप केतौ पड़ाएल जाइ छै?"

मुदा गप तँ काजमे सटल अछि। आठम दिन कन्यादान ठेकने छैथ, जे बिथुत भऽ रहलैन अछि। मन नाचि रहल छैन माने, नचबाकाल नचनियाँकेँ जहिना खाइ-पीबैक सुधि-बुधि नै रहै छै तहिना भऽ रहल छैन। बजला-

"बौआ, वेचारा राधेश्यामोक दोख नै छइ। वेचरा असामक होटलमे नोकरी करि कऽ पाइ कमेने अछि, सोझमतिया तँ अछिए। आब गामेमे रहत। मिठाइ बनबैक अपना रंग-रंगक लूरि छैहे, दोकान करत।"

जेना कक्काक एक-खण्ड बात समाप्त भऽ गेलैन तहिना कनी दम लिअ लगलैथ। मनमे भेल जे भरिसक काका बेदम भऽ रहला अछि, गड़ूगर काजमे पड़ि गेल छैथ...।

कहलयैन-

"से तँ वेचारा सभ दिनसँ मुँहसच रहल अछि राधेश्याम। छ-

पाँच किछु ने बुझैए।"

बजला-

"बौआ, भेल एना जे दू लाख रूपैये कट्ठाक हिसाबसँ तीनू कट्ठाक गप केलौं। हिस्सा तँ तीनू भाँइक हेबे करत मुदा मनमे ईहो भेल कोले-कोली बाँटि लेब। ओहो वेचारा पच्चीस हजार वेना देलक आ हमहूँ ओइ पाइसँ असारी-पसारीकेँ वेना दऽ देलिऐ। तही बीचमे ढकरपेँच ठाढ़ भऽ गेल अछि। लोको सभ तेहेन भऽ गेल जे ने हगत ने बाट छोड़त।"

'ढकरपेँच' सुनि जिज्ञासा औरो बढ़ल। पुछलयैन-

"बीचमे कोन ढकरपेँच आबि गेल काका?"

बजला-

"पहिने राधेश्यामकेँ नै बुझल रहै जे तीनू भाँइक हिस्सामे एक्के हिस्साक हिस्सेदारसँ बात भऽ रहल अछि। पछाइत जखन लोक सभकेँ पुछलकै तँ भाँज लगलै। छह-छह लाख रूपैआ हाथसँ केना छोड़त। जिनगी भरिक कमाइ छिऐ।"

कहलयैन-

"हँ से तँ छिऐहे। जँ रूपैआ बुड़ि जेतै तँ अपना संग-संग परिवारो बेलल भऽ जेतइ। तखन नीक हएत जे अखन काजेकेँ अनठा आगू दिन बढ़ा लिअ।"

सोनमा काकाकेँ हमर बात कनी-मनी नीको लगलैन आ बेसी अधले लगलैन। अधला ई लगलैन जे जिनगीक परीक्षाक घड़ी छी, बेटा-बेटीक पैतपाल करब। तैठाम काजमे चूकि रहल छी। ओना अखन बैशाख छी, अखारोमे बिआह कएल जा सकैए। बजला-

“लोक तँ पीहकारी भरबे करत जे फल्लाँ-भाय[14] सबहक हिस्सा जमीन चोरा कऽ बेचै छला।”

कहलयैन-

“से किए कियो कहत। ओकरा एतबो नै बुझऽ औते जे काजक बीचक गलती काज करैक लूरिक भेल आकि मनुखक। आ जँ मनुखक नै भेल तखन ओकर गलती मानब गलती की नै हएत?”

हमर बात सोनमा काकाकेँ कनी-मनी लगबो केलैन आ नहियोँ लगलैन। मुँह दिस देखिऐन तँ पारखेमे ने आबैथ। किएत तँ सुखाएल गाछक पात जकाँ हरियरी तँ रहैन मुदा चुहचुही मन्हुआएल जकाँ रहैन। मुदा से भेल नहि। जहिना कोनो गाछ लगिते मुँह फोड़ैए तहिना कक्काक मुँह फुटलैन-

“बौआ, गामक लोक केहेन तीनितसिया अछि से तूँ नै बुझै छहक। जहिना तीनितसिया बात बजतह, तहिना तीनितसिया काज करतह। तहूमे तोरा बुझले छह जे गाममे केहेन लोक सभसँ मिलान अछि। अनेरो तिलकेँ कखनो तलवार बनाएत जे दाना निकलला पछाइत ओकर घर[15] तलवार जकाँ धरगर भऽ जाइ छै तँ कखनो तिलिया पहाड़ कहि पहाड़ बना दइए। तहिना तिलिया-फुलिया लगा बातकेँ बतंगर सेहो बनैबते अछि।”

कक्काक बात दमगर बुझि पड़ल। मुदा हल्लुक-फल्लुक काजक सहमत बनाएब आ भारी काजक सहमत बनाएब, कोनो कि एक्के भेल। मुदा ओहनो बात तँ नहियेँ बाजल जा सकैए जे कक्काक विचारक प्रतिकूल हुअए। जँ नै बुझि पाएब तँ पुछि लेबैन, मुदा अही पुछा-पुछीमे तँ नहाइक बेर हूसल, खाइक बेर हूसल आ अखैन तक

[14] सोनमा भाय

[15] खोंइचा

विचारक तरियो ने पड़ल। मुदा खिस्सकरकेँ खिस्सा कहैकाल जँ हूँहकारी नै भरल जाएत तँ लोरिक संग मनियार केना चलत...।

जहिना भीतरसँ लोक जखन खुशी रहैए तखन जे वगे-वाणिक चुह-चुहीसँ चेहरापर रौहानी बनल रहै छै, तेहने चुह-चुही चेहरापर आनि बजलौं-

“काका, आन जे बुझए मुदा हम अहाँकेँ सभ दिन पैघ मानैत एलौं आ मानिते रहब।”

हमर बात काकाकेँ नीक लगलैन। दुइए गोरेक बीचमे बात भऽ रहल अछि तँए, आकि भीतरसँ मन कलहंत रहैन तँए, बमछैत बजला-

“बौआ, ओहन ढकरपेँचमे फँसि गेलौं जे केना कुटुमकेँ काहा पढेबैन जे अखन ओरियान नै भेल, तँए समैपर रूपैआ नै गनि सकब! तोहीं कहऽ..?”

सोनमा काका किछु आगू सेहो बाजए चाहै छला मुदा जहिना रस्ता-बाटक कोनो कटारिपर एकाएक नजैर पड़िते डेग ठमैक जाइए तहिना कक्काक बोल ठमैक गेलैन। मुदा अपना मनमे अधखरूआ गप उठिये गेल। गपक नाङैर पकैड़ सेरिया कऽ पुछलयैन-

“की पुछए लगलौं काका आ किए अँटैक गेलिऐ?”

विस्मित होइत काका बजला-

“बौआ, जे माए-बाप बाल-बच्चाकेँ समैपर बोध नै दऽ सकल, समैपर बिआह-दान करा परिवार ठाढ़ नै कऽ सकल ओ माए-बाप अपन मातृत्व-पितृत्वसँ चूकल की नै? ई दोख तँ अपने ने हएत? तोहीं कहऽ गरीबसँ गरीब लोक किए ने हुअए मुदा घरदेखी-भोजमे एकावनटा विन्यास नै पुड़ौत तँ भगवती थोड़े ओकरा बुझथिन जे नीक बास अछि। तैठाम तोहीं कहह जे हम केना हारल सिपाही जकाँ दुनू

हाथ उठा दिऐ।”

कक्काक बातक कोनो अर्थे ने लगए जे की बाजि रहला अछि। एक दिस देखै छिऐन हाथ सफाचट छैन। एकोटा रेखा हाथक जीवित नै छैन, जेना सभ घँसा गेल छैन आकि कटि गेल छैन, आकि रेखा बनबे ने केलैन। आ दोसर दिस एकावन तरहक विन्यासक परसादीक पूजा करए चाहै छैथ..!

हुनके विचारकेँ आगू बढ़बैत पुछलयैन-

“एहेन कु-समैमे की उपय?”

“उपय तँ बुझि पड़ैए।” सोनमा काका कहि चुप भऽ गेला।

मनमे भेल जखन उपय सुझिते छैन तखन किए ने हुनके विचारमे हमहूँ हूँहकारी भरि दिऐन। रस्ता-बाट देखनिहार-जननिहार जँ केतौ हेराइए तँ ओ धोखे-धोखीसँ हेराइए। तइ हिसाबसँ तँ सोनमा काका सक्षम छैथ। कहलयैन-

“काका, अहूँ बड़ लाथी छी, मुँगबा मुँहमे चोरा कऽ रखि लइ छी!”

जहिना मुँगबा संग भूजल मरीचक टुकड़ी मुँहमे पड़िते कड़ू-मीठक बीच पटका-पटकी भेने जेहेन मन होइ छै, तहिना सोनमा काकाकेँ भेलैन। बजला-

“बौआ, कनियेँ जँ तूँ संग देबह तँ एक्के घुरछीमे अपन इज्जत बँचा लेब।”

कक्काक मन खुशी देखिऐन, मुदा बातक कोनो अरथे ने लगए जे काका कथी बाजि रहला अछि। मन भेल जे कहिऐन, नीक जहाँति नै बुझलौं काका..?

मुदा फेर हुअए जे जँ कहीं रूसिनिहारि जकाँ काका ने सासुरक

रस्ता पकड़ैथ आ ने नैहरक आ पकैड़ लैथ कोनो तेसरे तखन तँ आरो पहपैट हएत! केते सोझरबैत-सोझरबैत तँ जगहपर अनलयैन, जँ फेर कहीं विरहा जेता तँ अनेरे रजनी-सजनीक खिस्सा जकाँ दिन-राति लागल रहब। जे ठौर-ठेकानपर नै आबि सकता। अनेरे मन कहतैन जे की गइ रजनी धान कुटलें, तँ हमरा उखैरे ने अछि। तँए से नै पुछि, कहलयैन-

“ढकरपेँच केने सभ काज होइ छै काका, कोनो-ने-कोनो ढकरपेँचे सँ काज असान हएत।”

जेना सोनमा काकाकेँ सह भेटलैन तहिना बजला-

“एक संग केते काज ओझरा गेल अछि बौआ, एक दिस जेकरासँ रूपैआक ओरियान केने छेलौं से पछुआ गेल, दोसर दिस जहिना हमरा वेना देलक तहिना हमहूँ केकरो देने छिऐ।”

बिच्चेमे फेर रूकि गेला। पटरीपर आएल गाड़ी ठाढ़ भऽ गेल। आब की करब! चलैत गाड़ी ने कनियोँ सह पेने चलैत रहैए, मुदा ठाढ़ तँ ठाढ़ भेल...।

फेर पाछूसँ ठेलैत कहलयैन-

“गाड़ीकेँ रोकलिऐ किए काका?”

बजला-

“हौ वेना तँ घुमा देबै, मुदा ओ रूपैआ ते वेनेमे चलि गेल। असारी-पसारीकेँ दऽ देलिऐ।”

बजैक वेगमे बजा गेल-

“ओहो घुमा देत।”

जेना काका बुझि गेला जे एकटा होइ छै बड़का जाल जइमे बड़का माछ तँ फँसि जाइए, मुदा छोटका माछ छोटका नोकर जकाँ

गली-कुची सगतैर घुमैत रहैए! ओकरा लिये कोनो जाले ने भेल! मुदा पोठिया जाल लगने ने ओकरो बुझि पड़ै छै जे केहेन होइ छै..!

बजला-

“जमीनक ओझरी भैयारी दिस बढ़ि जाएत, आ दिन बढ़ौने कुटुमैती दिस बढ़ि जाएत...। मुदा जँ एक मासक बीचक समए भेट जाए तँ काज ससारि लेब।”

सह पाबि बजा गेल-

“हँ, केहेन तँ नीक विचार अछि।”

मुदा सोनमा कक्काक मनमे ईहो होइत रहैन जे हमरा वेना देलक, हम साय देलिऐ, दुनू एक केना भेल? मुदा जेना एक्केबेर सभ काजकेँ फानैत सोनमा काका बजला-

“बौआ, एहेन युक्ति लगाबह जे समगममे सभ काज ससैर जाए। दू मास थोड़े बहुत भेल।”

हमरो अपन अनुभव रहबे करए, बिआहक समए घुसकैत-घुसकैत साल टपले रहए, कहलयैन-

“दू मास कोनो बेसी भेल। हमहीं ई भार लइ छी, जा कऽ कुटुमकेँ कहबैन जे कन्याक नानीक नानी मरि गेलखिन, तँए अशौच भऽ गेलैन, अखारमे काज हएत।”

जेना काका कुटुम लगसँ निरदोख निकैल गेल होथि तहिना मुँह विहुसलैन, बजला-

“बौआ, की कहबह। समाज पतीत अछि। नीक लोकक बास कठिन भऽ गेल। जेहो अपना बेटा बिआहमे दहेज नै लइ छैथ, हुनकोसँ बेटीक प्रति दहेज मांगल जाइ छैन। तखन तँ सवै नचाबै राम गोसाँइ, नर नाचे मरकट के माहीं।”

कहि उठि कऽ बिना किछु बजने सोनमा काका विदा हुअ लगला। पाछूसँ टोकलयैन-

“काका, जिनगीमे अहिना कखनो चढ़ा तँ कखनो उतरी ऐबते छै तइले सोग-पीड़ा केने काज चलत।”

हमरा बातमे सोनमा काकाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन खनहन जरूर भेलैन...।

खनखनाइत बजला-

“एक लोटा पानि पीआबह, तमाकुल खुआबह। जखन एते गप भाइये गेल तखन लागल-भीरल जे अछि तेकरो उसारीए लेब।”

कक्काक मनमे बेसी खुशी देखलयैन। तँए काजक नजैर पछुआ गेल आ गप करैक आगू बढ़ल। पुछलयैन-

“की कहलिऐ जे उसारि लेब?”

मुदा काका गपपर धियाने ने देलैन। जेना सुरता किम्हरो और भागि रहल होनि...। बजला-

“बौआ, भिनसरसँ जइ काजक पाछू मन घुरियाएल छल से जेना हल्लुक भेल। अखन जाए दाए फेर आगू गप-सप्प हेबे करतै।”

पानि पीलैन, तमाकुल ठोरमे लइते उठि गेला। अरियातैत चारि डेग आगू बढ़लौं आकि अपने मने सोनमा काका बजला-

“बड़-बड़ लीला देखलौं रजनी-सजनी केर सिंगारमे!”

OO

30 नवम्बर 2014, शब्द संख्या- 3759

असहाज

साढ़े नअ बजेक समए, फागुन मास। वाड़ी-झाड़ीक जेहने उतार समए तेहने चढ़न्तो। उतार ई जे फुल-कोबियो आ बन्हो-कोबी कटै-जोकर भऽ गेल, अल्लुओ अपन पाँतमे दरारि फारि-फारि ऊपर अबैक जिज्ञासा कऽ रहल अछि। तहिना आनो-आन तीमन-तरकारीक भऽ रहल अछि। मुदा दोसर दिस बैशाखा तीमन-तरकारी लगबैक समए सेहो तँ ऐछे, तँए चढ़न्तो समए भाइये गेल अछि...।

हँसू-खुरपीक संग रघुनी काका खेतमे काज करैत रहैथ, तखने अँगनामे हल्ला होइत सुनलैन। हँसुआ-खुरपी वाड़ीएमे छोड़ि सहैट कऽ आँगन एला तँ देखलैन दस बर्खक पोता आँगनमे ओंघराइयो रहल अछि आ चिचिएबो करैए! परिवारक कियो कानि रहल अछि तँ कियो शिक्षककेँ गरिया रहल अछि। पोता लग पहुँच हाथ-पएर असथिर करैत पुछलखिन-

“बाउ, किए एना करै छह!”

जोर-जोरसँ कनैत दुलारचन बाजल-

“बाबा, मास्टर मारलक!”

“की केने छेलहक?”

“किछु ने, विनती होइ छेलै, सोझ भऽ कऽ नै ठाढ़ रहिऐ,

तँए...।”

दुलारचनक बात सुनिते रघुनी कक्काक मन खरङऽ लगलैन। वाणीमे ओज आबए लगलैन। अखन धरि जे सहज छला ओ असहज होइत असहाज हुअ लगला। शुभ काजमे बिलम उचित नै, रघुनी कक्काक मनमे उठलैन। परिवारक सभकेँ शान्त केलैन। पोताकेँ पुछलखिन-

“बौआ, केतए चोट लगल छह?”

दहिना पाँखुर देखबैत दुलारचन बाजल-

“ऐठीम!”

हाथसँ टोबि कऽ काका अजमबए लगला जे केतौ टुटल तँ ने छै, पाँखुरपर हाथ पड़िते दुलारचन लोहैछ उठल। जेना आगिक ताउमे होइए...।

पुछलखिन-

“कथीसँ मारने छेलखुन?”

“ठुस्सासँ!”

“कए ठुस्सा?”

“आठ ठुस्सा तँ गनलिऐ मुदा तेकर बाद नै बुझलिऐ।”

“एक्केठाम मारने छेलौ?”

“हँ!”

रघुनी कक्काक मन असहाज भऽ गेलैन। जिनगी-ले लोक पढ़ैए, जँ जिनगीए नै तखन पढ़बे की? असहाज होइते मनमे उठलैन, ओ हमर ऐगला सीढ़ी तोड़ए चाहैए! एक जगहपर, दस बर्खक बच्चाक पाँखुरपर ठुस्सासँ मारल जेतै तँ की ओइ बच्चाक पीठक हड्डी कामयावी रहतै? जँ शरीरक पाँखुर अवाह भऽ जेतै, तखन की ओ

मनुख काजक रहत..?

मन अगियेलैन! अगियाइते धधरेलैन! धधरेलैन ई जे जुआक पाशा होइ छै जे केतौ चारिअना-आठअनाक होइ छै तँ केतौ घर-परिवारसँ लऽ कऽ पत्नी धरिक होइ छइ। केतौ खूनक जगह खून होइ छै, तँ केतौ हत्याक जगह हत्या...।

पोताक बामा डेन पकैड़ उठबैत रघुनी काका कहलखिन-

“इस्कूलपर चल तोरा संगे चलै छियौ, तूँ देखा दिहें जे कोन मास्टर छी।”

दुलारचनक डेन पकड़ने काका आँगनसँ निकलला। घरक धिया-पुतासँ लऽ कऽ स्त्रीगण धरि संग लगि गेलैन। मुदा स्त्रीगण सभकेँ जाइसँ मनाही करैत मरदा-मरदी सभकेँ सोर पाड़ि कहि अपने आँगनसँ निकलला।

रघुनी काकाकेँ जेहने परिवारक लोक बुझै छैन तेहने समाजोक। माने टोलसँ लऽ कऽ गाम धरि। तेकर कारण छैन जे जहिना गामकेँ तहिना घरोकेँ बुझै छथिन जे ने उधोसँ लेन छेलैन आ ने माधोकेँ देन छेलैन। परिवारमे रहै छी, परिवारक सभकेँ अपन अनुकूल काज जहिना छै तहिना अपनो अछि। अपन उत्तरदायित्वक निरवहने करब ने अपन भार भेल। मुदा काजेक झीक-तीरमे ने परिवारो आ समाजोमे ओझरी लगै छइ। अपन इमानदारीक जेहने परीक्षार्थी रघुनी काका तेहने परीक्षक बनि सेहो अपनाकेँ जँचैथ-परखैथ। स्पष्ट परीक्षण छेलैन जे जेते अपन-देही खर्च अछि तेकर सवैया कमसँ-कम उपारजन करब अछि। बेसीक ठेकाने कोन, जहिना करैक नै ठेकान, तहिना खगतो बेठेकान...। अपना लगसँ लऽ कऽ मनुखक अन्तिम छोर धरिक खगता तँ अछिए। एक दिस आँगनसँ रघुनियोँ काका पोताक बाँहि पकड़ने स्कूल विदा भेला, आ दोसर दिस घरक धियो-

पुता आ चेतनो स्त्रीगण समांग सभकेँ बजबए खेत दौगल। चारू दिस दौगल जाइत देख टोलो-पड़ोसक आ आनो-टोलक लोक देखलक। देखते पुछि-पुछि सुनबो केलक। जइसँ दुलारचनकेँ देखैले समाजोक लोक रघुनी कक्काक घर दिस उमड़ल। समदिया सभ चारू दिस दौगल, मुदा आँगनसँ निकैल दुलारचनकेँ नेने रघुनी काका सड़कपर चढ़लो ने छला आकि दुलारचनक माए माने रघुनी कक्काक जेठकी पुतोहु ललैक कऽ कहलकैन-

“हम जानक बदला मसटरबाके जान लेबइ!”

पुतोहुक बात सुनि रघुनी कक्काक मन धकधकेलैन। मुँह बन्न केने रहला। बन्नो केना ने करितैथ, जेकर कोखिक सन्तानकेँ कियो नष्ट कऽ देत तँ की ओ कोखिया चुप-चाप मुँह देखैत रहत...।

फेर मनमे उठलैन परिवारक सभ गारजन जकाँ बुझैए, जे सोभाविको छइ। पत्नी आ सन्तानक संग-संग पुतोहुओ ने परिवार छी। मुदा प्रश्न की अछि? पोताकेँ जान मारैक अपराध। मनमे रघुनी काकाकेँ नचिते रहैन आकि लंगोटिया संगी विसुन काका धड़फड़ाएल लगमे आबि पुछलकैन-

“मीत, अखने उड़न्ती सुनलौं जे इस्कूलक मसटरबा बच्चाकेँ जानसँ मारए चाहै छल?”

संगी पाबि रघुनी कक्काक मन सहमलैन। बजला-

“मीत, बहुत चोट बच्चाकेँ लगल अछि!”

रघुनी कक्काक बात सुनि विसुन काका विचार देलखिन-

“मीत, ने इस्कूल पड़ाएल जाइए आ ने मास्टर, तहूमे नोकरिहारा छी जाएत केतए। से नै तँ पहिने डाक्टर ऐठाम चलू।”

विसुन कक्काक विचार रघुनी काकाकेँ जँचलैन। स्कूलक बाट

छोड़ि डाक्टर ऐठाम चलबाक विचार करैत बजला-

“मीत, ओना डेढ़-दू किलो मीटर बहुत नै भेल, मुदा नीक हएत जे अपना दुनू गोरे पएरे-पएरे आ दुलारचनकेँ साइकिलपर चढ़ा डाक्टर ऐठाम चली।”

सहमत दैत विसुन काका बजला-

“बड़ नीक। अखन झँपाएल चोट छइ। जाँचक पछाइत ने बुझबै जे की छै, तँए नीक हएत जे ओकरा अरामसँ लऽ चली।”

दुलारचनकेँ रस्तेपर छोड़ि रघुनी काका साइकिल आनए आँगन दिस बढ़ला। जेठकी पुतोहु डेढ़ीएपर ठाढ़ अष्टमी-भगवती जकाँ लहलहाइत। मुदा रघुनी काका भरमे-सरमे आगू बढ़ि गेला। साइकिल नेने चुपचाप सड़कपर एला। साइकिल देखबैत काका दुलारचनकेँ पुछलखिन-

“बौआ, अपने बुते साइकिल चलौल हेतह?”

अखन धरि जे मौलाहैट दुलारचनक मनमे छल ओ एकाएक छँटि गेल। मौलाहैट ई छेलै जे जखन रघुनी बाबा डेन पकड़ने असगरे स्कूलपर जाइले विदा भेलखिन, तखन दुलारचनक मनमे उठि गेल छेलै जे बारह-चौदहटा जवान शिक्षकक बीच बाबाकेँ बँचौल हेतैन? जँ कहीं फेर मारए! होइतो अहिना छै जे मारि खेलहाकेँ जहिना मारिक डर घर करै छै तहिना मारनिहारकेँ मारैक घर करै छइ। मुदा जखन स्कूलक बाट छोड़ि डाक्टर ऐठामक विचार सुनलक तँ मनमे मारिक डर छँटि नीकक भान भेलइ। तँए दुलारचनक मनमे उत्साह जगि चुकल छेलइ। बाजल-

“हँ, ताबे आगू बढ़ि डाक्टर साहैब ऐठाम जाइ छी। अहाँ दुनू गोरे पाछूसँ आउ।”

दुलारचनक बात सुनि रघुनी काका किछु ने बजला मुदा विसुन कक्काक मनमे शंका उठिये गेल रहैन जे जँ कहीं हुरथुराएलमे विदा हएत आ रस्तामे चोटक निजाएबसँ खसि-तसि पड़त तखन तँ...। मुदा संगमे रहने से तँ नै हेतइ। दोसर दिस रघुनी कक्काक मनमे उठैत रहैन जे चोट-चोटो लगने निजाइए। देह-हाथ डोलतै, तइसँ शरीरो सर्ड़ास हेतइ। मुदा एक-दोसर मुँह-तक्का-तक्की करिते रहैथ आकि बिच्चेमे दुलारचन साइकिलपर चढ़ि विदा भेल। चढ़ल जाइत देख, रघुनी काका टोकलखिन-

“रौ दुलारचन, ऐगला जे खुट्टा अछि तैठीमसँ पहिने घूमल आ ते।”

दुलारचन आगू बढ़ि गेल। शंका करैत विसुन काका बजला-

“मीत, घटनाक पाछू जरूर किछु भीतरिया बात अछि। मुदा अनठेकान किछु दोखो केकरो ऊपर लगाएब उचित नै हएत। तखन तँ पहिने ई भाँज लगाउ जे कोन मास्टर मारलकै?”

ताबे दुलारचन दू-तीन लग्गी बढ़ि गेल छल। पाछूसँ रघुनी काका शोर पाड़ि कहलखिन-

“बौआ, कनी साइकिल रोकह।”

दुलारचन साइकिल रोकि ठाढ़ भेल। लगमे जाइते विसुन काका पुछलखिन-

“बौआ, तूँ ते सभ मास्टरकेँ चिन्हते छहुन, के मारने छेलखुन?”

दुलारचन-

“विलासबाबू।”

नाओं सुनि विसुन काका बजला-

“अच्छा, तूँ बढ़ि जा हम दुनू गोरे गप-सप्प करैत पाछू-पाछू अबै

छी।”

दुलारचन आगू बढ़ल, जेना किछु विसुन काकाकेँ मनमे उचड़लैन तहिना चौंक गेला। विलासबाबू? ...वएह जे वीमा-एजेंसी करैए। मने-मन जेना सर्द पैसए लगलैन। रघुनी काका दिस नजैर उठा विसुन काका बजला-

“मीत, कहियो किछु विलास बाबूक सम्बन्धमे बजलो छी?”

विसुन कक्काक बात सुनि रघुनियोँ कक्काक मनमे ठहकलैन। बजला-

“हँ, एके गोरेक किए सबहक चालि-ढालि देख बजबो करै छी आ आगूओ बजैत रहब। तइले जे केकरो अभाँत लगतै तँ लागह। अधला वृत्ति नै करह किए कियो किछु कहतै।”

दू गामक बीच पाँतरमे एकटा आमक गाछ, समैयो रौदियाएल जाइत रहइ। दुलारचन सेहो आगू बढ़ि ओही गाछक छाहैरमे ठाढ़ भेल। दुनू गोरे गाछ लग पहुँचते विसुन काका दुलारचनकेँ पुछलखिन-

“बौआ, मन हल्लुक बुझि पड़ै छह कि भारी।”

साइकिलक चाल पेब दुलारचनक देहक दर्द देहेमे निजाएल। मन हल्लुक जकाँ भाइये गेल रहइ। बाजल-

“बाबा, छुटि गेल। नीक मन लगैए।”

काजक अराम देख विसुन काका बजला-

“मीत, कनीकाल छाहैरमे छहरा लिअ। रौद तीख भऽ गेल। काजोक धड़फड़ी आब ओते नहियेँ रहल जेते छल, मुदा डाक्टरसँ जाँच कराएब जरूरी अछिए।”

अपन छुटैत जिनगीपर[16]सँ रघुनी कक्काक मन सहटलैन। मुदा मीतक मीठ बोल- ‘काजक धड़फड़ी’ सुनि मन मधुआइत रहैन। मधुआइत ई रहैन जे अपन परिवारक प्रति दायित्वकेँ जीबैत-चलैत देखलैन। यएह जिनगीक धार छी। जिनगीक धारमे सदैतकाल प्रवाहित होइत अनवरत गतिये चलैत रही.., चलैत रही...।

मुदा आगूमे लंगोटिया संगीक बीच रहने मुँहकेँ चुपो राखब केहेन हएत। जिनगीक कोन ठेकान छइ। सभ जनिते छी जे जहिना जन्म दुनियाँमे प्रवेश करबैए, आ ओ ता-धरिक छी जा-धरि आँखि तकै छी, तहिना मृत्यु दुनियाँकेँ उसारितो अछि। तैबीच जँ मनक बात मनेमे रहि जाए सेहो नीक नहि। नीक ऐ दुआरे नै जे वएह भविसमे बौआएत..!

जेना किछु मुहसँ निकलै-ले रघुनी काकाकेँ कण्ठमे गुदगुदाइत जीहक लबलबी लग पहुँच गेलैन। तहिना विजकैत ठोर खुजिते हरहरा कऽ निकललैन-

“मीत, आब तँ अपना सभ ओइ अवस्थामे पहुँच गेल छी जइ सीढ़ीपर सहियो गलत आ नीको अधला हएत।”

रघुनी कक्काक दृश्यकूट शब्दक माने विसुन काकाकेँ नीक जकाँ नै लगलैन। अपना दिस देखैथ तँ बुझि पड़ैन जे एहेन भाषाक प्रयोग तँ दुनू गोरेक बीच कहियो ने भेल, आइ किए एहेन शब्दक प्रयोग केलैन? फेर लगले मनमे भेलैन जे नव घर बनैले नव समचाक जरूरत होइ छइ। जेना घर भेल। घर तँ घरे भेल। माने ओइमे रहब। मुदा फूसक घर जकाँ बाँस खढ़क समचा जेना- डोरी, बत्ती, करची, खरही, झाझन, खुट्टा, खाम्ही इत्यादि- थोड़े पजेबा घरमे रहत। ओ तँ बदैल पजेबा, गिट्टी, बाउल, सीमटी इत्यादिक रूपमे एबे करत, तँए भऽ

[16] काजक सूत्रसँ हटैत स्थिति...

सकैए जे नव काजक दौड़मे मीतक मनमे किछु एहनो भऽ गेल होइन। मुदा अवस्थाक चर्चक संग नीक-अधलाक चर्च तँ मीत काइए देने छैथ...।

दोहरा कऽ बात नै उठबैत विसुन काका सुसकारी भरलैन-

“मीत, तहूमे कि कोनो कहैबला अछि।”

मीतक सुसकारी पेबते रघुनी काका बजला-

“मीत, कोनो पर-पनचैतीमे छौड़ा-मारड़िक जेरमे पनचैती विगैड़ जाइए आ तइसँ विचार करैबला काजे विगैड़ जाइए, सेहो नीक नै बुझि पड़ैए।”

रघुनी काकाकेँ दोहरी सुसकारी भरैत विसुन काका कहलखिन-

“से जे नै पड़त तखन ते समाजक रस्ते टुटि जाएत। केकरा मनमे नै छै जे नीक करैत, हँसैत हंसक जिनगी बनि छीर-सागरमे समाहित नै हुअए। मुदा से होइ किए ने छइ?”

विसुन कक्काक सुसकारी सुरकैत रघुनी काका बजला-

“मीत, अखन जे घटना-समस्या उपस्थित भऽ गेल अछि तइमे हमरा की करक चाही? ओना अहाँ जँ नै भेँट भेल रहितौं आ डाक्टर ऐठामक विचार नै केने रहितौं तँ बच्चाकेँ की इलाज करैबतौं, इलाज होइत ओइ मसटरबाकेँ...।”

बिच्चेमे विसुन काका टोकि देलकैन-

“बारह-चौदह गोरे ओ सभ अछि तैबीच अहाँ असगरे केना असल जवाब दऽ सैकतिऐ?”

विसुन कक्काक बात सुनिते, जहिना पाछूसँ अबैत धारा आगू बन्हाइते, दोसर दिस मुँह करैत बोहैए, तहिना रघुनी कक्काक बोल बहलैन-

“भाय, आब की केतौ कोनो संस्था रहल, आब ओ धंधावाजक अड्डा बनि गेल अछि!”

दछिनसँ एकटा शिक्षक, जे गामेक विद्यालयमे कार्यरत छैथ, मातृकसँ ममियौत भाइक बिआहक बरियाती पुइर अबैत रहैथ। रामरतन रघुनी कक्काक दियादी परिवारक भातीजो, कनी हटलेसँ रामरतन रघुनी कक्काक मुहसँ ‘धंधावाज’ सुनि नेने छला। मनमे जिज्ञासा जगिये गेल रहैन। तैबीच दुलारचन परिवारेक नै, स्कूलक विद्यार्थी सेहो छी, तेकरोपर नजैर पड़ि गेल छेलैन। ओना रामरतनक मनमे उठि चुकल छल जे स्कूलक बच्चा छी तीन दिनसँ नै छेलौं, तँए पहिने स्कूलेक समाचार पुछिऐ। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे जखन तीन दिनक सी.एल. गमेबे केलौं, तखन समाचारे बुझब कोन जरूरी अछि। पहिने जे आगूमे पड़ल अछि तेकरा देखब आकि मुइलहा पकड़ी जीतहा छोड़ी...। साइकिल रोकि रामरतन टोकलकैन-

“बड़े देखै छी एते रौदमे दुनू अपेछितकेँ घर छोड़ि घुड़मुड़िया खेलाइत?”

अपनाकेँ तिदिसिया होइत रघुनी काका विचारए लगला जे रामरतन शिक्षक सेहो छी, अंगीत सेहो छी, तही बीचक समस्या अछि। केना आगू भऽ कऽ बाजब। नवतुरिया अछि, दब-उनार ओते नै बुझैए। मुदा विसुन काकाकेँ गर भेट गेल रहैन। गर ई भेट गेल रहैन जे आब धंधावाजक भाँज लगि जाएत। बजला-

“बौआ, आब कि कोनो शिक्षण संस्था शिक्षण संस्था रहल, आब ओ तँ धंधावाजक अड्डा बनि गेल अछि।”

मामा गामक ममियौत भाइक बिआहक बरियाती-भोजक रसगुल्लाक गदगदी रामरतनकेँ रहबे करैन, मधुमाछीक छत्ता जकाँ मधुक रस चुबबए लगला-

"काका, दुनू गोरे श्रेष्ठजन छी। संगी-साथीमे झूठ बाजब समैक मांग अछि। मांग ई जे मुँह फोड़ि जँ कियो कहैथ- 'बोतल पिआउ', तैठाम की कएल जाए? मुदा से नहि। अपन जिनगीक अनुभवक बात कहै छी। ओना बोतलक माने बनौल पानि, दूध, फलक रस सेहो होइए, तँए ओम्हुरका बात छोड़ि, अनुभवक बात कहै छी, जेते मनुख तेते जिनगी, जे सदैत एक-दोसरकेँ जहिना जिज्ञासु बनबैए तहिना... ।"

बिच्चेमे विसुन काका बजला-

"बौआ, भने गप-सप्पमे बेरो-विपैत कटत। समांगो सभ ऐबते हेतैन। अपन की अनुभवक बात कहए चाहै छेलह से कहऽ?"

रामरतन-

"काका, गामक इस्कूलमे नोकरी भेटने तेते मन खुशी भेल जे की कहब। एकाएक किसान परिवारमे दुदिसिया आमदनी बढ़ल, बाढ़ि-रौदीक दाबल परिवारमे आशाक जिनगी फुदफुदाइत मुदा से नै भेल।"

अकचकाइत विसुन काका पुछलखिन-

"किए ने भेलह? केहेन बढ़ियाँ कहलह जे परिवारकेँ आशा भेल, आ लगले उनैट गेलह, नै भेल?"

विसुन कक्काक प्रश्न सुनि रामरतन ठमकल। रंग-बिरंगक बात विचार रूपमे पनपऽ लगल। मुदा सभठाम सभ बात बजलौ तँ नहियेँ जाइ छइ। तहूमे अखन काजक अनुशासनमे बान्हल छी। केना कोनो शिक्षक समाजक भीतरिया काज आन-समाजक बीच बाजत। मुदा तँए की ई बात झूठ अछि जे एक-एक शिक्षक, सरकारी हौउ आकि गैर-सरकारी वीमा-एजेंसी, चाहे आनो-आन एजेंसीसँ जुड़ल नै अछि। मुदा लगले रामरतनक मन भभैक उठलै। गामकेँ एहेन बाजार बना

बजारि रहल अछि जे कहियो जमीन छोड़ि उठि कऽ ठाढ़ नै हएत..!

पाशा बदलैत रामरतन बजला-

"केमहर-केमहर एते रौदमे दुनू भजारक सवारी चलल अछि, काका?"

ओना विसुन काकाकेँ दुलारचनक सम्बन्धमे नीक जकाँ नै बुझल रहैन मुदा टटका घटना रहने बजैले मन उबियाइते रहैन। उबियाइत ई रहैन जे, जहिना कोनो नव घटनाक समाचार जे जेते-जहिना सुनैए, से तेते दोसरकेँ सुनबए चाहैए। भलेँ कियो हाथीक सूँढ़क गप करए आकि नाङैरक, तहूमे दुनूक नमतियो तँ एकरंगाह होइते छै, भलेँ कनी मोट आकि पातरक अन्तर किए ने हौउ । जखन महिक्का अरबा चाउर ओहेन धपधपौआ उज्जर होइए, तइमे जखन मोटका पचिये जाइए, भलेँ अपनो खुद्दी किए ने फटकलासँ बेरा जाए, मुदा मोटका थोड़े बेराइए..?

तरे-तर विसुन कक्काक मन फुदफुदाइते रहैन, बजला-

"बौआ रामरतन, जेहने भातीज तूँ मीतक छहुन तेहने हमरो भेलह। आन नहियेँ भेलह। तहूमे समाजक बेटा तोंहू छेबे करह। समाजक प्रति केहेन बेवहार मनुखक हेबा चाही ई तोरा हम कहियऽ से उचित हएत।"

विसुन कक्काक 'उचित' सुनि रामरतनक मुहसँ निकललैन-

"काका, समाज-समाज छी, ऐमे ने कियो केकरो भातीज छी आ ने पीत्ती। समाज चलैक प्रश्न अछि। केना लोकक पेटक पानि धारा बनि बोहैत रहतै, एकर निमरजने ने सबहक करतबे नै धर्म-कर्म सेहो छी।"

रामरतनक विचार विसुन काकाकेँ नीक लगलैन। मन उमैड़

गेलैन। बजला-

"बौआ, ऐठाम ओना चारि गोरे छी, मुदा दुलारचन बच्चो अछि आ मारियो खेलहा अछि, तँए ओकरा घटनाक सत्यापन-ले रहए दहक। अपना तीनू गोरे विचार करह जे आगूक लेल की नीक हएत।"

ओना विसुन कक्काक इशारा रामरतनपर रहैन, मुदा रघुनी काका बिच्चेमे बात पकैड़ बजला-

"मीत, एना नै ओझराएल लत्ती बेड़ौल जाइ छै, सबहक पहिने बीह भँजियाबऽ पड़त, तखन ओकर ऊपर-निच्चाँक मुड़ी सोझ कएल हएत।"

खग जानए खगक भाषा आ बजन्त्री जानए नचनियाँक भाषा। विसुन काका अपन बात सम्हारैत कहलखिन-

"बौआ, भने मीत नजैरपर दऽ देलैन, ओना हम एकरा अनठाबऽ चाहै छेलौं, मुदा... ।"

बिच्चेमे रामरतन टोकि देलकैन-

"अनठबै किए छेलिऐ?"

जेना जीहेपर विसुन काकाकेँ रहैन तहिना बजला-

"बौआ, पिआजुकेँ सोहै छी तँ केतौ ने गुद्दाक ढेरी भेटैए, सगतैर खोंइचेमे गुद्दा भेटैए, मुदा तँए ओकर गिनती गुदादारमे नै होइ, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। दुलारचनकेँ किए मारलक ताबे एकरा छोड़ह। ई विचारक सीमामे सेहो अबै छइ। मानि लेलौं जे बच्चा किछु गलती केलकै। मुदा ओकरा तँ हाथो पकैड़ आकि मुहोँसँ कहि सुधारल जा सकै छल, तैठाम एते मारिक कोन प्रयोजन छल?"

विसुन काकाकेँ मनमे जेते चोट लगल छेलैन, तइसँ दोबर चोट रामरतनकेँ लागल। दोहरी ई जे एकहरी तँ समाज-परिवारक भेल, मुदा

दोहरियो तँ भेबे ने कएल जे ओकर गुरुतुल्य सेहो छिऐहे। की ओकरा मारिये-पीटकऽ सिखौल आकि पढ़ौल जा सकैए। शिक्षकक (बाल शिक्षक) काज छिऐन बच्चाक नजैर पकैड़ ओइ दिशाक ज्योति दी जे दिशा पाबि ओ हलसैत-कलसैत रहए।

रामरतनक मन सहैम गेलइ। मन मानि गेलै जे गलती शिक्षकक भेल। मुदा एवजी-गलती के केकर मानए ईहो तँ विचारणीय अछिए। रामरतनक मन ठमकल। ठमकल ई जे जखन हम विद्यालयसँ छुट्टी परिवारक काज-ले नेने छी, तखन अपनाकेँ शिक्षक मानब उचित नै, एकटा मनुख छी। किए हम एहेन शिक्षकक गलती अपना ऊपर लेब। समाजेक अंग ने हमहूँ भेलिऐ। मुदा समाजो तँ समाज छी। रघुनी काकासँ केते चीज सीखनौं छी आ संगे-संगे भोज-काजमे एकसत्तैरमे बैस खाइतो छी। तहिना विसुन काका सेहो छैथ, तैबीच अपन विचारकेँ ओहन बना किए ने बाजब जे सभकेँ सोहनगर लगैन। बाजल-

"काका, जहाँ धरि घटना आबि चुकल अछि ओकरा उनटाएलो तँ नहियेँ जाएत, मुदा आगूक धारा तँ बदलल जा सकैए... ।"

सहमत जतबैत रघुनी काका बजला-

"ई बात बिल्कुल सत् जे नीक काज हौउ आकि अधला, ओ इतिहासक कड़ी बनैए, मुदा अखुनक परिवेशमे जँ एना भेल तँ की ओकरा लोक मुँह दाबि सहि लेत?"

रघुनी काका आ विसुन कक्काक बीच एहेन विचारक सम्बन्ध शुरूहेसँ रहलैन जे एक-दोसरपर अकाट्य जिनगीक सम्बन्धक रंग चढ़ल छैन... ।

रघुनी कक्काक विचारमे सहमत दैत विसुन काका बजला-

"लाख रूपैआक बात मीत बजलौं। जाबे लोक अपन रक्षा

करैक शक्ति अपने नै जगौत ताबे अहिना होइत रहलै हेन आ आगूओ होइत रहतै।”

दुनू गोरेक बीच रामरतन अपनाकेँ तर पड़ैत देख बाजल-

“काका, आब ऐ उमेरमे एते औगतेलासँ उमेर कलंकित हएत। जखन जुआन-जहान हम तैयारे छी तखन अनेरे अहाँ सभ मनकेँ छोट करै छी।”

रामरतनक बात जहिना रघुनी काका तहिना विसुन काकाकेँ सेहो नीक लगलैन। थर्मामीटर जकाँ चढ़ल पारा निच्चाँ उतरलैन। अपन बात फेकैत रघुनी काका विसुन काकाकेँ कहलखिन-

“मीत, अहाँ तेहल्ला भेलौं, अहाँ सभ जे विचार करब से मानि लेब।”

रघुनी कक्काक विचार सुनि रामरतनक मनमे आशाक बिसवास जगल। मुदा धड़फड़ा कऽ बीचमे केना बजैत। सुग्गा जकाँ विसुन कक्काक मेना-मुँह दिस देखए लगल।

रेखा गणितक त्रिभुज जकाँ एकटा कोणपर अपनाकेँ पेब विसुन काका बजला-

“बौआ रामरतन, जखन तूँ बीच सिमानपर ठाढ़ छह, तखन तोरे अगुआएब नीक हएत। बीचमे पड़ि समुचित निराकरण कराबह। जइसँ समाजमे कोनो तरहक ने विस-विसी आबए आ ने विस-विसाइन हुअए।”

रामरतन-

“अपना भरि परियास करब, मुदा..?”

OO

04 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या- 2865

समरथाइक भूत

आन गामसँ हमर गाम सात कच्छे नीक अछि से आन मानए आकि नै मुदा अपने तँ मानिते छी। अहीं कहू जे हमरा गामसँ बेसी कोन गाममे चटवाह[17] अछि? भज्जू काकाकेँ देखियौन जे एते दिन अपनेटा सासुरक सीखिसँ ओझहा छला आ आब केहेन खनदानी भऽ गेलैन जे बेटो ओझहा बनलैन आ आब पोतो झाड़-फूक करब शुरू केलकैन अछि। ओना अखन सड़ाना परहक नै भेलैन अछि मुदा दोग-सान्हिमे लोक ओझहा तँ कहबे करै छैन।

हँ तँ कहै छेलौं- गामक गप। रंग-रंगक ओझहा-गुनीसँ भरल गाम हमर अछि तैठाम जे कियो जिद्दे करता तँ पुछबे ने करबैन जे अहाँ गाममे भूत बेसी अछि कि ओझहा? जँ भूतसँ कम ओझहा रहत तखन तँ छजतै, मुदा जखन भूतसँ बेसी ओझहे भऽ जाएत तखन केना छजत! कटौझ हएत की नै? से कटौझ कहाँ कोनो गाममे अछि? तइमे तँ हमरे गाम ने बीस भेल...। ऐबेर जे गाम सबहक नाओं उनटा-फेरी भेल तइमे ओझपुरिया गाम सेहो बना लेलौं। आब सरकारी रेकटमे चलि गेल। जखने रेकटमे गेल तखने ने मालो-माल भेलौं। चलू भाय जे भेल से भेल। सभ अपन-अपन गामक मालिक भेलौं।

[17] साँपक बीख झाड़ैबला

जेहेन जे मन बनाएब तेहेन तेकर मैलकियत रहत आ मैलकान चलत। जे जेते भोरमे जागब तेकर तेते नमहर दिन हएत आ जे जेते वसन्ती हवामे अलिसाएल पड़ल रहब, से तेते बैशाखा पान जकाँ अलिसाएल कहिऔ कि मौलाएल आकि अधसूखू, भेल कातमे पड़ल रहब! आन जकाँ तँ ने बेसी हमरा मनतर अबैए आ ने चाटीए चलैए आ ने तुलसी फूलक मुड़ी लऽ कऽ आकि कुश लऽ कऽ आकि करूतेल आकि गंगाजल लऽ कऽ झाड़ऽ अबैए। खाली वतरसिया हूक झाड़ए अबैए। मुदा अपना मंत्रपर सोलहन्नी बिसवास तँ ऐछे, बस किछु ने मूसक माटिमे मंत्र मिला फेकयौ, डाँड़पर दुनू हाथसँ पकड़ल चीरल-कड़चीक दुनू भाग अपने सटए लगत। ओइमे झूकि कऽ हूकवाहकेँ डाँड़ रगैड़ तरे-तर टपए कहिऔ, जँ टपि गेल तँ छुटि गेलै, नै टपि भेलै तँ डँड़-टुट्टा बुझियौ। छुटै वा नै छुटै से ओ जानए, मुदा तत्खनात ओकरासँ कहाइए लइ छिऐ जे अपना मुहेँ बाजह- छुटि गेल। ओहन ओझवाहि करैबला ओझहा हमहूँ छी। मुदा तँए कि गाम हमर नै छी, हे नै जेबइ झाड़-फूक करए, मुदा जिगेसो करए नै जेबै? से तँ जाइते छी आ जा-जीब जेबे करब। से जँ जाइते छी, तखन ओझहा-लिस्टमे हमर नाओं दर्ज किए ने हएत। द्वारिका-छाप भेटने तँ मुखाग्निसँ छूट भेटै छै, आ गाम-छापकेँ किए नै भेटत? मुदा से अनेरे कहलौं। एते दिन हूकेटा झाड़ैक मंत्र अबै छल, आब जोड़ीक सेहो अबैए...।

पैछला दसमीमे चनौरा स्थानमे सीखलौं। अहाँ सभसँ लाथ कोन, चलती एने चाहो-पान बेसी भेटए लगल अछि। जखन गामक लोक ओझहा मानियेँ नेने अछि, तखन आन गामबला किए ने मानता। आन गामवालीक मुहेँ सुनि जँ नै मानता तँ अपना गामवालीकेँ झूठा बनौता! ऐमे हमरा की। नहियेँ जानता तँ नै जानौथ। अपन अपना गाम-घरक चीनमारपर तसली-बटुकेँ ओहो हड़बड़बौथ, हमहूँ हड़बड़ाएब। तइले हुनकर मन किए कठाइन हेतैन आकि हमरे

हएत। आब कि ओ कहबी रहबे कएल जे ‘घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे..?’

आब तँ घरोवाली डेरावाली बनि छुच्छे वौआइ छैथ।

गाम तँ गामे छी। किए लोक बुझत जे फल्लाँ जोड़ीए आ हूकेक मंत्रटा जनैए। जहिना एकटा मूसक माटि आ दोसर पञ्चमीक माटिसँ झाड़ल जाइए, हमहूँ तहिना झाड़ै छी। साँपक मंत्र तँ हमर एहेन पक्का अछि जे नब्बे प्रतिशत गारंटी दइ छिऐ, दस प्रतिशत राजा-दैवक हाथक छी। हरहाड़ाक बीख रहौ आकि ढोढ़क, गारंटी दइ छिऐ। दुनियाँक कोन आदमी अछि आकि करखन्ने अछि जे शत-प्रतिशतक गारंटी देत। जँ भगवाने दऽ सकितैथ तँ नेङ्गरा-लूल्हा केतएसँ आएल?

आब तँ तोहूमे तेहेन-तेहेन घटिया कम्पनी सभ भऽ गेल अछि जे पीओ-फेको आ लिखो-फेको माल बनबए लगल अछि। तइसँ तँ सात कच्छे नीक छीहे ने। एकबेर जेकरा झाड़ै छिऐ तेकरा कहाँ कहै छिऐ जे तीन बर्खक पछाइत फेर बीख जगतह। जिनगी भरिक गारंटी दइ छिऐ। भलेँ फेर हौउ।

दिने-देखार मैनजनक अँगनामे भूत लगि गेल। दरबज्जापर बैसल-बैसल टोल-पड़ोसक लोक सभकेँ जाइत देखिऐ। एक मन हुअए जे रस्ते-रस्ते टहैल कऽ अपनो देखिऐ जे की बात छिऐ मुदा फेर धकमका जाइ। धकमका ऐ दुआरे जाइ जे गामेक एक गोरेक घरमे आगि लगलै अपना चुल्हिसँ, आ अरारि चुकबै दुआरे चारि गोरेपर केस कऽ जहल कटा देलक। तेहेन गाममे डेग उठबैसँ पहिने विचारणीय तँ अछिए। मुदा गामक बातक दाब ओते मनमे नै पड़ल, जेते पड़ल छल मैनजनक किरदानीक। आगि लगौ, बज्जर खसौ ओहन लोक आ ओहन परिवारमे जे कुकुर्मी-विधर्मी अछि, तैठामक घटना छी। सात-आठ बर्खक एक बच्चिया बगलेक खेतमे बकरी चरबैत रहए, लोक

सभकेँ जाइत देखलक तँ दौग कऽ ओहो गेल, सुनलक जे मैनजनक पुतोहुकेँ भूत लगल छै, आँखिसँ किछु ने देखलक, एतबे देखलक जे चारू-कातसँ स्त्रीगण सभ बका रहल छइ। मुदा तही बीच ओइ बच्चियाकेँ सोह खिंचलकै जे बकरी केकरो वाड़ीमे किछु खा ने लइ। तँए घुमि कऽ आबि गेल। अपन आ मैनजनक घरो बेसी हटल नहियेँ अछि, बीघा डेढ़ेक हटान छइ।

पुछलिऐ-

“बुच्ची, केतए गेल छेलौं?”

बाजल-

“मैनजन बाबाक पुतोहुकेँ भूत लगल अछि।”

मनमे भेल जे आरो किछु पुछिऐ मुदा अपने मन रोकलक जे ऐ बच्चासँ बेसी पुछबो उचित नहि। तहूमे लगले गेल आ आएल। जैठाम देखनिहारक भीड़ छल, तैठाम जँ एक नजैर ओ बच्चिया देखिये लेलक, सएह बहुत भेल। आगू किछु ने बजलौं। मुदा अपने मनक विचारमे ओझरा गेलौं। ओझरा ई गेलौं जे एकटा मन कहए जे की बात छिऐ से कनी नीक जकाँ बुझिऐ, मुदा दोसर कहए जे एहेन-एहेन पतीतक चरचो करब समैकेँ गोबराएब भेल। मुदा ईहो भेल जे गाममे हजारो रंगक लोक अछि, हजारो रंगक चालि छै, तइसँ हमरा की? मुदा समाज हमरो छी आ हमहूँ छिऐ तइ हैसियतसँ तँ किछु-ने-किछु जवाबदेही बनियेँ जाइए, तँए...।

एक गरे देखी तँ बुझि पड़ए जे अपना चसमसँ जा कऽ देखिऐ, मुदा लगले तमसेलहा मन आगूमे आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाए, जे आगि लगौ आकि बज्जर खसौ, रीतिकेँ कुरीति बनौनिहारक पीठपोहू नै होइ, तँए देखब कोन जरूरी अछि। मन घिच-पिच करए लगल। दोसरो आफत आगूमे ठाढ़ भऽ गेल! अपनो काज दिस नजैर ढुकबे ने करए..!

मन उड़िया-बिड़िया ओही समरथकी भूतपर चलि जाए! गहवरिया भगता जहिना देवी-देवता बनि स्वर्ग-नर्कक पासपोर्ट बना बँटैए तहिना भूतो ने जुअनकी-जुअनका देहपर चढ़ि कुदबो करैए। किछु फुड़बे ने करए जे की करब की नै करब। मुदा संयोग नीक रहल। लालमणिकेँ ओम्हरेसँ घुरल अबैत देखलिऐ।

चौबगली छिड़िआएल मनकेँ समेट एकबट केलौं। दरबज्जाक आगू जखन रस्तापर लालमणि टपैत रहए आकि सोर पाड़ि बजलौं-

“नेताजी, कनी छहरा लिअ। केमहर-केमहरसँ सवारी एलैए?”

लग ऐबते देखलिऐ लालमणिक चेहरा उदास! बिनु किछु बजने लालमणि चौकीपर आबि बैसल। गुम-सुम। आगू किछु पूछब उचित नै बुझि पड़ल। किएक तँ ‘केमहरसँ अबै’क चर्च तँ काइए चुकल छी। जवाब तँ वएह ने देती...।

फेर मनमे भेल जे भऽ सकैए किछु गंभीर बात होइ, जेकरा मने-मन मथैत हुअए। तँए अपनो प्रतीक्षित बनि उनटनक प्रतीक्षा करए लगलौं।

लालमणि गामक बेटी। बच्चेसँ चंसगरो आ चंगलो। मुदा हवा-विहाड़िमे उधिया गेल। मैट्रिक पास नै कऽ सकल, मुदा बजै-भुकैक लूरि भऽ गेलइ। एकबेर जिला-परिषदक चुनावमे पार्षदो बनल। बिआह ताबे धरि पछुआएल रहइ। ओना शुरूहेसँ गाम-समाज देखैक अपन नजैर बनि गेल रहइ। जइसँ जिज्ञासा बच्चेसँ जगि चुकल छेलइ। जेकरा जगत देखैक जिज्ञासा रहत सएह ने दोसरसँ पुछि गुरुद्वार बनौत। आकि जेकरा जिज्ञसे नै रहत ओ तँ अपने ने द्वार-गुरु भेल। सभ किछु ओकरा बुझले रहै छै, खगते की छै जे दुनियाँ दिस देखत। खाली एकटा मोबाइल रहक चाही। चौबीस घन्टा हँसैत-खेलैत तेना कटि जाएत जे दुनियाँ समटा कऽ चारि ओंगरीमे बसि

जाइए।

ओना जिला-परिषदक चुनाव जीतने, एते तँ लालमणिकेँ भाइये गेल जे इन्दिरा अवासक घर भेने, रहैक गर स्थायी भऽ गेलइ। ओना माए-बाप बहुत दबल नै रहथिन मुदा बिआहक पछाइत बेटी परधन भऽ जाइ छै तँए मोह-माया छुटिते छइ।

सरकारीए दस कट्ठा परती कब्जा कऽ अपन घरो अलग बनौने अछि। दोहरा कऽ जिला-परिषदक चुनाव लड़ैसँ पहिनहि हारि गेल छलि। जे कोटा आरक्षित छेलै ओ आब सहरगंजा भऽ गेल। अकास उड़ैत चिड़ैकेँ जँ अकास-भोज्य नै भेटै तँ ओ केते दिन रौद-वसातमे जिनगी काइम रखि सकैए। लालमणि भटकल। एकटा विधायक संगे बिआह कऽ लेलक। बिआह तँ कऽ लेलक, मुदा साले भरिक पछाइत दुनूक बीच खट-पट शुरू भेलइ। खटपटक कारण विचार-काजक अन्तर छल। ‘बाजल किछु, केलक किछु।’ एहेनसँ लालमणिकेँ रीश उठइ। वएह रीश रिसाइत-रिसाइत लालमणिकेँ पतिसँ अलग केलक।

समाजक नजैरमे लालमणि अजाति आ जिनगीक नजैरमे छिड़ियाएल देख अपन आत्म-चेत चेतल। चेतल ई जे ओही दसो कट्ठाक परतीकेँ तोड़ि कट्ठा भरिक बास आ नअ कट्ठाक चास बना एकाकी जिनगी जीब रहल अछि।

शुरूहेसँ लालमणिक संग हमरा गप-सप्प चलैत आबि रहल अछि। सभ रंगक गप, समाजक गप, अपन गप। ओना लालमणिक किछु काजपर तमसाएलो रहै छी, मुदा सबटा तामस तखन मिझा जाइए जखन आँखिक सोझ लालमणिकेँ एकाकी जिनगी जीबैत देखै छी। की दुनियाँ अन्हार छै आकि लालमणि अपने अछि?

किछु समए बीतला पछाइत लालमणि अपन मुँह खोललक-

“भैया, भाए-बहिन जकाँ सभ दिन एकठाम रहलौं तँए कहै छी।

जिनगीक अनेको किरिया-कलाप छै..?”

लालमणिक बजैक टोन सुनि मन टोनिया गेल। कुशियारक टोनी जकाँ पोरे-पोर आँखि झक-झक करए लगल। बजलौं-

“गाम-समाजमे कोनो गप केकरोसँ छिपेबा नै चाही। जेते विचार फरिछाएल चलत तेते गामक सीमा मजगूत बनैत चलत।”

हमर बात जेना लालमणिकेँ रूचलै, बजैसँ पहिने मुस्कियाएल। मुस्की देख बुझि पड़ल जे सौनक मेघ उमड़ल। आब किछु बरखा हेबे करत...।

बर्खाक आगम देख लोक जहिना अपन घर-अँगनाक काज सम्हारि लइए तहिना अपनो सम्हारलौं। लालमणि बाजल-

“भाय साहैब, मैनजनक अँगनाक भूत की छी से आन जे बुझौ मुदा हम बुझै छी जे अखन धरि सोतिये-डाह टा होइ छेलै ऐठाम तँ ससुआ-डाह भऽ गेल अछि।”

लालमणि एक संग अनेको बात चालि देलक। कोन बातकेँ केते मानी आ केते नै मानी? मुदा एहनो तँ भाइये सकैए जे लालमणि अपना विचारे बाजल अछि। गामे छी, रोटी जकाँ केतौ मुँह थोड़े छइ। मुदा जखने जेतइ तोड़ब तखने तेतइ मुहोँ बनि जाइए। के की बाजत, केकर बात केते तर पड़तै की ऊपर हेतइ, ई के बुझत? मुदा लगले मनमे भेल जे जँ लालमणि किछु अपन विचार रखलक तँ की हेतइ, अपनो तँ बुधिये-अकीलबला छी किने, किए ने ओकरा मनमे घोंटि दूध-पानि बेरा बुझब।

ऐगला बात बुझैक खियालसँ बजलौं-

“लालमणि! एक दिस भूत कहै छहक, दोसर दिस ससुआ-डाह?”

हमर बात सुनिते लालमणि चौंकल। चौंकल ई जे जे बात भाय-साहैबकेँ कहए चाहलयैन से भरिसक नीक जकाँ नै बुझलैन। मुदा बुझबो तँ सहज नै अछि। पुरुख-नारी बीचक जिनगीक समस्या छी। ऐ समस्याक समाधान ताधैर नै हएत जाधैर समकस-समाधान नै हएत। मुदा तइले बोल-बम नै श्रम-बम बनैक खगता अछि। खलिया गोलीसँ शिकार करब नेनमैत भेल।

समकस समाधान-ले ओइ सीमापर लिंग निरमबए पड़त जेतएसँ शिवलिंगक निरमान हएत। मुदा इतिहासक पन्ना विपरीत रहल। ओना कहैले तँ कहलो जाइए जे युग सदैतकाल बदलैत रहल अछि कहियो पुरुख प्रधान इतिहास रहल तँ कहियो नारी-प्रधान। मुदा नारी-प्रधान आकि पुरुख प्रधान भेल केना?

जँ एक कोखिक पुरुख-नारी छी, दुनूकेँ अपन-अपन जिनगीक क्रियाक दायित्व अछि तखन ओकरा जिनगीक दायित्व बना चलब ने दुनूक बीचक जिनगी भेल। तइले फल्लाँ-प्रधान आकि चिल्लाँ-प्रधानक की प्रयोजन? सबहक सोझहामे अपन-अपन गाम अछि, पुरुख-प्रधान परिवारक की गति छै आ नारी-प्रधान परिवारक[18] की गति छै? सेहो कोनो एके सीमामे नै जिनगीक असीम अनन्त किरिया-कलाप सभमे। जेकरा तीन डिसमिल जमीन बासभूमि नै छै ओकर मातृभूमि की भेल? केकरा कहबै?

मुदा खोलि कऽ बजैक[19] साहस लालमणिकेँ नै होइ। ओना मनक संतापसँ बुझि पड़ैत रहए जे लालमणि भीतरे-भीतर जरि रहल अछि, मुदा धकमकी तँ रहबे करइ। धकमकीक कारण रहै जे जहिना रंग-रंगक नशाखोर अछि, रंग-रंगक नशासँ प्रेम छइ। केकरो भाँग प्रिय

[18] पुरुख विहीन, वैधव्य परिवारक
[19] स्पष्ट बजैक

छै तँ केकरो ताड़ी, केकरो अफीम प्रिय छै तँ केकरो दारू। मुदा ऐमे कियो प्रेमी नै भेल, से केना कहल जेतइ। ओना भाँग पीनिहार ताड़ीबाजकेँ कहै छै जे सड़कपर अर्ट-दर्ट बजबो करैए आ अपनो वेनग्र होइए...। मुदा ताड़ीबला की मुँह बन्न राखत? ओहो ने भांग खाइबलाकेँ कहत जे वाड़ी-झाड़ीक भाँगक पात आ फूल पीनिहार, मुफ्तक माल चटैबलाक बातक मोजरे केते..? अस्सी रूपैआक कमाइमे साठि रूपैआ, अदहोसँ बेसी भरि दिनमे प्रेमीक ऊपर तियाग हमर आ गलथोथरी करत आन? तहिना लालमणिक मनमे सेहो उठैत रहै, जइसँ मनमे धकमकी अबैत रहए। लालमणिक अपन किरदानी-बिआह- मनमे नचैत रहइ। जँ रणभूमिक विचार करै छी तँ अपनो बेधाएले छी। मुदा तँए कि इतिहास उनटौलासँ थोड़े उनटत, ओ तँ समैक संग जुड़ि गेल अछि। मूल विचार आजुक अछि जे सबहक दायित्व बनैए। लालमणिक धकमकी देख बजलौं-

"नेताजी, गामक कोनो बातक विचार अपने सभ ने करबै। की मुइलहा लोक आकि पचास बर्खक पछाइत अबैबला लोक करत?"

हमर बात जेना लालमणिकेँ करेजमे लगलै। कोनो गाछ लगिते जेना कलशैक टुस्सा दइए तहिना लालमणिक टुसियाएल मन बुझि पड़ल। ओइ टुस्साकेँ जँ बँचौल नइ जाएत तँ रौदमे जरियो सकैए आ पालामे ठिठुरियो सकैए किने! तँए अनुकूल संयोग भेटने ने ओ कलशत। बजलौं-

"नेताजी, मन खनहन नै बुझि पड़ैए तँए एकबेर चाह पीलासँ मनो खनहन हएत आ गपो-सप्प खनखनाइत चलत।"

लालमणि चाहक आग्रह मानि नै बाजल आकि मनमे कोनो दोसर बात घुरियाइत रहै, से ओ जानए, मुदा बाजल किछु ने। तैबीच अपनो मनमे भेल जे पत्नीकेँ बजा अपन एवजी पञ्च बना किए ने

लालमणिक संग उतराचौरी[20] करा दिऐ। अपने गपकेँ सोझ-साझ करैत रहब आ पत्नी-मुहेँ करा-बजा लेब। दोसर ईहो हएत जे धाक लालमणिकेँ हमरा मुहेँ गप करैमे हेतै ओ तँ पत्नीक संग नै हएत। जँ हमर पत्नी तँ ओकर भौजाइए ने...।

बहन्ना बना पत्नीकेँ सोर पाड़लयैन।

ऐबते पत्नी पुछली-

"किए सोर पाड़लौं। मैनजनक पुतोहुकेँ भूत लगल छै सहए गप लोहनावाली मुहेँ सुनै छेलौं।"

गर भेटल बजलौं-

"ओही गप्पे तँ सोर पाड़लौं हेन। कोनो कि सोर पाड़लौं हेन खाएक नेने आउ। तखन तँ नेताजी दरबज्जापर आबि गेल छैथ तँए हुनकर सुआगतो ने हेबा चाही।"

लालमणिकेँ चौकीपर बैसल देख आकि की, पत्नी दरबज्जेपर सँ पुतोहुकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, तीन गिलास चाह झब-दे पठा दिअ।"

कहि लालमणिक आगू पत्नी बैसली। तीन गोरेक बीच पाबि जेना लालमणिक अलिसाएल मन कनकनाएल तहिना बाजल-

"भाय साहैब, एकटा पुरुख जँ दू-तीनटा पत्नीक बीच रहत ते चाह-पानसँ लऽ कऽ खाइ-पीबैमे किछु-ने-किछु घटी-बढ़ी भाइये जेतइ, जइसँ डाह हेबे करतै। मुदा मैनजनक ऐठाम तँ तेसरे भऽ गेल अछि...।"

कहि फेर लालमणि चुप भऽ गेल। मनमे भेल जे अखनो लालमणि धखा रहलि अछि। धखाइक कारण मनमे रहै जे सौतिया-

[20] प्रश्नोत्तरी

डाह तँ बराबरीक हिस्साक रहैए जे हल्लुक भेल। मुदा ऐठाम तँ सासु-पुतोहुक प्रश्न अछि..!

कनसारक खोंरनी चलबैत पत्नी दिस देख बजलौं-

"की सासु-पुतोहुक भेल, नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छी?"

ओना पत्नियोँ बुझली, तँए हमर इशारा करैत लालमणिसँ बजबए चाहली। सोंगरक सह लगबैत बजली-

"नेताजी तँ आगूमे बैसले छैथ, गामक जेते छ-पाँच हिनका बुझल छैन तेते हमरा थोड़े बुझल अछि।"

तैबीच चाहो आबि गेल। बजैक जगह सेहो लालमणिकेँ भेटल। चाहक चुस्की लैत बाजल-

"भाय साहैब, एहेन-एहेन किरदानीकेँ जाबे समाजमे अड़ौल नै जाएत ताबे भूत-भविस बुझब असान थोड़े अछि।"

लालमणिक बात सुनि मन थकमका गेल। थकमका ई गेल जे महिलाक समस्या छी, जँ महिलाक बीच विचार हएत, बीच-बिचौवैल हएत, तखन जे रस्ता निकलत से ने नीक हएत। तइले पत्नीकेँ सोझामे बैसाइए देने छिऐन तखन किए लालमणि झटहा मरैए?

जेना भीतरे-भीतर मन खौंझाएल मुदा फेर भेल जे जँ खौंझ लालमणिपर झाड़ब, तँ वेचारी बेइजती बुझती। मुदा पत्नीक ऊपर तँ पुरुख सदिकाल खौंझ झाड़िते आबि रहल अछि, जेकर घट्टा-पीठ्ठा पड़ले छैन, बेसी असरो ने हेतैन। तँए खौंझाएल बिलाइ जकाँ पत्नियेँकेँ कहलयैन-

"अहाँकेँ जे लगमे बैसौने छी से पिकनीकक तरूआ माछक सुआद बुझैले आकि अपन बातक विचारो करबै!"

जेना पत्नी बुझि गेली जे मैनजनक सासु-पुतोहुक बात खोलि

कऽ सुनए चाहै छैथ, सदिकाल तँ दुनू परानीक बीच एहेन-एहेन बात होइते रहैए, तँए मनमे कोनो हलचल नै भेलैन। मुदा ई तँ मनमे रहबे करैन जे कहुना भेलौं तँ गामक पुतोहु भेलौं, जखन कि लालमणि तँ गामक बेटी छैथ। पहिने गामक बेटी तखन ने गामक पुतोहु। मुदा जहिना पत्नीक मन दौड़ैत चलैत रहैन तहिना लालमणिक मन सेहो दौड़ैत चलए लगल। कोनो सघन बोनमे जहिना तीस-चालीस साल पुरान हेराएल संगी अनायास भेटलापर बीचक सभ हेरेलहा समए अपने मेटा जाइए, तहिना पत्नियोँक आ लालोमणिक मन मैनजनक पत्नीक उमेर–24 बर्ख–आ पुतोहुक उमेर- 28बर्ख-पर जा दुनू शिकारीक भेँट भेल। भेँट होइते दुनूक नजैरक मिलानी होइते ठहाकाक लाबा भड़भड़ाएल। मुदा बाक नै फुटलैन। जहिना घरमे आगि लगलापर बकार-हरण भऽ जाइ छै, तहिना। मुदा धधड़ाक इजोतमे जेना दुनू गोरेकेँ देख पड़लै तहिना मुहसँ एक्केबेर अनुभव बनि निकलल-

"केकर बापक मजाल छी जे एहेन भूत छौड़ौत... ।"

लालमणि अपन घटना- वैवाहिक घटना-क विचार जे हमरा मुहेँ सुनने छलि तइसँ मनमे बुबकी रहबे करइ। निधोक बजैक साहस मनमे एलै, बाजल-

"भाय साहैब, बहिनक रूपमे जे बात हम समाजक बाजि सकै छी ओ भौजी-मुहेँ बाजब पछाइत उचित हएत, पहिने नहि।"

लालमणिक गंभीर विचार जेना मनमे लागल। लगिते विचार उठल, उठिते समाजक सतरंगी-चेहरा सोझहामे पड़ल। मुदा समाज तँ ओहन बारीक सुतक जालक ढेरी छी जइमे हजारो-लाखो सुत भिड़ियाएल अछि। तैबीच सभकेँ नीक हौउ से बजलेटा सँ से थोड़े हएत आकि नीकक बाटपर आबि चललासँ हएत..?

विस्मित होइते मनकेँ जेना लालमणि टोबि लेलक। टोबिते जेना बुझि पड़लै जे खेबा-जोकर रसा गेल छैथ। निधोख बाजल-

"भाय साहैब, मैनजनक पुतोहुक भूत सौतिया भूत नै सौसिया भूत छी। मुदा छियैहो तँ अपने लगौलहा ने?"

पुछलिऐ-

"अपने लगौलहा की?"

लालमणिक मन जेना भीतरे-भीतर तुरैछ गेल होइ तहिना तुरछैत बाजल-

"भाय साहैब, भूत नै ओ डाह छी।"

जे भाँज बुझए चाहै छेलौं ओ भाँजे ने खुलै छल। प्रश्न दोहरेलौं-

"की डाह?"

जहिना कोर्टमे गवाह अपन पक्षधरक मुँह-मिलानी करैत, मुस्की भरैत बजैए तहिना लालमणि पत्नीक संग मुँह-मिलानी करैत, मुस्की भरैत बाजल-

"भाय साहैब, जखन दूटा पत्नी मैनजनकेँ अपना समकस जीविते छैन, पोता-पोती सेहो छैन्हे, तखन साठि बर्खक अवस्थामे चौबीस बर्खक पत्नीक संग जिनगी केहेन हएत? तीस बर्खक तेसर बेटा छै आ अट्ठाइस बर्खक पुतोहु। कहू जे तेकरा जिनगीक डाह हएब कोन अनुचित?"

लालमणिक मनक बात जेना मनमे घोंसिया गेल। आगू बढ़बैत पुछलिऐ-

"नेताजी, ओ तेसर बेटा जे छै भुतलग्गुक पति से की करै छै?"

ओना अपनो बुझल जे धोविया कुकुर जकाँ ने घाटक अछि आ ने घरक, मुदा एहनो तँ होइते छै जे साँइक नाओं जनितो 'हइ' 'हइ'क

प्रयोग होइए। जहिना कोनो जब्बर औरत कोनो अपराधी पुरुखकेँ ऐंड़सँ ऐंड़ियबैए तहिना लालमणि मैनजनक तेसर बेटा- भागेसरपर बोलीक ऐंड़सँ ऐंड़ियबैत बाजल-

"भाय साहैब, ओहन-ओहन लोककेँ गामक चौबट्टीपर जखन ऐंड़ियाएल जाएत ने तखन नवरंगी आ सतरंगी समाज एक बनत।"

ओना लालमणि एक सूरमे बाजि गेल, मुदा जइ सुरे ओ बाजल तइ सुरे अपने नै बुझि पेलौं। बुझिये ने पेलौं जे की गलती भेल जे चौबट्टीपर भागेसरकेँ ऐंड़ियाएल जाएत। मुदा मनमे ईहो हुअए जे बीखाएल गहुमनकेँ जँ खोंचारियै आ जँ केकरो दोसरेकेँ लपैक लइ तखन तँ खेले चौपट्ट भऽ जाएत। तँए किछु आगू बजैसँ परहेज केलौं। मुदा चोटाएल साँपक फुफकार जहिना ताधैर चलिते रहै छै जाधैर मन थीर नै भऽ जाइ छै तहिना दोसर फुफकार छोड़ैत लालमणि बाजल-

"भाय साहैब, एहेन-एहेन लोक समाजक कोढ़-करेज खोखैर कऽ खा जाएत। जाबे धरि उतकिरन[21] विचारसँ समाज उत्क्रमित नै हएत ताबे धरि अहिना नितकरन[22] विचार समाजकेँ निच्चाँ मुहेँ नीसकनी बनि ससारैत रहत।"

लालमणिक गम्भीर विचार सुनि मनमे अधलो लगए आ नीको लगए। मुदा किछु बजैक साहस ऐ दुआरे नै हुअए जे कोन दिस लालमणि भँसऽ चाहैए, तेकरा बिनु बुझने-बजने जँ विपरीत दिशाक बात उठि जाए तखन तँ लेनीक-देनी पड़त। मुदा लालमणि सन समाजिक लोकक विचारकेँ समाज केते अङेजलक वा अङेजए चाहैए, ईहो तँ प्रश्न अछिए। मुदा अपन विचार पत्नी बुझि गेली। कठिया लाड़ैन चलौलैन-

[21] उत्कृष्ट
[22] निकृष्ट

"नेताजी, जेहने जेकर बाप रहतै तेहने ने तेकरा बेटोक छीछा-बीछा हेतइ।"

लालमणिकेँ जेना गर भेटलै तहिना बमछल-

"भाय साहैब, बजैकाल सभ बजैए जे देशोक आ परिवारोक कर्णधार जुबा-शक्ति होइत आबि रहल अछि आगूओ होइत रहत। मुदा जुबा केहेन शक्ति पाबि शक्तिशाली बनए चाहैए, ईहो तँ विचारणीय विचार अछिए।"

तेहेन विचार लालमणि पटकली जे मनमे भारी पहपैट उठि गेल। उठि गेल ई जे जैठामक लोके घोर-मट्ठा भऽ गेल अछि तैठाम यशोमतीक मट्ठा पीबैले कृष्ण कोन बाटे औता से बाटे भोथिया गेल अछि। सबहक नीक हौउ, जेकरा पेटमे अन्न नै छै तेकरा अन्न भेटौ, जेकरा देहपर देहवन नै छै तेकरा देहवन भेटौ। जेकरा घराड़ियो ने छै तेकरा-ले चन्द्रलोकक घराड़ी कीनल जाए, तइमे ने सरकारी घर बनत। मुदा तँए कि हजार खण्ड साड़ीवालीक घर, लाख खण्ड साड़ीक घर नै बनौ, तखन विकास की भेल? आठअना पाइक ताड़ी पिआक रूपैआ-डेढ़-रूपैआ बढ़बैत जँ पनरह-बीस हजारक पचास ग्रामक पोंच नै पीलक तँ ओकर विकास की भेल? जँ सभकेँ उठाउ तँ सतरहटा नोकर जखन सभकेँ भेटतै, बेड-टीसँ लऽ कऽ पर-पानिक ठर-ठेकानसँ लऽ कऽ सिगरेट-सलाइ जुमबैत तीन गोरेसँ पकैड़ शौचालयमे बैसा पनिछुआ करबैत, साबुनसँ अपने हाथे अपने मलि-मलि कऽ धोइक इत्यादि, चौबीसो घन्टाक जँ जिनगी नै भेटै तँ ओकर विकास की भेल? आब कि राजा-रजबार रहल जे महींसोसँ नमहरका पशु- हाथी-तँ पोसै छल मुदा दूध-ले नै, सवारी-ले! ई तँ रच्छ रहल जे पत्नी मनक बात बुझि गेली। जाबे मनमे विचारि अपने किछु बजितौं तइ बिच्चेमे पत्नी लालमणि दिस गुम्हरैत बजली-

"नेताजी, अहाँ सभ तीतो-मीठ जनै छी आ देखबो-सुनबो करै छी। मुदा चीख कऽ आकि खा कऽ देखलिऐ जे केहेन सुआद केना-केना अबै छै, आकि धोबिया-पाट जकाँ एकेबेर लगा देबइ? तखन कुश्तीक पैतरा केना बुझबै?"

पत्नीक बात सुनि मन हल्लुक भेल। मुदा तेखा-तेखीमे जहिना पत्नी लोहियाएल तहिना लालमणि करियाएल। गांगी-जमुनीक संगम ने सरस्वतीक संग चलैत त्रिवेणियोँ घाट बनबैए। कहैले तँ सभ धारमे पानियेँ छै, मुदा ओ नीक-बेजा बेड़ौल केना जाएत? कोइ काहू मगन कोइ काहू मगन तँ अछिए। बतहपनीक संसारमे जखन सभ बताहे अछि, तखन कोन-बताह कोन कोणसँ बतहपनी करैए सेहो तँ देखए पड़त...।

दुनू गोरेकेँ बाँहि पकैड़ बजलौं-

"कौआ कान नेने जाइए से सुनि अपन कान देखबे ने करब आ कौआक पाछू ई मानि दौगए लगब जे हमरे कान छी! तइसँ हएत? आकि ओइ भुतलग्गुकेँ- जेकरा बाँहि पकैड़ घरमे अनलकै, ओकरा पुछबै जे ओकर पैतपाल के करतै, पैत रक्छक के हेतइ?"

लालमणि बुझि गेल। बुझबो केना ने करितए, किछु छै तँ राजनीतिक जिनगी तँ छैहे ने। तखन तँ हौआमे बौआ भेटल सेहो कौआ लऽ कऽ उड़ि गेल अहाँकेँ की बोनढौआ भेटल। एहेन जिनगी तँ लालमणि देखिये चुकल छलि। जइसँ जिनगीक सभ बाट बन्न देखते छलि। मुदा तैयो जीवैक तँ गर चाहबे करी। जे गरे ने देखा पड़इ। ओना किछु मजबूरियो आ किछु सेवोक धियान तँ छैहे जँ से नै छै तँ अपनाकेँ किए समाजसेविका कहबै छैथ, कहेबे टा नै करै छैथ, मञ्चपर अपने बजबो करै छथिन जे 'अहाँक बीच सेविका अछि तँए हुनको बात कनी सुनि लिअ।'

लालमणि अपने फुड़ने बड़बड़ाए लगलि-

"ई छौड़बा भगेसरा जे अछि एकरे किरदानीसँ एहेन घटना[23] होइए। मानि लेलौं जे बाप अपन इज्जत-आवरू धोइ-पोछि कऽ चाटि लेलक, मुदा जे बाँहि पकैड़ औरतकेँ समाजक बीच अनलक ओकरा के देखत?"

लालमणिक बात सुनि मन ठहकल। पुछलिऐ-

"ओ छौड़बा रहैए केतए?"

लालमणि-

"जहिये बम्बई नाओं छेलै तहियेसँ ओतै रहैए। आब तँ सहजे मुम्बैया जिनगी बना नेने अछि।"

पुछलिऐ- "की जिनगी?"

'की जिनगी' सुनिते लालमणिक मनमे जेना खौंझ उठलै। खौंझाएल बानर जकाँ झपैट बाजल-

"गामक बाप-दादाक मैनजनीक सुख-भोग भेटने जेहेन होइ छै तेहेन जिनगी ते जीविते अछि।"

लालमणिक विचारक कोनो भाँजे ने गरपर चढ़ल जे नीक जकाँ बुझि पैबतौं। ओना एते बुझल अछि जे बिआहसँ पहिनहि भागेसर बम्बई गेल आ तहियेसँ रहैए। मुदा कोन जरूरी अछि जे लुच्चा-लम्पटक पाछू अमूल्य समैकेँ मूल्यहीन बनाबी। जे समए आबि गेल अछि तइमे जँ देहो चोराएब सेहो केहेन हएत आ केते उचित हएत, से तँ देखए पड़त किने...। बजलौं-

"नेताजी, मुखौटी भाषण छोड़ू, जे ई फल्लाँक विचार आ ई फल्लाँक सिद्धान्त छिऐन। जे समस्या अछि तैपर विचार करू आ

[23] समरथाइक भूत

हुनको विचार सोझामे आनि भजार करैत डेग उठाउ?"

लालमणि पत्नी दिस देखए लगली आ पत्नी लालमणि दिस। जहिना आँखिक पल खसैत-उठैत रहैए तहिना दुनूक नजैर उठए-खसए लगलैन। उठैकाल मनमे उठैन जे मनुखक जिनगी पाबि जँ किछु समाजो-ले नै केलौं तँ जिनगी अकारथ भेल। ऐठाम दुनूक विचार संगे विचरण करैन मुदा कनियेँ आगू बढ़लापर लालमणिक मनमे आबि जाइ जे पुरुख विहीन परिवार अछि! असगर बरसपतियो फूसि। जखन कि पत्नीक मनमे होनि जे जइ परिवारमे पुरुख गारजन छैथ, तइ परिवारसँ आगू बढ़ि किछु बजबो आकि करबो-ले बिनु आदेशे केना डेग बढ़ाएब। तइले तँ समए चाही। तैसंग ईहो मनमे उठैन जे मनुखेक समूह समाजक परिवारो भेल आ समाजो भेल। परिवारेक समूह गामो भेल आ समाजो भेल। दुनूक बीच तँ जीवन-जापन काइए रहलौं अछि। जँ से नै करितौं तँ ठाढ़ केना छी। मुदा लगले मन आगू बढ़ि भुतलग्गु लग पहुँच गेल। तही बीच एकटा बारह-तेहर बर्खक पड़ोसीक बच्चिया भुतछुट्टु बुझि घुमि कऽ आँगन अबै छल। पुछलिऐ-

"बुच्ची, भूत केना भागल?"

कहलक-

"सातम दिन ढोरबा-मंगला दुनू गोरे मुम्बै जेतइ, ओकरे संगे ओहो[24] घरबला लग जाएत।"

OO

07 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या- 3853

[24] भुतलग्गु

विदाइ

ममियौत पोती[25]क बिआह सम्पन्न भेला-परात चाह पीब गाम अबैक मन बनेलौं। तइ बिच्चेमे मामासँ नजैर नानापर पहुँच गेल। केना दू समाजक बीच सम्बन्ध बनल। केहेन जिनगी बितौलैन...।

सात-भाए बहिनक परिवारमे माए सभसँ छोट बहिन आ सभसँ जेठ बहिनक सासुर सेहो हमरा गामक बगलेमे तीन किलोमीटर हटि कऽ, दछिनबरिया गाममे। जेठकी मौसीकेँ दूटा बेटीए टा, बेटा नहि। पाँच भाए आ दू बहिनक परिवार, माएसँ मौसीक उमेरमे लगभग तीस बर्खक दूरी। ओना मौसीए-विचारसँ छोट बहिनक बिआह भेल। ओइ पीढ़ीक अखन पाँचम चलि रहल अछि, मुदा पाँच नै तीन मानि चलै छी...।

दोसर पीढ़ी, तीन भाँइ आ दू बहिनपर आबि अँटकल। मरदा-मरदी घटबी भेल। बहिन सबहक सासुर कोसी-कटानमे तेते दूर भऽ गेल जे सम्बन्ध समाप्ते जकाँ भऽ गेल अछि। ओना दुनू बहिनो मरि गेली। तीन भाँइक भैयारीमे दू-भाँइ अपनो आ पत्नियोँ मरि गेलैन। ओना भाइक अपनो पत्नी मरि गेलैन। उमेर पचासी-छियासी छैन, आँखि-कान दुनूसँ दुर्बल भऽ गेल छैथ। मुदा देह-दशासँ रिष्ट-पुष्ट

[25] ममियौत भातीजक बेटी

छैथ। चारि बेटाक संग पाँच भातीजक शीर्षपर बैसल छैथ। मरदा-मरदी परिवार बढ़ल, भाय गारजन ऐ दुआरे नै जे एक तँ उमेरे अस्वस्थ, तैपर आँखि-कान छीना गेने, दरबज्जेपर बैस जिनगी गुदस करै छैथ। हुनके पोतीक बिआहमे मात्रिक गेल छेलौं। एकर माने ई नै जे दस-बीख बर्खक पछाइत गेल छेलौं। ओना सालमे बेसी काज भेने दू-तीन बेर जाइ छी, नै तँ एको बेर, आ जँ काज पतराएल रहल तँ डेढ़ो-दू सालपर जाइ छी। मुदा से नै, डेढ़ सालपर गेल छेलौं...।

गाम अबैले तैयार भऽ भायकेँ गोर लागि कहलयैन-

“भाय, जाइ छी...।”

कहि तँ देलिऐन मुदा आँखि ढबढबा गेल। ढबढबा ई गेल जे भरिसक अन्तिम भेँट छी। ओना बेटा संग बहारे रहै छैथ। पाँच बर्खक पछाइत भेँटो भेल छला। आँखि-कान दुनूसँ दुर्वल रहने भाय नै सुनलैन। मुदा झल-इजोतमे वैग देखलैन। जहिना कन्हा नाचए अपने ताले आ बैहरा गाबए अपने सूरे...।

तहिना दुनू नाच भाय ठाढ़ कऽ देलैन। बेटा सभकेँ कहलखिन-

“बौआ, पाँच भाँइक भैयारी[26]मे दुइए भाँइ बँचल छी। बेटीक बिआह केलह आ छोट भाएकेँ बिना रंगल धोती पहिरौने नाना-नानीक गामसँ विदा करबह से केहेन हेतह..?”

आँगनसँ दरबज्जा तक लोक पसरल। दरबज्जासँ आँगन धरिक सभ कनखेड़ भऽ सुनलैन। दरबज्जापर नव-पुरान कुटुम जहिना तहिना आँगनमे सेहो। ई तँ भेल एक ताल। दोसर ताल फेर देलैन। देलैन ई जे दुनू आँखिये-टासँ नोरक धार नै बोहैन, कानि-कराहि मन बजबो करैन-

[26] ममियौत-पिसियौत मिला कऽ

“यएह पिसियौत भाए हमर छी जैठाम सालक छह मास, एक साल नै करीब बीस साल, अपनो मरदा-मरदी आ गाइयो-महींस लऽ कऽ गुजर करै छेलौं...।”

बहीर-बलाइक बात जहिना लोक सुनबो करैए आ नहियोँ सुनैए तहिना भेल। हेबो केना ने करैत, एहनो लोक तँ छैथे जे जहियासँ गियान-परान भेलैन तहियासँ शहरे-बजार धेने छैथ, तँए कि ओहन लोक नै छैथ जे अखनो ओहेन भोग भोगि रहला अछि। की अछि इलाकाक दशा? अखनो देखल जा सकैए जे कमलाक पछबरिया छहर टुटने इलाकाक खेती-वाड़ीसँ लऽ कऽ रस्ता-पेरा तहस-नहस भऽ गेल अछि! जइसँ गाम हेराएल सन बुझि पड़ैए! ओना घर-घराड़ी हेराएल कमला-धारक पेट बनने, मुदा नवको घराड़ी तइसँ नीक थोड़े अछि..! पैछला पचास बर्ख पहिलुका गाम भाइक नजैरसँ हेरा गेल जकाँ बुझि पड़ल। ओना पाँच बर्खपर भाय गाम आएलो छला, तैसंग आँखियो आ कानो गमाइए नेने छैथ, जहिना कोठरीसँ ओसार धरिक जिनगी बाहर, तहिना दरबज्जासँ आँगन भरिक गाममे। गामक लोको ऐ दुआरे गामक जानकारी नै देलकैन जे एक तँ बहरबैया भऽ गेला, दोसर बहीर-बलाएकेँ बुझाएबो भारी। तैसंग बिआहक काजक धुमसाही, पनरहे दिन-ले गाम एबो कएल छैथ।

तही बीच मझिला बेटा, जेकर बेटीक बिआह भेल, जोड़ भरि धोती नेने भाइक हाथमे, माने पिताक हाथमे, दऽ देलकैन। हाथमे धोती ऐबते भाइक विलाप बदैल गेलैन। मनक सभ रस निच्चाँ उतरलैन...।

धोती बढ़बैत बजला-

“भाय, आब ते जिनगीये नै रहल, जे दिन छी से दिन छी, मुदा तूँ किछु छिअ ते दीदीक बेटा छिअ। आब की दीदीकेँ आँङ्गी-साड़ी

पहिरा विदा करब...। धोती पहीरि कऽ दरबज्जापर सँ विदा हुअ...।”

धोती देख मनमे भेल जे एक तँ भगवान ओहिना दहिन भऽ गेल छैथ जे परम्परामे धोती लिखने छैथ आ पहीरिनिहारकेँ पेण्ट पहिरा देलैन! अपनो परिवारमे धोतीक बाढ़ि तँ आबिये गेल अछि, अनेरे किए वेचाराकेँ खर्च बढ़ेबै। मुदा जेना मनक बात भातीज बुझि गेल तहिना बाजल-

“काका, लिअ ने, तेते धेती आबि गेल अछि कुटुमक ऐठामसँ, जे अनेरे घर भरल रहत, पहीरिनिहारे के अछि। हम सभ पेण्टे पहिरै छी। लऽ दऽ कऽ एकटा बाबू धोती पहीरिनिहार छैथ।”

भातीजक मुस्कुराइत मन देख मन ऐ दुआरे मानि गेल जे भातीजक कन्यादान सन यज्ञ सम्पन्न भेल, दोसर भाइक हाथक धोती छी, जँ नै लेब तँ भरिसक जिनगीक अन्तिम भेँट छी, मनमे चोट लगि घाव बनि जेतैन। हमरा चलैत ओ चोटाह बनि रहैथ, ईहो उचित नहि। घरमे धोती पहिरैसँ बेसी अछि, तेकर हम की करबै? जेकरा दिऔ चाहबै, ओ पेण्टे पहिरैए...।

तही बीच भातीज, पिताक हाथसँ धोती लैत हाथ पकैड़ दऽ देलक। हाथमे धोती ऐबते मन पड़ि गेल साठिक दशक- 1958 इस्वी। ता मिडिल स्कूलक विद्यार्थी रही। नाना-नानीक परिवार आगू ससैर ममियौत भाय-भौजाइपर आबि गेल रहैन। माइक संग हमरो विदाइक धोती भेटल रहए- सत-गज्जा धोती। मनसारासँ पूब झगड़ुआ बजार जेतए आन वस्तुक दोकनदारीसँ लऽ कऽ खाधी भण्डार सेहो आ कपड़ा बुनाइक कारोबारी सेहो, जइसँ गाम बजार रूपमे थोड़े आगू घुसैक गेल छल। जखन सभसँ छोट ममियौत-भाए बजार विदाइक नुआँ-वस्तर कीनए झगड़ुआ जाए लगला तँ भायकेँ कहलखिन- ‘फल्लाँ-फल्लाँसँ बाबूकेँ दोस्ती छेलैन, अखनो आवा-जाही ऐछे, कोनो

बेसी दूरो नहियेँ अछि, अपन पसीने कपड़ो कीनि लेब आ सभसँ भेँटो-घाँट भऽ जाएत।’

सासुर अबैसँ पहिने केता दिन माइयो गेल-आएल, तँए देखैक मन रहबे करए। तीनू गोरे बजार आबि दोकानदारसँ पुछि भाय सत-गज्जा धोती कीनि देलैन। ताबे नै बुझिऐ। गज बुझिऐ दू हाथ, मुदा सत-गज्जाक माने सात हाथ आकि चौदह हाथ से नै बुझलिऐ। ओना धोती निकालि दोकानदार जखन परिछऽ लगल तखन सत-गज्जे छजल। ओना अठ-गज्जा, नअ-गज्जाक संग दस-गज्जो धोती रहइ। भातीजक हाथसँ धोती पकैड़ते जखन मुँह दिस देखलिऐ तँ बुझि पड़ल जेना हृदैसँ खुशी भऽ दऽ रहल छैथ। खुशियो केना ने होइतैन, गामक तंगहालीमे, चारू भाँइमे सँ कियो स्कूल नै देख पौलक, पेटक दुआरे पड़ा शहर गेल। दिन-राति कारखानामे खटि एक मात्र बेटीकेँ बी.ए.क संग कम्प्यूटर तक पढ़ौलक, ओही बेटीक ने बिआह भेल...।

धोती हाथमे लैत भातीजकेँ कहलिऐ-

“जखन धोती लाइए लेलौं तखन पहिरैले किए जोर करै छह? जँ नहाइबेर रहैत ते पहीरि लैतौं। गाममे नहाएबो ओतै पहिरब।”

भातीज मानि गेल मुदा भाय अपने सूरे रहैथ। सूरे ई रहैथ जे धोती पहीरि कऽ दरबज्जापर सँ निकलिहऽ। सएह भेल। मुदा डेग उठैबते मनमे नाचए लगल, की आब मात्रिक रहल? नाना-नानी लगसँ शुरू होइत मामा-मामी होइत भैयारीपर आएल, आब भातीजक सीमापर आबि गेल मुदा अपन ओ सभ के हएत आ अपने के हेबैन?

बिआहसँ बारह दिन पहिने साझिल भातीज तीन गोरेक संग नौत दिअ आएल। किछु दिन पहिने दरभंगा जिलाक मुख्यालय दरभंगामे तीन दिनक साहित्यिक कार्यक्रममे गेले रही। चाहक संग गप-सप्प चलैत रहए। भिनसुरका समए। बिआहक जानकारी दैत

कहलक-

“काकाजी, तइस तारीखके बिआहो छी आ कुमरमो हएत।”

पुछलिऐ-

“कुमरम ते एक दिन पहिने होइ छै ने, तखन किए दुनू काज एके दिन करबह?”

बाजल-

“एक दिन पहिने शनि पड़ै छै, तँए...।”

कहलिऐ-

“कुमरम की कोनो एके दिन पहिने होइए दोसरो-तेसर दिन पहिने होइए किने।”

मुदा ओ सोझे कहि देलक-

“सबहक सएह विचार भेल।”

सतबजिया सुर्ज उगले रहैथ, मने-मन कहलयैन, ‘हाइ रे सुरूज भगवान दिने खोंटाह!’

चारि-पाँच दिन पहिने जिला मुख्यालय-दरभंगामे तीन-दिन रहि आएले छेलौं, फेर दू दिन-ले ओही जिलाक गाम जा देखैक इच्छो भेल। मुदा तइ बिच्चेमे भातीज बाजल-

“भैयो आ बाबूओ कहलैन जे अहाँ ऐबे करिऐ।”

कहलिऐ-

“निश्चित आएब।”

समए बनिते मनमे उठि गेल। वएह दरभंगा जिला जइमे जन्म भेल। एतबे नै, मतो-पिताक जन्मभूमि छीहे। स्कूल-कौलेजक सर्टिफिकेट सेहो सएह अछि, मधुबनी जिला बनने आब मधुबनी

जिलाक भेलौं। मुदा अपन सभटा बही-खतियान तँ दरभंगे जिलाक अछि। रस्ता दिस नजैर दौगबैत पुछलिऐ-

“बौआ अबै-जाइक रस्ता केहेन छह?”

मोटर साइकिलसँ आएल रहए। बाजल-

“गाममे कमलाक पछबरिया छहर पकैड़ रसियारी-पुल टपि पुबरिया छहर पकैड़ भगवानपुर-मधेपुर होइत रस्ता नीक अछि।”

गामसँ मनसारा तकक भाँज लगि गेल। जेबो करब तँ भिनसुरके उखड़ाहामे जाएब, जइसँ नहा-खा अराम करैक समैयो भेटत। बेरूपहर तँ समए बँचत, बाढ़िक उतारक समए छी। ओना उतारो-उतारोमे अन्तर होइ छइ। किछु इलाका एहेन अछि जैठाम लोक दुर्गे-पुजामे बरसातक उतार बुझैए। खेत-पथारसँ पानि हटि, आगू बढ़ि जाइ छइ। मुदा किछु इलाका एहनो तँ ऐछे जे जेकर बरसाती उतार अगहन-पूस धरि अछि। तेतबे किए, एहनो तँ ऐछे जे साइबेरिया देश सन अछि जेकरा तीनियेँ-चारि मास जमीन भेटै छइ। हँ! तखन एते जरूर अछि साइबेरियामे बर्फक झँपलाहा रहै छै आ ऐठाम पानिक अछि।

‘रस्ता नीक अछि’, भातीजक मुहेँ सुनि, नीकक हिसाब जोड़ए लगलौं, केना आ केहेन नीक अछि? शहरमे मोटर साइकिल चलौनिहार जँ गामक सड़ककेँ नीक मानलक तँ नीक भेल। मुदा भूतलग्गु जकाँ भुतिया गेलौं। भुतिया ई गेलौं जे जहिना राजस्थान-गुजरातक गामक सड़क केहेन अछि से रहनिहार बुझै छैथ, तहिना त्रिपुरा, अरूणाचलक गामक सड़क केहेन अछि ओहो तँ ओतुके रहनिहार ने बुझता, मुदा महानगरक बजारू सड़कक नजैरसँ तँ नै देखल जा सकैए...।

अपनाकेँ जखन मनसारा पहुँचल देखलौं तखन मनमे भेल

लखनजीक मूर्ति स्थापित हालेमे भेलैन अछि। एते आबा-जाही रहितो अखन धरि नै देख पेलौं, सेहो ऐबेर गरपर चढ़ल, जरूर देखब। मुदा मूर्तियेटा ने देखब, ओ की कहि आ करि कऽ गेला से जाबे नै देखब ताबे तक बुझि केना पाएब...। मुदा तैयो सबुर गेल। पुछलिऐ-

“बौआ, लखनजीक जे मन्दिर छैन ओ रस्तासँ केते हटल छैन?”

कहलक-

“पुबरिया छहरेपर छैन। पजरे देने रस्ता छइ।”

‘पजरे देने रस्ता छइ।’ सुनि मनमे एते खुशी भऽ गेल, जे हुअ लगल आइए संगे विदा भऽ जाइ। ओना रसियारीक पछबरिया छहर पकैड़ केताबेर केताठाम गेबो केलौं अछि आ जाइतो छी। मुदा मनिषी डाक्टर लखनजीक समाधि स्थल नै देखलयैन तँए जरूर जाएब। पछबरिया छहरपर सँ पुल केता दिन देखने छी मुदा लगसँ नै, ओकरो लगसँ देखैक अवसर भेटत। पुछलिऐ-

“बौआ, कुशेसर जाइक रस्ता केहेन अछि?”

मुदा ओहो बिना किछु लाथ केने बाजल-

“काका, पाँच दिन गाम एना भेल हेन, पाँचो दिनसँ घुमिते छी, ओमहर आब जाएब, तँए नै बुझल अछि।”

भाँजपर कुशेसर नै चढ़ैत देख पुछलिऐ-

“दरभंगासँ सहरसा जाइबला जे सड़क बनल तेमहर जाइक आबा-जाही अछि की नै?”

दू दिन पहिने ओ सहरसा जिलाक मगरौनीसँ आएले रहए, बाजल-

“परसू रातिमे ओतै रही, पुलसँ कनियेँ दछिन हटि कऽ घर छैन।”

गरपर चढ़ैत देख पुछलिऐ-

“अबै-जाइमे केते समए लगैए?”

कहलक-

“मोटर साइकिलसँ दू घन्टा।”

काज गरपर चढ़ल। बजा गेल-

“बस, दुइए घन्टा। ऐबती-जैती भेल चारि घन्टा, जाइकाल गाड़ीसँ पार करब घुमैकाल पएरे पाया तक देखैत आएब।”

जहिना बिनु पैरक मनुख तहिना बिनु पायाक पुलो ने, तँए देखबे करब। मने-मन गर अँटबैते रही जे केहेन-केहेन गाड़ी चलै-जोकर अछि, एक संग केते लोकक भार पुल सहि सकैए, इत्यादि-इत्यादि विचारमे उठैत रहए। मुदा भातीजकेँ से नै भेल, भेल ई जे जहिना हाइ-स्कूलक विद्यार्थीक पढ़ाइक परीक्षा दुइए घन्टामे होइ छै तहिना अपन जीत दर्ज करबए लगल। एक तँ मुँह बन्न रहै तँए मञ्च भेटले, दोसर शहरसँ गाम आबि सेहो घुमि चुकल रहए। अपन सातो कुटुमैती, पुलक चारू भाग से घुमि आएल छल...।

बाजल-

“काका, आब उपरारि इलाकासँ नीक कोसिकन्हा भऽ गेल।”

भातीजक बात सुनि छगुन्ता लगल। देखल दिन मन पड़ए लगल।

एकबेर मात्रिक जेबाकाल, जैठाम घनश्यामपुरमे फुले पहलवानक अखड़ाहा छेलैन तइसँ कनियेँ दछिन सड़कपर मोनि फोड़ि देने, जइमे घुसैक कऽ चलि गेल छेलौं, मुदा डुमलौं नहि। गुन-धुनमे पड़ल रही, एक तँ खाली मन, दोसर खाली मञ्च देख भातीजकेँ भाषण करैक गर भेटलै। तहूमे चाह पीनहि रहए, पान-साए नम्बर जर्दा देल

पान सेहो खेनहि रहए, मन फुलाएल रहबे करइ, बाजल-

“काकाजी, ओइ इलाकामे आठ मन कट्ठा तक उपजबैबला किसान सभ छैथ। जइ कुटुम ऐठाम गेल छेलौं हुनका बड़का-बड़का ढक-बखारी मकैक देखलयैन।”

ढक-बखारीपर मन नै अँटकल। आब गामोमे बेसी परदेशीए कोठी आबि गेल, माने चदराबला। आएबो उचिते छइ। मुदा आठ मनक कट्ठाक तँ माने भेल बीघाक उपजा- 160 मन। दुनियाँक अग्रिम पाँतिक उपजा भेल! तखन तँ जरूर इलाका नीक भेल। कहलिऐ-

“बौआ, जखन एते दूर जेबे करब तखन पुलक बहन्ने इलाको देख लेब।”

जेना ओकरो मन उजगुजाइते रहै तहिना काजक समए बिसैर बाजल-

“काकाजी, कनियेँ आगू बढ़बै ते कारूबाबाक स्थान सेहो छैन।”

‘कारूबाबा’ सुनि औरो मन उधियए लगल। अपनो बिसैर गेलौं जे काजक परिवार भेल, तैठाम अपने काजे घरवारियोकेँ बरदाएब नीक थोड़े हएत। जखन अपने नौतहारी बनि भार पुड़ए जाइ छिऐ तैठाम तँ रहबो ने उचित अछि। बेसीसँ बेसी, रौतका काज छी तँए, सुर्ज उगल धरिक समए भेटत। अगहन मास छी, दिनो छोट होइए। विदो होइमे किछु ने किछु विलम हेबे करत, मुदा भेल से नै जहिना मालिनीक आगू फूल ऐबते मनमेमाला बनए लगै छै तहिना कारूबाबाक डोरी मनमे लगि गेल। केना नै डोरी लगैत? कारूबाबाक सम्बन्धित एहेन-एहेन रचनाकार सभ छैथ जे रामायण स्तरक रचना केने छैथ, जे देखैक अवसर हालेमे भेटल, तँए जिज्ञासा जगले अछि। बजा गेल-

“बौआ, जखन एते दूर पहुँचबे करब तँ अदहा घन्टाक काज आरो बढ़त, सएह ने। कारूबाबाक महपुरो जेबे करब।”

बजैक वेगमे तँ बजा गेल मुदा एते काजकेँ सैंतिया कऽ करैमे तँ गर लगबए पड़त। मने-मन गर लगबए लगलौं। जे भरिये दिनक समए भेल। गामोसँ नअ बजेसँ पहिने विदा नै हएब, गाड़ी-सवारीसँ रहब, कखन केतए की हएत तेकरो ठेकान नै, जँ एक रसमे चलब तखन अढ़ाइ घन्टाक रस्ता भेल। मने-मन अही सभमे लागल रही...।

चुप देख भातीज कुरसीपर सँ ठाढ़ होइत बाजल-

“काका, बहुत काज अछि। औरो तीसटा कुटुमक ऐठाम घुमैक अछि।”

काजक घुमसाही देख बैसबैत बजलौं-

“बौआ, जखने ऐठामसँ पहुँचबहक कि भाय तँ हिसाब मंगबे करथुन?”

सुनि कऽ जेना ओ अकबका गेल। अकबका ई गेल जे की हिसाब? बाजल-

“कथीक हिसाब?”

कहलिऐ-

“कुटुमैती तँ बहुत छह मुदा भाय कोन-कोन कुटुम सबहक नाओं कहलखुन?”

जेना बुझले रहै तहिना ओ बाजल-

“से तँ खाली अहीं टाक नाओं घुरि-फिरि कहैथ जे फल्लाँ गाम गेलैं...। भायकेँ अबैले कहलीही...।”

एते दूरसँ आएल आ बिनु किछु खेने चलि जाएत, ई केहेन भेल। मुदा काजक भार तर तँ पड़ले अछि, मानत की नै मानत।

कहलिऐ-

“बौआ, जखने जेबहक तखने भाय पुछथुन्ह जे भाइक वाड़ी-फुलवाड़ी नीक छै किने...। तखन की जवाब देबहक? तँए पहिने घर-अँगना, दुआर-दरबज्जा, वाड़ी-झाड़ी घुमि-फिरि कऽ देख लहक तखन चलि जाइहऽ”

मुदा मानि गेल। बीचमे किछु समए भेटल। आगू सगर राति दीप जरयक कथा-गोष्ठी 20 दिसम्बरक शनिकेँ गाममे छीहे, ओहू इलाकाक संगी सभ- साहित्य-प्रेमी- छैथे, तँए किनको पकैड़ हराएल-भोथियाएल जँ दसो-बीस गोरे भेँट भऽ गेला तँ सुखटी-वणिजक संग पशुपति-दर्शन सेहो भऽ जाएत। गर अँटेलौं जे घरवैया छोड़ि बहरवैयेकेँ पकैड़ जेते सम्भव हएत तेते पुड़ा लेब।

परात-भने अकासवाणी दरभंगासँ समाचार निकलल-

“लखन जीक पुण्य तिथिपर तइस तारीखकेँ साहित्यिक कार्यक्रमक संग पुण्य तिथि मनौल जेतैन। नीक-नीक कार्यक्रमक आयोजनक बेवस्था हएत...।”

जेना-जेना तइस तारीख लग अबैत जाए तेना-तेना जेबाक उत्कण्ठा बढ़ल जाए।

तइस तारीख, रवि दिनक सुर्ज उगल। दू दिनक सफर अछि। कोनो काज करैमे अबेर-सबेर होइते अछि। मुदा दुनू दू शिरापर अछि, धोखा-धोखी आ मजबुरियो.., जँ उनटा-पुनटा हएत तँ जिनगीक रणभूमिक हार-जीतक सम्भावना भाइये जाइए। माने ई जे काज करैक पूर्व अवस्था आ पाश्य अवस्था, यएह दुनू काजक धुरी भेल। जँ विद्यार्थी परीक्षा भवनमे प्रवेश करैक उचित समैपर पहुँच जाइ छैथ तँ हुनकर मन परीक्षाक प्रश्नपर केन्द्रित रहै छैन, आ ओही ठाम जे विद्यार्थी धड़फड़ाएल विलमसँ पहुँचै छैथ तँ हुनकर मनक एकाग्रता

बहु-केन्द्रित हएब सोभाविक अछि। जेना कियो विद्यार्थी घरसँ परीक्षा दिअ विदा होइ छैथ, गाड़ी-सवारीक संग अनेक-अनेक बाधा-स्थल बाटमे अछिए। तैबीच जँ कियो विद्यार्थी बसक झमारमे चोट खेने रहै छैथ, चोटो केते रंगक अछि, मुदा लाख कोशिशक बावजूदो ओइ विद्यार्थीक मन असथिर चित बनि सकैए? बनि सकैए। जहिना एके अलमारीमे, पढ़निहार विद्यार्थी गर अँटा कऽ सभ सिद्धान्तिक किताबकेँ सैंतिया-सैंतिया रखै छैथ जे जरूरत पड़लापर बेसी वौआए नै पड़त, तहिना। एकर माने ई नै जे ओ किताब, एकठाम रहने कहा-कही करत। ओ तँ केकरोसँ कहबौत, केकरोसँ करौत। काजक पूर्व अवस्थाक प्रति जे जेते साकांच रहै छैथ, काज अपन बिसवास ओते हुनका दइ छैन...।

नअ बजे घरसँ निकलब अछि, तैबीच अपन तैयारी करब अछि। मुदा की तैयारी? अनगिनती गाछक बोनमे बोनैया केना बुझत जे अपन हितैषी यएह छी। भोरका टहलब सभसँ नीक। मुदा प्रश्न उठैए किए? भोरू-पहरमे मौसम समगम अवस्थामे रहैए जइसँ शरीरक अंग-प्रत्यंगकेँ समगम बनबैक शक्ति छइ। कोनो एहेन खेत अछि, जइमे नीकसँ नीक फलक खेती, नीकसँ नीक तरकारीक खेती, नीकसँ नीक अन्न–धान-गहुम इत्यादिक–उपजैक शक्ति छै, तइमे की उपजाएब नीक हएत? ओही समैकेँ ब्राह्मणी मुहुर्त सेहो कहल जाइ छै, से समए छी। तँए जेमहर मन हुअए तेहमर टहलू। चाहे ब्रह्मलोकमे टहैल विधाताक डायरी लिखी आकि गीत गावि मनकेँ बुझाबी, आकि डेग गनि-गनि दौगी। अपन-अपन मनक मर्जी भेल, जेहेन अर्जी करब, तेहेन मर्जी भेटत। अरजन, मरजन, सरजन, धड़जन आ मनजने ने करबो अछि...।

सही समैपर घरसँ निकललौं। हवाई यात्री जहिना एको-मिनटक

तल-बितल नै हुअ दैत, मुदा शीतलहरी आकि बाढ़िक टुटान जमीनक रस्ताक सवारी केना पाबि सकैए। भगवानपुर तकक आबा-जाही जहिया मधेपुर ब्लौकमे छेलौं, तहिया अपन कर्मक्षेत्र रहने बेसी छल, मुदा तीस-चालीस बर्खसँ सम्बन्ध कमैत गेल। ओहो गाम देखैक जिज्ञासा जगले छल...।

भगवानपुर टपिते जेना लखनजीक मनीषि जीह खींच लेलैन। लखनजी नाओं ओइ इलाकाक देन छिऐन। जे कहियो हुनकर कर्मभूमि रहलैन, केन्द्र रहलैन मधेपुर। मुदा आब लखनजीक खरंजाबला रस्ता बिसैर गेलौं। बिसैर गेलौं ठेंगहाक लोहाबला पुल...।

...कमलाक पुबरिया छहरपर ठाढ़ भेल मनीषि गुरुवर लखनजी अखनो लोककेँ नीन तोड़ि जगैले कहै छथिन। आगूमे ठाढ़ भेल लखनजी पुछलैन-

"बाउ, की सभ देखै छिऐ?"

हुनकर विचार बुझैक शक्ति थोड़े अछि जे बुझब। मुदा एते तँ बुझले रहए जे अपन जिनगी अपना हाथमे रखि दिवस गुदस केलैन। बेलामे रहै छला, दरभंगामे पढ़ैत रही। एकटा संगीक संग एक दिन भेँट करए गेलौं। शहरक कातमे बसल शहरसँ लाखो कोस हटल, लखन जीक बास। आगूमे एकटा लहटगर साहोरक गाछ रहैन। गमैआ साहोर जकाँ एकोटा दतमैन नै काटल। राज दरबार, मुँहमंगा दान। किताबसँ घर सभ भरल। लखनजी अपने चर नेने किताब सभकेँ ऊपरसँ पोछैत रहैथ। पोछैत रहैथ आकि किताबक नाओं देख-देख मनन करैत रहैथ, से तँ ओ जानैथ। हमरो हरल ने फूरल पुछलयैन-

"आगूमे साहोरक गाछ?"

मुहसँ खसिते मनीषि लखनजी ऊपरे लोकि लेलैन। पौराणिक

कथासँ लऽ कऽ देशक जेते बड़का वनस्पैतक प्रयोगशाला सभ अछि, सबहक सम्पर्कमे रहैथ। ओकर खोज करै पाछू बेहाल रहैथ। एके सूरे बीस मिनट तक बजैत रहला। मुदा अपने धर्मसंकटमे फँसि गेल रही। अपन आँखिक आगू एकटा घटना देखल रहए। गामक बाधमे एकटा साहोरक गाछ, गाम-घरमे अखनो मेघक अवाज सुनि लोक 'साहोर-साहोर' करिते अछि, ठनका खसलै ओही गाछपर। बीचो-बीच गाछकेँ चीरैत दू फाँक कऽ खसा देलकै। हल्ला भेल- 'बाधक रखबारक खोपड़ीपर ठनका खसल...।'

गाछक निच्चाँ खोपड़ी, सौन मास रहने रखबार नै, मात्र खोपड़ीए टा...।

तही बीच दोसर गोरे आबि गेला। बन्हाएल समए रहैन, ऐबते उठि प्रणाम कए विदा भेलौं। विदा तँ भऽ गेलौं मुदा जे गाम एते नामी-गरामी ओइ गामक जँ एहेन स्थित तँ जे गाम हजारो कोस पछुआएल अछि तेकर भगवान छोड़ि के मालिक?

कमला नदीक पछबरिया भित्तापर मिडिल स्कूल। पुलक बगले उतरवारि भागमे। कनियोँ धार फुलेने चारूकातसँ स्कूल घेरा जाइए, जइ स्कूलक बच्चा दस-बारह बर्खसँ पूर्वक रहैए..!

पुल टपिते दछिन मुहेँ जहाँ भेलौं आकि एक गोरे टोकलैन-

"गाड़ीमे तेल अछि की नै से देख लिऔ, जेमहर जाइ छी, ओमहर जँ तेल सठल तँ पहपैटमे पड़ि जाएब!"

कमलाक पछबरिया छहर पकैड़ते देखल रस्तापर चलि एलौं। महिया-ठेंगहाक छहर पकैड़ ऐबते-जाइते छेलौं। ओना मधेपुरसँ दछिन भगवानपुर धरि नीक रस्ता भेटल, भगवानपुर ऐबते मन ओहिना हरिया गेल जेना जड़ाएल गाछमे फूल-पात लगै छइ। बुझिये ने पेलौं जे कमलाक पछबरिया छहरपर पहुँच गेलौं। गमैया बाधक

चौड़गर आड़ि जकाँ, हाथीक हीड़ बनल कमलाक छहर। सेरिया कऽ केतौ चौरस नहि। केतौ खरंजा तँ केतौ बिच्चेमे पजेबा कोण-गरे ठाढ़ भेल। मुदा मनकेँ मना लेलौं।

मना ई लेलौं जे मधेपुरसँ तमुरिया जे एक्का[27]सँ अबैत-जाइत रही, तहिना ने हएत। मुदा लगले मनमे उठि गेल, जइ गामक बीचो-बीच कमला धारो अछि आ दुनू कात छहरो, तैसंग छोटकी नासी इत्यादि केतेको जमीनक रोग- चौर-चाँचर सहित ऐछे, देखते-देखते बारह बजेसँ पहिने- साढ़े एगारह बजे मात्रिक पहुँच गेलौं।

भाय दरबज्जेपर अथवल भेल बैसल छला। मुदा ने कनियोँ मन मलीन आ ने मुँह मलीन। ओना दिनचर्याक हिसाबसँ दस बजे नहा कऽ खाइ छला, मुदा नमहरका दस बजे छोटका दिनमे बढ़िये जाइए तहूमे नहेबाक बाट सेहो जाड़ घेरबे करैत अछि। मुदा ओ नहा कऽ खेबाक सुर-सार करिते रहैथ कि पहुँचलौं। पहुँचते पोता कानमे सुना कऽ कहि देलकैन जे 'गामबाबा' एला। सुनिते उठि कऽ ठाढ़ होइत आगू डेग बढ़बैत बिना कुशल-छेम पुछने कहलैन-

"हमहूँ खाइएले बैसल छेलौं, जँ नहेने नै छह ते पहिने नहा लए जँ नहेने छह ते हाथ-पएर धोइ कऽ पहिने संगे-संग खा लए। बहुत दिन एकठाम बैस खेना भऽ गेल।"

गाड़ीक झमारमे भूख लगिये गेल रहए, हाथ-पएर-मुँह-कानमे सेहो गरदा पड़ले छेलए...।

कहलयैन-

"कलेपर हाथ-पएर धोब।"

सएह केलौं। बैसते पचहीक डॉ. श्रीपति सिंह मनमे कूदि एला।

[27] टमटमक पर्व अवस्था, घोड़ा जोतल

कूदि ई एला, जे सहकर्मी छैथ, भेँट करए गेलौं। संयोग एहेन भेल जे पत्नी भीतरसँ चाह नेने दरबज्जाक गेट टपलै रहैन, आ तखने बाहरक गेटसँ हम टपलौं। दरबज्जेक ओसार जे घेरि कऽ सुरक्षित बनल छैन, अखरे चौकीपर बैस किछु लिखि रहल छला। आगूमे लहटगर डिजाइनमे चामुण्डा महात्म रखल रहैन। गेटसँ भीतर होइते चिन्ह गेला। चिन्हते उठि पत्नी हाथक चाह हाथमे पकड़बैत दोसर हाथसँ बाँहि पकैड़ बैसबैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"दू कप चाह आरो नेने आउ, पानियोँ पीब।"

डाक्टर श्रीपति सिंह, मवेशी डाक्टर छैथ। दस गोरेक बीच रहैबला पेशा छैन्हे। तँए केतौ जाइसँ परहेज नहियेँ छैन। मुदा जइ परिवारसँ जुड़ल रहल छैथ, तइसँ भिन्न परिवारिक ढाँचा बनौने छैथ। नीक वेपारक संग ट्रेक्टर सेहो समांग रखने छैन...।

खाइएकाल भाय, अराम करैक जगह सेहो देखा देलैन मिसियो भरि शंका नै रहल जे काज-उदेमक परिवार छी, नीक जकाँ अराम कएल हएत की नहि। जहिना दिन नकोर तहिना अपनो काजो नकोर बुझि पड़ल।

दू बजे नीन टुटिते, ऐगला गर अँटबए लगलौं। अपना ऐठाम तँ छी नै जे सड़कपर तक कुरते पहिरैत जाएब, आनठाम छी, बिनु घरवारीक विचारे निकलियो तँ नहियेँ सकै छी। मुदा भाय पीठपोहू। नीन टुटिते कलपर गेलौं। जे ओ देख लेलैन। बेटाकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"चाह नेने आबह।"

चाह पीब अपन समांगकेँ कहलिऐ-

"फल्लाँसँ मोबाइलपर सम्पर्क कर ते।"

मुदा सम्पर्क नै भेने एकटा काज- कथा गोष्ठीक हकार देब-हूसि गेल। तीन-चारि घन्टा समए अछि। दरभंगा-सहरसाक पुलपर जाइ-अबैमे चारि-पाँच घन्टा समए लगत। अनभुआर रस्ता अछि। बिनु संगियेँ आरो बेसी समए लगत। भातीजकेँ कहलिऐ-

"बौआ, पुल देखैक मन होइए।"

मुदा ओहो सुतिहार लोक, अपन दियादी[28]मे एकटा परिवारसँ काजक रूसा-फुली। रूसा-फुली ई जे ने हम कोनो काज करए कहबै आ ने ओ बिना किछु कहने करतै। ओना परिवारिक सम्बन्धमे कमी नहि। गीत-नादसँ खाइ-पीबै धरिक छैहे...।

भातीज बाजल-

"काका, फल्लाँ छुटनगर अछि। अपना गाड़ियो छै आ सभ किछु देखलो छइ।"

पुछलिऐ-

"काजक घर छी, केते रंगक काज हेतह किने, तखन समांगकेँ बरदाएब नीक हएत?"

ओना भातीजो खोलि कऽ नै बाजल जे दुनू गोरेक बीच अनोन-विसनोन अछि। साढ़े तीन बजे पुल देखैले तैयार भेलौं। तैयार होइते पुछलिऐ-

"बौआ, केते समए अबै-जाइमे लगत।"

छीपगर लोक, समैक महत बुझैत नै, धड़फड़ा कऽ बाजल-

"किरिण उगले घुमि कऽ आबि जाएब।"

ओना अपनो बुझल जे दू घन्टासँ बेसी एक पीठमे लगैए। तैपर

[28] तीनू ममियौत भाइक परिवार बीच

देखबो-सुनबोक अछि। गाड़ी-सवारी छीहे जँ कहीं रस्तामे गड़बड़ाएल तँ आरो बेसी लगि सकैए। मुदा दोखसँ बँचैक रस्ता तँ भेटिये गेल। घरवारी किरिण उगले घुमि अबैक बात बाजि गेल अछि। चारि गोरे विदा भेलौं।

कमलाक पछबरिया छहर पकड़ने रसियारी पुल टपि कमलाक पुबरिया छहर टपि कोसीक पछबरिया बान्ह पकैड़ दछिन मुहेँ विदा भेलौं। उभर-खाभर रस्ता, खरंजा, कखनो गाड़ीक चालि अपन गति नै पकैड़ सकल। पुलसँ करीब पाँच किलो मीटर उत्तरे किरिणो डुबि गेल। गाड़ीक एकटा पार्ट सेहो टुटि कऽ खसि पड़ल! अकासमे बगुला सबहक पतियानी चलए लगलै।

दस डेग आगू, कनियेँटा बजार। बजार की पान-सातटा खढ़क घर दू-तीनिटा पजेबाक घर। चाह-पानसँ डीजल, पेट्रोल साइकिल, मोटर साइकिलक पार्ट-पुरजा भेटैत। पार्ट खसिते गाड़ी रूकि गेल। पोता गाड़ी चलबैत तँए किछु बजैक खगते नहि। गुड़कौने एकटा मिस्त्री ऐठाम पहुँचल। थोड़ेक आगू कोसी बान्हक बगलेमे थाना। मिस्त्री मोटर साइकिल देख बाजल-

"पार्ट भेट जाएत। अपना लग नै अछि। आनि कऽ लगा देब।"

पुछलिऐ-

"केते समए लगत?"

मनमे रहए जे पान-सात मिनटमे जँ काज निपैट जाएत तँ पुल देख लेब, नै तँ घुमि जाएब। जैठाम आएल छी ओ पहिल काज भेल। मन गुन-धुन करिते रहए कि पोता कहि देलकै-

"जल्दी आनि कऽ लगा दिअ।"

मिस्त्री साइकिल लेलक, दोकान विदा भेल। मनमे उठल अपन

काज, जे अनका हाथक नै अछि, समैक संग बन्हा सकैए, मुदा दोसरा हाथक काज केना बन्हाएत। हँ बन्हाएत जँ काज भरि समए उपयोग करए, मुदा काजो तँ बेठेकान भाइये जाइए। ओ होइए अनुभवी आ अनाड़ीक दुआरे। जेकरा इन्जिनक जेते जानकारी रहत ओकर काज ओते असान हएत जइसँ जल्दी हएत आ जेकरा जइ हिसाबे जानकारी रहत ओकरा ओइ हिसाबे समए लगत...।

अपन कार्यक्रमक सम्भावना क्षीण हुअ लगल। मन मानि गेल जे आब पुल नै देख हएत। जखन पुलो लग नै पहुँच पाएब तखन महपुरा तँ आरो आगू अछि। मुदा उपाइए की अछि? गाड़ीक पार्ट आनैमे मिस्त्रीकेँ दस मिनट समए लगलै। तैबीच तीन-चारिटा धिया-पुता कोनो खत्ता उपैछ, छिपलीमे माछ नेने, सौंसे देह थाल-लागल, टपैत रहइ। एकटा बाजल-

"हमरा बेसी गैंचीए भेल?"

करीब बीस मिनटमे गाड़ी ठीक भेल। पैसाक हिसाब फड़िया पोता बाजल-

"भऽ गेल।"

ओना तीनू संगी नवतुरिया रहए, काज[29]पर नजैर नै गेलै, मुदा अपना मनमे हुअए जे जँ घुमियौं जाइ छी तैयो, दू घन्टासँ बेसीए समए लागत, जँ आगू बढ़ै छी तँ आरो बेसी समए लगत। एहेन स्थितिमे की कएल जाए..?

पुछलिऐ-

"आब की करबह?"

अपना मनमे रहबे करए जे आब फेर कहिया आएब कहिया नै,

[29] बिआहक काजपर

पुल देख हएत की नहि। तैसंग ईहो हुअए जे अपन दोख नै लगा गाड़ियो आ समांगोक दोख लगा सकै छी। भरि राति बिआहक धमगज्जर तँ होइते रहत। तहूमे हम ऊपरी छी, कोनो कि घरवारी छी जे नै रहने किछु खगतै। जँ दुनू काज भऽ जाइए तँ बेसी नीक हएत...।

कहलिऐ-

"आगू केतौ बेसी समए नै लगबिहऽ। जाइकाल गाड़ीए सँ टपि जाएब अबैकाल पएरे-पएरे देखैत-सुनैत आएब।"

विदा भेलौं। पुल टपि पुबरिया बान्हपर आबि हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे रसियारीसँ दछिन जहिना देखैत एलौं तहिना ईहो इलाका अछि। कहलिऐ-

"आब आगू बढ़ब, माने कारू बाबाक स्थान छोड़ि दहक। बुझल जेतै आगू। तोरा सभकेँ गाड़ी संगे पएरे चलैमे दिक्कत हेतह, तँए बढ़ि जाह, पाछूसँ अबै छी।"

देखैक मन सभकेँ रहइ। गाड़ी स्टार्ट केने पएरे-पएरे ओहो सभ चलल। पुल टपि पछबरिया बान्ह लग आबि गेलौं बगलमे पच्छिम कमलाक पेटमे दूटा पुल बनैत, निच्चाँ देने रस्ता, दस-पनरहटा दोकान। जेनरेटरक इजोतसँ पुल तक इजोत। ममियौत पोता बाजल-

"बाबा, जइ रस्ते एलौं तेकरा छोड़ि दइ छिऐ, दोसर रस्तासँ जाएब, लग हएत।"

ओना अपनो मन देखैक रहए मुदा अन्हारमे देखबे की करब। तखन जँ लग होइए तँ जल्दी पहुँचब, नीके भेल। कहलिऐ-

"आगूमे केतौ धार-धूर ने ते अछि। एहेन नै हुअ जे घुड़म कऽ फेर आबऽ पड़ए?"

ओ दोकानदार सभसँ पुछि नेने रहए। भाँज लगि गेल रहै जे धारमे बाँसक पुल अछि। दू पहिया गाड़ियो सभ टपैए। विदा भेलौं। दूटा पुल कमलामे बनैत रहै, दिन-रातिक काज तँए ट्रेक्टर सभ रस्ता जाम केने। कहुना-कहुना टपि बाँसक पुल लग एलौं। लोक सभकेँ पएरे पार होइत देखिऐ, मुदा एकोटा गाड़ी नहि। सभ थकमका कऽ पूवारि भाग ठाढ़ रही। पच्छिमसँ घटवार देख बाजल-

"आबह ने, गाड़ी टपै छइ।"

चारू गोरे पार हुअ लगलौं। मचकी जकाँ पुल डोलैत। पार होइते चारू गोरेक संग दुनू गाड़ीक चालीस रूपैआ मंगलक। जेबीसँ निकालि ममियौत पोता घटवारि दैत कहलक-

"हम फल्लाँ गाम जाएब, फल्लाँ हमर कुटुम छिआ, काल्हि भोरे हुनका संग केने अबै छी, पंनचैती बैसैबह।"

घटवार बुझि गेल। ओ सभ साली दइ छैथ। जइसँ आबा-जाहीमे कोनो बाधा नहि। घाटो ठीका लगल। अनाड़ी-धुनाड़ीसँ मनमाना पाइ लइ छइ। मुदा नाओं सुनिते घटवार पैसा घुमबैत बाजल-

"पहिने किए ने कहलह।"

अन्हार राति, गाड़ीक इजोत छुहिया, अगल-बगल किछु ने देखैत। मुदा कमलाक पछबरिया छहरक दशा एहेन जे केतौ गाड़ी उनैट सकैए। मुदा बँचैत-बँचैत आठ बजे मनसारा पहुँच गेलौं। ऐबते पुछलिऐ-

"बरियाती सभ नै एला हेन?"

"नहि।"

जान बँचल, मुदा गाड़ीक झमारसँ बुझि पड़ए जे एको क्षण ठाढ़

भेल नै रहल हएत। फरिकक दरबज्जा, जे खाली रहै, देखबैत घरवारीकेँ कहलिऐ-

"ताबे ओइ दरबज्जापर जाइ छी कनी अरामो करब।"

दरबज्जापर ऐबते कहलिऐ-

"आब घुमि कऽ ओइठाम अखन नै जाएब। एतै खाएब-पीब-सुतब। ओइठाम भिनसर जाएब।"

संजोग नीक बैसल। नीक ई बैसल जे मने-मन विचार उठल, भने एके दिने दुनू परिवारक मोजर भऽ गेल। नै तँ काल्हि अनेरे रोका जाएब। नओटा भातीज[30]मे दुनू जेठ भातीजक परिवार। दुनूक परिवार बीघा भरि हटल। अँगनाक धिया-पुतासँ चेतन धरि बरियातीक भाँजमे। मुदा दुनू भाँइक आँखि कमजोर रहने दुनू गोरेकेँ बरियातीक सुआगतसँ छुट्टी घरवारी दिससँ भेट गेल। छुट्टीओ अनिवार्य छल, दूकेँ पाछू दू आदमी हाथ पकैड़ बरदाएल...।

दरबज्जापर बैसते कहलिऐ-

"बौआ, एतै खेबो करबह आ अरामो करब?"

ओहो जेना पाल-पाल कऽ पौलक। लगले पुतोहुकेँ कहलक-

"पहिने चाह बनौने आउ। काका एतै खेबो करता आ सुतबो करता। भने अँगना-घरक ओगरवाहियो हएत।"

भानस भऽ गेल रहइ। रोटी-तरकारी आ दूध। मुदा तैयो चाह आएल। चाह पीबैत पुछलिऐ-

"आँखि बेसी गड़बड़ भऽ गेल छह।"

भातीज बाजल-

---

[30] ममियौत भातीज

"हँ, कहाँ केतौ जाइ छी। भगवान कोनो चीजक दुखो-तकलीप नहियेँ देने छैथ। दरबज्जेमे लेटरीन बना नेने छी, आगूमे कलो अछिए। बस एतबे दूरमे भरि दिन भरि राति रहै छी।"

कहलिऐ-

"आँखिक इलाज किए ने करा लइ छह?"

बाजल-

"सभ कहैए, अखन नीक जकाँ नै पकलह, तँए अखन आपरेशन नै हेतै?"

सुनि कऽ आश्चर्य भेल। आश्चर्य ई भेल जे आइक मेडिकल-दुनियाँ केतए-सँ-केतए आगू बढ़ि गेल आ ई सभ तैयो कष्ट काटि रहल अछि..!

कहलिऐ-

"के कहै छह जे अखन ऑपरेशन नै हएत। डाक्टर कहै छह आकि आन?"

बिना किछु छिपौने भातीज बाजल-

"अपनो पलिवारक आ आनो-आन कहैए।"

कहलिऐ-

"सभ ठकै छह। ओकरा सभकेँ या तँ बुझल नै छै या तँ झूठ बजै छह। अखन ते बिआह लाधल छह, काज सम्पन्न हुअ दहक। तेकर लगले पछाइत दरभंगा जा कऽ ऑपरेशन करा आबह।"

चाह पीविते रही कि खाइक आग्रह भेल। कहलिऐ-

"अदहा घन्टाक पछाइत खाएब।"

मुदा ओ सभ बिआहकेँ परिवारक काज बुझि एको क्षण समए

गमाएब पहाड़ बुझैत। मुदा भेल ई जे जइ कोठरीमे रही तहीमे सभ किछु साँठि झाँपि कऽ रखि सभ कियो बरियातीक आँगन चलि गेली।

दोसर दिन भोरे नीन टुटि गेल। मन छटपटाए लगल। जहिना कहल जाइ छै 'साँइक राज अपन राज बेटाक राज मुँह-तक्की' सएह भेल। अपने भोरे चाह बना पीबै छी, मुदा केतए? ऐठाम तँ से नै हएत। तैयो मुँह-हाथ धो पान खा ओछाइनेपर बैसल रही कि एक गोरे आबि गेला। ऐबते दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम केलैन। ओ भातीजक समैध, मंगरौनी-पुल लगक गामक रहनिहार। हुनका पता चलि गेल रहैन। ऐबते कहलैन-

"अपने, घर लगसँ घुमि एलौं आ हमरा कोनो खबरियो ने!"

कहलैन तँ ठीके मुदा समए दुआरे की कएल जाएत। अपन बात कहैत पुछलयैन-

"अहाँ इलाकामे खेती होइए की नै?"

पुछैक कारण छल सगतैर बाधमे पानि लागल आ पानिक खढ़सँ खेत बोनाएल देखने रहिऐ...।

कहलैन-

"खूब खेती होइए। सालमे एक्केटा उपजा हाथ लगैए। चारि-पाँच मास खेत जगैए, तहीमे मकैक खेती आ बैशक्खा तरकारी सेहो करै छी।"

पुछलयैन-

"मकै केना उपजैए?"

"पाँच मनसँ आठ मोनक कट्ठा धरि। एक तँ साल भरि खेत खसल रहल तैपर तेते खाद दइ छिऐ जे मनसम्फे उपजा होइए।"

मने-मन हिसाब जोड़लौं तँ बुझि पड़ल जे हमरा सभसँ बेसी

उपजा हिनका सभकेँ होइ छैन...।

पुछलयैन-

“तरकारी की सभ उपजबै छी?”

“माघ-फागुनमे रामझिमनी, करैला, कदीमा, सजमैन, खीरा, बतिया, काँकैड़, तारबुज इत्यादि लगा दइ छिऐ, तेते फड़ैए जे तोड़ैत-तोड़ैत नाकोदम भऽ जाइ छी। रामझिमनी दुआरे हाथक आँगुर सभ घबाह भऽ जाइए। कदीमा रखैबला होइए तँए रखि लइ छी, मुदा दोसर तँ रखैबला नै होइए, तँए तोड़ैमे नाकोदम भऽ जाइए।”

“तखन तँ खूब आमदनी होइत हएत?”

“से तँ होइए, मुदा गामक लोक जे परदेश चलि गेल, तइसँ गामक अदहासँ बेसी खेत खसले रहि जाइए। आ काजो खगैए।”

“गाममे दूध-दहीक की हालत अछि?”

“हालत! मकैक उपजा तँ माले-जालक ने भेल। तेते मकैक घासो आ सालो भरिक खोराक भऽ जाइए जे कोन दरबज्जा एहेन अछि, जेकरा खुटापर महींस नै छइ।”

कहलयैन-

“अखन जाड़ मास छी, तहूमे अहाँ सभ कोसी कातक छी, हम सभ ठनक परहक पानि पीनिहार छी, तँए अखन नै मुदा सुखार समैमे जरूर आएब।”

अपनो मन कछमछाइत रहए, अढ़ाइ-तीन घन्टाक रस्ता अछि। जखन काज नीक जकाँ सम्पन्न भाइये गेल तखन अनेरे रहबो समए गमाएब हएत। चाह पीब जलखै कऽ गाम अबैक विचार केलौं।

OO

17 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या- 5131

खलओदार

तिला-सकराँइत पाबैनसँ एक दिन पहिने, पाबैनक ओरियानमे लगल रही। आइए नै ओरिया लेब तँ काल्हि पाबैन केना हएत? तहूमे तेहेन मेठनियाँ पाबैन अछि जे केतबो धड़फड़ी करब तैयो पार लगत कि नहि। पाबैनो तँ पाबैने छी। तहूमे तिला सकराँइत! पाबैन नै पाबैनक गाछ छी।

किछु एहनो पाबैन होइए जे दिन-रातिकेँ एकरंग बना दइए, किछु एहनो होइए जे दिनकेँ नमहर बना राति कपैच लइए आ किछु एहनो तँ होइते अछि जइमे दिने कपचा कऽ घपचा जाइए। एक दिस शुर-शुर, तँ दोसर दिस मुर-मुर। जे दुनू एके घाटपर आबि पबैए...। जँ आइए सभ किछु नै ओरिया कऽ रखि लेब तँ काल्हि ओरियाएब आकि बनाएब-सोनाएब आकि पाएब? ई पहपैट तँ बीचमे अछिए।

मन मानि धकेल कहलक, ‘काल्हि तँ भोरेसँ तजतरीन तरि-बगहारि, भोर मुर-मुर दुपहर शुर-शुर आ साँझ फल पेब पाबैनक विसर्जन करब किने? मने-मन गुनधुनो करी आ प्राप्ति[31]क गरो अँटबैत रही। तही बीच रस्ता दिससँ दौगल आबि बारह बर्खक भातीज बाजल-

[31] पाबैनक ओरियानक वस्तु

“काका, निरजल बाबाकेँ देखैले नै गेलिऐन, ओ तँ...।”

फटफटहाक बोलक लहर जेना ठमैक गेलइ। ठमैक ई गेलै जे ठनका जकाँ जेते जल्दी बाजए चाहै छल से नै भऽ पबै छेलइ। होइतो अहिना छै, एक्के बेर बिजलोको आ ठनको उठि कऽ ठाढ़ होइए, मुदा रस्तामे आगू-पाछू भेने बिजलोका पहिने चलि अबैए आ ठनका पछाइत पहुँचैए...।

पुछलिऐ-

“बाउ, कोनो हलतलबी..?”

ई बुझि बजलौं जे साल भरिक बच्चाकेँ जहिना माए, बाबू, भाए इत्यादि एक शब्द कहि सिखबैए आ जेकरा ओहो, ओहिना भात-रोटी कहि अपन विचार व्यक्त करैए। तैबीच व्याकरण जनैमते रहैए। व्याकरण आएल नै रहै छै, पछाइत अबै छइ।

मुहसँ जहिना निकलल, तहिना ओहो माने भातीजो लोकैत बाजल-

“अब-तबमे छैथ?”

फटफटहाक बोल सुनि मन बेथा गेल। बेथाए लगल जे पाकल जअमे कहीं पाथर ने खसए। अब-तबमे छैथ जँ कहीं देरी भेल आ बिच्चेमे मरि गेला तँ अपन मन हुनके मनक पाछू ने बोन-झाड़मे औनाइत फीड़त।

तइसँ नीक जे पहिने हुनके देख आबी। मुदा लगले भेल जे ओइठाम जाएब आ बिच्चेमे जँ परान छुटि जेतैन तैठाम तँ समांग बनि हमहीं रहबैन, तखन जँ असमसानक जोगार केने बिना घरपर केना घूरि कऽ आएब? मुदा जँ जीबैतमे अपन सम्बन्धक हिसाब-किताब नै फरिछा नेने रहब तँ देखते छिऐ केहेन फड़ेबी सभ अछि जे समाजिक

सम्बन्धकेँ तहस-नहस कऽ संस्कृति मेटबैक चालि पकैड़ नेने अछि।

मनमे भेल जे पत्नीकेँ कहि दिऐन जे हमर कोनो भरोस नै करब, जँ अपनो-ले आ परिवारो-ले पाबैन करए चाहै छी तँ अपन ओरियानमे लगि जाउ। मुदा कहबो केकरा करबै, सभ तँ अपने ताले बेहाल अछि, तैबीच चुपे रहब नीक। विदा भेलौं...।

निरजल काका ओछाइनपर, जाड़ दुआरे मोटगर ओढ़ना ओढ़ि मुँह उघारि पड़ल आँखि मुनने छैथ। फक-फक साँस चलै छैन। झूकि कऽ मुँह लग जा कहलयैन-

“काका, काका..?”

निरजल काका आँखि खोललैन। शकल-सूरतसँ बुझि पड़ल जे लगले तँ नै मरैबला छैथ मुदा बेसी दिन टिकबो नहियेँ करता। सौंसे देहक ऊपरका चमरा खोंइचा जकाँ तेना ओदैर गेल छैन जे अमेरिकन गोराइक रंग पकैड़ नेने छैन। मछियाहा मासमे माछियो हरान करिते छैन जइसँ बैशाखोमे चद्दैर ओढ़ने छैथ। ओना निरजल काकाकेँ शिक्षा-प्रेमी कहियौन आकि विद्या-प्रेमी, ज्ञान-प्रेमी कहियौन आकि वुद्धि-प्रेमी, से तँ छैथे। देहक रोग तँ दैहिक छी, मुदा मनक रोगी नै छैथ। निरजल काका बजला-

“बौआ, आब तँ चलचलौ भेलियऽ, जे दिन छी से दिन छी मुदा मनमे एकटा प्रश्न रहि गेल।”

कक्काक ‘प्रश्न रहि गेल’ सुनि नजैर चौकन्ना भेल। भेल ई जे अन्तिम अवस्थामे काका पड़ल छैथ, जँ पुछि दिऐन जे की, आ तही बीच कहीं दम टुटि जानि तखन उतरी केकरा गरदेनमे पड़तै..?

मन छह-पाँच करए लगल। फेर भेल जे मरै बेरक प्रश्नक उत्तर सुनबैबला के रहता? फेर भेल- किछु दिनक मेजमान छैथ, दोसर दिनक समए लऽ लेब आ ठेकना कऽ आएब जखन मरि गेल रहता। ने

किओ पुछनिहार आ ने किओ कहनिहार, हिसाब राफ-साफ। जखने महाजन साफ, तखने खौदका राफ...।

दुनू हाथे छातीकेँ पकैड़ कहलयैन-

"की प्रश्न रहि गेल काका?"

बजला-

"बौआ संस्कृत भाषा समासक भाँजमे पड़ि दुरूह भऽ गेल, जइसँ आमजनकेँ बाधा उपस्थित केलक। मुदा भाषाक भीतर जे जिनगीक कला पद्धति नुकाएल अछि, जैपर सभ ठाढ़ छी ओकर की हएत? भँसियाइत लोक केमहर जाएत?"

कक्काक प्रश्नक समर्थनमे मुड़ी झुला देलिऐन। मुदा पछाइत मन पड़ल जे आगूमे तँ हमहीं बैसल छिऐन किने, तँए जवाब तँ हमरे दिअ पड़त। उठिते मन सुक-पाक करए लगल। हुअए जे अखने मरि जइतैथ तँ बेसी नीक होइत, किओ बुझबो ने करैत, जे कका की कहलैन। फेर भेल जे एहेन समए झूठ-फूइस नै बाजब। कहलयैन-

"काका, काल्हि पाबैन छी, मन तइ दिस ओझराएल अछि। पाबैनक पछाइत आएब आ उत्तर देब। ताबे उधारी रहल।"

निरजल काका बजला किछु ने मुदा नजैरसँ बुझि पड़ल जे मन सोगाएल जा रहल छैन।

ОО

19 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या- 735

मनुखदेवा

जहिना रामभूमि अयोध्यामे रामनौमी दिन रंग-रंगक भेषधारी तहिना बिआह-पञ्चमियोँ आ रामनौमियोँमे जनकपुर पहुँच एकरंगा-सँ-सतरंगा धरि अपन पूजन करै छैथ आ तहिना गामो-घरमे ने गहवर अछिए। ने गुहरियाक कमी छै आ ने देवासँ मनुखदेवाक गहवरक। गामो तँ गामे छी थानाक जड़ि, जिलाक जड़ि, राजक जड़ि, देशक जड़ि...। ओना पहिलुको देवा-देवी घर नै रहने मने-मन छला आब इन्दिरा आवासमे घर भेटने घराड़ियो भेट गेलैन, तँए गहवरसँ गुहारि-स्थल धरि अनेको दसगरदा स्थल बनियेँ गेल अछि, जइसँ रंग-बिरंगक पाबैनो-तिहार होइते अछि। गामे छी, गुहरियाक कमी रहबे ने करत मुदा जँ गुहारिक गहवर नै रहत तँ गुहारि केतए हएत? तहूमे तेते लोक कामाख्या-सीखि भऽ गेल अछि, जेकरा बिनु गहवरे बास केतए हएत।

अनुकूल मौसम बनने जहिना अकासमे टिकुलीसँ लऽ कऽ चिल-चिल्होरि होइत सात जोजन देखैबला गीधोक गीत कहियौ आकि चिल्होरिक टाँहि कहियौ, अछिए। भलेँ भेद ई होइ जे कोनो खेत-चासै जकाँ पाहि लगा-लगा उड़ैए तँ कोनो केमहरसँ उड़त आ केमहर जाएत, तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा साँझ-भोर बगुला पतियानी लगा पूबसँ पच्छिम आ पच्छिमसँ पूब जाइते अछि, जेबे करत...।

तहिना अनुकूल समाजिक परिवेश बनने तीनटा गहवर आने गाम जकाँ हमरो गाममे अछिए। ओना हमरो गाम सन दोसर गाम सेहो अछि, नम्हरो आ छोट तँ अछिए। नमहर-छोट ऐ मानेमे जे आन गाममे मनुखदेवोक गहवर केते रंगक अछि आ विसहरो वा आनो तहिना अछि। जइसँ केतौ गुण बेसी अछि तँ केतौ मात्रा बेसी अछि। मुदा अछि सगतरि, कनी कम कि कनी बेसी...।

ओना गाममे अछि तीनटा गहवर मुदा जमुना धाइमकेँ गहवर नै छैन तँए जैठामसँ गुहारिक डाली जमुना धाइमकेँ अबै छैन तहीठाम जा गुहारि करै छैथ। कहैले सौंसे गामक लोक कहलकैन जे सालतनी गहवर बनने बेसी लोकक गुहारि हेतइ, जैपर ओ कान-बात नै देलखिन। मनमे एकटा नान्हिटा कीड़ी घोंसिया गेल रहैन...।

कीड़ी ई घोंसियाएल रहैन जे जखन ओ समरथाइ वयसमे अबैत रहैथ, बिआह तँ बच्चेमे भऽ गेल रहैन मुदा दुरागमन हाले-सालेमे भेलैन, ...पत्नी बिमारीक चपेटमे पड़ि मरि गेलखिन। होइतो अहिना छै जे किओ, भूतक चपेटमे तँ किओ चुरीनक चपेटमे, किओ डाइनक चपेटमे तँ किओ जोगिनक चपेटमे तँ किओ बिमारीक चपेटमे पड़ि मरिते अछि। पत्नीक प्रीत विपरीत बना देलकैन। विपरीत ई भेलैन जे मन कहलकैन-

'स्त्रीजाति बड़ टोनाह होइए, कनियोँ किछु भेल आकि टुटिये-फुटिये जाइए..!'

मुदा पुरुखो तँ पुरुख छी। अपन सीमा-सरहद छै, अपन इज्जत-आवरू छइ। काल्हि दिन जँ दोसर बिआह करब आ ओहो ओहिना हुअए तखन तँ अनेरे लोक कहए लगत जे जमुना स्त्रीखौक अछि! केना लोक लग मुँह उठाएब, तइसँ नीक जे ने दोसर बिआह करब जे दोख लागत तइसँ नीक असगरे रहब। जखन असगरो रहने परिवार

होइते छै तखन अनेरे किए नून-तेलक भाँजमे पड़ि मगजमारी करब। कमा कऽ आनब, बना कऽ खाएब, चैनसँ रहब, भोरे जाएब। मुदा कलंक सँ तँ बँचल रहब...। ओना गहवरो आ गहवरियोक चला-चलती तँ सभ मासमे रहिते छै मुदा आसीनक दुर्गापूजाकेँ किसानक अगहन जकाँ बुझैत। जहिना रंग-बिरंगक गहवर तहिना रंग-बिरंगक भगतो। किओ भगत कहबैत, तँ किओ भगता, किओ धाइम तँ किओ ओझा-गुनी। ओना आसीन मासक चला-चलतीक कारण दोसरो अछिए। ओ ई अछि जे चिड़चिड़ीक घौंदा जकाँ जहिना पाबैन सोहरल अछि तहिना पितरसँ पितराइन आ देवसँ देवा-देवी धरिक आगमन सेहो होइते अछि। तँए आन मासमे वेरागने-वेरागने[32] भाउ करैए मुदा आसीनक दसमीमे कलशथापने दिनसँ जे शुरू करैए से एकेबेर नौमी दिन विसर्जन करैए। मुदा तइ सभसँ भिन्न जमुना धाइमक किरिया-कलाप छैन। ई आनसँ भिन्न छैथ। भिन्न ई छैथ जे धाइम छैथ। मास-मसादि ऐ दुआरे नै करै छैथ, जे अमवसिया-पर्णिमाक ठौर-ठेकान रहितो कतवाहि अछि आ संक्रान्ति मसांत-मसादि बीचमे अछि। तँए जखने जइ कहालीक डाली लगल तखने स्वीकारैत, गुहारि कऽ दइ छथिन। दोसर ईहो छैन जे आन भगता जकाँ ने वेरागनक बाट तकै छैथ, आ ने जगरनथिया बेंत, ने नहा-धो पवित्र भऽ गंगाजलसँ देह सिक्त करै छैथ आ ने दुबि, तुलसी, अच्छतक आशा रखै छैथ...। ओना रंग-रंगक कहालियो तँ अछिए। किओ कोखिया गुहारिक कहाली तँ किओ सुखैनी-टटैनीक, किओ धन-वीतक तँ किओ सर-समांगक। मुदा तैसंग ईहो तँ ऐछे जे कहियो-काल हवा-विहारि उठने चला-चलतीमे कमी-बेसी सेहो होइते छैन। मुदा तइ सभकेँ जमुना धाइम कतवाहि मानि अपन विचारक अनुकूल चलै

[32] सोम, बुध, शुक्र

छैथ। मनो सदिकाल गवाही दइते रहै छैन जे जेकरा देहमे रोग रहत तेकरे ने दवाइ खाए पड़तै। डाक्टर अपन अनुभवक हिसाबे रस्ता देखा देत, मुदा दवाइयो आ पथो-परहेज तँ ओकरे ने करए पड़तै। से जँ नै करत तँ नै करह। जानत अपने बुझत अपने...।

सतमीक सुर्ज पूब दिस उगि गेल। सुर्जेक रोशनीक रोशनाइक रंगमे गाम डुबि गेल। बच्चासँ सियानो आ घरसँ गामो एके रंगमे रंगि गेल। घरे-घरक नेना-भुटका फुलडालीमे फूल लोढ़ि, गोबर-माटिसँ घर-अँगनाक संग देवो-स्थान[33] नीपै-पोतैमे बेहाल। मन्दिरक पुजेगरी फूल-पात जोड़ियबैमे बेहाल, कनीकालक पछाइत बेल तोड़ीक प्रकरण शुरू हएत, पहिने डाली साजि, बेलक गाछ पूजि बेल तोड़ता, जइसँ भगवतीकेँ डिम्हा मूर्तिकारक हाथे पड़तैन। जहिना भगवती स्थानक जयन्ती पीड़ितसँ हरित दिस बढ़ैत तहिना गामक घरे-घरे सेहो बढ़िते अछि। घरे-घरे, परिवारे-परिवार फूल-पातक पूजनक संग गुग्गुल-सरड़-धुमन-अगरवत्तीक सुगन्धसँ गामे महमहए लगल। मुदा गामक गहवर सबहक रंग-रूपमे फीकापन आबि गेल। तेकर कारण भेल जे गनि-गूथि तीनियेँटा गहवर गाममे, तोहूमे एकटा भदवरिया बाढ़िमे खसिये पड़ल जे दोसर बनबे ने कएल, दोसरक भगते बेमार भऽ लहेरियासराय-अस्पताल धेने अछि आ तेसर कोखिया गुहारिक भाँजमे पुलिसक डरे गामे छोड़ि पड़ा गेल अछि। मुदा जमुना धाइमक कारोबार पुरबते छैन। ओना जमुना धाइमक चालियो-ढालि आ किरियो-कलाप आनसँ भिन्न तँ छैन्हे। अस्पताल जकाँ सभ रंगक कहाली जमुना धाइम ऐठाम ऐबतो ने छैन। गनल-गूथल कहालीक आगमन होइ छैन। मुदा से नै भेल, ऐबेर सतमी दिन तेते कहालीक आगमन भऽ गेलैन जे मजबूड़न अपने ऐठाम बेवस्था करए पड़लैन।

[33] सार्वजनिक स्थन

देवी-देवताक आगमन तँ देहपर नै होइ छैन मुदा मनुखदेवाक आगमन तँ होइते छैन...। किरिण लहैस गेल, किछुए पछाइत गुहारिक बेर हएत। जहिना जमुना धाइम अपने गुहारि करैक जोगारमे लगल तहिना कहालियो सभ अपन गुहारि अगुआइ दुआरे पहुँच गेल। दरबज्जाक आगूमे बैस जमुना काका पतियानी लगा कहाली सभकेँ देखलैन। तीन खाड़ीक कहाली बुझि पड़लैन। किछु दैहिक, किछु दैविक, किछु भौतिक। ओना दैहिक आ दैविक कहाली पतराएल रहैन, मुदा भौतिक बेसी रहैन। पहिल कहाली कहलकैन-

"धाइम काका, घरमे उड़ी-बीड़ी लागल अछि। दिन-राति खटै छी, मुदा...।"

यमुना धाइम-

"अपन काजमे खटै छह कि अनका हाथे काज बेचने छह?"

कहाली अवाक भऽ गेल। धाइमक बात बुझबे ने केलक जे अनका हाथे काज केना बेचने छी। मनमे होइ जे भरि दिन काज करिते छी, दिनक-दिन बोइन होइते अछि, तखन बेचने केना छी। गुनधुनमे पड़ल देख यमुना धाइम पुछलखिन-

"चुप किए छह, छुटि गेलह की?"

कहाली बाजल-

"कनी कए मन हल्लुक लगैए।"

धाइम बाजल-

"अहिना हल्लुक होइत-होइत हल्लुक भऽ जेबह। हँसी-खुशीसँ जाह।"

OO

22 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या- 1027

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया, प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-11-7

उकड़ू समय



जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

उकड़ू समय

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ
बालुक ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
सादर समर्पित...

ISBN : 978-93-87675-08-7

दाम : ₹ 251/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

UKROO SAMAY
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

उमेद

काल्हि शिक्षा मित्रक बहाली छी। मने-मन साढ़े उनसैठ बर्खक मननाथ चपचपाइत जे जिनगीक उद्धार भऽ गेल। मनमे रंग-रंगक ललिचगर विचार सभ उगैत रहइ। जइसँ जिनगीक अपेक्षा सेहो बढ़ैत रहइ। केतबो छी तँ शिक्षा विभाग छी ने, एते तँ अजादी छइहे जे वहालीमे उमेरक सीमा-सरहद नै छइ। आन विभाग तँ ओहन अछि जे सभ किछु रहितो माने उपयुक्त उम्मीदवार रहितो काजे ने भेटै छइ। माने नोकरीक उम्र समाप्त भेने नोकरीए ने हएत भलैं काजो रहै आ केनिहारो किए ने रहए।

जँ नियमित छबो मास नोकरी भेल आ तेकर पछाइत जँ निवृतो भऽ जाएब तैयो तँ जाबे जीब ताबे पेंशनक उमेद रहबे करत, निचेन भऽ जाएब। निचेनेटा किए हएब, जहिना आमदनी भेने खरचा-बरचासँ निचेन हएब, तहिना सेवा-निवृत्ति शिक्षकक अपन मान-मरजादा सेहो तँ होइते अछि, सेहो तँ भेटबे करत।

लोक ई थोड़े बुझत जे चालीस बर्ख पहिलुका पढ़लाहा सभटा बिसैर गेल हेता, ओ कि मने हेतैन। ओ तँ यएह ने बुझत जे चालीस बर्खक अनुभवी शिक्षक छैथ। तहूमे बीसे बर्खमे मनुखक पीढ़ी बदलै छै, पीढ़ी की मनुखक शक्लेटा केर बदलै छै आकि आचार-विचार, बेवहार, चालि-ढालि सबहक बदलै छइ। तहूमे तेहेन समए आबि गेल

अछि जे चारि-गोरेकेँ चारि साए रूपैआक बोतल पीआ दियौ, दस घन्टाक पेट्रोल मोटर साइकिलमे दिया दियौ, गामक के कहए जे जिला-जबाड़ घुमि प्रसंशाक पुल बान्हि देत। केतबो सड़ल किए ने होइ, एक नम्बर निरोग सौदा बनि चकचकौआ बजारक चौमैतपर बिकेबे करब! मननाथक मनमे उगना जकाँ उगिते ठोर पटपटाएल-

"यएह छी जिनगी!"

'की छी जिनगी' से तँ नै निकैल सकल, मुदा एते तँ निकलिये गेल जे 'यएह छी जिनगी।'

पचपन बर्ख पहिने पिता-सोमेश्वर- मननाथकेँ संग केने, एकटा रूपैआ नेने, गामेक लोअर प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखा देलकैन। ओइ समए गाम-गामक अपन-अपन हवा-पानि छेलइ। एहनो गाम छल जइमे किछु खास बेकती खानगी शिक्षक रखि अपन धिया-पुताकेँ पढ़बै छला, मुदा दोसर लेल कोनो उपए नै छल। किछु एहनो गाम छल जइमे जातिक बीच स्कूल छेलै, किछु एहनो छल जैठाम समाजक सहयोग[1]सँ शिक्षक राखल जाइ आ जेतए गर लगैन, चाहे कोनो झमटगर गाछ होइ, आकि खढ़-खुट्टाक घर, तेतए शिक्षण कार्य चलै छल। किछु गाम एहनो तँ छेलैहे जैठाम किछु ने छल! मुदा ओहनो तँ छेलैहे जे जँ कियो किछुओ शिक्षा, मात्रिक वा अन्यत्रसँ पाबि अपन खेतियो-बाड़ी करै छला आ साँझू पहर अपन परिवारक बाल-बोधकेँ सोझहामे पढ़ैबतो छला आ दरबज्जाक देबालक खुट्टीपर रामायण, महाभारत रखितो छला आ साँझके पढ़ितो छला। देखा-देखी बाल-बोध सीखिते अछि। जइसँ एक वातावरणक निर्माण सेहो होइते अछि। मुदा से नै, सोमेश्वर जइ स्कूलमे मननाथक नाओं

[1] शनिचरा- सिदहा-पाइ-चाउर-

लिखौलैन, ओइ स्कूलक प्रति समाजक ई धारणा जे दसनामा संस्था छी, दस गोरे मिलि चलत जइसँ दसक बाल-बच्चा पढ़त। परिवारक खर्चक बजटमे अखैन शनिचरा भेल आगू मिडिल स्कूलमे अढ़ाइ रूपैआ, हाइ स्कूलमे चारिसँ पाँच रूपैआ आ कौलेजमे पनरहसँ बीस रूपैआ महिना फीस लगबे करत, तइले बाल-बच्चा किए ने पढ़त। ओना शिक्षकोकेँ ने कोनो बोर्डक आकि युनिवर्सिटीक सर्टिफिकेट रहैन आ ने कोनो सरकारी दरमहे भेटैन। गामक सहयोगसँ स्कूल चलैत। आने विद्यार्थी जकाँ मननाथो गामक स्कूल टपि मिडिल स्कूलमे नाओं लिखौलक। चारि बर्खक पछाइत हाइ स्कूल पहुँचल। अखैन तकक जे सिलेवस छल तइमे बदलाउ आएल। बदलाउ ई आएल जे तीन फैकेल्टीमे पढ़ाइ विभाजित भऽ गेल। अखनेसँ तीन दिशाक बाट फुटत। अपनाकेँ मननाथ तौललक तँ बुझि पड़लै जे सभसँ नीक आर्टे फैकेल्टी अछि। ओना आर्टकेँ कला कहल जाइ छै, जेकर असीम अर्थ अछि। मुदा से नै, जिनगी जीबैक कला। आर्ट रखैक पाछू मननाथक विचार रहै जे साइंस पढ़ला पछाइत गाम-घर छोड़ि बाहर नोकरी करए जाए पड़त, डॉक्टरक जरूरत जहिना अस्पतालमे तहिना अस्पताल गाममे नै, नगर-महानगरमे। तहिना इंजीनियरोक स्थिति अछिए। कौमर्सो तहिना, शहर-बजारक पढ़ाइ छी, तइसँ नीक जे समान्य शिक्षा पाबि कोनो विद्यालयमे नोकरी करब। मुदा ई नै बुझि पेलक जे विद्यालयमे शिक्षकक केते खगतो छइ। बलजोरी थोड़े लोक जा कऽ पढ़बए लगत। जइक चलैत बी.ए. केला पछाइत मननाथ बेरोजगार बनि गेल। ने खेती-गिरहस्ती करै-जोकर अपनाकेँ बुझै आ ने केतौ नोकरी भेलइ। खेती-गिरहस्ती तँ बिनु पढ़ल-लिखलक काज भेल, से केना करैत। मुदा सोलहन्नी बैसबो केना करैत। दू बर्ख तक घरपर बैसला पछाइत एकटा गौआँक संग मननाथ कोलकाता गेल। ओतौ तहिना, मनसूबा बान्हि गेल रहए जे

कोनो ऑफिस आकि आने ठाम लिखा-पढ़ीक काज करब मुदा से भेल नहि। जेकरा संग गेल रहए ओ बड़ा-बजारमे ठेला चलबैत। ओना पेशा अपन स्वतंत्र रहै मुदा चिन्हा-परिचए कोनो ऑफिस आकि कोनो कारखानादारसँ नै रहने मननाथकेँ काजक कोनो जोगाड़ नै लगा सकल।

पनरह दिन बैसला पछाइत मननाथक मनमे गाम घुमि जाएब उठलै। मुदा अनेको प्रश्न मनकेँ घेरि लेलकै। प्रश्न ई जे गामोमे तँ अहिना गोबर-माटि जकाँ पड़ले रहै छी, फेर होइ जे गाममे कमसँ कम अपन खेत-पथार रहने खाइ-पीबैक जोगाड़ तँ अपन ऐछे, मुदा ऐठाम अनका सिरे केते दिन रहब। फेर होइ जे मनुख छी, दूटा हाथ अछि दूटा पएर अछि, तखन कोन काज एहेन अछि जे नइ कऽ सकै छी। अनेरे देह खसौने छी। देह कि खसौने छी जे लोके तेहेन अछि जे अनेरे कीचारत जे जे काज बिनु पढ़नौं लोक करैए तइले एतै पढ़ैक कोन काज छइ। अनेरे एते खरचो आ एते समैयो लोक किए गमौत। मुदा गामो जे जाएब से गाड़ीक माशूल आ बटखरचो तँ अपना नहियेँ अछि। एक तँ वेचारा राधेश्याम अबैकाल संगे नेने आएल, अपना डेरापर रखि पनरह दिनसँ खुएबो-पीएबो करैए, तैपर सँ घुमतियोक खर्च केना मँगबै। ऐठामक बोली-वाणी, चालि-ढालि नै बुझै छी जे असगरो घुमि-घुमि नोकरी ताकब। दोसर, जे संगे अनलक ओकरा ठेलाबला छोड़ि दोसर चिन्हारए नै छै जे केतौ गर धराएत।

चिन्तित बैसल मननाथ मने-मन विचार करैत रहए जे आब की करब? दिनक एगारह बजैत। दिनुका भानस करै दुआरे राधेश्याम तीसीक बोरा कारखानामे पहुँचा, लफड़ल डेरा आएल तँ मननाथकेँ चिन्तित बैसल देखलक। देखते राधेश्याम बाजल-

"समैयेपर आबि गेलौं। अखैन नहाएब नै, पहिने हाथ-पएर

धोइ, बरतन-बासन अखारि चाह बनबै छी। चाह पीब भानस करब। मनो असकताएल अछि।"

राधेश्याम बजबो कएल आ बरतन नेने रोड परहक टंकी दिस विदाहो भेल। मननाथकेँ मनमे उठलै जे राधेश्यामकेँ कहि दिऐ जे आब ऐठाम नै रहब, चलि जाएब। मुदा लगले भेलै जे अखैन वेचारा रौदमे तबधल आएल अछि, कोनो कि अगुताइ अछि, पछाइते कहबै। बरतन-बासन अखारि, चुल्हि पजारि राधेश्याम चाह बनौलक। चाह बना दुनू गोरे पीबए लगल। दू घोंट पीला पछाइत राधेश्याम बाजल-

"बौआ, मन लगैए की नहि।"

मननाथ बाजल-

"गौआँ-घरूआ जँ दुनियाँक कोनो कोणमे एकठाम रहत तँ ओ गामे जकाँ भेल, तखन नीक किए ने लगत। सभ दिन पनरहो-बीसो गौआँ एकठाम बैस हब-गब, हँसी-मजाक कैरते छी, तखन गाम आ एतएमे अन्तरे की भेल?"

बजैक वेगमे मननाथ बाजि गेल मुदा लगले मनमे उठलै, बैस कऽ समए बिताएब आ काजमे समए लगा बिताएब एके भेल? काजमे आकर्षण-विकर्षण दुनू छइ। जे मनकेँ अपना दिस खिंचबो करै छै, आ ठेलबो करै छइ। जइसँ मन लगबो करै छै आ उचटबो करै छइ। मुदा ऐठाम तँ हमरा-ले विचित्र स्थिति अछि। अपने जैठाम जा काजक गर लगाएब तैठाम भाषाक दूरी अछि। तहूमे तेहेन एकचलिया लोक अछि जे जेहने बोली-वाणी तेहने चालि-ढालि। दुनूक अनाड़ी छी, जेकरा संग आएल छी ओ तँ हमरोसँ बेसी अनाड़ी अछि, ओ की बुझत जे कोन काज करैबला छी। चाह पीविते राधेश्याम बाजल-

"भानसमे की देरी लागत। बारह बजेसँ पहिने खा-पी निचेन भऽ जाएब।"

मननाथक मनक बेथा जेना उमड़ि पड़लै। बाजल-

"राधेश्याम भैया, गौआँ रहैत अहाँ बहुत केलौं। मन नै लगैए, काल्हि चलि जाएब।"

मननाथक बात राधेश्याम नीक जकाँ नै बुझि पेलक। बुझियो केना पबैत। बाजल- "किए?"

बिना किछु लाथ केने मननाथ बाजल-

"काज करैले आएल छेलौं सएह ने भऽ पाबि रहल अछि, तखन रहबो केना करब।"

राधेश्याम भानसो करैत रहए आ मने-मन मननाथक प्रश्नपर विचारो करए लगल। ठेकनौलक तँ नजैरपर अठारहो गौआँ ठेलाबला पड़लै। सभ अपन-अपन भानस अपने करैत अछि। चारि-पाँच गोरे जे बेटाकेँ पढ़बैले रखने अछि ओकरा तँ आरो बेसी परेशानी होइ छइ। जँ अठारहो गोरेक भानसोक भार आ चारू-पाँचो विद्यार्थीकेँ पढ़बैयोक भार भऽ जाइ तँ दुनू काज हएत। मननाथकेँ काजो भेट जाएत आ हमरो सबहक जिनगी बन्हा जाएत। केता दिन अपनो भुज्जा-भर्ड़ी फाँकि कऽ रहै छी।

बाजल-

"मननाथ बौआ, हमर विचार पसीन हएत?"

"की?"

"जखन काज करए एलौं तखन काज तँ अपने ठाढ़ कऽ लेब। अठारह गोरे गौआँ छी। बेठेकान खाइ-पीबैक अछि। अहाँ अठारहो गोरेक भानसक भार उठा लिअ। अपनो खाएब आ दू पाइ बँचियो जाएत।"

मननाथक मनमे उठल, भनसियाक काज! मुदा लगले बदैल

गेल। बदैल ई गेल जे गामोमे जे भोज-काज होइ छै तइमे भानसो कैरते छी आ परैस कऽ सेहो खुऐबते छी। तखन..? मन मानि गेलइ। बाजल-

“हँ करब।”

‘करब’ सुनि मान-सम्मान बढ़बैत राधेश्याम मननाथकेँ कहलक-

“चारि-पाँचटा बच्चो गामेक छी। ऐठाम पढ़ैए, अनकासँ जे टीशन पढ़ैए से अहींसँ ने किए पढ़त। गामक जँ चारियो-पाँचटा अपन पढ़ौल भऽ जाएत तँ ओ कि गामक सेवा नै भेल। सेवे किए, ओ तँ कुलपूज सेवा भेल!”

दोहरी काज देख मननाथक मन मानि गेल जे अखैन किछु दिन रहैक पहिने जोगाड़ करी, तखन आगू बुझल जेतइ। चिन्हो-परिचए बढ़त आ किछु-किछु ऐठामक बोलियो-वाणी आ चालियो-ढालि सीखि लेब। केतौ पहिने लोक ओइठाम रहै-जोकर अपनाकेँ बना लेत तखन ने रहि पौत।

मननाथ दुधा-वैष्णव। ने कण्ठी गरदेनमे नेने आ ने माछ खाइत। गामक लोकक देखा-देखी अपनाकेँ वैष्णव मानि नेने। बिहारक जलवायु आ बंगालक संग पुर्वांचलक जलवायुमे अन्तर छइ। तँए बिहारक जिनगी आ बंगालक जिनगीमे सेहो अन्तर छइ। छह मास जाइत-जाइत मननाथ बेमार पड़ि गेल, गाम चलि आएल।

मननाथ जइ समए आइ.ए. पास केलक तही समए प्रतिमाक संग बिआह भऽ गेलइ। ओना नगदी दान-दहेज मननाथक पिता नै लेलखिन मुदा परिवार ठाढ़ हेबाक सभ कथू लेबे केलखिन- बरतन-बासन, लत्ता-कपड़ा, कुरसी-पलंग इत्यादि-इत्यादि। प्रतिमाक पिता रामायणिक प्रेमी, संग-संग हाइ स्कूलक शिक्षक सेहो। जहिना किलासमे बिआहक दान-दहेजक विरोधमे पढ़बथिन तहिना

जनकपुरमे भेटल, रामकेँ जे बिआहमे सुन्नर नगर, सुन्नर बाड़ी-फुलवारी, सुन्नर भवन, सुन्नर भोजन, सुन्नर विदाइ भेटलैन जे विचार अपनो मनमे घर केनहि रहैन, तँए नगदक विरोधमे रहैथ, मुदा वस्तु-जात, पढ़ै-लिखैक खर्च धरिक पक्षमे रहैथ, से सभ बेटीक बिआहमे दइक विचारो रहबे करैन।

गामक मिडिल स्कूल तक प्रतिमा पढ़ने, तँए थोड़-थाड़ हिसाबो-बारी आ पढ़बो-लिखब भाइये गेल रहइ। जहिना सभ मिथिलांगना सुयोग, सुशील संगीक कामना करैए तहिना प्रतिमोक मनमे रहबे करइ। जइसँ सभ दिन भोरे सुति-उठि फुलडालीमे फूल लोढ़ि, अँगना-घर बहारबासँ चुल्हि-चिनमार नीपै, भानस करैक सभ जोगाड़ करैत, नहा कऽ भगवतीक आसन नीप फूल चढ़ा कर-जोरि असीरवाद पाबि जिनगीक लीलामे लगि जाइ छलि। कौलेजक बरक संग बिआह हएत, सुनि प्रतिमा मने-मन भगवतीकेँ गोर लगलैन। मनकमना पुरबैक सुन्नर संगी देलौं।

बी.ए. अबैत-अबैत मननाथकेँ दुरागमन भेल। जाधैर कौलेजमे पढ़ै छल ताधैर अपनो मनमे नीक-नीक विचार उठिते छेलै, जइसँ नीक जिनगीक उमेद रहबे करइ। पति-पत्नीक बीच घन्टो अपनो भविसक रंगीन फुलवारीक बीच विचरण करैक समए भेटते छल। प्रतिमाक आशाक ज्योति भिनसुरका सुर्जक रोशनी जकाँ प्रखरे होइत गेलै, बढ़ैत गेलइ।

कौलेज छोड़ला पछाइत जखन मननाथकेँ नोकरी नै भेल तखन जहिना अपन मन मननाथक डोलए लगल तहिना प्रतिमाक सेहो सिहैर-सिहैर सिहरए लगल। जिनगीक आशामे गिरानी आबए लगल। जइ दिन मननाथ नोकरी करैक खियालसँ राधेश्यामक संग कोलकाता विदा भेल, तइ दिन बेर-बेर केता-बेर प्रतिमा मननाथक चेहराकेँ

निहारि-निहारि देखलक। कखनो बुझि पड़ै सौन केना बीतत तँ कखनो बुझि पड़ै जे कमासुत संगी भेटने दुनियाँक कोन सुखक कमी रहत। मुदा बैसारी जिनगीक भारसँ दबल जहिना मननाथ तहिना प्रतिमा। केतेक जरूरत काजक अभावमे हूसि गेल। जरूरतो तँ जरूरत छी, केतौ जिनगीक तरहत्थीक जरूरत तँ केतौ जिनगीक उलफी जरूरत सेहो अछिए। मुदा से नै प्रतिमाकेँ जिनगीक तरहत्थीक खगता खगलैन। जइसँ जिनगीक वृक्षमे बेर-बेर झाँट-पानिक झटका सहए पड़ल रहैन। तँए उवाउ सेहो भाइये गेल रहैथ। जखन मननाथ कोलकातासँ बेमार भऽ घुमि गाम आएल तइ समए सोमेश्वर दुनू परानी जीविते रहथिन। एकटा संतान मननाथोकेँ भऽ गेल रहइ। ओना अपन घटैत जिनगी आ बेटाक चढ़ैत अपाहिज जिनगी देख दुनू परानी सोमेश्वर चिन्तित भाइये गेल छला मुदा अपनो जीबैक आशा लोककेँ प्रबल होइते छै, तँए बेथाएलो मने अपन घर-गिरहस्तीकेँ सम्हारि चलैबते छैथ। सुखाएल देह मुरझाएल मन मननाथक देख परिवारक सभ, माता-पितासँ लऽ कऽ पत्नी धरि, चिन्तित भऽ गेली। जहिना कोनो गाछक पहिल डारि सुखलापर चाहे रोगेलापर गाछक चुहचुही कमए लगै छै, तहिना प्रतिमाक चुहचुहीमे सेहो कमी आबि गेल। तहिना मतो-पिता अपन अगुआइत परिवारक खसैत रूप देखैथ, मुदा उपए?

एक तँ ओहुना पूर्वांचलक पाइनो आ हवोसँ नीक मिथिलांचलक अछि। तैपर पथ-परहेज, दवाइ-दारू भेने मननाथ निरोग भऽ गेल। छह मास बीतैत-बीतैत मननाथ पूर्ण स्वस्थ भऽ गेल। काजक आशमे जखन मननाथ हिया कऽ देखलक तँ बुझि पड़लै जे परोपट्टामे केतौ कल-कारखाना ऐछे नै जैठाम जा नोकरी करब। गाम-घरमे जे स्कूल अछि ओ तँ अपने-अपने परिवार धरि समटा गेल अछि तखन करबे की करब। खेती-बाड़ीक ओ दशा अछि जे त्रेता जुगमे

जनक तीनि-बित्ता हर जोतलैन तहीसँ अखनो खेती होइते अछि। ने अपना हाथमे कोनो जुगानुकूल औजार अछि आ ने खेतीक साधन, बाढ़ि-रौदीक रक्षा संग खाद-पानि-बीआक अछि! तखन? तैपर जँ कोदारि-खुरपी हाथमे लेब तँ गामक लोक अनेरे कीचारत जे देखियौ फल्लाँक तकदीर...।

रंग-रंगक चोट पाबि मननाथक मन सकतए लगल। सकताइत विचार भेलै जे पूर्वांचलक पानि अनुकूल नै भेल, पच्छिमक यात्रा करब। पच्छिम दिस हियबैए लगल तँ दूरक एकटा सम्बन्धी राजस्थान सीमेंट कारखानामे काज करैत। नमहर कारखाना, सए-पचास आदमी सदैत काल छुट्टीपर गाम जाइते अछि, जइसँ उट्ठा काज रहिते छइ।

पिसियौतक-पिसियौत भाइक संग मननाथ राजस्थान गेल। मार्च मास रहने एक मास काज केलक। सीमेंट कारखाना काज करै बलाकेँ सीमेंट-खौक बनाइए दइ छइ। मटिखौक इलाका तँ छी नै, जे खलियो पएर आकि हल्लुको-फल्लुक चप्पल-जूतासँ काज चला लेब आकि लत्ते-कपड़ासँ काज चला लेब। तँए ओहन नै बनब तँ काज नै कऽ सकै छी। पहिल मासक दरमाहासँ मननाथ अपन लत्ता-कपड़ा, जूता-चप्पल इत्यादि पहिरेबा वस्तु कीनलक। मुदा दोसर मास अप्रील अबैत-अबैत रौदक गरमी बरदाससँ बाहर हुअ लगलै। जहिना एक दिस रौदक झड़की तहिना दोसर दिस पानिक मरकी अछिए। बीतैत मई मननाथ बेमार पड़ि गेल। ओना मननाथ उट्ठा काज करैत रहए, स्थायी नोकरी नै भेल रहइ। मुदा बेमारीक नाओंपर संगी-साथीक कहला-सुनला पछाइत गाड़ीक खर्च कारखानासँ भेटलै, टिकट कटा गाड़ी पकैड़ मननाथ गाम चलि आएल।

दुनू परानी सोमेश्वर पचास बर्ख टपि चुकल छला। जिनगी भरि कमाएल-खटाएल देह रहितो, मनक क्लेश आ पेट-पूजाक अभाव

रहने अस्सी बर्खसँ ऊपरक झखड़ल बगए बनि गेल छेलैन। व्यायामो तँ भरले पेटक ने नीक होइ छइ। ओना जेते काज दुनू परानी सोमेश्वर करै छला तइमे कटौती नै केलैन, करबो केना करितैथ चारि-पाँच बीघाबला किसान (आजुक किसान नै) आँखिक सोझामे खेतकेँ परती होइत केना देखतैथ। मशीन भेने एते तँ लाभ भेबे कएल अछि जे कम आँट-पेटक बाड़ी-झाड़ीमे भाँगे-धथूर बेसी उपजए लगल अछि। ओना तेकर दोसरो कारण अछि जे करताइते गाम छोड़ि देने छैथ, मुदा जैठाम छोट किसानक खेत जोत-कोर करैक आ उपजबैक प्रश्न अछि, तैठाम जँ बीघा जोतै बला औजार चलि आबए तखन ओइसँ काज केना चलत। मुदा जे से। सोमेश्वर सेहो तहिना अपन गिरहस्तीकेँ छोट केलैन। छोट ई केलैन जे जइ खेतमे नियमित उपजा लेल नियमित काज करए पड़ैन, जे श्रमक बाहुल्यतासँ पूर्ति होइत अछि, तैठाम ओहेन-ओहेन फसिलक खेती करए लगला जे खेत तँ अबादल जानि मुदा उपजामे ह्रास होइत गेलैन। सएह सोमेश्वरक परिवारमे एक दिस भेलैन तँ दोसर दिस परिवार बढ़ि गेलैन। शिक्षकक बेटी थिकीह, ओ केना खुरपी-कोदारिसँ भूमि छेदन करथिन! पिताक वचन ओहिना कन्हेठने छैथ। ओना ईहो कन्हेठने छैथ जे मनुखक औरुदा साए बर्खक छइ। मनुख हट्ठा-कट्ठा साए बर्ख जीबैत अछि, जे तइसँ बेसी जील तँ भाग्यशाली भेल नै जँ तइसँ कम जील तँ भाग्यहीन भेल। तेतबे नै, प्रश्न अछि साए बर्खक जिनगी? महान-वेत्ता सभ श्रीमुखसँ साए बर्खक जिनगीक प्रशंसाक पुल बना दइ छैथ, मुदा साए बर्ख प्राप्त केना हएत, तइकालमे लबनचूस चोभए लगै छैथ। एहेन होइ छै जे लिखतनसँ बेसियो आ कमो बखतन होइ छै, तँए छूटियो सकैए, आ केतौ बेसियाइयो सकैए। मुदा बेसियाइयोक तँ दुनू कारण छै, एक मोट वस्तुकेँ पीसि कऽ मेही बनाएब आ दोसर आन-आन आनि असलकेँ घुसका देब। साँझ-भिनसर जँ धियान करै छी तँ किए कोनो

मंत्रक मात्राक छूट-बढ़ हएत। ओ तँ मन रखैक मंत्र छी, जखने मनसँ घुसकत तखने काजे घुसैक जाएत। मुदा से सभ सोमेश्वरकेँ नै भेलैन, देखा-देखी दुनियाँ चलै छै कोनो कि हमहीं एहेन छी जेकर बेटा बिमार पड़ल आ दोसरकेँ नै पड़ल, घनेरो लोकक जवान बेटा रोगाएलो छै आ मरबो कएल, केना छातीपर अढ़ैया रखि सबुर केने अछि। जाबे आँखि तकै छी, हाथ-पएर चलै-फिड़ै-जोकर अछि, दुनियाँ-ले नै अपना-ले करैत रहब...।

भाय, प्रश्न एकटा फेर जगि गेल। ओ जगल जे 'अपना-ले?' बेकतीवादी विचार भेल, स्वार्थी विचार भेल। मुदा एकर ईहो अर्थ तँ होइते अछि जे जखने मनुख अपन विचारकेँ कर्म रूपमे उतारए लगैए तखने अपन हाथ-पएरकेँ ओइ दिसामे लगौल जाइ छै जहिना घरसँ निकैल कियो दुआर-दरबज्जा गाम-समाज टपि देस-कोस टपि दुनियाँ टपैए, ओ कर्म तँ बेकतीगते सम्भव अछि। बिनु जिम्माक बेकतीगत जिनगीए की? मनमे जेहेन विचार तइ अनुकूल अपन-अपन रस्ता बनबैक अछि। प्रश्न अछि मनुख बनि एलौं, मनुखक बीच बास हुअए, हँसैत-खेलैत जिनगीक समरपन करैत गुदस हुअए। दुनू परानी सोमेश्वर मननाथक सेवामे जुटि गेला।

भदबरिया पीअर-ढूसि बेंग जकाँ मननाथकेँ देखते प्रतिमाक मन उड़ि गेलइ। जहिना अकासमे उड़ैत टिकुली रंग-रंगक खाद-अखाद वस्तु धरतीपर देख-देख- अपन उपयोगी वस्तुकेँ से चाहे खइक होउ आकि बैसैक- निहारि-निहारि चैनक साँस लइत नचैए तहिना प्रतिमोकेँ भेल। एक-दिस वृद्ध सासु-ससुरक थोड़ दिनक आश, तँ दोसर दिस पतिक हरण भेने अपन वैधव्य-जिनगी! तँ तेसर दिस कोरैला साल भरिक चिल्काक जिनगी। मन विचलित भऽ गेलइ। ओना पारिवारिक सम्बन्धमे बेकती घरक कोठरी जकाँ अछि, मुदा किछु एहनो तँ ऐछे जे अधिक दिनक टिकाउ अछि। वएह नष्ट भऽ रहल अछि! नइ, माए-

बाप बहुत रास गहना बेर-बिपैत-ले देने छैथ, कोन दिन-ले राखब। जखन जिनगीए नै, जखन सोहागे नै तखन सिहिन्ता कथीक आ सौख केकर? तखन गहना-जेबर पहिरबे के करत? प्रतिमाक मनमे पतिक जिनगीक प्रति उत्साह जगल। रोगक इलाज छै, समस्याक समाधान छइ। जेना पतिक राग प्रतिमाक रग-रगमे रमि गेलैन...। सासु लग जा बजली-

"माँ, बाबूजीकेँ कहथुन, पाइ-कौड़ीक चिन्तानै करैथ, गहना दइ छिऐन, डॉक्टर लगबैले कहथुन।"

ओना प्रतिमा ससुरसँ छिपा बजली, मुदा मनमे रहैन जे बेर-बिपैतमे जँ एक-दोसरक सहारा नै बनत तँ ओ दबा जाएत। तँए जोरसँ बाजल छेली। जे बात सोमेश्वर सेहो सुनलैन। पुतोहुक बात सुनबए बुड़हा लग पहुँच बजली-

"पुतोहुक विचार सुनलौं किने?"

"हँ।"

'हँ' कहि सोमेश्वर मुस्कुरेला। केहनो बिपैत किए ने हुअए जँ ओकर प्रतिकारक उपए होइए तँ चिन्ता हटिते छइ। सोमेश्वर पत्नीकेँ कहलैन-

"माए-बापक देल जिनगी-ले छैन, ई ताधैर हमर छी जाधैर जीबै छी। अपनो बाप-दादाक देल बहुत अछि। जँ दवाइसँ छुटतै तँ मननाथोकेँ छुटतै।"

मननाथक इलाज शुरू भेल। दू मासक पछाइत पूर्ण स्वस्थ भेल। स्वस्थ भेला पछाइत सबहक सहमैत भेलैन जे मननाथ अपने खेती-पथारी करत। तकदीरमे परदेश नै लिखल छइ। विधाताक रेख कियो थोड़े मेटा सकैए।

गाममे रहि मननाथ घरक काजमे हाथ बटबए लगल। मुदा

पढ़ल-लिखल रहलो पछाइत नै बुझि सकल जे किसान परिवार केहेन होइ। कटबी होइ आकि सौंस। सौंसक माने भेल जे परिवारमे सालो भरिक भोजन-विन्यास परिवारक हाथ अबौ। माने ई जे अन्नक खेती बारहो मास लगौलो जाए आ काटलो जाए। जेना जगरनाथमे छइ। नव अन्नक भोजन पवित्रो मानल जाइए। ओना किछु एहनो अन्न अछि जे जेते पुरान होइए तइमे तेते घीए जकाँ गुण बढ़ै छै, मुदा से नै, आर्थिक दृष्टिसँ। भोजनक भीतर दूध, तरकारी, फल इत्यादि सेहो अबै छइ। बारहो मास दूधक पूर्ति तखने हएत जखन कमसँ कम दूटा महींस आकि दूटा गाए रहए, तहिना तरकारीक सेहो अछि, सालो भरिक तरकारीक पूर्ति तखने हएत जखन तीनू मौसमक माने जाड़, गरमी आ बरसातक अनुकूल खेती हएत। तहिना फलोक अछि। बारहो मास जे समयानुकूल फल लगौला पछाइते फलक पूर्ति भऽ सकैए। जखन एहेन ढर्ड़ा किसान परिवार पकड़त तखन सम्पन्नता औत, जखन सम्पन्नता औत, तखन समृद्धता औत, एएह भेल सौंस परिवार। एहेन परिवार सोमेश्वरक नै छेलैन। कटबी खेती आ कटबइ उपजा छेलैन जइसँ तीमन-तरकारीक कोन बात जे अन्नोक बेसाह लगिते छेलैन। ओना चारि-पाँच बीघा पाँच आदमीक परिवार-ले परियाप्त भेल मुदा से नहि। समैक संग परिवार उगैत-डुमैत चलैत रहल, चलैत रहल।

तीस बर्खक पछाइत मननाथ मतो-पिताक श्राद्ध आ पाँचो बालो-बच्चाक बिआह-दानसँ निवृत भेल। ओना शिक्षा-बेवस्था एहेन भऽ गेल अछि जे पढ़ब-बिनु-पढ़ब बराबरे। मुदा परिवारमे सरस्वती एने, नीक जकाँ तँ नै मुदा पाँचो बेटा-बेटी पढ़ल-लिखल तँ छैन्हे।

गाम-गामक स्कूलमे शिक्षा मित्रक बहाली हएत। साल भरि पहिनेसँ लोक कागत-पत्तर कीनै-बेसाहैक संग स्कूल, कौलेज, युनिवर्सिटी, पोस्ट-ऑफिस इत्यादिक ताक-हेर करए लगल। ब्लौकसँ

गाम-धरिक लोकक हाथे बहाली हएत। वेपारीक नक्शा तैयार भेल। पढ़ल-लिखल नौ-जवानक कमी ऐछे नहि। जैठाम लेबाल रहत तैठाम जँ वेपारी नै कमाएल तँ ओ अनेरे कौमर्स पढ़लक किए? दुनू परानी मननाथक मनमे सुतल सपना जगि गेल। जगि गेल जे ई तँ हाथक काज भेल, सभ सपनाक पूर्ति भऽ जाएत। चालिस हजार रूपैए कट्ठा जमीन अढ़ाइ कट्ठा बेच लेब ओतबेमे हाथक-हाथ कागज भेट जाएत। सएह भेल।

काल्हि दस बजेसँ बहालीक प्रक्रिया शुरू हएत। सभ काज केला पछाइत, सौंझुका बैसार[2]मे मननाथ चाहक घोंट लैत बाजल-

“आइ भरोस भेल जे भरि जिनगीक हेराएल ठौरपर आबि गेलौं!”

मुदा मननाथ ई नै बुझि पेलक जे दिनुका हेराएल साँझमे एलौं आकि रतुका हेराएल भोरमे।

ओना प्रतिमाक चढ़ैत-उतरैत जिनगीमे पतिक बात सुनि कोनो बेसी हलचल नै भेल मुदा किछु कम्पन्न तँ भाइये गेल। हलचल ऐ दुआरे नै भेल जे सन्तानक पूर्वक जे मनोरथ छेलैन, ओ छौर बनि आकसमे उड़ि गेलैन। सन्तानक पछातिक मनोरथ खसैत-पड़ैत थकथका गेल छेलैन। जिनगीक चारिम अवस्थाक लग-झकमे पहुँच गेल छेली। अपन सभ मनोरथ परिवारमे छिड़िया-बितिया गेल छेलैन, मुदा तैयो आशक साँस तँ भेटबे केलैन। आशक साँस ई जे एको दिनक शिक्षकक नोकरी तँ जीवन पारे हएब भेल। से दिन आबि गेल। बिहुसैत प्रतिमा बजली-

“निश्तुकी काज हएत किने?”

[2] दुनू परानीक बैसार, घरक बैसार

मननाथ-

“ओना, अहाँ आन थोड़े छी जे मनक बात छिपाएब... ।”

बहालीक चिट्ठी देखबैत पुन: बाजल-

“कोनो कि कच्चा खेलाड़ी छी जे पैसा फेकि देब काज पछुआ लेब। एक हाथसँ देलिऐ, दोसर हाथसँ लेलिऐ।”

जिज्ञासा करैत प्रतिमा बजली-

“कहाँदन काल्हि इन्टरभ्यू हेतइ?”

मननाथ-

“ओ सभ देखैआ हेतइ।”

पतिक उत्तर पाबि प्रतिमा थकमका गेली। थकमका ई गेली जे एक दिस देखौआ कहै छैथ आ दोसर दिस चिट्ठी सेहो देखए दइ छैथ! परीक्षा ने चोरूका होइए मुदा इन्टरभ्यू तँ देखौआ होइते छै भलें मुँह देख मुंगबा किए ने। तखन कहलैन की..? बाजल-

“अखुनका लोकक केते बिसवास करै छी, बैंकमे रूपैआ नइ रहनौं चेक पठा दइए। जँ अहाँ सन-सन दसटा मोकिरकें झगड़ा लगा दिअए तखन की करबै? एक तँ जिनगी भरि मारि खेलौं तैपर जँ मरैयोकाल घीचे-तीड़ीमे चलि जाएत तखन बाड़ीमे गेन्हारी साग उपजा कऽ केना खाएब?”

पत्नीक बात मननाथक मनकें पीड़ीत बनौलक आकि प्रीत ओ मननाथ जानए। मुदा उगैत काज डुमैत काजक विचारो स्थल तँ यएह छी। कौल्हुका काज पहिने सम्हारि पछाइत नव काजमे हाथ लगौल जाए आकि..? जँ बहुत बेसी नवका काज मनमे उतफाल मचौत तँ ओ अपने सूत्रवद्ध भऽ आगूमे खसत।

ओना होइतो अहिना छै जे सुखाएल आ दुखाएल मनक

उपजोमे किछु अन्तर आबिये जाइ छै, मुदा जेतए सुखाइन-दुखाइन सहोदरा बहिन जकाँ अपन-अपन मनक बात बाजत तखन अनेरे ने दुनू बहिन बहीना बनि बहनोइक सृजन सेहो करत। मुदा जे से...। सभ गोटी लाल देख मननाथक मन ललिया तँ गेलै रहइ। जँ से नै रहै तँ छबे मासक पाँच हजार नोकरी छै, कुल तीस हजार भेल। तहूमे जैठाम दरमहेक ठेकान नै तैठाम पेंशन केना जन्मत। तइले लाख रूपैआक खेत बेच मननाथ सचमुच मने-मन खुशी अछि जे पढ़ैक उदेस साफल भेल। मुदा मनमे बच्चेसँ अँकुरल छेलै जे शिक्षक बनब। खाएर, जाइज-नजाइज जे भेल मुदा मनक एकटा मनोरथ तँ पूर भेबे कएल।

❍

तिथि : 31 दिसम्बर 2014, शब्द संख्या : 3643

गलगर भैंस

राति जुआ गेल रहै, दुपहरिया टपि गेल रहै, चैत मासक अमवसिया तँए गरदा-माटिसँ अन्हार आरो भरि गेल रहइ। ओना ओसकणसँ सेहो माघक राति आ पनिकणसँ भादवक अन्हारक अमवसिया होइ छै, से नै चैत मासक अन्हार! बारह तँ बित चुकल छल, सिन्धुनाथ आ जलेसरीक जिनगीमे जहिना बारह बजि चुकल छल तेना नै, मुदा एक नै बाजल छल। जहिना अन्हारसँ एक-दू-तीन-चारि दिन बढ़ने इजोत अपनामे चारि-चान लगबैत मुस्की मारैत मेलाक रेड़ामे रगड़ लैत-दैत-पबैत ससरैत तहिना ने इजोतोसँ अन्हार एक-दू-तीन-चारि होइत चतुर्थी-मिलनक सिनेहासिक्त प्रेमक मधुर स्वरमे जिनगीक ओहन वृक्ष लगेबाक इच्छारोपण करैए जइमे पलास सिम्मर जकाँ बिनु पाते-फूलसँ भरल रहैए। मुदा...।

आध पहर राति बीतला पछाइतो ने सिन्धुनाथक आँखिमे नीन अबै छैन आ ने जलेसरीक आँखिमे। ओना दू घन्टा पहिने ओछाइनपर एला पछाइत दुनू गोरेक बीच दिनक काजक लेखा-जोखा भऽ गेल छेलैन, जइसँ ओइ लेखा-जोखाकें उसारि नीनक आवाहन-ले गहवरमे गुहारि लगा दुनू गोरे अपन-अपन मुँह समेट मनमे घोंसिया लेलैन। मुदा जागलमे करक[3] फेर-फार बेसी होइए, से तँ दुनूकें रोकनौं नै

[3] करोटक/करबटक

रूकैत, मुदा अपन-अपन चलाकीकेँ हूँहकारी भरि अपन-अपन बहाना बनैबते छला। ओछाइनपर सँ उठि सिन्धुनाथ लघु-शंकाक बहाने बहरेला, मुदा जलेसरी जे ओछाइनपर सँ तजबीज केलैन तँ बुझि पड़लैन जे ओ मालक घर दिस जा रहल छैथ। भरिसक कोनो काज दिनमे बिसैर गेला से करैले। जँ काज भारी होइ आ असगर बुते नै होइन तखन हम कोन इनार-पोखैर खुनबैले तकैत रहब। मनमे अबिते जलेसरियो ओछाइनसँ उठि एक-लग्गा भरि पाछू पएर मारि चलि पड़ली। एक तँ ओहिना अन्हारमे लोक जेमहर जाइए तेमहर टार्च बाड़ैए, अगुऐत-पछुऐत बाड़ैए, चौबगली बारैए। गरमी मास छिऐ, अकाससँ धरती धरि देखैक प्रश्न अछि, जहिना रतिचर इजोतेपर झपट्टा मारि भोजन पबैए आ फनिगा फुनगी पाबि, तहिना ने धरतीपर कीड़ी-कमौड़ी पएरक धमक सुनि भागबो करैए आ झपटबो करैए। मुदा से सभ नै, सिन्धुनाथक मन टाँगल छेलैन चारि बजे जे खुट्टापर महींस कीनि कऽ अनने छला तेकर गालपर। भैयाकाका विचार देने छला जे गाए-महींसकेँ गालेमे अमृत बसै छै, जे जेते गलगर रहत ओकरा ओते बेसी दूध हेतइ। जेकरा जेते बेसी दूध हेतै ओकरा ओते बेसी बच्चो पलेतै आ मलिकारो पलेतै। आगू बढ़ि सिन्धुनाथ मालक घरसँ पहिने डेढ़ियापर सँ चारूकात टॉर्चसँ देखलैन जे कुकुर-नढ़िया तँ ने अछि। गाए-महींसक बच्चाकेँ नष्ट करैबला छी, मुदा से केतौ ने देखलैन। चारूकात टॉर्चसँ देख जोरसँ खखास केलैन। जइसँ मालकेँ बोलीक परेखि आबि जाइ। जखने बोली परेखि लेत तखने ओकर पशुमत जगि जेतै जइसँ बोनैया रूप बदैल घरैया घर करए लगतै।

खखासक अवाज सुनि महींसो तेना साँस छोड़लक जे बाहरेसँ सिन्धुनाथ सुनि बुझि गेला जे ओहो माने महींसो जागि गेल। मालऽ घरक मुँहपर बत्तीक जाफरी दुनू कातक खुट्टामे बान्हल ढाठमे सटल। घरक मुँहपर सँ सिन्धुनाथ ठिकिया कऽ महींसक गालपर टॉर्चक इजोत

फेकलैन। पौज करैत भैंस। मनमे भेलैन जे तिसियौटाक घूर केने छेलौं, ओना मिझा तँ देनहि छेलिऐ मुदा हो-ने-हो जमि कऽ फेर ने कहीं सुनैग गेल हुअए। खरमास छी, आगिक डर मानी। चैत-बैशाखक घूर थोड़े पूस-माघक घूर होइए जे माछी-मच्छरक संग जाड़ोसँ रक्षा करत। लऽ दऽ कऽ माछी-मच्छर भगबै दुआरे घास-पातक घूरसँ काज चलि जाइए।

एक लग्गी पाछू जलेसरी ठाढ़ भेल पतिकेँ हियासैत जे कोन काज दिस बढ़ि रहला अछि। जाफरी खोलि सिन्धुनाथ मालऽ घर जा पहिने महींसक बच्चाक देहपर हाथ देलैन। झबड़ल केश, एकमुहरी खसल, बच्चाक देहपर हाथ देख महींस दुनू आँखि गरा मलकार[4]केँ देखैत। जीह निकालि बच्चा सिन्धुनाथक हाथक आँगुर चाटैक ओरियान करए लगल। वएह आँगुर ने थुथुनमे दूध भरैए।

आगू ससैर जलेसरी घरक मुँहपर खुट्टा लगा खुट्टे जकाँ ठाढ़ भऽ गेली। मुँहमे कोनो बोल नहि। पीठपर सँ जहाँ सिन्धुनाथ बच्चाक देहपर हाथ आगू बढ़ौलैन आकि बच्चा फुर्र-फुर्रा कऽ उठि, जीह निकालि सिन्धुनाथकेँ चाटैक ओरियान केलक आकि डाँर लिबा गोंतए लगल। गोंत पड़ैक खियालसँ सिन्धुनाथ उठि कऽ महींस दिस बढ़ला। तैबीच बच्चाकेँ गोंतैत देख महींसो उठि कऽ ठाढ़ भेल, आ बोली देलक।

आगू ससरैत सिन्धुनाथ महींसक थुथुनपर हाथ फेड़ैत गाल निहारए लगला। ओना पौज करैत देख नेने छला। ठाढ़ो महींस पौज करैए। खास कऽ खेलोपरान्त। मुदा जखन मलकार बच्चाकेँ चुचुआ भैंस दिस बढ़बैए तखन महींसक मातृत्व जगि जाइ छै, आ जेतबे थनमे दूध रहै छै तही लऽ कऽ ओ तैयार भऽ जाइ छइ। थुथुनसँ आगू

[4] सिन्धुनाथ

हाथ ससारैत सिन्धुनाथ ऐगला राग देने महींसक थन लग हाथ बढ़ौलैन। पनहाइत छीमड़ि देख, बिनु हाथ बढ़ौने निहारए लगला। यएह लक्ष्मी थिकीह! यएह सरस्वती थकीह! वुद्धि रूप सरस्वती, भोज्य रूप लक्ष्मी! हाथ आगू बढ़बैक विचार केलैन आकि जलेसरीक मन तड़पि गेल।

एकटा छोट-छीन माटिक ढेप सिन्धुनाथक आगूमे ऐ खियालसँ फेकली जे भूतक ढेप बुझि पाछू तकता। होइतो अहिना आएल अछि, कता गाममे रातिक अन्हारमे राकश सभ गोला-ढेपा बरिसबै छल। अल्लापुरमे अखनो कोनो-कोनो गाम अछि...। तेतबे नै बाधक धान-रबी ओगरनिहार रखबारकेँ भरि-भरि राति तामल खेतक गोला उघबबै छल। मुदा जुग बदलल, जमाना बदलल, लोक बदलल लोकक खेल बदलल...।

ढेपा महींसक आगूमे खसिते भड़कऽ लगल मुदा मलकारकेँ आगूमे देख मात्र सिंगहौटीए टा डोलौलक। गोला कातमे असथिरसँ बैस गेल। सिन्धुनाथ टॉर्चक इजोत आगू फेकलैन तँ बुझि पड़लैन जे कियो स्त्रीगण आगूमे ठाढ़ छैथ। मुदा चिन्हैमे देरी नै लगलैन, बजला-

“ईहो कि आन जगह छी, ओइठाम किए ठाढ़ छी, ऐठाम आउ। अहाँ बुझै छी जे हिनकर (पतिक) छिऐन, से नै अहूँक छी, मुदा अहाँक ताधैर नै छी, जाधैर देहपर हाथ नै देबै आ थनसँ दूध नै निकालबै।”

अपन बँटाइत सिनेह देख जलेसरीक मन झुझुआएल। झुझुआएल ई जे ई राति तँ दुनू गोरेकेँ एकठामक छी। पिय मिलन बेर छी। तखन, जँ असगरे अपन ओछाइनपर चलि जाए तँ पति विलाप केकरा हेतइ? मुदा ई कि झूठ जे ‘जेतए बसी सएह मातृवत पवित्र भूमि आ जइसँ जीवन-धार बहए वएह पवित्र सरिता भेली।’

दुआरि टपि जलेसरी आगू बढ़ली, जहिना एक नारी-दोसर नारीसँ मुँह फुला फुफकार कटै छैथ तहिना जलेसरीकेँ देख महींस फुफकार छोड़लक। जलेसरी सहैम गेली। सहैमते पाछूए मुहेँ दू डेग बढ़ली। तही बीच सिन्धुनाथ थनक छीमी टॉर्चक इजोतमे हिसासए लगला, जे दूध-धारमे कोनो खैंठी-तैंठी तँ ने भऽ गेल अछि। ओना साँझमे दुहैबेर देख नेने छला, मुदा तखन धियानमे नै रहलैन जे अखैन मनमे उठि गेलैन। जलेसरी दू-डेग पाछू हटि ओहिना फेर ठाढ़। महींस लगसँ सिन्धुनाथ ससैर जलेसरीक लग पहुँच हाथ पकैड़ बजली-

“चलू हमरा सने। धार-साज छी, जेते धाड़त तेते ताड़त। तँए छोड़ि कऽ पड़ाउ नहि।”

जहिना बाँहि पकैड़ पुरनिहार संगी भेट जाइ छै तहिना जलेसरीकेँ सेहो नव काजक संगी भेटलैन। मुदा मनमे एते शंका तँ रहबे करैन, जे किछु छी तँ सिंगे-मांग छी। मुदा किछु रहह, जखन कराइत संगी आगू-आगू छैथ तखन पाछूसँ जाइमे की लागत। जेना-जेना ओ हाथ बढ़ा-बढ़ा आगू-आगू बढ़ता तेना-तेना पाछू-पाछू बढ़ैमे कथीक डर। हाथ पकड़ने जलेसरीक हाथ महींसक थुथुनपर रखैत सिन्धुनाथ कहलकैन-

“यएह छी एकर गाल, जेते गलगर रहत आ ओकरा जेते भरबै, तेते ओहो अहाँक गाल भरि अपनो गाल भरत। लछमी छी सदय: लछमी!”

बजैत-बजैत सिन्धुनाथक मनमे उत-उत उत्साह तेना जगलैन जे पत्नीक गरदेन बाँहिसँ जकैड़ महींसक चारू पएरक बीचक जगहमे बैसबैत सिन्धुनाथ चारू छिमड़िक धार देखबैत बजला-

“यएह सरिता छी, ओइमे जँ नित स्नान करैक अवसर भेट जाए तँ ओकरे जिनगीक धार बुझि हेलैत चली, बहैत चली...।”

ओना चारू टाँगक बीच सिन्धुनाथो बैसल मुदा तैयो जलेसरीकेँ मनमे डर होइते रहइ। कारण घुरियाइत रहै जे माल-जाल लथराह होइए ओना गाइयक वंशमे जेते लथरपन छै ओते महींसक वंशमे नहियेँ छै मुदा देहमे जहिना अलंकार अलंकृत करै छै जेकर धार दू-दिसिया होइ छै, तँए गाए- महींसक संयुक्त उच्चारण किए ने नव लोकक मनमे उचारत जे महींसो लथराह होइ छइ।

सिन्धुनाथ जलेसरीक मन आँकि लेलैन बजला किछु ने। नै बजैक कारण भेलैन जे जहिना कोनो चिकित्सक कोनो रोगकेँ ठिकिया दवाइ फेकैए जइसँ मनमे एतेक श्रद्धा[5] जगै छैन, जइसँ किछु बजबाक समैकेँ अनुपयुक्त बुझैत तहिना सिन्धुनाथक मनमे भऽ गेल रहैन। मुदा हेराएल लोककेँ जँ किछु तोष-भरोस देल जाए तँ हेराएब कमै छइ। तही खियालसँ सिन्धुनाथ पाशा बदलैत बजला-

“केते दूधक बखारी बीच बैसल छी?”

ओना डेराएल जलेसरीक मन तँए दूधक बखारी नै बुझि पेली। गाममे धाने-मरूआ टाक बखारी देखने-सुनने तँए। मुदा दूधोक बखारी होइ छै एहेन विचार तँ विचड़िये गेल-

“केते दूधक बखारी छी?”

पत्नीक गंभीर जिज्ञासा देख सिन्धुनाथक मनमे समुद्र जकाँ जुआरि उठि गेलैन। मुदा केना समुद्रमे जुआरि उठि फेर अपने जगहपर घुमि जाइए। तैठाम तँ समुद्रक ओइ लहैरक पानिकेँ ओतबे उमेद ने करब जेते घेरि कऽ रोकि लेब। मुदा रोकब असान अछि? हँ असान अछि। जँ जोगी नख-सिख देखै छैथ तँ कि ओहन देखनिहारक कमी अछि जे सिख-नख नै देखैत अछि। अतीतक सेर- सम्पैतसँ मान-प्रतिष्ठा धरि गेलो पछाइत कि लोकक रोब-दोब आकि रूआब-रिसाव

[5] असीम प्रेम

थोड़े चलि गेल अछि? मुदा अपन ओझरीकेँ सोझरबैत सिन्धुनाथ बजला-

“अखैन दुइए बेकती छी। अपने दुनू बेकतीक जिम्माक सेवा भेल। जखन सेवा करब तखन ने मेबा पाएब।”

फूलक कली जकाँ फूलक सभ रूप-गुण समटा जहिना रहैए तहिना जलेसरीकेँ सभ किछु रहितो समटाएल रहैन। तँए किछु बाजि नै पेली। मन अक-बका कऽ सक-पका गेलैन। अकबकेबो केना ने करितैन घर-घराड़ीक नव रूप देख रहनिहारक मन अकबकाइते छइ। अकबकाएबो सोभाविके अछि। सोभाविक ई जे अखैन घराड़ी केर बगलक सड़क पूब दिससँ अछि, नवका रोडक नापी उत्तर देने भेल, तखन घराड़ीक मुँह केमहर बनाएब नीक हएत? पत्नीकेँ गुम्म देख सिन्धुनाथ पुछलखिन-

“गुम्म किए भेलौं। जहिना मनुखक दुनू मातृकोष अमूल्य धन-धान्यसँ भरल अछि, तहिना ई महींसो अप्पन छी।”

‘अप्पन’ सुनि जहिना बिऔहती कनियाँक मन अपन गहना देख-सुनि फङ्गैत तहिना जलेसरियोक मन फँगलैन-

“दुनू गोरेकेँ पेट भरि जाएत?”

अवोध, अनपढ़ पत्नीकेँ देख अपना माथपर हाथ फेड़ैत सिन्धुनाथ अपन बेथा-कथा नै कहि, बजला-

“दुइए परानीक पेट किए कहै छी, पाँचो परिवारक पेटे नै जिनगियो भरत।”

पेट तँ जलेसरी खेनाइकेँ बुझैत तँए कोनो शंके ने भेल मुदा ‘जिनगियो भरत’ ई तँ मनमे खट-खुट करैए लगलैन, बजली-

“की जिनगियो भरत?”

प्रश्नक दोहरी रूप देख पहिल एक-एक खलकेँ खोलब दोसर मुख-दुआर खोलब। राति सेहो बेसी भऽ गेल। दिनक थकान सेहो अछिए। मुदा प्रश्नक उत्तर जँ पत्नीकेँ नै दऽ देबैन आ राति-विराति जँ केकरो किछु हेतै आ काज बाधित हएत तखन तँ विचारे तर पड़ि जाएत। तँए मोटो-मोटी तँ अपन मनक भार हटा लेब किने, नै तँ अनेरे अस्सी मनक पाथर जे दबने अछि ओ ओहिना दबने रहत। जहिना कलाकार मूड बना कऽ मंचपर जाइ छैथ तहिना सिन्धुनाथोक मन मेक-अप रूमसँ बाहर पहुँचलैन। मेक-अप होइते वाचब शुरू केलैन-

“दुनू साँझ मिला पनरह किलो दूध हएत।”

“पनरह किलो केते भेल? अपना सबहक जे बरहगण्डी सेर अछि तइसँ केते भेल?” -जलेसरी बजली।

पत्नीक दोहरी प्रश्न, एक बरहगण्डीकेँ किलोमे आनब, तइमे जे घटबी भेल से केतए जाएत। दोसर हिसाब सेर-कनमामे आ तौल किलो-ग्राममे, विचारकेँ समटैत सिन्धुनाथ बजला-

“राति बेसी भऽ गेल। चलू ओछाइनेपर गपो-सप्प करब। जेतेकाल ऐठाम रहबै तेतेकाल महींसो आ बच्चो ठाढ़े रहत, अपनो सभ अराम करब आ ईहो दुनू बैस कऽ पौज धड़त।”

थनतरसँ दुनू बेकती उठि विदा भेला। आगू-आगू जलेसरी आ पाछू-पाछू सिन्धुनाथ। पर्ड़ू लग पहुँच सिन्धुनाथ मुँह चुमि दू-तीनबेर थपथपा देलैन। पाछू उनैट जलेसरी सेहो देखली। घरसँ निकैल ढाठ-जाफरी बन्न कऽ आगू बढ़ि टॉर्चसँ सिन्धुनाथ चारूकात इजोत फेकलैन। अन्हार राति छोड़ि किछु ने। गाछ-बिरीछ कनी हटल तैपर धुराएल मेघ, जेतए टॉर्चक इजोत पहुँचबे ने कएल। आगू बढ़ैत सिन्धुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

“रातिक केहेन रंग बुझि पड़ैए।”

पतिक प्रश्न सुनि जलेसरीकेँ फबलैन। बजली-

“अन्हार तँ अपने रंग छी जेकरा सियाही गुण छइ। तखन ओकर रंग की हेतइ?”

फगुआक जोगिरा जकाँ सिन्धुनाथ डम्फा संग ताल मिलबैत बजला-

“यएह छी दुनियाँ। अन्हार गुज-गुज अछि, मुदा अन्हरो-लूल्हा तँ एहनो अन्हारमे अखज जकाँ अखनो जीविते अछि।”

ओछाइनपर अबिते सिन्धुनाथ दूधक फल जोड़ैत बजला-

“पनरह किलो दूधक दाम- ३०x१५= ४५० भेल। एतेक आमदनी परिवारमे भेल। जे अखैन धरि बोइन-बुत्तापर ठाढ़ छेलौं। दुनू साँझक अन्नक खर्च सौ रूपैआसँ कम भेल। एते तँ आशा भाइये गेल किने जे नूनो-रोटी आकि छुच्छो भात खा जीवि सकै छी! यएह जीबैक आशा जिनगी पाएब भेल।”

बिसवासु जिनगीक आश पाबि जलेसरीक मन छड़पि उठलैन-

“आमदनी हएत ते खरचो हएत किने?”

“हँ से तँ हेबे करत। जे अनिवार्य काज अछि ओ अनिवार्य खर्चमे एबे करत बाँकी खगताक हिसाबसँ औत।”

तइ बिच्चेमे जलेसरीकेँ हाफी भेल। हफुआइत देख सिन्धुनाथ मने-मन सोचलैन जे आब सुतबे नीक हएत। बजला-

“बड़ राति भऽ गेल, फेर सबेरे जगबो अछि। सुतू।”

जहिना कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ैक कीड़ा पकैड़ लइ छै, तहिना जलेसरीकेँ जेना पकैड़ लेलकैन। जहिना कखनो नीन तोड़ैले देह डोलौल जाइ छै, तँ कखनो बाँहि, तँ कखनो जाँघ पकैड़ झमारल जाइ छै, तहिना बीतैत राति अबैत नीनकेँ रोकैक परियास करैत जलेसरी

बजली-

“अपना हाथक राति छी, नीनोकेँ की सीमा नाँगैर छै, अपन छोटकी बहिनक बिआहमे तीन राति आँइखो ने मुनलौं। कहाँ तइसँ काजमे घटबी भेल। एक होइ छै काजकेँ घटबी करब आ दोसर होइ छै बढ़वी करब।”

पत्नीक गंभीर विचार सुनि सिन्धुनाथक मनमे सेवाक गाछ अँकुरब बुझि पड़लैन। कहैले सालक राजा वसन्त ऋतु छी, मुदा जेकरा वसन्तसँ भेँटे नै? छोट जिनगी रहने, माने ई जे वरसाती तरकारी अछि जेकर खेती जेठक पछाइत शुरू होइ छै आ कातिकसँ पहिने खतम भऽ जाइ छइ। जेकरा वसन्त ऋतुसँ भेँटे ने होइ छै ओ केना बुझि पौत जे कोकिलक तान, हवा सुगंधक मुस्कान, रंग-अबीरसँ भरल आगमन केहेन होइ छै, वसन्त पंचमी आकि सरस्वती केना होइ छइ। जैठाम समैए-सँ भेँट नै भेल तँ फड़त-फुलाएत केतए आ कथी?

समुद्रक लहैरमे जहिना करोड़ो हीरा-मोती-सितुआ-घोंघा दहलाइत रहैए तहिना सिन्धुनाथक मन सेहो दहलए लगलैन। एक तँ ओहिना सिन्धुनाथक विचार रहैन जे पत्नी सुतती तँ काल भागत, किछु जीबैक आशामे कदमक गाछक डारिमे झूला लगा झूलब आकि मचकी लगा मचकैत चलब। मुदा से भेलैन नहि। मनो गवाही देलकैन जे जेते काल गप-सप्पसँ काज धरि, दुनू बेकती एक संग रहब, यएह ने भेल जिनगीक असल प्रेम जे संगे-संग शरीरसँ नि:सृत होइत रहत। बजला-

“जेकरा अहाँ भैंस बुझहै छिऐ ओ भैंस नै लछमी छी। जेते खुएबै-पीएबै तेते ओकर मन चैन रहतै, जइसँ खुशीक पाउजो करैत रहत आ हँसितो रहत।”

हँसब सुनिते जलेसरी, जहिना अनाड़ी-धुनाड़ी शिकारी धड़फड़ा

कऽ तीर फेकैत तहिना, धड़फड़ा कऽ बजली-

“तखन तँ कनितो हएत!”

हँसब-कानब दुनियाँमे केकरा ने होइ छै, मुदा हँसब-कानबक बीच दूरी नै देख पबैए जइसँ कननी बेसी अछि हँसनी कम अछि। खिलैत फूलक शकल-सूरत देख सिन्धुनाथ बजला-

“हँ, हमर-अहाँक यएह भक्ति कहियौ आकि जिनगी जीयब कहियौ सभसँ पैघ काज भेल।”

जलेसरीक चहकैत मन चहचहा उठल-

“जहिना सभसँ पैघ धन कहै छिऐ तहिना तँ नँगर-डोलौन सेहो ने छिऐ, एकर केते बिसवास कएल जा सकैए।”

सिन्धुनाथक मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे समाजक खिस्सा-पिहानीमे तँ एहेन ऐछे जे माल-जाल नँगर डोलौन छी। जेकरा अहाँ नँगर डोलौन कहै छिऐ ओ तँ प्रकृति प्रदत्त सम्पैत छिऐ, जेकर उपयोग मनुख अपन जिनगी लेल करै छैथ।

मुदा ई तँ अपने ने बुझए पड़त जे ढेनुआर गाए-महींसकेँ कोन तरहक सेवाक जरूरत अछि। कखैन कोन रोग-वियाधिक प्रकोप भेल, खेनाइ-पीनाइमे दुख-तकलीफ भेल, एकरा जँ पोसिनदार नै बुझता तँ जिनगी जीबैक दोसर उपय करए पड़तैन। मनुखक अवस्थे केते अछि, महींसक केते अछि, केते गाइयक अछि आ केते बकरीक अछि...।

ओहीमे ने देखए पड़त जे एकटा महींस केते दूध दऽ सकैए आ हमरा केते दइए।

यएह भेल जिनगीक प्रतियोगिता। जे सनातन अछि। सभ दिन होइते रहत। मुदा पति बनि जखन पत्नी लग कोनो विचार-विमर्श करए लगब तखन जाधैर पत्नीक मन प्रवोधि कऽ नै पतियाएब ताबे छोड़लो

तँ नहियेँ जा सकैए।

सभ बातकेँ झाँपैत-तोपैत सिन्धुनाथ बजला-

“अनेरे कोन मगजमारीमे नीन बरदौने छी, भरि दिन तँ खटबे केलौं, ओछाइनोपर तँ चैनक नीन लिअ।”

मुदा ले-बलैया! सिन्धुनाथक अपन मनक विचार दबा गेलैन। दबा ई गेलैन जे मनमे रहैन जे खाइ-पीबैक जोगाड़ केना करब। भोरे उठि कऽ तँ काजेमे लगि जाएब, तखन विचारि केना पाएब। मुदा से नै भेलैन बिच्चेमे जलेसरी टपकि गेली-

“सींग-नागरिक कोन ठेकान, कखैन अछि आ कखैन जाएत। दस दुआरी छी एकठाम केतौ थोड़े, लंकाक हनुमानजी जकाँ नाँगैर दाबि कऽ बैसत।”

सिन्धुनाथक मनमे उठलैन कोनो काजकेँ विचारानुसार रोपित करैमे पहिने बिसवास अगुवाबए पड़ै छै, पछाइत वएह बिसवास सकताइत-सकताइत श्रद्धाक रूपमे अँकुरित होइ छै, जे बढ़ैत-बढ़ैत श्रद्धाक पात्र बना जिनगीकेँ पवित्रता प्रदान करै छइ। मुदा से जलेसरीक मन थोड़े मानत..?

मन नचलैन बजला-

“कोन लाइ-लपटाइमे लटपटाइ छी। अखने फड़िछा लिअ जे महींस पोसैमे की-की प्रक्रिया अछि, तेकरा दुनू गोरे बाँटि लिअ। सभ काज जँ सभ करब तँ एँड़ी-दौड़ी बेसी लागत। काज फड़िछा नेने चौड़गर जगहो भेटत आ दुनू गोरेक काज दुनू गोरे देखबो करब। जइसँ कोनो तरहक शंको ने हएत।”

सिन्धुनाथक विचार जेना जलेसरीकेँ बेधलकैन। बेधलकैन ई जे दुनू-परानीक बीच मुट्ठी-रूपैआ छी, परीक्षा लइए लिअ जे केकर मुट्ठी खोलि के रूपैआ पकैड़ लेब।

मुदा पीठिया मिलान तँ छी नै, ओलती मिलान छी। बजली-

“बुझलौं, अहाँ हारि गेलौं, सुतू। मुदा एते तँ कहबे करब जे जे पोसलौं से दस-दुआरिया छी। कखैन रहत कखैन उड़त तेकर कोन ठेकान।”

जलेसरीक दहलाइत मनकेँ पकैड़, पीपर आकि बरक गाछमे जहिना भूतकेँ काँटीसँ ठोकल जाइ छै तहिना ठोकैत सिन्धुनाथ बजला-

“दस दुआरी छी तँ आरो नीक भेल किने जे दसो दुआरि गाए-महींसक रहैत दूधक धार बहए, तइमे अहाँक कोन जमा-जिगीर चलि जाएत जे एना बोनैया कुकुड़ जकाँ औनाइ छी? अपन घर-गिरहस्तीक ठेकाने ने अछि आ...।”

जलेसरीक मन सहैम गेल। मने-मन समझौता करैत बजली-

“हँ राइतो बहुत भऽ गेल।”

दुनू परानीक बोली-चाली तँ बन्हा गेलैन मुदा आँखिमे झपकी एबे ने केलैन। तैयो दुनू अपन-अपन गर पकैड़ सुतैक उपक्रम केलैन। मुदा दुनूक आँखिक नीन उड़ल।

जहिना छोट-छोट बच्चा रस्ता परहक गरदा समेट थुम्हा बना अपनाकेँ संकल्पित चुपा-चुप, धुपा-धुप व्रत चुपीसँ करैत जे पहिने बाजत से चोर।

मुदा ओ सभ संकल्पकेँ निमाहबो करैए। निमाहैए एना जे जे चोर भेल ओकर दुनू हाथ जोड़ि लपमे माटि भरैत अछि तैपर शिवलिंग जकाँ दू-तीन इंचक कटकी गोबि दइत। आ दुनू आँखिकेँ दुनू हाथसँ दाबि अनभुआर जगहपर लऽ जा रखा, आँखि बन्ने केने घुमा कऽ ओही जगहपर आनि कहैत जे ‘जो ओइ रखलाहाकेँ ताकि कटकी उखाड़ने आ।’ ओहो जखन ताकए जाइए तखन बौआइत-बौआइत

ताकियो लइए आ केते हेराइयो जाइए...।

मुदा से सिन्धुनाथकेँ नै भेलैन। चुपा-चुप करैत अपन जीवन सूत्र पकैड़ चलैक विचार केलैन। जहिना जागल लोककेँ काज रहने काजमे मन लगैए आ काज नै रहने उकस-पाकस करैए तहिना किछु-कालक पछाइत जलेसरीकेँ भेलैन। कनीयेँ जोरसँ सिन्धुनाथकेँ बिठुआ कटलकैन। ओना सिन्धुनाथो जगले तँए बुझि गेला मुदा अपन काज दुआरे अपनाकेँ सुतल घोषित करैत हँ-हूँ किछु ने बजला।

जहिना छिड़िआइत आकि कोनो छिड़ियाएल वस्तुकेँ पकैड़-पकैड़ समेटलो पछाइत फेर छछैल कऽ आकि गुड़ैक कऽ पुन: छिड़ियाइते रहैए तहिना सिन्धुनाथ छिड़िया गेला। मुदा तैयो जलेसरी जोर दैत दोहरी बिठुआ कटलकैन जे कोनो कीड़ी-फतिंगीक नाओं कहि फेर एकबेर महींस घर देख आएब। किछु छी तँ दूधक बखारी छी किने? मुदा सिन्धुनाथ बुझितो अनठौलैन। बुझबो केना ने करितैथ जे दाँतक काटब आ बिठुआ काटब एकरंग थोड़े होइए। काटबो तँ रंग-रंगक ऐछे, केतौ विचार काटब, तँ केतौ जिनगी काटब, केतौ सम्बन्ध काटब, तँ केतौ बिठुआ काटब। जलेसरीक चुटका चुटकीएमे रहि गेलैन जइसँ चुटकियाइते रहि गेली।

मुदा से भेलैन नै सिन्धुनाथक मनमे उठलैन जे आफदक अन्त भेल की नहि। माने जाबे पत्नी जागल रहती ताबे आफत बनल रहती, नीन पड़ि जेती तखन ने बुझब जे सोल्होअना निचेन होइ-जोकर भऽ गेलौं, जँ से नै परेखि लेब तँ जागल लोक उकस-पाकस कैरते अछि, से जँ भेल तखन तँ अनेरे पानिक लकीर जकाँ केतए-सँ-केतए दहला कऽ चलि जाएत। मनमे अबिते सिन्धुनाथ नरमेसँ पत्नीकेँ बिठुआ कटलैन।

मुदा तँए कि जलेसरी मानिनि नै जे लगले मानि जइतैथ हुनका कि नै बुझल छैन बिठुओ-बिठुआक मोल छइ। खीर आ खिच्चैड़केँ

एक कहि-कहि बाल-बोधकेँ लोक ठकि लइए जे बौआ दलियाहा-नुनियाहा खीर छिऐ। मुदा बिठुआक मोल जलेसरी नै बुझै छैथ से बात नहियेँ अछि। मुदा सुतरलैन। सुतरलैन ई जे ओहो ऊह-आँह नै केलैन। दुनू जागल कि दुनू सुतल से तँ वएह बुझता, जँ अहूँकेँ परेखब हुअए तँ अजमा कऽ देखियौ।

सिन्धुनाथकेँ अपन कएल काज आ अपन विचारपर खुशी भेलैन। खुशी ई भेलैन जे अपन पुश्तैनी खेतक इतिहासमे पाँच कट्ठा खेतक मालिक सिन्धुनाथो। पुश्तैनी परम्परानुसार माए-बापक संग जे बोइन-बुत्ता करब शुरू केलैन ओही बीच परिवार छोट रहने आ आमदनी बढ़ने घराड़ी छोड़ि पाँच कट्ठा खेत पिता कीनि देलकैन। अपन जिनगीक अन्त सियावरकेँ भेलैन।

सिन्धुनाथक संग जलेसरियो ओहने जिनगी पकड़ने अपन पैंतीस बर्खक उमेरपर पहुँच गेली। अपन जे सम्पैत- पाँच कट्ठा खेत- छेलैन तेकरा समुचित ढंगे खेती नै केने उपजा-वाड़ीक कोनो ठेकान नै, जइसँ जिनगीक कोनो पहिया घुसकै-फुसकैक आशा नै दइ छेलैन।

बदलैत परिवेसमे मन विचड़लैन। विचड़िते मनमे भेलैन जे अपन जिनगी अपना-भरे ठाढ़ करब। तइले श्रम-साधनक खगता हएत। श्रम तँ ऐछे भलेँ कम्मे किए ने हुअए, रहल साधनक, ओ केना औत? जमीनक मोल पहिने जे छल, आब ओइसँ बेसी कता-गुणा भऽ गेल, मुदा अधिक पूजी भेलौ पछाइत आमदनीमे बढ़ोतरी नै भेल। साधन दू-दिसिया अछि। एक अछि बैंक आ दोसर अछि बपौती सम्पैत।

पाँच कट्ठा खेतक उपज बैंकक सूदियो बरबैर नै अबैत अछि तैपर मलगुजारीक देनी अछि, एहेन स्थितिमे की नीक? बैंकक पूजी दिस बढ़िते मन भिन-भिना गेलैन। भिन-भिना ई गेलैन जे कोनो

कारोबारकेँ बैसैक पूजी नै बना ओझरा गेल अछि। बैसैक पूजीक माने भेल जैठामसँ काज शुरू हएत। मुदा सालक-साल घुमलो पछाइत, श्रम-साधनकेँ लूटबैत, कियो-कियो ठाढ़ होइमे सफलो होइ छैथ मुदा अधिकांश असफले। सिन्धुनाथ विचारि लेलैन जे पाँच-कट्ठामे सँ एक कट्ठा बेच लेब। पचास हजार रूपैआ हएत, दस हजार बेना लऽ रहैक ठौर बना, किछु दिनक खोराकी जोड़िया लेब। पछाइत एक-मुश्त रूपैआ लऽ कऽ महींस कीनि आनब।

तीन पूजी एक संग औत- दूध, बच्चा आ महींस। ओकरे सेवा केने जिनगी आगू मुहेँ ससरत। केकरा ने मन होइ छै जे बच्चेसँ हवाइये जहाजकेँ सवारी बनावी, मुदा...।

चालीस हजारक गुजराती भैंस कीनि आनि, खुटापर बान्हि नव जीवनक नव वर्षक नव कामनाक संग सिन्धुनाथ दुनियाँमे पएर रोपैक परियास केलैन।

❍

तिथि : 04 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 3392

जाड़ फाटि गेल

माघ मासक अनहरिया पख। रातिक आठ बजेक रेडियो-समाचार सम्पन्न भऽ गेल छल मुदा नअ नै बजल रहए। ओना मौसमक चकर-चालिसँ कखनो वसुधा हरित-भरित भऽ जाइ छैथ तँ कखनो वेनग्न बनि ज्वालामुखीक लाबा सेहो छिड़िऐबते छैथ। मुदा से नै भेल, तँए तेसराँ जकाँ अदहा फागुन तक लोक सीरके नै ओढ़ने रहत। हँ, एते तँ जरूर भेल रहै जे केता सालक पछाइत एहेन शीतलहरी तेसराँ साल भेल छेलै, जे रेकर्ड गिनीज-बुकमे तँ अछिए। सेयोगो नीक बैसलै। एक तँ भदवरिया बाढ़ि आबि धरतीकेँ तेना डुमौलक जे गहुमक चासकेँ चसिया देलक आ दलहन-रब्बीकेँ बसिया देलक। मात्र चसियौलक-वसियौलक से नै गामेसँ बैला देलक। तैपरसँ तिला सकराँइतिक प्रात तेहेन बरखा भेल जे वातावरणे पथरा गेल, जे पानि बनबैत शीतक संग सिहकी भरैत रहए।

ओना अष्टमीक एक पहर राति बीतल छल मुदा साँझक फड़िछौट पछुआएले रहए, किएक तँ तीन घन्टाक पहरमे नअ बजलापर एक पहर होइत अछि ने। जेना छहसँ नअ। मुदा सेहो सभ दिन थोड़े होइए। जेठ अपन दिनका हिस्सा बेसी लऽ रातिकेँ रतिया कऽ मतिया दइ छइ। जइसँ पुरुखो आ नारियोक मतिये रतिया कऽ मतिया जाइ छइ। तँए की माघो पाछू हटै छै? ओहो रातिकेँ बढ़ियाँ आ

दिनकेँ दीनमा बना दइते छइ। मुदा जेकरा रातिक पहिल घड़ी कहियौ आकि पहिल, दोसर, तेसर साँझ कहियौ... ।

मुदा नअ बजैमे किछु मिनट बाँकी जरूर अछि। जहिना आन किसान परिवार-सभ अपन रातिक पहिल पहरकेँ अरामक समए बना भवितव्य जिनगीक सूत्र जोड़ैक अवसर तँ बना लइ छैथ तहिना स्कूलो-कौलेजक विद्यार्थी पठन-पाठनक बनैबते छैथ। ओहो खेला पछाइत सुतिते छैथ। सबहक अपन जिनगीक सूत्र छैन। ओसारक ओछाइनपर करोट गरे पड़ल, माथ तर सिरमा नेने बीरू काका लूड़ू-खूड़ू करैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"भरि दिन जहिना अहाँ छिछियाइत रहै छी तहिना रातियो-बिराति अराम करब से नहि। जाबे एकठाम भऽ कऽ चिड़ै जकाँ मुँह-मिलानी नै करब ताबे चेहराकेँ चहरा केना पेटमे जाएत?"

वीरू कक्काक बातकेँ नेसनी काकी नीक जकाँ नै बुझि पेली, मुदा कोनो प्रश्नक जवाब कियो जे दइ छथिन से तँ किछु चढ़ाइए कऽ, भलेँ पुछनिहारक प्रश्न बुझने हुअए आकि नै बुझने हुअए। हाँइ-हाँइ कऽ नेसनी काकी बेटीकेँ दालि छौंकैक सरंजाम- करौछ, तेल, मिरचाइ, लसुन इत्यादि- चुल्हि लग रखि अपने ससरैत पति लग आबि किछु आगूए-सँ कहलखिन-

"अहाँकेँ ते खाली पेटबे की लोटबे रहैए, हमरा तइसँ निमहत?"

चढ़ल बोल जेहने नेसनी काकीक छेलैन, जे जहिना कोनो गोल वस्तु आगूसँ गुड़कैत अबैत हुअए आ अपनो कनी तिरछिया पाछू हटि सह मारने जहिना गति तेज होइ छै, तहिना वीरू काकाकेँ भेलैन। बजला- "अहाँ जकाँ हम मायावी थोड़े छी जे भरि दिन, भरि राति मये पसारब। घरमे जखन बेटी अछि, तखन जँ ओकरा चुल्हि-चिनवार नै सुमझा देबै तँ की सभ दिन अपने धेने रहब?"

वीरू कक्काक ऐगला बातपर नेसनी काकीक धियान गेबे ने केलैन। मुदा पहिलुका बात 'मयावी'पर धियान ओहिना छह-छह करैत रहैन जहिना कोनो रूप-सुन्नरि बिनु आभूषणे, बिनु वस्त्रे छह-छहाइत रहैए। पुछलखिन-

"की मयावी?"

ओना अपन मनक विचारकेँ तर पड़ैत वीरू काका देखलैन। केना ने देखितैथ। तेहेन मायाक मायामे पड़ि गेलौं जे बजैक वेगमे अपनो मायाधीन, मायातीत, मायाधीशक बीच अनेरे ओझरा जाएब। बजा गेल मायावी! मनमे रहैन जे हँसी-खुशीक बात करब, से तर पड़ि गेलैन। मुदा संगियोँ तँ संगीए छी, छने रूष्ट, छने तुष्ट! सूपक गोलका भाँटा जकाँ करखैन थीर रहत आ करखैन गुड़ैक जाएत, तेकर कोनो ठीक अछि। तखन तँ नीक हएत जे अपन हारि मानी, बजला-

"दुनियाँमे के नै मायावी अछि जे अहाँकेँ अधला लागि गेल। भगवानो सभ की जोग-मायावी कम छैथ।"

भगवानक नाओं अबिते नेसनी काकीक मन हरहरा कऽ हरिअर कचोर बनि गेलैन। बजली-

"बेटी-पुतोहुक जँ आगू-पाछू करैत अपन नजैर बरतन-बासनपर नै राखब, तँ किछु भेल तँ अनकर हाथ भेल किने। जे मुँह सभ दिन अपन हाथ देखलक, ओकरा जँ प्रवोधि कऽ नै राखब तँ ओ अनेरे कलह करत किने जे... ।"

नेसनी काकीक विचारकेँ काट-खोँट करबसँ नीक वीरू काका पशे बदलब बुझलैन। बजला-

"जड़कल्ला फटि गेल। ई साल खेप गेलौं।"

'ई साल खेप गेलौं' पतिक मुहसँ सुनिते नेसनी काकीक साँस जेना तेज हुअ लगलैन। बजली-

"एना किए मुहसँ अवाच बात निकाललौं? जाबे माँगमे सिनूर रहत ताबे खेपबै नै जीबै।"

पत्नीक विचारमे वीरू काकाकेँ गर अँटलैन। अधखिल्लू मनक फूलक सुगन्ध बिखेरैत बजला-

"छौंक ले की सभ रेशमा लगमे देलिऐ?"

नेसनी काकीकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बड़बड़ेली-

"माघ मास छिऐ, नेनमैत बेटी अछि, जँ ओकरा ई नै सिखा-पढ़ा देबै जे बेटी लसुनक लोक चटनियोँ पीस कऽ खाइए, मसल्लो खाइए आ आन-आन वस्तुक संग रसायनो बनै छइ। मुदा तेलमे भूजि जँ दमा, दुखताह, सरदीआह देह खाएत तँ ओकरा-ले ओ अमृत होइए। ओकरा जँ समैपर नै कहबै ते बाल-बोध अछि, बिसैर जाएत।"

ओना वीरू कक्काक मन अपन जिनगी आ खेतीक जिनगी देख हलसल-फुलसल रहैन। अपन हँसी-खुशी पत्नीक हँसी-खुशीमे मिलबए चाहै छला मुदा नेसनी काकी अपने पाछू वेहाल। सुनैक कान कहाँ रहलैन। आँखि-कान-नाक-मुँह सभटा वेहाल भऽ गेलैन। वीरू कक्काक मन फेर बदललैन। बदैलते बजला-

"लसुनक जे एते बड़ाइ केलौं से कएल-खाएल अछि आकि उड़ाएल-खाएल अछि?"

ओना पतिक प्रश्न नीक जकाँ नेसनी काकी नै बुझली, मुदा विषयोकेँ विचारैक तँ अपन रस छइ। तइमे नेसनी काकी रसाएल छैथे। रसाएल ई जे अपन चालीस बर्खक पतिकेँ अठारह बर्खक दमा रोगीक रूपमे सेवा करैत आबि रहल छैथ। तँए नितराएब, वेहाल हएब सोभाविके छेलैन। वीरू कक्काक मन ठमकलैन, ठमकलैन ई जे जहिना सेवा केनिहार सेवक अपन-अपन जिनगीक अनुकूल जीवन

दर्शन पबैए, तहिना ओहो ने भेली। दमा रोगक शिकाइत बारहो मासक सालमे, कोन मौसममे रोगक रूप बढ़ै छै, कोनमे समगम रहै छै आ कोनमे कमै छइ। एकर पहचान नेसनी काकीकेँ बेवहारमे आबि गेल छेलैन। तँए अन्नसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, मर-मसल्ला, समयानुकूल हुअए, एहेन इच्छा नेसनी काकीकेँ सदैत काल मनमे रहै छैन। मुदा डेढ़ बीघाबला किसानी जिनगी केहेन होइ छै ओ तँ वएह किसान बुझि सकै छैथ। नेसनी काकीक वौड़ाहा मन केतौ ठाढ़ हुअ नै चाहैन। बजली-

"रेशमा बेटीकेँ अपन सभ लूरि-बुधि सिखा दोसर घर पठेबै, नै तँ बास हेतइ। अनेरे अनका मुहेँ सुनौत जे माए केहेन धमधुसरी छेलइ। तँए साँझेसँ चुल्हि लग बैस चीजो-बौसक जोगाड़ कऽ दइ छिऐ, आगियो तपै छी आ कोन ताके की बनत सेहो सिखबै छिऐ।"

पत्नीक बात सुनि वीरू कक्काक मनमे उठलैन माइयोक तँ नमहर विद्यालय बाल-बच्चा लेल अछि। मन खुशी भेलैन। मुदा तैसंग ईहो भेलैन जे कोनो वस्तुकेँ विधिवत उपयोगी बनाएबे ने लूरि भेल। ओना पति-पत्नीक जिनगीमे दिनानुदिनक जे किरिया अछि ओ हँसी-खेलक भेल। मुदा जखन दुनू बेकतीक देहमे कोनो काए लगै छै तखन ओकरा छोड़बै वा पचबैले जे सेवा लगै छै, ओतइसँ ने सेवाक प्रादुर्भाव होइए।

मन अपन जिनगी दिस घुसकलैन। तेसर सालक जे शीतलहरी रहै, जँ ओ नै रहितैथ तँ नहियेँ जीब पेतौं। जिनगीक लीलाक अन्त भऽ जइतए। मनमे उठिते वीरू काका नेसनी काकीक ओ रूप देखए लगला जे केना बारह बजे रातिमे हुर-हुर-धुतहुरक पातक कुच्ची बना छातीक मालिश करै छेली। जँ संगी बनि ओ नै ठाढ़ रहितैथ तँ की आजुक दुनियाँ देख पबितौं? मुदा जहिना दुखमे मन वौराइ छै तहिना

सुखोमे तँ बौराइते छइ। सोना पेनौं मन बौराइ छै आ धुथुरो खेने तँ बौराइते छइ। मुदा नाओं तँ दुनूक...। जे सेवा अठारह बर्खसँ पत्नी करैत एली अछि ओकरा सुतलो नीने नै नकारि सकै छी...।

नेसनी काकी बजली-

“भगवान केकरो ने अधला केलखिन आ ने केकरो अधला करै छथिन। मुदा आगू-पाछू जे दूत रखने छैथ तिनका सबहक किरदानीसँ लोक तबाहीमे पड़ैए।”

ओना अपन चास-बास, बाड़ी-झाड़ीक रंग-रूप नेसनियोँ काकीक मनकेँ हरियेनहि छैन, मुदा जे हरिअरी वीरू काकाकेँ छैन ओइसँ कम नेसनी काकीकेँ छैन। मुदा बड़का महाजनकेँ जहिना अरब-खरबमे मन नचैत रहै छै तहिना छोटकोकेँ तँ साइयो-सैंकड़ामे नचिते छइ। तहूमे अन्नक खर्चक हिसाब जोड़ब ने पुरुख-पातरक काज भेल, तीमन-तरकारी जँ उपजल रहत तँ किए ने जनानियोँ चटनी-भुरतासँ लऽ कऽ सन्ना-सन्नी करैत भुजल, रसगर, झोड़गर, लटपट-सटपट करैत तरूआ तक लऽ कऽ चुल्हिक पूजा, जूड़शीतल पाबैन जकाँति करत।

ओना वीरू कक्काक परिवार जेते अपना भरे ठाढ़ होइत गेलैन तही हिसाबे विचारो दौड़ैत मजगूती पकड़ैत गेलैन अछि। से ओहिना नै भेलैन, अपन जिनगीकेँ चीन-पहचिन कऽ जीबैक बाट जेना-जेना ताकि-ताकि पकड़ैत गेला तेना-तेना विचारो आ परिवारो अपना भरे उठैत गेलैन अछि। नेसनी काकीकेँ अपन पेटक टटका जेतेक बात रहैन ओ उझैलते मन खलियेलैन।

मन खलियाइते अँकुरलैन। अँकुरलैन ई जे अपने किए सोर पाड़ने छला से तँ बिसरिये गेल छेलौं। जँ कहीं मने सोगाएल कि रोगाएल होइन, तखन तँ चूक भेल किने। मुदा उपाय? हँ उपाय अछि,

मन कलशलैन। मुँहक रूप छिटकलैन। छिटकबैक कारण जे बाल-बोध माए-बापकेँ हँसैत देख हँसि अपन सभटा कानब-खीजब बिसैर जाइए, तहिना ने बालकृष्णदेव पति छैथ। जँ संगे-संग खिल जाइथ तँ प्राश्चित कटत की नै? मन मानि गेलैन, मकै-धानक लाबा जकाँ छँहोछित तँ नै मुदा केराउ-मटरक भुज्जा जकाँ अठनियाँ मुस्की दैत नेसनी काकी बजली-

“हाय रे बा...! अहाँ किए सोर पाड़ने छेलौं से एको बेर बजलौं। दुनू बेकतीक बीचक बात छी केते रंगक काज अछि हमरा सूढ़िपर जे छल से बजलौं, अहाँ किए मुँह दाबि लेलौं। अच्छा कहू जे मन नीक अछि किने?”

अखैन धरि वीरू काका नेसनी काकीक लहैरमे लहराइत रहैथ तँए अपन सुधि-बुधि हेरा गेल छेलैन मुदा पत्नीक बात सुनिते मन पड़लैन। बजला-

“जरकल्ला फटि गेल!”

ओना वीरू कक्काक अपन प्रश्नक इशारा रहैन जे परिवारक अखैन धरिक जे समस्या रहल अछि ओकर समाधान भऽ गेल। मुदा नेसनी काकीक अपन जान हल्लुक होइक कारण रहैन, बेमरियाह पतिक सेवासँ माघक मुक्ति भऽ गेल। मुक्ति मनमे उठिते बुदबुदेली-

“एहेन-एहेन सँए-खौंक कालकेँ तँ सतबन्हाँ बाढ़ैनसँ झँटबै!”

जिनगीक अधिकांश समस्याक सामधान वीरू काका, नेसनी काकी मिलि कऽ केलैन। जे कल्पना लोकक मनमे विचड़ै छै वएह जखन साकार भऽ जाइ छै तखन ओ काल भागि भूत भऽ जाइ छइ। मुदा भूतो तँ भूत छी, कखैन भूत बनि जाएत आ कखैन वर्तमान, सएह ने बुझि पेबइ। जहिना सत् कखैन रज् आ रज् कखैन तम् भऽ जाइए तेकर ठेकान नै छै तहिना भूतो-वर्तमान आ भविसक अछि।

बिहुसैत वीरू काका नेसनी काकीक बातकेँ टोनियबैत पुछलखिन-

“कोन कालकेँ सतबन्हाँ बाढ़ैनसँ झँटबै?”

जहिना कियो केनिहार अपन काजकेँ प्रफुल्लित होइत देखैए आ मनमे खुशी होइ छै, तहिना वीरू कक्काक मनमे खुशी रहबे करैन। पुरुखक हथियार लाठी छी जे पानिमे तकछक-रकछक बनि जाइए आ मोटा तर भार। मुदा तेना नै, नारीक अपन अनुकूल हथियार बाढ़ैन छइ। सालकेँ तीन मौसममे बाँटि, तीनू मनसूनकेँ तीन-तीन अवस्थामे खाँति कऽ तेना खोंटिया लेलैन जइसँ नेसनी काकीकेँ अपनापर भरोस जागि गेल छैन, विचारमे गुरुत्व आबि गेल छैन। तँए अपनापर नै नाचैथ, सेहो केहेन हएत?

विचारकेँ समटैत वीरू काका बजला-

“भेल, बहुत भेल, तिला-सकराँइतसँ फगुआ धरिक खेल खेलि लेलौं। आब पति-पत्नी बनि परिवारमे खेलू।”

जहिना कोनो पनचैतीमे बजक्कर उझैक-उझैक अपन समए गमेला पछाइतो बजैत रहैए तहिना उधियाइत मन नेसनी काकीक रहबे करैन। बजली-

“खेलेटा किए खेलब! धुरखेलो किए ने खेलब। अपन घर छी, अपन परिवार छी तइमे पाहुन बनि थोड़े आएल छी जे पहुनाइ करब। संग मिलि सभ खाएब, सभ पसरब, सभ मलरब।”

नेसनी काकीक बात फेर, नागीन फुलझड़ी जकाँ वीरू काकाकेँ नेसि देलकैन। मने-मन सोचए लगला जे भेल, बात फेर छिड़िया गेल! जे बात कहए चाहै छिऐन ओ तर पड़ि गेल। जे लगसँ दौग कऽ आगू बढ़ि गेल तेकरा बिना दौड़ कऽ पछुएने थोड़े घेरि पाएब, तइले तँ कनी दौड़ै पड़त। बजला-

“की धुरखेल कहलिऐ?”

पतिक सेवा जेना नेसनी काकीक पतिव्रत-रूप आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। बजली-

“एकटा भेल खेल, दोसर भेल धुरखेल। अहाँक देहमे दम्माक काए लागल अछि, एकरा केना छोड़ा कऽ नीरोग बना संग मिलि जीब लेब, वएह जीअब भेल धुरखेल।”

पत्नीक प्रश्नकेँ गंभीरतासँ लैत वीरू काका बजला-

“केना रोग छोड़ा कऽ निरोग बना राखब?”

अपन गुरुत्वक एहसास नेसनी काकीकेँ भेलैन। बजली-

“नअ बर्खक अखिहास केने ई लूरि हमरा भऽ गेल जे ता-औरुदा ई दम्मा किछु ने बिगाड़ि पौत।”

पत्नीक बात सुनि वीरू काकाकेँ अपन जिनगीक आशा बढ़लैन। आशा बढ़िते आशक्त भऽ पुछलखिन-

“की कहलिऐ नअ बर्खक अखिहास?”

जहिना स्कूल-कौलेजमे शिक्षक धुर-झाड़ बुझबै छथिन तहिना नेसनी काकी धुरा झाड़ैत बजली-

“बारह मासक सालमे देखार तीनटा मनसुन अछि। जाड़, गरमी, बरसात। अही तीन मनसुनक बीच लोक जीबो करैए आ मरबो करैए।”

बिच्चेमे वीरू काका मुड़ी डोला सुहकारैत बजला-

“हँ से तँ सएह देखै छिऐ।”

पतिकेँ सुहकारिते नेसनी काकीक सूढ़ि चढ़लैन। समरथाइ जगलैन। समरथाइ जैगते अपन सामर्थ देखबैत बजली- “ओना सालक गति एकहरियो अछि दोहरियो आ तेहरियो अछि मुदा...।”

नेसनी काकीकेँ आगू बजैले मुँह खुजले रहैन आकि बिच्चेमे वीरू काका टोकि देलखिन-

"की एकहरी, दोहरी आ तेहरी?"

जेना बरीक सभ कथू ठोरेपर ओरियाएल रहैन तहिना खोंटैत बजली-

"गोटे साल खूब जाड़ भेल, शीतलहरियो भेल, तहिना गोटे साल खूब झमझमौआ बरखो भेल जइसँ बाढ़ियो आएल। तहिना गरमियोँ भेल जइसँ लू सेहो चलल...। मुदा ई भेल एकहरी। दोहरी भेल जे लगातार साले-साल शीतलहरीक संग जाड़ो भेल आ बर्खाक संग बाढ़ियो आएल।"

ओना नेसनी काकी अपन बात अपना जनैत सोझराइए कऽ बजैत रहैथ मुदा वीरू कक्काक मनमे अपन बात बजैले औढ़ मारैत रहैन, तँए जल्दबाजीमे पत्नीक बातपर विराम दिअ चाहैत रहैथ। बजला-

"एना ओझराएल बात नै बाजू, सोझ-साझ करि कऽ बाजू।"

पतिक बात सुनि नेसनी काकी ठमकली। ठमकली ई जे पतिदेव तँ पेटक बात बुझए चाहै छैथ। मुदा नीक जकाँ केना घोरि कऽ पीयेबैन, जइसँ मन मानि जाइन। मनमे उठलैन जखन एकटा अक्षर एकटा काज बुझा सकैए, एकटा आँगुर भगवानसँ राक्षस तक देखा सकैए तखन हमरा बुते किए ने हएत। कहलखिन-

"देखियौ, जखन कम जाड़ रहल वा मध्यम जाड़ रहल वा अधिक जाड़ रहल तँ ओ तीनूक तीन सूत्र भेल। तीनू सूत्रक अपन-अपन खेल-वेल छइ। तँए ओ खेल-वेल जखन पकड़ाएत तखने ने ओकर नीक जकाँ कूटन-पीसन करबइ।"

पत्नीक विचारकेँ सुहकारि वीरू काका बजला-

"हँ, से तँ हेतै?"

अपन विचार मनैबते नेसनी काकीक मन नेसा गेलैन। बजली-

"आब अपन बाजू जे की कहै छेलौं?"

'बाजू जे की कहै छेलौं' सुनि वीरू काकाकेँ अरिकोंच जकाँ कब-कब तँ नै लगलैन मुदा ओल जकाँ मन घोल कऽ देलकैन! पति-पत्नीकेँ प्रेम-प्रेमीक प्रेमास्पदक आसनपर बैसबैत आँखिक बुइआ नजैरकेँ बदैल देलकैन! आँखिमे सुगबुगाइत दुनू बुइआ मुँह-मिलानी केलक। मुँह मिलानी कैरते दुनू दिस नाच करए लगल। वीरू कक्काक मनक तार-तंत्र तनतनेलैन। माथक टीक केतेकाल धरि टिकल अछि? जेतेकाल पत्नी छैथ। देवीरूपा पत्नीयेँक दयासँ ने अपन मान-समान बँचा पाबि सकै छी। तहिना दोसर दिस नेसनी काकीक मन अपन मांगक सिनूर देख-देख नचबो करैत आ गेबो करैत। जा धरि लुल्हो-नांगर आकि रोग-वियाधिसँ ग्रसित पुरुख संगी रहता ताबैए धरि ने ऐ सिनूरमे चमक रहत! अपने-अपने बेथा-कथा दुनूक मनकेँ चुरम-चुर करैत। गुमा-गुमी, चुपा-चुपी पसरल। पझाएल आगिकेँ जहिना खोंरनीसँ खोरि भनसिया नव आगि बना धधकबैए तहिना नेसनी काकी धधकबैत बजली-

"खाइयो-पीबैक बेर भेल जाइए, झबदे काजकेँ उसारू।"

तैबीच रेशमा नेसनी काकीकेँ सोर पाड़ैत बाजल-

"माए, भानस भऽ गेल! जाड़क मास छी धीपले-धीपल नीक हएत।"

एक दिस नेसनी काकी पतिक पाशमे फँसि बेदम भेल तँ दोसर दिस बेटीक बातक आशमे झूलए लगली। तैबीच वीरू कक्काक मन उमड़लैन। बजला-

"रेशमोकेँ सोर पाड़ि लिऔ। बच्चा अछि, असगरमे डर हेतै।

एतेकाल काजक अनमेनामे छल मन नचै छेलै, मुदा काज सम्पन्न भेनौं ओकर मनक काज चलबे करतै।"

पतिक विचार पाल-पाल कऽ पाबि नेसनी काकी बीच-बचाउमे बजली-

"बुच्ची, सभ कथूकेँ झाँपि दहक आ तोहूँ एतै चलि आबह। बुड़हाक गप-सप्प सुनहुन हेन।"

वाह रे दुनियाँ! केतौ संगिनी बुड़हा कहि सम्मानित करैए, तँ केतौ हिप्पीबला बर, कोठाबला घर! ओना पति-पत्नीक किछु बात एहनो अछि जे बाले-बोध-बच्चा किए ने हुअए मुदा ओहो घेरा दाइए दइए। जइसँ दुनूक सिनेह ससैर सन्तानो दिस बढ़ैए। वीरू काका बजला-

"रेशमा माए, जड़कल्ला फटि गेल।"

रेशमा माए कहने जहिना रेशमाक कान ठाढ़ भेल तहिना नेसनी काकीकेँ अपन ओसताजीपर खुशी उपकलैन। उपैकते बजली-

"ऐबेर भगवानो दहिन छला, शीतलहरियो नै भेल आ जाड़ो कम खसल। ओना हम जाड़ोक सभ सरंजामक ओरियान काइए नेने रही। मुदा ओहो सभ बँचिये गेल!"

नेसनी काकीक बात सुनि वीरू कक्काक मनमे भेलैन जे फेर पत्नी अपना दिस ससैर रहली अछि। मुदा अपनो तँ किछु कहब अछि। टोकारा दैत बजला-

"साँझसँ बहुत धमगज्जर भेल। एकटा बात सुनि लिअ।"

माए दिस रेशमा तकलक। नेसनी काकीक नजैर घुमिते मनमे भेलैन, बाल-बोध लगमे बैसल अछि, ओ की बुझत जे बाबूक बातकेँ माए कनवाहि नै करैए। पाछू घुसकैत बजली- "अहाँ ते अपने बेर-बेर

बजए चाहै छी आ बिच्चेमे बिसैर जाइ छी। मन पाड़ि कऽ बाजू।"

माइक बात सुनि रेशमाक मन खनहन भेल। खनहन ई जे बीचमे माए बाधक नै बनती। वीरू काका बजला-

"मरैत-जीबैत बुझू आकि हारैत-जीतैत, दुनू गोरे एतेटा जिनगी तँ काटि लेलिऐ मुदा आगू केना खेपब सेहो ते अपने दुनू गोरे ने विचारब।"

पतिक बात नेसनी काकीकेँ जेना नेसि देलकैन। नेसि ई देलकैन जे जखन लोक मरिए जाएत आकि हारिए जाएत तखन जीतत केना? जीतैक बाटमे केतौ-केतौ लोककेँ मरैओ पड़ै छै आ हारैओ पड़ै छै...। झिझकैत नेसनी काकी बजली-

"एना किए मरदुआर जकाँ बजै छी? पोखरा-पाटन जकाँ चौकोर किए ने बजै छी। एना कहियौ जे एन-मेन जहिना पाछूओ कटल तहिना आगूओ खेपब।"

माइक बात रेशमा नै बुझि पेलक जे 'एन-मेन' की भेल? बाजल-

"माए, आनी-मानी हम नइ जानी।"

भेल भानसमे पहपटि रेशमा ठाढ़ कऽ देलक। नेसनी काकी मने-मन सोचए लगली, बेर परहक भदवा ठाढ़ भऽ गेल। आब एकर आनी-मानी लगाएब आकि पतिक बात सुनब। तँए किछु बजैसँ परहेजे नीक हएत। जँ अपने आगू बढ़ि किछु बजता तँ रेशमाकेँ प्रवोधि लेब। ने ओ केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने, तखन निचेनेसँ किए ने दुनू माए-बेटी मुँह-मिलानी करि लेब।

मुदा वीरू काका ऐ ताकमे जे लगक बेटी तँ हुनके[6] छिऐन तँए

[6] पत्नी (नेसनी काकी)

हुनकर बुझाएब बेसी नीक। तँए सबहक मुँह सभ ताकए लगल। नअ-बजिया घड़ी-घण्ट रामो-जानकी मन्दिरमे आ रधो-कृष्ण मन्दिरमे बाजि गेल। मुदा ऐठाम तँ भेल भानस बरतनमे कनैए।

थोड़े कालक पछाइत मौन भंग करैत वीरूकाका बजला-

"बुच्ची, बहुत दिनक पछाइत बदलल रूप जिनगीक पेलौं। तँए तोरा प्रश्नक उत्तर पछाइत देबह, पहिने अपन फटेहाल जिनगी सुनि लएह।"

मुदा बाल-बोध रेशमाक मनकमना लगले केना मेटा-जाएत आकि दबि जाएत। बाजल-

"बाबू, पहिने अपन बात कहियौ खाइबेर हमरा बुझा देब।"

सबुरिया बात रेशमाक सुनि वीरू कक्काक मन नचलैन। नचलैन अपन दायित्वपर। कोन बाप एहेन हएत जे रेशमाकेँ कुसुमा बनैत नै देखए चाहत। जेहेन कामना असान तेहेन दुनूक बीच दूरीक तफान। वौड़ाइत मन मुदा लगले देखलेहे जगहपर आबि गेलैन। हम पिता रेशमाक छिऐ, पोसै-पालैक भारबला। मुदा एहेन के रेशमा अछि जेकरा पिता नै होइन, रेशमा-कुसुमा बनि परिवारसँ लऽ कऽ गाम-समाजकेँ कुसुमित केना करत, तेतबे ने अपन दायित्व भेल? बजला-

"बुच्ची, माए तँ संगे छेलखुन, मुदा तूँ बाल-बोध छह तँए कहि दइ छिअ। अखैन तकक किसानी जिनगीमे तीनियेँ साल किसानी भेल!"

ओना मिडिल स्कूलक सातम कक्षाक छात्रा रेशमा, मुदा पिताक भाषा नीक जकाँ नै बुझि पाबि रहल छलि। बाल-बोध रेशमा पिताक आँखिपर आँखि चढ़ा अपन विवशता देखबए लगलैन, ओना वीरूओ काका रेशमाक नजैरक क्रिया पढ़ैत रहैथ मुदा थाह नै पाबि रहल छला जे रेशमाक जिज्ञासाक रूप की अछि। दू-दिसिया रूप देख बिच्चेमे

बौआइत रहैथ। मुदा कोनो प्रश्न नै उठैत देख वीरू काका आगू बजला-

"बुच्ची, एतेटा किसानी जिनगीमे एक साल समगम बरखा भेने समगम उपज भेल, जइसँ समगम जिनगी भेटल। दोसर बेर शुरूहे बैशाखमे धारक मुँह सौंसे गौंआँ बन्हबौलैन तइ साल सेहो भेल आ ऐ साल अपन बोरिंग गरौने भेल अछि।"

बाल-बोध रेशमाक जिज्ञासा फानि उठल-

"बाबू, तीनू तँ तीन रंगक भेल, तखन तीनू बरबैर केना भेल?"

बेटीक गंभीर बात सुनि वीरू काका ठमकला। ठमकला ई जे तीनूक तीन दिशा अछि, मुदा मिलानी एकठाम भऽ जाइए। तैसंग ईहो भाइये जाइ छै जे तीनूक क्षमतो तीन रंगक छइ। समगम बरखाक माने भेल अखारसँ आसिन, जखन कि धारक भेल छह मास। मुदा बोरिंग तँ भेल बारहो मासक।

तेतबे किए, समगम समए भेने धान नीक हएत, अदहा-छिदहा रब्बी-राइ हएत, मुदा खेतीक मौसम तँ एकेटा पकड़ाइए, जखन कि तीन मौसममे तीन रंगक चास-बास- अन्नसँ फल-फलहरी आ तीमन-तरकारी धरि- लगने तीन गुणाक अन्तर भऽ जाइए। बोरिंग बारहो मासक ऐ दुआरे भेल जे खेतक कोनो उपजा लेल पानिक खगता होइ छै चाहे ओ जेमहरसँ आबए। अकाससँ बरखा बनि आबए, धारक पेटसँ आबए चाहे पतालक पेटसँ बोरिंग होइत आबए। आरो केते रंगक विचार सभ मनमे उठए लगलैन।

रेशमाक प्रश्नपर वीरू काकाकेँ मन विचरण करैत देख नेसनी काकी खोंरना चलौलैन-

"भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल बाल-बोध अछि, खाएत-पीअत-सुतत आकि भरि राति सोंखैर सुनैत रहत।"

मनक पसरल विचारक जालकेँ समेट वीरू काका बजला-

"बुच्ची, परिवारक नव सिरासँ जन्म भेल।"

रेशमाक मनक ललक लड़कल-

"की नव सिरा?"

रेशमाक प्रश्न सुनि वीरू काका फेर ठमकला। ठमकला ई जे फेर प्रश्नक मुँह पाछूए दिस घुमि रहल अछि। एक सिरा भेल जइसँ नव सिराक जन्म भेल आ दोसर सिरा भेल आगू बढ़ैक। लगले मन फनैक गेलैन। फनैक ई गेलैन जे जहिना सभ अपन जिनगी हँसी-खुशीसँ आनन्दित होइत चलऽ चाहैए, से चाहे हौ आकि नै हौ, ई दीगर भेल। मुदा से होइ की छै? होइ तँ ई छै जे लगले खुशी, लगले गम आ लगले दुखी! मुदा आनन्द तँ ओ भेल जे सदैत बढ़ैत रहत। तहिना किसानी जिनगी लेल किसानीक जे मूल समस्या छै, तेकर समाधान भेला पछाइते ने किसानक देहपर रोहानी औत, जइसँ रोहानियाँ रूप बनैत रोहनियाँ फलक आशा करत। पतिकेँ गुमे-गुम देख नेसनी काकी फेर टिपलैन-

"समैक ठेकाने ने करै छी आ सिरा-भट्ठामे दहाइ छी।"

वंशीक लहकी जकाँ पत्नीक बात सुनि वीरू काका लपैक कऽ बजला-

"दहाइ कहाँ छी, फाटल जाड़क वेगमे नहाइ छी।"

❍

तिथि : 09 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 3328

सुरता

जेठ बेटा विलासक उड़न्ती समाचार कानमे पड़िते सुरत कक्काक सुरता खींचि लेलकैन। मने-मन विचार करए लगला जे पिताजीक मुँह कहलकैन पितृ-ऋणक चुकता तँ पुत्र-सिर अबैए, मुदा पुत्र-ऋणक चुकता पिताक सिर आबए..? ऐठाम आबि मन भन-भना उठलैन-

"बेटाक रीन नै भार माए-बापपर ओतेकाल रहै छै जाबे मड़बा बान्हि, चुल्हि-चौकाक पूजा नै भेल रहै छै, जखन से नै तखन अनेरे उड़ी-बीड़ी मनमे किए लगौने छी।"

मन ठमकलैन, मुदा लगले भेलैन जे कहाँदन हमरो नाओं केसमे दऽ देने अछि। झाँपल रिपोट छै जे विलास दुनू परानीक नाओंसँ जे पकड़ेलै से तँ पकड़ेबे केलै, कहाँदन ईहो छै जे पिताक हाथे सेहो रूपैआक निकासी भेल, तखन तँ दोखी भेबे केलौं किने। किए ने कोट-कचहरी करबाइ करत, मुदा कोटो-कचहरी की केकरो अनकर छिऐ जे हमर बात नै सुनत। मन थीर भेलैन, मुदा लगले दोसर बात मनमे खसलैन। खसलैन ई जे कहाँदन ईहो कहनिहार गवाह सभ भऽ गेल अछि जे कहै छै- जँ सरकारकेँ सही-सही जानकारीक गवाह बनि गवाही दिऐ, तखन...।

ईहो सुनै छी जे कहाँदन सरकार मानि रहल अछि जे जे सही जानकारी देत, ओइसँ तँ शासनेक मदैत ने भेल, ओकरा कोनो सजा नै

हेतइ, संगे अबै-जाइक भत्ता सेहो भेटतै। मुदा ने सुरत काका पत्नीकेँ कहलखिन आ ने कमली काकी पतिकेँ। कहनाइयो उचित नहि। परिवारक बात छी, तहूमे जेठ बेटा! छोट रहैत तँ बाल-बोध कहि टारिओ देल जा सकै छल। अधखिजू समाचार कानमे रहैन तँए दुनूमे सँ कियो अवाच बात मुहसँ बाजए नै चाहैथ। जे उचितो अछि। सरकारी कोषक गमनक मामिला अछि, नोकरीक दरमाहाक आंशिक रूपमे भागीदारी अछि, तखन वेतनक अतिरिक्त हाथ बढ़ाएबकेँ के उचित कहता। केकरोसँ की छिपल छै जे दू-दिसिया गमन छइ। एक दिस आम-जन दोसर दिस शासन-जन, तैबीचक मामिला छी!

दिनक सुर्ज खसैत-खसैत रातिक कगनीपर पहुँच गेल। केते पतियानी लगा आ केते बिनु पतियानीए चिड़ै सभ अकासमे उड़ैत। ओना अवसान बुझि बगुलाक पाँती पच्छिमसँ पूब दिस उड़ि-उड़ि भरिसक पानिक किनछरि तकैले जाइत, से नै गाछ सभपर बनौल अपन-अपन खोंतामे रात्रि विश्राम करए जाइत। जखन गाछपर शयन-कक्ष छै तखन अनेरे किए अन्हारमे सुर्ज तकैले समुद्रक कात जाएत। सुर्ज समुद्रमे होथु आकि पहाड़पर जखने उगता तखने गाछपर पड़ि जगेबे करता, तैबीच ब्रह्म नीनकेँ किए छोड़ि देब। मुदा कौआ-चिलहोरियाक अखनो पतियानी नै लगल अछि, चारूकात टाँहियो मारैए आ कुचड़बो करैए। उल्लू तँ सहजे अखैन ब्रह्म नीनेमे हएत। जाबे दीया नै जड़त ताबे लछमी जगती केना, जाबे लछमी जागि कऽ सोल्हो कलासँ विभूषित भऽ बहराइले तैयार नै हेती ताबे हमर कोन काज। बाझ हम थोड़े छी जे जेकराले जेहने दिन तेहने रातियो, एके वृत्तमे लगल रहब।

बाध-बोन दिससँ आबि सुरत काका हाथ-पएर धोइ दरबज्जाक मुहथरिपर पएर रखबे केलैन आकि कमली काकी चाह नेने पहुँचली। आन दिनसँ भिन्न सुरत कक्काक सूरत कमली काकीकेँ बुझि पड़लैन।

मने-मन सोचए लगली जे किएक दिन अछैते सुर्ज मड़ियाएल छैथ? सभ दिन केहेन बढ़ियाँ हँसी-खुशीसँ चाहो पीबै छला आ दिन भरिक काजक नीको-बेजए सुनबै छला, मुदा आइ उदास जकाँ किए छैथ। जरूर मनमे कोनो ने कोनो सन्ताप छैन, जखने सन्ताप तखने विलाप! मुदा लगले मन आगू घुसैक गेलैन। घुसैकते घुरघुरेलैन जे बौआबला बात ने तँ कियो कहलकैन हेन? जखन अपनो सुनलौं तखन ओ नै सुनने हेता सेहो केना मानल जाए। तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे जहिना पुरुख नारीकेँ अनुकूल बना घाटक घटवारि करै छैथ तहिना ने नारियोक दायित्व बनै छैन जे पतिकेँ अनुकूल बना बाटमे बटमेर करैथ। मनमे अबिते पतिव्रत जगलैन। जैगते, जहिना अछाहे कुकुर भुकैए तहिना भुकली-

“माए-बाप बेटा-बेटीकेँ जन्म दइ छै, मुदा अपन पतिपाल तँ अपने करए पड़ै छइ। तइले किए बेटाक सन्तापसँ माए-बाप सन्तापित हएत? आगूमे चाह आएल अछि, चैनसँ पीबू। आब ऐ दुनियाँ आकि ऐ जिनगीमे रहि की गेल जे अनेरे मन वेपिरीत करब।”

पत्नीक बात सुनि सुरत कक्काक मनक दोसर दरबज्जा खुजलैन। खुजिते बजला- “चाह ते रीब-रीबेमे चलि गेल, कनी नीक चाह पीबैक मन होइए।”

कमली काकी बुझि गेली जे अखैन हिनका लेल नीक चाह तँ वएह ने हएत जइमे चिन्नी कम आ लीकर बेसी होइ। बजली-

“कनी थम्हू, अपनेसँ बनौने अबै छी।”

पत्नीकेँ लगसँ हटैत देख सुरत काका बजला-

“किए अपने चाह बनबए जाइ छी। जखन चुल्हि तर पुतोहु बैसल छैथे तखन अपने किए अनेरे हमरा निमित चुल्हिक भीर जाएब। हुनके कहि दियनु जे कनी कड़गरसँ चाह बनौती।”

कमली काकी अनुकूलताक बाटमे प्रतिकूलताकेँ आएब नीक नै बुझलैन। कनी फड़िक्केसँ पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, चाहमे लीकर हिसाबे चिन्नी कनी कम देबइ।”

कहि पतिक आगूमे पुन: आबि ठाढ़ भेली। आँखि उठा सुरत काकाकेँ देखली तँ बुझि पड़लैन जे बेसी बेथाएल छैथ। बेसी बेथाएल छैथ आकि जिनगीमे केतौ बेधाएल छैथ से कमली काकी बुझबे ने केली। खोह परहक दौनक बरद जकाँ टोकारा भरली-

“जँ केकरो मुहेँ सुनी जे कौआ कान नेने जाइए ते अपन कान देखब आकि अनेरे दुनियाँमे छिछियाएल फीड़ब?”

एक तँ अपन सीमांकनक विचार दोसर कड़गड़ लीकर देल चाह, तैपर सँ पत्नीक टोकारा, सुरत कक्काक मनकेँ डोलौलकैन। डोलिते बजला- “एकटा उड़न्ती बात परिवारक सुनलौं...।”

जहिना दूटा कौआक बीच एकटा टुकड़ी रोटीले मुहसँ लुका-झुकी होइए तहिना सुरत कक्काक बोलकेँ लूझि कमली काकी बजली-

“ओना परसुए विलासक विषयमे सुनलौं, सुनला पछाइत जखन टोहियबऽ लगलौं तँ कोनो भाँजे ने बैसल।”

“किए ने कोनो भाँज बैसल?”

“केकरो गपक कोनो ठेकाने नहि। सभ अपने-अपने शिकारी जकाँ शिकार सधैए।”

‘सभ अपने-अपने शिकार साधैए’, ई तँ कोनो अधला नै भेल, मुदा एते तँ हेबे करत जे बेसी मुसहैनमे मूस केनए नुका रहत, से सभ बुते ताकल थोड़बे हएत? ओना अखैन तक दुनू परानीक सोझहामे रहितो बात परोछे-परोछी भेलैन, मुदा जाबे सोझा-सोझी परगट नै हएत ताबे घटनाकेँ जड़ियाएब सम्भव नहि। सुरत काकाकेँ मनमे

उठिते मुँह खुललैन-

“देखू, अखैन दुइए परानी छी, घरक इज्जत-आवरूक बात छी, तँए मुँह दाबि बजलासँ नै हएत। दुनू गोरे मुँह-मिलानी करैत चलू जे अहाँ की सुनलिऐ आ हम की सुनलौं।”

पतिक बात सुनि कमली काकी सहैम गेली। सहैम ई गेली जे कियो जे किछु बजैए, से ओहिना थोड़े बजैए। जँ सोल्होअना सत् नै बजैए तँ सोल्होअना फुइसो तँ नहियेँ बजैए। जँ अदहो-छिदहो सत् हएत तैयो तँ परिवार कलंकित भाइये जाएत। अपना अछैत जँ परिवार कलंकित भऽ गेल तखन बँचल की जइ लऽ कऽ आगूक जिनगीक बाट काटब। मुदा सम्बन्धो तँ देहा-देही अछि। केकरो बेटा जँ कुरसी पबैए तँ ओकरा ऊपर ने कुरसीक भार भेल, आकि ओकर परिवारक ऊपर? जँ से नै भेल तखन नीक-अधलाक भागी ओ बनत आकि परिवार? मुदा जँ परिवारक आनकेँ ओइमे लटपटौल जाए तखन ओ बँचि केना पौत? निरदोसो तँ दोखी बनबे करत? कमली काकीकेँ आगूक कोनो बाट सेरियाम देखिये ने पड़ैन। बजली-

“ओना ने विलास अपने आ ने पुतोहुए अपना मुहेँ किछु कहलैन, मुदा गाममे तँ लाबा-फरही उठिये रहल छइ। जे सुनबो केलौं आ सुनितो छी।”

“सएह ने पुछै छी, जे कोन बात अहाँ केना सुनलिऐ आ हम केना सुनलिऐ।”

पतिक बात सुनि कमली काकी फेर बात घुड़ियबऽ चाहलैन। मुदा मनमे जेना झोंक उठलैन, तहिना बजली-

“बौआ कहाँदन सरकारक कोष गमन कऽ लेलक अछि?”

पत्नीक बात सुनि सुरत काका आगू बढ़ैत बजला-

“हम तँ ईहो सुनलौं हेन जे रूपैआ बैंकसँ बरामदो भेल अछि।”

कमली काकी-

"ई बात हम नै सुनलौं। सुनलौं जे कहाँदन लोकोक पाइ गमन केने अछि।"

नमहर साँस छोड़ैत सुरतकाका बजला-

"सुनैमे आएल अछि जे हमरो नामे कहल गेल अछि जे हुनको हथौटी पाइयक कारोबार भेल अछि।"

पतिक बात सुनिते कमली काकी बजली-

"एहनो अनसोहाँत होइ छइ। घरमे जँ पाइ आएल रहैत तँ हम नै देखतिऐ।"

तैपर मुँह दाबि सुरत काका बजला-

"मुदा, से घरमे बजने नइ ने हएत। ओ तँ कानून-कायदाक बात भेल किने, तत्खनात ते थाना-बहानाक काज शुरू भाइये जाएत किने! तखन?"

पतिकेँ निराश होइत देख कमली काकी बजली-

"थाना पुलिसकेँ बुझा कऽ कहबै।"

सुरत काका-

"जँ नै मानए, तखन?"

कमली काकीकेँ जेना मनमे झोंक उठलैन। बजली-

"जँ नै मानत तखन बुझल जेतइ। ओना परसुए हुलास[7] मधमन्नी गेल। घुमि कऽ एलापर सभ बात बुझबे करबै, तइले मनकेँ किए छोट करै छी।"

सुरत काका-

[7] छोट बेटा

"हुलासकेँ केना पता लगलै?"

कमली काकी-

"ओकरा कहाँदन भौजाइ फोन केने छेलखिन।"

"की सभ कहने छेलखिन?"

पतिकेँ उत्सुक देखते कमली काकीकेँ अपना विचारमे अनुकूलता बुझि पड़लैन। अवसरकेँ बिना गमौने बजली-

"अपना दुनू गोरे ते सहजे अथवल[8] भेलौं। तखन तँ हुलासे ने घरो-बाहर करैए आ बाहरो-घर करैए। तँए जाबे ओ मधमन्नीसँ नै अबैए ताबे, जहिना मुँह दाबि बिसरल छेलौं, तहिना ताबे धरि मुँह दाबि बिसरल रहू।"

पत्नीक एकोसिया रूप देख सुरत कक्काक मन मुसकलैन। मुसैकते फुरफुरेलैन। फुरफुरेलैन ई जहिना एक दिन माघ जीने वा नहेने वा मुकावलाक शक्ति पेने, मासो भरिक माघकेँ खेलौना लोक बना लइए, तहिना जाबे हुलास नै आबि जाइए ताबे किछु बाजब अनुचित हएत। एकर माने ई नै जे घटने बिसैर जाइ। विचारणीय प्रश्न तँ ऐछे जे एना भेल किए? कोषागारमे कोष पड़ल अछि, तँए ने। जँ धारक गतिये कोषो चलए तखन किए केतौ ठहराउ हेतै आकि चकभौरमे मोनि फुटतै।

सामंती बेवस्था जखन अर्द्ध-विकसित पूजीवादी बेवस्थामे संक्रमण हुअ लगैए, तखन संस्कार संस्कारक बीच नमहर खाधि बनि जाइए। जइसँ टकराहैटक जगह बनि जाइ छै, टुट-फुट शुरू होइ छइ। जइसँ धारक कातक खेतक जेहने दशा होइ छै तेहने जिनगियो आ विचारोक होइ छइ। जहिना धारक कातक खेतक माटि आ

[8] अथवलक माने ई जे काजक सीमा बदलब।

पानिक लहैरक बीचक जे स्थिति रहै छै जे कखैन कटनमा रूप पकैड़ काटि कऽ पेटमे थाल-कादोकेँ घोरि-घारि पाँक बना माटिक ऊपरो आ पानियोँक संग भँसियबैत चलैए तहिना भऽ जाइ छइ।

सुरत कक्काक परिवार मध्यम किसानक छैन। ओना मध्यमो किसान केतेक रंगक छैथ, कियो एहनो छैथ जिनका बीस बीघा जमीन छैन, कागजी रूपे मध्यम किसान भेला, मुदा खेतमे धार बहै छैन। तहिना एहनो छैथ, जे बालुक भाँजमे पड़ल छैथ। कियो एहनो छैथ जे चौर-चाँचरक भाँजमे पड़ल छैथ, तँ कियो एहनो तँ छैथे जे बीस बीघाक परिवार रहितो सम्पन्न परिवार छैथ। नीक जमीन, उपजबैक नीक बेवस्थाक संग जे परिवार अछि ओ किए ने सम्पन्नता आनत। मुदा से नै, सुरत काकाकेँ आठ बीघा जमीन जइमे बोरिंग-दमकल अपना छैन।

सुरत काकाकेँ तीन सन्तान। जेठ बेटा माझिल बेटी आ छोट बेटा। नवका हवा-विहाड़िसँ बेसी प्रभावित परिवार नै, तँए समटल खर्च, समटल जिनगीक गति। खेतक उपजासँ परिवारो चलैत आ दुनू बेटोकेँ कौलेज धरि पढ़ौलैन। ओना अपन इच्छा रहैन जे जहिना बेटा-तहिना बेटी, सभ तँ अपने सन्तान भेल, तँए परिवारमे सभकेँ एक रंग खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ कपड़ा-लत्ता बर-बेमारीक इलाज तक तँ निमहैत रहैन मुदा पढ़ाइ लग आबि भदवा ठाढ़ भऽ गेलैन। भदवा ई ठाढ़ भेलैन जे पत्नी कहलकैन-

"मैट्रिक तक बेटीकेँ पढ़ा लेलौं, जेते खर्च पढ़बैमे केलौं, तेते खर्च बिआहोमे हएत, खर्च दोबरा जाएत। से अपने जानी।"

पत्नीक विचार अकाट्य बुझलैन। मन दुनू दिस कुदलैन। एक दिस ई कुदलैन जे जेते बेटीक हिस्सा खेत-पथारमे हएत तेते ओकर चुकता करि दिऐ, जइसँ खर्च भारी नै बुझि पड़ैन। मुदा दोसर दिस

जखन अपनापर नजैर पड़ैन तखन होइन जे बेटी तँ घरसँ चलि जाएत। अपने दुनू परानीक जिनगी केना चलत। जँ बेटा-पुतोहु कहैथ जे बारह मासमे चरि-चरि मासक हिस्सा भेल तँए चारि मास बेटियो ऐठाम किए ने रहब? तखन केहेन हएत जे अपने गामक समधि बनि खेलौना भऽ जाएब आ पत्नीकेँ भरि गामक लोक समधीनियाँ सरऽ रऽऽ करए लगतैन...! ऐठाम विचार ठमैक गेलैन। ओना बेटी-जमाइक परिवारसँ नीक बेटा-पुतोहुक होइ छइ। अपन घर-दुआर, खेत-पथार, सर-समाज सभ समटल रहै छइ। मुदा तैयो मैट्रिक पास बेटीकेँ बी.ए. शिक्षक लड़का संग बिआह कए माथक बोझ हल्लुक केनहि छैथ। जेठ बेटा विलास बी.ए. पास कऽ प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षा पास केला पछाइत अफसरक जिनगीसँ जिनगी शुरू केलैन। छोट बेटा हुलास बी.ए. केला पछाइत हाइ स्कूलक शिक्षक बनला।

जातक हुलास नोकरीक जिनगी प्रारम्भ नै केने छल तातक जेठ भाय- विलास-कें सेहो अभिभावके रूपमे मानै छेलैन। मुदा जखन नोकरी शुरू केलक तखन अपन जिनगीकेँ ठिकियौलक। ठिकियौलक ई जे परिवारमे भैयारीक सम्बन्ध अछि मुदा ओहो- जेठ भाय- नोकरी करै छैथ, हमहूँ नोकरी करै छी, हुनका दरमहो बेसी छैन आ बाहरियो आमदनी छैन। मुदा हमरा तँ से नै अछि। जँ बाहरी आमदनी ट्यूशन पढ़ा कऽ करए चाहब तँ पढ़ावी वा नै पढ़ावी मुदा समए तँ लगबे करत। जखने अधिक समए आर्थिक उपारजनमे लगाएब तखने वैचारिक रूपे जिनगीक आन-आन काजमे विघ्न-बाधा उपस्थित हएत। अपनासँ लऽ कऽ परिवार-समाज धरि। तखन तँ भेल नियमित वेतनपर नियमित जिनगी बना चलब तखने चलि सकै छी। चारि कोस साइकिलो चला हुलास परिवारक बीच अपनाकेँ रखने रहल अछि।

दोसर दिन भिनसरे समदिया दिया हुलास माएकेँ समाद पठौलक जे सभ काज सेरियाएल चलैए, तँए कोनो चिन्ता नै करैथ।

समदियो कियो आन नै, दियादिये पितियौत। तँए अबिसवास करैक प्रश्ने नै कमली काकीकेँ रहलैन। एक तँ भोरुका समए, तैसंग चाहक गिलास नेने कमली काकी पतिक हाथमे पकड़ैबते, जेना समाद सुनबैले मुँह लुसफुसेलैन। मुदा बिच्चेमे दुनू विचार ओझरा गेलैन। एकटा विचार उठनि जे कोनो अधला समाद छी जे पहिने किछु खा-पीब लेता तखन कहबैन? दोसर ईहो उठनि जे जाबे किछु अनजल नै कऽ लेता ताबे अनेरे माथ किए भरयेबैन। जखने बात उठत तखने रंग-बिरंगक अनेको बात चलत। अपना तँ ओतबे बुझल अछि जे काज सेरियाएल अछि चिन्ता नै करब। मुदा चिन्ता की लोक अपन विचारक मने करैए। जँ अपने मने करैत तँ विचारि कऽ समए बना लैत जे एतेकाल चिन्ते करब आ एतेकाल नै करब। मुदा चिन्तो की छोट-छीन खेलाड़ी अछि। अन्ने-पानिटा अरूचि करैए सएहटा नै ने छै, आँखिक नीनो हराम करैए। ओ तँ काजक जड़िमे कहियौ आकि गपक जड़िमे तेना नुकाएल रहैए जे जखने चालबै आकि फुरफुरा कऽ आबि पकैड़ लेत। मुदा से सभ कमली काकीकेँ नै भेलैन। पतिकेँ चाह पीबैसँ पहिने बजली-

"बौआ समाद पठौलक हेन जे काज सेरियाएल अछि, चिन्ताक कोनो बात नहि।"

पत्नीक बात सुनि सुरत काका हाँइ-हाँइ दू घोँट चाह पीब बजला-

"केकरा दिअए समाद आएल अछि?"

"लाला कहलक।"

लालाक नाओं सुनि सुरत कक्काक मन ठाढ़ भेलैन। ठाढ़ होइते हिया कऽ आगू-पाछू ताकि बजला-

"आउरो की सभ समादमे कहलक?"

"बस एतबे, काज सेरियाएल चलैए, अहाँ सभ चिन्ता नै करब।"

'चिन्ता नै करब' सुनि सुरत कक्काक मनमे जेना ऑक्सीजन बढ़लैन। मनमे उठलैन, ओहुना तँ लोक बजिते अछि जे कोट-कचहरीक बात अनका कान तक नै जाए। एते तक कि घरवाली आ धियो-पुतो तक नहि। मुदा, जँ परिवारक अपना[9] छोड़ि दोसर नै बुझै, आ एते जे गाड़ी-सवारी बढ़ि गेल अछि, जँ केतौ ठोकरे-तोकरे लगि गेलै आ अपन हाथ-पएर टुटि गेल, तखन परिवारक गाड़ी केना चलत? मुदा परिवार तँ कोनो सजीव नै अछि, सजीव अछि ओइ बीचक लोक, जे चलबैए परिवारक गाड़ीकेँ। मुदा ओइमे बाल-बोध तँ बाले-बोध भेल, अखैन ओकरा एहेन काजक भीर किए आनल जाए। बँचली घरवाली, हुनका किए ने कहल जाए। मुदा घरोवाली तँ घरेवाली छैथ, जँ नाक नै रहितैन तँ कौआक सभ वृति करितैथ। मुदा कौआ केना काग बनत ओ तँ अपने ऊपरक काज भेल किने? भेल तँ जरूर मुदा बदलैत समाजिक ढाँचामे काजक जे छीना-झपटी भऽ गेल अछि, ओइमे बढ़ोत्तरी भेल अछि। एक-चलिया समाजिक ढाँचामे परिवारिक-समाजिक किरिया-कलाप सीमित दायरामे रहने, सबहक नजैरक बीच रहैत छल जइसँ सुरक्षाक दोहरी रूप छल। मुदा काजक असीमिता लोकक विचारकेँ तेना डोला देलक अछि, जे पगला जकाँ गेल अछि।

जेते सम्पन्नता आबि रहल अछि ओते पेट-मन दुनूक भूख जगि रहल अछि, जेकरा पाछू दौगैत जिनगी बेचैन भेल अछि। जैठामक दिशा- मिथिलांचलक दर्शन- कट्ठा भरि सागपर आत्माभिमानसँ सज्जित जिनगी बनबैत रहल अछि तैठाम एते दौड़ा-दौड़ी किए? ऐंड़ी-

[9] काज केनिहार

दौड़ी किए एते बेसी लगि रहल अछि?

सुरत काका पत्नीकेँ लगमे बैसा बजला-

"देखू, परिवारक बीच जे समस्या उठि गेल अछि ओकरा नीक जकाँ ताकि कऽ अपन जीबैक रस्ता सुरक्षित बना चलैक अछि। अहीं कहू जे जे साड़ी विलासक पत्नीक देहपर अछि, ओ हुलासेक पत्नी आकि अहींक देहपर कहाँ अछि?"

पतिक बात सुनि कमली काकी ठमकली। ठमैकते दुनू बेटा-पुतोहुक जिनगी नाचि उठलैन। नचिते विचार असथिर भेलैन। अखनो तक तँ हुलासे ने बेटा जकाँ निमाहैत आएल अछि। पैंसैठ-सत्तैरक दुनू परानी भाइये गेल छी। दस-बीस बर्ख आरो जीब, तेकरे-ले ने रस्ता सुरक्षित बनबैक अछि। जेना हेराएल वस्तु आकि कोनो नवे वस्तु भेटने मनक उमकी उमैक जाइ छै तहिना कमली-काकीकेँ सेहो उमकलैन। दहिना हाथक ओंगरीक गिरहक पोर गनि-गनि बजली-

"छोटकी पुतोहुकेँ पएर रखना घरमे तेरह बर्ख भऽ गेल, कहुना हिल-मिल जँ एतबो दिन आरो खेप जाएब तखन बँचले की रहत जे तइले नीक-अधलाक विचार नै करौं?"

पत्नीक विचार सुनिते सुरत काकाकेँ जेना जिनगीक नव दिनक सुर्ज उगैत बुझि पड़लैन। सहोदर रहितो तीनू भाए-बहिन केते हटि-हटि कऽ अछि, मुदा माए-बाप रहितो दुनू परानी केते सटि कऽ छोटका बेटा-पुतोहुक संग छी। तँए नीक हएत जे हुलासो मधमन्नीसँ अबैए, तखन सभ बात सविसतर सुनब, सुनला पछाइत विचारब जे की केने केते नीक हएत आ की नै केने केते अधला हएत, से तँ अपने चारू गोरे ने विचारि कऽ एक मत बना चलब।

पाँचम दिन, सभ काज सम्हारि हुलास शनिक साढ़े-बारह बजे रातिमे गाम पहुँचल। बेसी राति भेने केकरो उठबैसँ नीक चुपचाप

अपन कोठरी खोलि, एक डिब्बा बिस्कुट खा सुति रहल। ओना पाँचो दिनक धुरफन्दा काज रहने, नीन पड़ाएल रहै, जइसँ पाँचो दिनक नीन आँखिपर लटकले छेलै...।

भोरे सुरत काका उठला तँ बुझि पड़लैन जे हुलास आबि गेल। मनमे कछमछी उठलैन मुदा अपने मन रोकि कहलकैन जे जेकर एहेन मोटगर नीन अछि, ओकर काज जरूर पतराएल अछि। सवुर भेलैन। मुदा तैयो पोखैरक डेढ़बा माछ जकाँ घाटपर चाल-चूल दिअ लगलखिन जे जखने चाल-चूल हएत तखने हुलासोक नीन टुटत। मुदा चालो-चूल तँ सभ रंगक होइ छइ। एकटा होइ छै चुपेचाप, दोसर होइ छै घोल करि कऽ। हरलैन ने फुरलैन खूब जोरसँ कमली काकीकेँ कहलखिन-

"बाँस भरि सुर्ज ऊपर आएल आ अहाँ सभले रातिये छइ।"

मुदा भोरके वोहैन ने भरि दिनक काजक शुभ-लाभ करैए। कमलियो काकी अपन वोहैने केलैन-

"अहीं जकाँ सभ साँझहे सुति रहैए। अनेरे भोरे-भोर हकबाहि उठल अछि।"

आँखि मीड़िते हुलासक मनमे उठल जे पहिने दुनू गोरेकेँ भैयाक हाल-चाल सुना दिऐन। अपने रगड़ो थमि जेतैन। हुलासकेँ देखते सुरत काका बजला-

"कखैन एलह?"

"बड़ रतिगरकेँ एलौं, तँए नै उठेलौं।"

"की हाल-चाल सभ छह?"

हुलास अपन पाँचो दिनक काजक वृतान्त सुनबैक विचार केलक। मुदा मनमे एलै जे पहिने ऐगला बात कहि कऽ मनकेँ रोकि

देब नीक हएत। नै तँ अनेरे उझैक-उझैक गिरहे-गिरह सवाल उठौता। बाजल-

"बाबू, अपना सभ निसचिन्त भऽ गेलौं, नै तँ बड़का फेरामे पड़ि जइतौं।"

एक दिस निसचिन्त आ दोसर दिस बड़का फेरा सुनि सुरत कक्काक मनक ठेह जगलैन। ठेह ई जगलैन जे दुनू प्रश्नक दूरी तँ अकास-पतालक भेल! तैबीच एहेन कोन सूत्र लगि गेल जे दुनूकेँ जोड़ि देलक? बजला-

"झब दे चाहक ओरियान करू ताबे बौओ मुँह-कानमे पाइन लऽ लइए। निचेनसँ सभ बात बुझब।"

चाह बनल, चारू गोरे- सुरत काका, कमली काकी, हुलास आ हुलासक पत्नी-केँ एकठाम देख सुरत काका बजला-

"बौआ, परिवारे तीर्थ स्थल छी आ घरे धरमशाला। सभ एकठाम छी, तोहर भाए विलास भेलह, मुदा हमर तँ सन्तान छी। तँए सत् बात छिपबैक नै छह, आ झूठ बात जोड़ैक ने छह। जेना जे भेल से जड़िए-सँ सबहक बीच बाजह।"

पिताक बात सुनि हुलास माए दिस तकलक। मुदा माइक चेहरासँ ई नै परेखि पेलक जे माइक मनमे की अछि। ओना पत्नीक मन बेसी खुशी बुझि पड़लै। पत्नीक खुशीक कारण ई जे अनुचित केनिहारकेँ जँ सजा नै हुअए तँ उचित केनिहारक घटबी हएत। हुलास बाजल-

"जखने भैयाकेँ पुलिस पकैड़ कऽ लऽ गेलैन, तखने भौजी फोन केली। ओना मनमे भेल जे नै जाइ। मुदा गामक कुटी-चालि दुआरे जाइले बाध्य भेलौं।"

सुरत काका- "की कुट्टी-चालि?"

हुलास-

"गामे दू-दिसिया बनि गेल अछि। दुनू कात मुँह बनि गेल छइ।"

"की दू-दिसिया?"

"कोनो नीक काज केनिहारकेँ थोपड़ी बजा सुआगत सेहो होइ छै आ थोपड़ीए बजा ओकर हहास सेहो होइ छइ। तहिना खुशी भेने हँसी सेहो अबै छै आ वएह हँसी हहास होइत परिहास सेहो भऽ जाइ छइ। अनेरे लोक खिधांश करितए तँए गेलौं।"

"आगू की भेलह?"

"हमरा पहुँचैसँ पहिने भैया जहल पहुँच गेल छला। मुदा संगियौं-साथीक तँ कमी छैन नहि। खुआ-पीआ सेहो देने रहैन। केसक नकल सेहो निकैल गेल रहैन। दौड़-धूप शुरू भऽ गेल। पहुँचते मुंशी कहलक जे अहूँ आ बुड़हो लपेटमे छैथ। तँए अहूँ सभ अपन कारवाइ शुरू कऽ दियौ।"

सुरत काका-

"तखन की भेलह?"

पिताक बात सुनि हुलासक मन उल्लसित भेल। बाजल-

"नीकक फल नीके होइ छै, अधलाक फल अधले होइ छइ।"

हुलासक बात सुनि सुरत लाल उत्सुक होइत पुछलखिन-

"से की? से की?"

हुलास-

"अपन भैयारीक सम्पैतक जे कागजी बँटवारा अछि ओ जान बँचा लेलक। लीखि कऽ दऽ देलिऐ जे परिवार अलग तँए कोनो सम्बन्ध नै अछि।"

सुरत काका- "आरो की भेलह?"

हुलास-

"अहूँक सम्बन्धमे लिखि कऽ दऽ देलिऐ जे सत्तैर-पचहत्तैर बर्खक छैथ, दवाइ-दारूपर जीबै छैथ, तँए जँ कोर्टकेँ उपस्थितिक जरूरत होइ तँ चौकीदार द्वारा दर्ज कराबह। नै तँ जखन सुनवाहिक बेर औत तखन ओहो रहता।"

हुलासक बात सुनि सुरत काकाकेँ आशा जगलैन। बजला-

"बौआ, यएह बाहर रहि अपन नियमानुसार काज करब जिनगीक जीवन्तता भेल। कोर्ट-कचहरी छी, कहिया की हएत तेकर कोनो ठेकान छइ।"

पिताक बात सुनि हुलास बाजल-

"अखैन लोकक बीच चर्चक विषय बनि गेल अछि। तँए किछु दिन जहलमे रहऽ पड़तैन। मुदा छह मास जाइत-जाइत सभ निपटि जेतैन, फेर ओहिना काज करए लगता।"

❍

तिथि : 15 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 3304

असुध मन

तीन पहर रातियेसँ करिया काका आ गुड़की काकीक बीच उत्तरा-चौड़ी जे शुरू भेलैन ओ लधले रहलैन। दू-बजिया गाड़ी तमौरिया टीशनसँ आगू बढ़ि गेल। एक तँ माघ मास तैपर शीतलहरीक जुआएल राति, हाथ-हाथ नै सुझैत। मुहोँ देखैक शक्ति आँखिकेँ नै, तेहेन अन्हार पसैर गेल छल। मुदा तैयो करिया कक्काक आ गुड़की काकीक उत्तरा-चौड़ी शीतेलैन नै, पाला पाबि आरो पलाइते गेलैन।

कटही गाड़ी जकाँ जेतए दहिना भाग खच्चा रहै तेतए दहिना पहिया आ जेतए बामा भाग खच्चा रहै तेतए बामा पहिया दब-उनार होइत चलिते रहल। चलबक कारणो रहैन, कारण रहैन करिया काका मध्यमा पास छैथ, शिक्षा मित्रबला मध्यमा नै, रटि कऽ पास केलहा। जइसँ अपनापर बिसवास छैन्हे, तँए पाछू घुसकैक प्रश्ने नहि। मुदा गुड़कीओ काकीकेँ टटके अनुभव- पनरह दिन पहिलुका- रहैन तँए बन्ठा साँढ़ जकाँ माथा अड़ौने रहली। तहूमे एक-उमेरिया दुनू-परानी रहने दुनियाँकेँ जेते करिया काका देखने तेते गुड़कीओ काकी, जइसँ दुनूकेँ अपना-अपना नजरिये देखैक अपन-अपन शक्ति छैन। ओना दुनूक बीच जे उत्तरा-चौड़ी होइत रहैन ओ कखनो-कखनो बेठेकानो भऽ जाइन। मुदा तैयो उनटैत-पुनटैत विचार एकठाम भऽ रगड़ी बनि रग्गड़ रगैड़ते रहल, पाछू घुसकैले कियो तैयार नहि।

एक-चलिया करिया कक्काक उपजौल ज्ञान रहैन तँए अपन चौबिसो घन्टाक रूटिंग नियमित बनौने छैथ। कखैन सुति कऽ उठी, उठला पछाइत की करी, तैठामसँ लऽ कऽ रातिमे ओछाइनपर गेला पछाइत की करी, से सभटा बेवहारमे रखने छैथ। ओना कमी एते जरूर छैन जे 'मौसमक अनुकूल किरियो बदलै छै' ई पढ़ैमे छूटि गेल छैन। जेना केतौक लोक मल उत्सर्जनक पछाइत छोंछ करैए, आ केतौ पनि-छू करैए। तहिना केतौ भरि छाती पानिमे पैसि नहाइए, तँ केतौ एक चुरूक पानि छीटि नहाइए। से बुझैक कमी करिया काकामे छैन। ओ ई नै बुझि पाएल रहैथ जे माघ मास केते पानिसँ छोंछ करी आ बैशाख मास केतेसँ। सुखल आ गील उत्सर्जनक पछाइत केते पानिक खगता होइए। नै बुझैक कारण भेलैन जे मध्यमे तक अध्ययन केने रहैथ, तँए विस्तृत रूपे नै बुझि सकला। पुबरिया मेघ सुरूजक धाहीसँ ललिया गेल मुदा किरिण नै फूटल। तरे-तर करिया काका एते तरिया गेल छला जे बरदास नै भेलैन। घरसँ निकलैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"जेमा तँ जाइते छी मुदा घुरि कऽ फेर नइ मुँह देखब।"

ओना करिया काका ठिकिया कऽ बजलैथ जे कानमे पड़िते छातीकेँ चालैन बना देतैन, मुदा से भेल नहि। हेबो केना करैत पनरह दिन पहिलुके ने घटना छी जे गुड़की काकी करिया काकाकेँ मृत्युक मुहसँ घुमा अनने छेली। तँए पतिक सेवा धर्म तेते प्रवल भऽ गेल छेलैन जे पतिक बात गरदेनसँ निच्चाँ उतरबे ने केलैन। बजली- "अहाँ नै मुँह देखब आकि अहाँक नइ देखब?"

पत्नीक समगम उत्तर पाबि करिया काका विचलित भऽ गेला। डोरा-सूइयासँ अपन मुँह सीब, मात्र चद्दरि ओढ़ने घरसँ बहरा ओहिना आगूए-आगू देखैत जाइत रहैथ जहिना असमसानसँ घुमतीकाल कियो

पाछू उनैट नै तकैए।

अखैन धरि गुड़की काकीकेँ मनमे नै छेलैन जे पति घर छोड़ि पड़ेता, मुदा जेना-जेना करिया काका आगू बढ़ैत जाइत रहैथ तेना-तेना डेगो नमहर हुअ लगलैन। दूर हटैत देख गुड़की काकीक मन सहमलैन। मुदा अपने पाछूसँ दौग पतिकेँ वौसब नीक नै बुझि पड़ोसिनीकेँ अपनासँ बेसी उमेरक बुझि लगमे जा बजली-

"देखथुन की मनमे उठलैन की नै, घर छोड़ि अपने पड़ाएल जाइ छैथ, कनी आगू बढ़ि वउस कऽ घुमा अनथुन।"

ओना पड़ोसिनीक मन अपने दुनू बेकतीपर तमसाएल रहैन। तमसाइक कारण रहैन सवा पहर रातियेसँ तेना दुनू परानी नट-बखो जकाँ कुकुर-कटौज करैत एली जे तखनसँ जगले छी। एना केतौ मनुखक घरमे हुअए! तँए भने एकटाकेँ घरसँ गेने झगड़ा तँ नै हएत। कियो अपने ने नीक सोचैए, भने हएत। मुदा से कहलो केना जाएत। ओना गुड़की काकीक मन पघिल कऽ मोमिया गेल रहैन। मुदा सोलहन्नी नै पिघलल रहैन। तरक मन सक्कत रहबे करैन। खूब जोरसँ बोलकेँ जुमा फेकैत बजली-

"जेकर मन असुध अछि ओकरा लिए दुनियाँ असुधे छै, अनेरे किए पड़ाएल जाइ छी। पाछू घुरि ताकू। हे मुरहा घुरि ताकू।"

करिया काका पत्नीक बाजब सुनलैन, मुदा उत्तर किछु ने देलखिन। तही बीच पड़ोसिनी पाछूसँ दौड़ कऽ पाछूए-सँ बाँहि पकैड़ पाछूसँ रोकैत कहलखिन-

"हमरा लिए जेहने अहाँ, तेहने ओ[10]। तेहल्ला बनि कहै छी- घरसँ पड़ाउ नै, दुनियाँमे केत्तौ जाएब, पेट-माथ संगे रहत। ओकरा

[10] गुड़की काकी

सुधारि लिअ। आब ऐ उमेरमे अनेरे केतए वौआइले जाएब। पेट-ले भीख मांगि खाएब से नीक भेल?"

पड़ोसिनीक बोल करिया कक्काक कानक ठेकीकेँ ठेलि मन तक पहुँच गेलैन। मन तँ मने छी केतौ आध मन, केतौ चौथाइ मन, केतौ एक-बटे तीन, तँ केतौ एक-बटे पाँच, तँ केतौ सवा मन, डेढ़ मन, पौने दू मन तकक सीमा-सरहद तँ छइहे। मुदा से बात करिया कक्काक मनमे नै उठलैन, परिस्थितिक अनुकूल ई उठलैन जे जहिना अनभुआर जगहमे माल-जाल पएरो बाड़ैए आ मलकबो करैए, मुदा बिसवासू तँ कोनो एक्केटा अछि, चाहे पएर बाड़ह, चाहे मलकह। मलकै काल जँ काँट गड़तै तँ अपने मलकबक गुण बुझत तखन जे मलकबे करत तँ मलकह...। करिया कक्काक अपन दैनंदिनक सूत्र गड़बड़ा गेलैन। जे उचितो तँ ऐछे, ने घरसँ सभ दिन पड़ाइ छला आ ने ओहन सूत्रकेँ बुझैक खगता छेलैन, आ ने ओइपर नजैर गेलैन। मुदा आइ तँ पड़ोसीक पछड़ा अछि। एक दिस घरक देवी दोसर दिस पड़ोसिनी-देवी। एकटा दइवाली, एकटा लइवाली। मुदा वाह रे अज्ञान! केहनो प्रश्नक उत्तर ठोरपर सदिकाल रखैए। ज्ञानकेँ तत-मती होइ छइ। मुदा अज्ञानकेँ कोन लाज-धाक छै जे तत-मती रहतै। तँए कि अज्ञान निरलज अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकै छै, वेचारा अपन मान-अपमान उठा कऽ पीब गेल अछि। जेकरा माने-अपमान नइ छै, से अनेरे किए ऐ पाछू दौड़त। केकरो कियो बाधा कहाँ उपस्थित करै छै, जे भाय! जबरदस्ती तोरा घर रहबे करबह। तोहर खुशी छिअ जे नीक रस्ते भगाबह आकि अधला रस्ते। हमरा कोनो लाज-सरम नै अछि...। जेना किछु मनमे पीनपिनेलैन। जहाँ पीनपिनेलैन आकि भेलैन जे ई जे अनेरे देवा-देवी, देवी-अदेवीक भाँजमे पड़ि मगजमारी कऽ रहल छी। असल बात तँ ई अछि जे रावण सन महापण्डित आ रावण सन राक्षसक बास एकठाम केना भेल? भऽ सकैए, होइए। मुदा ऐ बातकेँ

पहिनहि ने बुझैक छल जे पण्डिताइक मोल की? मनमे अबिते करिया कक्काक मन पड़ोसिनीपर पड़लैन। ओना उमेरो बेसी आ वंशो दोसर, मुदा सभ दिनसँ दुनू गोरेक घर एकठाम अछि। केते पुश्तसँ हुनको परिवार छैन आ अपनो परिवार अछि। ने एक जाति आ ने एक दियादवाद, मुदा तैयो बोली-चालीसँ लऽ कऽ मनगानी-जिनगानी तक केना निमहल अछि। ओना भैयारीक भाइक बँटवारा पड़ोसी पैदा करैए। जइसँ दियादवाद, पड़ोसवाद बढ़ैए। मुदा दोसरो पड़ोसी तँ छैथे जे दियादवाद आकि पड़ोसवादसँ अलग छैथ। ओना पड़ोसियोपन आ वंशोपन तँ अछिए। मुदा पड़ोसीपनक बीच अन्तरो तँ अछिए। अन्तर एते अछि- एक दिस दियाद आ राहैरक दालि जेते ढहै छै तेते रंगरो आ सुआदो बनबै छै, तँ दोसर दिस पट्टा-कुरथीकेँ बिनु दरड़नौं तँ दालि सुअदगरो आ रंगरो तँ बनिते छइ। तेतबे किए, केतौ मीठ, मीठनूनो बनैए तँ केतौ दालियो दालचीनी नै बनैए सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जैठाम करिया काकाकेँ बुझैमे दम नै अँटैन। तेतए हाँफए लगैथ। तही बीच पड़ोसिनी दोहरबैत कहलकैन-

"अनेरे कोन तितम्हामे पड़ल छी। भिनसुरका पहर छिऐ, घूमै-फिड़ैले लोक बहराएत, पत्रकार जकाँ तेतेक सवाल पुछत जे अनेरे माथा ढील भऽ जाएत। तइसँ नीक भरमे-सरमे चलू। अनेरे किए कियो दोसर दुनू बेकतीक झगड़ा बुझि कठिया-लाड़ैन चलौत।"

पड़ोसिनीक बात करिया काकाकेँ जँचलैन। अपनो बुझल रहैन जे पुरुख तँ बहरबैया सभ दिन रहला तँए पड़ाएब अधला नहि। मुदा झगड़ा करि कऽ पड़ाएबो तँ नीक नहियेँ भेल। जँ सएह हएत तँ सृष्टीए अँटैक जाएत। जखने खेत जकाँ अँटकल कि उपटब शुरू हएत। पड़ोसिनीक विचार मानैत करिया काका एकटा शर्त लगबैत बजला-

"जखन घुमि कऽ जाएब तखन पहिले काज फड़िछाएब भेल।

से जँ फरिछा दी तखन घूमब?”

जेना पड़ोसिनीक ठोरेपर रहैन तहिना बजली-

“ब्रह्म मुहूर्तमे कियो ब्रह्मक उपासना करै छैथ, तँ एहेन की कियो नै छैथ जे दौड़-दौड़ छाती सक्कत करै छैथ।”

पड़ोसिनीक बातपर बिनु सोचनहि करिया कक्काक मुहसँ खसलैन-

“हँ से तँ छैथे।”

बजैक वेगमे तँ करिया काका बाजि गेला मुदा लगले मन पड़लैन, योगक्रिया तँ नीक छी, मुदा पैछला एते नमहर इतिहासमे पाछू पड़ल, किए? मुदा आब उपाइये की? करिया काका तँ घरमुहाँ भऽ गेल छला।

गुड़की काकीक तामस अखनो तक नै कमल छेलैन। मने-मन खौंझ उठै छेलैन जे एहेन सियाखी पुरुखे की जे अनेरे सियाखमे जाने गमबाए। कुकुर जकाँ अपने खून पीब रस लिअए। भगवान रच्छ रखलखिन जे लगमे छेलिऐन। जँ अनका बेटा जकाँ हमहूँ बेटा-पुतोहुक संग परदेशमे रहितौं तँ की अखैन तक सराध नै भऽ गेल रहितैन। भेल ई जे पैछला अन्हरिया पख माघमे पूसेसँ लधाएल शीतलहरी दौगल आबि रहल छल। तैपर कश्मीरी हवाक पथराएल लहकी, आ ऊपरसँ बंगालक खाड़ीसँ उठल मेघ बरिस गेल छल। असाध कनकनी पसैर गेल छल। आने दिन जकाँ करिया काका अढ़ाइए बजे उठि कऽ नित्य क्रियामे लगि गेला। छोंछसँ लऽ कऽ आचमन धरिक जेते पानिक काज बैशाख-जेठमे करैथ, तहिना जाड़ो-ठाढ़ मासमे कैरते छैथ। कलपर सँ घुमि कऽ अबैत-अबैत जाड़क असैरसँ खसि पड़ला। धड़फड़ाएल खसबक अवाज सुनि गुड़की काकी दौग कऽ लगमे पहुँच, लटुआएल देहकेँ पजिया कऽ समेट

ओछाइनपर अनलैन। कियो दोसराइत परिवारमे नहि। आन किए औत? भोज खाइबेर जाति-जवार भँजियबै छिऐ आ बेर-बिपैतमे पड़ोसिया फड़त! मुदा..? मुदा हाइ रे मिथिलांगना! जे अपन संग आकि दोसराइतिक संग मिलि मिथि-मालिनी बनि चुहैट कऽ पकैड़ लेती ओ अपन व्रतकेँ प्रियवत बनबैत प्रियात्मा बनि परमात्माक बीच साक्षात्कार लइ छैथ। मुदा से नै, गुड़की काकीक तामसोक कारण छेलैन। कारण छेलैन जे जिनगीकेँ सम्हारि कऽ चललासँ लोक पाओल नै जाइए। जखने बेसम्हार हएत तखने रंग-बिरंगक अक्रमित हेबे करतै।

ओना करिया कक्काक इच्छा रहैन जे आगू-आगू पड़ोसिनी चलैन। मुदा पड़ोसिनीक मनमे शंका रहैन जे भगौआक कोन भरोस, जे घरसँ भागि सकैए ओ रस्ता-बाटसँ नै घुमि कऽ भागि सकैए? ओना करिया कक्काक मनमे रहबे करैन जे जखन पड़ोसियाक मध्यस्तमे आबि गेल छी तखन बीचमे कोनो बाधाक बीआ रोपब नीक नहि। तँए बेसी जोर-जार नै करैत करिया काका आगू-आगू डेग उठौलैन। एक दिस पएरक नापल डेग उठबैथ, दोसर दिस आँखि उठा घर दिस तकलैन तँ किछु झल जकाँ बुझि पड़लैन। मनमे उठलैन पत्नीक कहल- ‘असुध मन!’

...कोन बेजा बात कहली जे अहाँक मने असुध अछि? अशुधो-शुद्धोक की सींग-नाँगैर छै? जहिना कखनो भूत वर्तमानमे नाचि देखनिहारेकेँ भुतिया दइए, तहिना तँ ने भरिसक अपनो भेल? जखने केकरो मन शुद्ध हेतइ तखने दुनियोँ शुद्ध हेतइ। जँ बीचमे केतौ अशुधो छै तँ ओकरा निकालि शुद्ध कएल जा सकै छइ। तइले दुनू बेकतीक बीचक सम्बन्ध तोड़ि भागव उचित भेल? मुदा तँए कि सोल्होअना अनुचिते भेल सेहो तँ नहियेँ मानल जा सकैए। कोनो कि हमहींटा छी जे पत्नीसँ रगैड़-झगैड़ कऽ सम्बन्ध विच्छेद करैत घरसँ पड़ेलौं। आकि

हमरा सन-सन बहुत छइ। मुदा शुद्धो-अशुद्ध बेराएब बाल-बोधक खेलौना नै ने छी जे गुड़का दियौ। मन शुद्ध, वाणी शुद्ध, वाणी शुद्ध विचार शुद्ध, विचार शुद्ध काज शुद्ध, मुदा शुद्ध पानि- स्वच्छ पानि- आ अशुद्ध पाइनिक दूरीकेँ बिनु देखने-परखने केना शुद्ध बनौल जा सकै छै? वाणी शुद्ध आ विचार शुद्ध ओ तँ मात्र अक्षर बदललासँ शुद्ध भऽ जाइ छै, मुदा मूर्त रूपमे जखन अशुद्ध भऽ जाइ छै, तखन शुद्ध बनाएब असान थोड़े होइ छै? हँसनी-कननी आ कननी-हँसनीक रूप तँ बनियेँ जाइ छै, जइसँ धनुषक छुटल तीर जकाँ तँ भाइये जाइ छै!!

आँगनक डेढ़ियेपर बैस गुड़की काकी आगूए दिस तकैत रहैथ। ओना आगू-आगू करिये काका रहथिन आ पाछू-पाछू पड़ोसिनी, मुदा आगूमे रहितो करिया कक्काक धौना जेना खसल रहैन। गुड़की काकीक आँखि तरेगन जकाँ तरँगल रहैन। तरँगल ई रहैन जे पुरुख सबहक एहेन छीछे भऽ गेल अछि, जे ताड़ी-दारू पीब कऽ आएब आ ओछाइनेपर बोकरब।

आब कहू जे जँ ओछाइनकेँ सुतली रातिमे धुअब तँ लोक ओइपर सुतत केना। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे अपना सेने से तँ नै भेल अछि, तँए केतौक ईटा, केतौक सिमटीपर साटब नीक नै हएत। मुदा फेर लगले मन तरङ्गि गेलैन। तरङ्गि ई गेलैन जे दस-बारह दिन जे एहेन समैमे दिन-राति एकबट कऽ सेवा करए पड़ल, तेकर कोन खगता छेलइ। जैठाम बेसी ठण्ढ पड़ै छै तैठाम लोक छछाड़ी काटि कऽ अपनाकेँ शुद्ध बना लइए, जैठाम तइसँ कम ठरल रहल तैठाम पनि-छू करि कऽ शुद्ध भऽ जाइए, आ कोन सियाख भेल जे तमघैलिया लोटासँ छोंछ करब? मुदा पतिक नजैर खसल देख गुड़की काकीक नजैर सेहो ओंघरा गेलैन। तँए किछु उपराग देबसँ नीक चुपे रहब बुझलैन।

बिना किछु सुनने-बुझने पड़ोसिनी मध्यस्ता करैत बजली-

“हम पड़ोसी भेलौं। जेहेन मिलानसँ दुनू बेकती रहब तेहेन मिलानसँ परिवार चलत। जेहेन परिवारक सिख-लिख हएत तेहने सिख-लिखक ने पड़ोसियाक पड़ोसीपन भेल। आगू जानी अपने।”

कहि पड़ोसिनी प्रतिक्रिया सुनैक खियालसँ कान ठाढ़ केलैन मुदा कोनो सुनि-गुनि नै पाबि मुस्की भरैत विदा हुअ लगली आकि पाछूसँ गुड़की काकी बजली-

“दीदी, बजली तँ बड़ निम्मन बात। मुदा एकटा कहने जथु- हम ओहन जनाना नै छी जे पुरुखपर ओंगठल रहब आकि पुरुखकेँ ओंगठौने रहब। अपन-अपन जिनगीक बर-बेमारी अछि खाइ-पीऐसँ जीबै धरिक उपाय करैक अछि, तैठाम जे ओंगठा-ओंगठी हएत तँ इहे कहथु जे अपन जान देखब कि हिनकर देखबैन?”

गुड़की काकीक बात सुनि पड़ोसिनी ठमैक गेली। गुड़की काकी दिस नजैर गड़ा देखए लगली जे अनभुआर बात बजली आकि भुआर बात। भुआर परीक्षा भेल अनभुआर जानैक इच्छा भेल। पड़ोसिनीकेँ चुप देख अपन चुटका सम्हारैत गुड़की काकी दोहरौलैन-

“चुप भेने हेतैन, पुरुखक मुँहक कोनो ठेकान अछि। लगले पतिव्रत कहि टिरका देता आ अपना बेर मे गबदी मारि देता। बजबे ने करता जे स्त्रीव्रत-नारीव्रत की छी!”

गुड़की काकीक बात पड़ोसिनीकेँ नीक लगलैन। ठोर-रंगू राँगी धान जकाँ बिहुसली। पड़ोसिनीक बिहुसी गुड़की काकीकेँ सेहो बिहुसा देलकैन। पड़ोसिनी विदा होइत बजली-

“हे बहिना, बड़-बड़ लीला अछि मोरंगमे। तखन तँ फुटा कऽ एते सुनि लएह जे तोहर पनचैती हम करियह आ हमर तूँ करह, तइसँ नीक ने भेल जे केकरो कियो किए खगैत काजकेँ आरो खगाएत।

अपन-अपन फड़िछौठ लोक अपना बुधिये करह। जखने छोट बुधिबलाक पनचैती नमहर बुधिबला करतै, तखने ने ओकर गरदेन-कट्टी करतै। जे अखैन बुझै-जोकर नै अछि ओकरा बुझनुक बना जखन पनचैती हएत तखन ओकरा संग न्याय हएत।"

ओना पनचैतीमे जँ पंचो हँसैत आ दुनू पक्षो हँसैत विदा हुअए तँ ओ सफल भेल। मुदा करिया काकाकेँ से नै भेलैन। अखनो तक मन मानैले तैयार नै छैन जे जेते न्याय पत्नीक संग भेलैन तेते हमरा संग नै भेल। मुदा तीन गोरेमे दू गोरे जखन एक-भगाह भऽ गेली तखन तँ उनार हेबे करब। ओना करिया काकाकेँ जेते अध्ययन छेलैन ओइ हिसाबक जिनगी बना, जीबैत आबि रहल छला। एते तँ मनमे बैसले छेलैन जे नै केकरो नीक कएल हएत तँ अधलो नै करबै। मनमे एते छैन्हे जे भूल-चूकमे जँ केकरो अधला भऽ गेल होइ, तँ अखनो कहह। जँ वैचारिक बात हएत तँ विचारक तराजूपर तौल देबइ, नै जँ नइ हएत तँ जे गलती भेल हेतइ तइ हिसाबसँ सकारि लेबइ। नीक जिनगी आ नीक विचार रहितो करिया काकाकेँ सौनक ओइ कोदरवाह जकाँ भेलैन, जेकरा पहिने हवा-विहारि आ झाँट झँटियबै छै, लगले पछाइत मेघ फाटि पानिक वोरा देहपर उझलै छै, आ लगले पछाइत तड़ैक कऽ ठनका बनि तड़तड़ा दइ छै! मुदा लगले मन घुमलैन। घुमिते विचार उठलैन, पत्नी तँ जिनगीक संगिनी ने भेली। तँए ओइ रूपे चलब तखने ने निमहत।

करिया काकाकेँ गुम देख पड़ोसिनी डेग बढ़बैत बजली-

"सँए-बहुक झगड़ा, पंच भेल लबड़ा। जाइ जाउ अपन-अपन हाल-रोजगार देखू।"

ꓳ

तिथि : 19 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 2353

धरमूदासक अखड़ाहा

देवालय, शिवालय, विद्यालय इत्यादिक जेहेन बास-भूमि, नहेबाले जेहेन पवित्र सरोवर, चन्द्रकूप पानि पीबैले, धर्मशाला रहैले इत्यादि-इत्यादि बेवस्थासँ सम्पन्न रहैत, जेहेन बास-स्थल बनि असथल, असथान, ठकुरवारी, इत्यादि-इत्यादि सभ बेवस्थासँ सम्पन्न रहैत तहिना धरमूदासक अखड़ाहा सेहो छैन।

ओना धरमूदासक पूर्वजक अखड़ाहा कहियासँ छैन, से तँ बेठेकान अछि मुदा एते तँ ठेकनाएल ऐछे जे पाँच पीढ़ीक नामो आ गामो जगजियार छैन। अखड़ाहाक नामसँ पाँच बीघा जमीन अछि तँए कहियो निलामक मुँह आँखि सम्पैत नै देख पेलक। अपना ऐठाम जमीनक बीच सेहो अहिना अछि।

जेहेन-जेहेन समए अबैत गेल तेहेन-तेहेन अपन चालि पकैड़ अखड़ाहा जीवित रूप पकैड़ चलैत आबि रहल अछि। मुदा अपन जे वैचारिक दिशा छैन ओ तँ कसिया कऽ पकड़नहि छैथ। ओना गाममे केते स्थानो अदैल-बदैल गेल आ केते महंथो सभ अपन तिलक-चानन बदैल लेलक। मुदा तँए हुनका सभकेँ दोखियो मानल जाए सेहो उचित नहियेँ कहल जा सकैए।

जेहेन देश तेहेन भेष, जेहेन सोर तेहेन बोल! समैक जे मांग रहल सएह ने कियो करत। जहिना आन स्थानमे परसादक मेनू टाँगल

रहैत तहिना धरमूओंदासक अखड़ाहाक प्रसादक मेनू छैन। मुदा आन स्थान जकाँ एकहारा प्रसाद नै, अमुककेँ अमुके परसादो आ फूलो चढ़तैन, से धरमूदासक स्थानमे नहि। ऐठाम तँ अल्हुआ-सुथनीक परसादसँ लऽ कऽ मक्खन-मिसरी धरिक अँटावेस अछि। जहिना कामरूपमे बोन-चिड़ैसँ लऽ कऽ नर-चिड़ै धरिक पाठ पढ़ौल जाइत तहिना धरमूओंदासक अखड़ाहामे छैन्हे। ओना सभसँ पैघ गुण अखड़ाहाक ई अछि जे जँ कियो राति-विराति आकि दिने-देखार किछु पुछैए-आछैले अखड़ाहापर अबैत तँ ओ जरूर हँसी-खुशीसँ आपस होइत। धरमूदासक पाँचो पीढ़ी एकरंगाहे चालि पकैड़ अखनो चलि रहल छैन, ओना गामक बीच बसल अखड़ाहा, तँए गामक अखड़ाहा नहि गामे अखड़ाहा बनल अछि। अन्हार साँझ भेने अनगौआँ दस-बीस गोरे जँ राति-विराति अँटकऽ चाहैथ तँ हुनका लेल जहिना गामक आन परिवार दरबाजा बना अखड़ाहा बनौने छथिन तहिना धरमूओंदासक अखड़ाहा छैन।

ओना समए बढ़ने आ आबा-जाहीक सुविधा भेने कनी-मनी कमी तँ भेबे कएल अछि मुदा सोलहन्नी बेमाक भऽ गेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो अछि आगूओ रहत। धार-धुरक इलाका तँए एहेन मकड़जाल पसरल अछि जे धारक एक महारमे आँगन तँ दोसर महारमे दरबज्जा चाहे मालक घर रहैए। तहूमे अपना ऐठामक भदवरिया समए तँ ओहन होइए जइमे बालो-गोपाल हाथेसँ इनारक पानि निकालि पीबैए। तेतबे किए कहबै, बैशाख-जेठक रौदोमे ठेंगापर ठेंगा वा फट्ठीपर फट्ठी माटि चढ़ा रगैड़ आगिक लूत्ती सेहो बहार करैए आ पूस-माघक जाड़मे हाथपर आगि रखि नचेबो करैए। तँए सबहक अपन-अपन गुण-धर्म छइ। जँ माघमे सुखाएल सखुआक चेराक लहकैत घूर आनन्द बँटैए तँए कि बैशाख-जेठमे पानिक तलहती अपन धरम छोड़ि दइए।

समैक संग विचारो चलिते छइ। मुदा विचारो तँ विचार छी- सुविचार, कुविचार आ दुरविचारो तँ संगे चलिते अछि। जेकरा जेहेन भवले से तेहेन भजलक। मुदा भवनहिटा सँ थोड़े होइ छै, भवलोकक संग विचारलोक, भक्तलोक, अभक्तलोक सेहो तँ अछिए।

ओना धरमूदास अखनो भरि-भरि राति इतिहास-पुराण पढ़ै छैथ मुदा असल पढ़ब हुनकर छैन, स्थान सबहक कटौज पढ़ब। किताब जकाँ पन्ना-तरमे दाबल तँ कटौज रहिये ने सकैए। ओ तँ अधिकसँ अधिक उड़ि-उड़ि पसरए चाहैए। जइ श्रोतसँ धरमूदासकेँ कटौजक भाँज असानीसँ लगि जाइ छैन, तैबीच अपन विचारकेँ रन्दा चढ़ा चिक्कन-चुनमुन करैत हँसैत-हँसबैत अपनो चलै छैथ आ स्थानो चलिते अछि। ओना स्थानो सभ केते रंगक अछि, जेना कोनो महंथाना अछि तँ कोनो महंथिऐन सेहो अछि। मुदा से नै, धरमूदासक अखड़ाहा तइ सभसँ हटि मिश्रित अछि। जहिना देशक नीति मिश्रित अछि जे से मिक्स इकोनोमी अछि तहिना। सात गोरेक परिवारमे आबाल-वृद्धोक बास छैन। समए-साध अपन परिवारक गति-विधि बनौने छैथ, तँए ने बेसी अरकट आ ने बेसी मरकट छैन। ओना सेहन्ता तँ जगरनाथे पुरीक खेती करैक छैन, मुदा ओइठाँ जकाँ समुद्री लहैर तँ एतए अछि नै, ऐठाम तँ समुद्रसँ उठल वादलक अछि, जे बरैसतो अछि आ नहियोँ बरसैए। मौसमो तँ बँटाएले अछि। जइसँ सभ दिना खेती करैक सभ काजक समैए ने भेट सकैए। तैयो सभ-दिनाकेँ मास-महिना-मौसममे बान्हि अपन पुड़ीखाना नै खानापुरी कऽ साल पुराइए लइ छैथ।

समए बढ़ने वा बदलने हवामे जे गति अबै छै, से तँ एबे कएल। एक दिस एकैसमी शदीक देश तँ दोसर दिस अर्द्ध-विकसित पूजीवादी बेवस्था बनबैक प्रश्न अछि। देवालयसँ वेश्यालय तक वसन्ती हवा बहबे कएल। गाछपर कोइली तान भरए लगल, जेरक-जेर मौधमाछी गाछमे छत्ता लगबए लगल। फुलवारीक गुलाबेटा नै, बेली-चम्पा सेहो

अपन रूप सजबए लगल। मुदा तइ सभसँ सटि-हटि आ हटि-सटि धरमूदास चलि रहला अछि। एहनो जमाना आबि गेल जे जैठाम अतिथि अभ्यागतक सेवा धर्मक कोटिमे छेलै आ ऐछो तैठाम अनठियाक कोन बात जे अपन लगो-लगीचकेँ देख लोक मुँह घुमैए! ओना एकरा बहुत गड़बड़ो नहियेँ कहल जा सकैए। आब ने ओ जुग रहल जे अल्हुओ-सुथनी आ मकैक लाबो, सतुओ आकि रोटी संग खेसारीक उसना आकि मरूआ रोटी संग नूनक अभ्यागती हँसैत-हँसबैत चलत, आब तँ हजार- दस-बीस हजारक अभ्यागती भऽ गेल अछि। अपन उजरल-उपटल बाप-दादाक खेत-पथार, घर-घराड़ी छोड़ि जे पड़ा परदेश गेल, ओ अपन परिवारकेँ ठाढ़ करैक जोगाड़ नै कऽ अभ्यागतीएमे लगाएत से केते उचित? मुदा यएह तँ विचारणीय अछि जे केना अपन पूर्वजक देल धरोहरकेँ बँचा पाएब आ अपनो परिवारकेँ ठाढ़ कऽ जुगानुकूल चलै-जोकर बना सकब। ओना धरमूदास पिच्छराह तँ छैथे, तँए माटिसँ पानि धरिक बास छैन। माटिसँ पानिक माने भेल, मटियार माटि ऊपर रहऽ आकि पानिमे, पिच्छराह तँ होइते अछि।

साढ़े आठ बजेक रतुका हरिबोल अखैन अखड़ाहापर नै उठल छल। हरिबोल भोजनक सूचनाक अपन शब्द छैन। अखड़ाहाक निअम छैन जे साढ़े आठ बजेसँ भोजन शुरू हएत आ नअ बजेमे विसर्जन हएत। तइमे स्पष्ट धारणा धरमूदासक छैन जे भनसियाकेँ परिवारक भारक संग अपनो बेकतीगत काजक भार छैन्हे। तँए जँ हुनको नियमानुसार काज नै होइन तँ अनेरे विग्रह बढ़त। ई तँ नै जे भरि दिन खेनाइए-पीनाइ चलत, आ ललैक कऽ भनसियाकेँ कहबै जे महाकोढ़ि अछि, अखैन तक बरतनो ने धोलक।

आठ बजे रातिमे पाँच गोरेक कफला अखड़ाहापर पहुँचलैन। अखड़ाहाक सभ अपन-अपन पहिल पहर साँझक वन्धनमे लागल।

स्थानपर अबिते बच्चा सभ लोटामे पानि आनि सभकेँ सुआगत करैत कहलकैन-

“पहिने हाथ-पएर धोउ।”

अखड़ाहापर पाँचटा अभ्यागत एला, तँए पहिने हुनका सबहक बेवस्था होइन। धरमूदास परिवारक गति-विधिपर नजैर रखने जे कोनो तरहक असुविधा नै होइन। ई नै जे गारजनेपर सुआगतक सभ भार भेल, एहेन विचार गारजनक वेइज्जतीक भेल। पाँचोमे एक गोरे पएर धोलैन बाँकी चारू गोरे मुँहक पान थुकैड़ मात्र कुड़ुड़ केलैन। ओना पाँचो गोरेक धारणा रहैन जे अतिथि-सेवापर जे स्थान टिकल अछि ओकरा भंग कऽ दिऐ, मूल मंशा पाँचोक छेलैन तँए एबो कएल रहैथ। समए देख धरमूदास बजला-

“आब तँ भोजन बनबैक बेर नइ रहल, तँए जएह किछु भेल अछि सएह भोजन कऽ लिऔ।”

ओना पाँचो खाइ-पीबैबला छैथे, एक गोरे उनटौलकैन-

“अखैन साढ़े आठो ने बाजल?”

धरमूदास ओहन अतिथि अभ्यागतसँ परहेज कैरते छैथ जे मनोनुकूल भोजन चाहैत। मुदा बजनौं की हएत। बेसीसँ बेसी एते हएत जे कियो कहता जे भरि पेट खाइयो-ले ने देलैन। भाय! खाइ-पीबैक ठेकान अछि, कियो एक लोटा पानि पीब पान खा, जल-पानक मिनहा करैत तँ कियो दर्जनक-दर्जन अण्डा खेला उपरान्तो दोहरा-तेहरा कऽ खाइते छैथ। मुदा धरमूदास अपनाकेँ अनेरे औनाबऽ नै चाहलैन। भरमे-सरम ऐ दुआरे चुप रहला जे अपना सीमामे तँ सभ यत्र-कुत्र बजिते अछि, मुदा जलखैक बेर आएल अभ्यागतकेँ जलखैक आग्रह, भोजन बेर आएलकेँ भोजनक आग्रह करबे ने तूक बुझब भेल। जँ कियो कोसो चलि कऽ भूखल आएल छैथ, जे अहुना रस्ताक

भुखाएल भेला, तैपर जँ हुनका कहल जाइन जे भानस करै छी, पछाइत भोजन कराएब। तँ ई केहेन हएत, एक तँ भूखे आत्मा पहिनेसँ कलपै छैन तैपर आरो कलपाएब केते नीक हएत। ओना एहनो तँ होइते अछि जे किछु ओहनो छैथे जिनका कहबैन- भोजन करए चलू, तँ कहता- हम बड़ भूखल छी! बकठाँइ शुरू कऽ देता।

भोजन केला पछाइत एक गोरे बजला-

“किछु काजे आएल छेलौं।”

धरमूदास जवाब देलखिन-

“भोजनक पछाइत अराम होइ छै, जँ कोनो काजे एलौं तँ भोरमे हेतइ।”

तैपर ओ फेर बजला-

“भोरमे तँ नइ रहब। एकटा काजे दोसरठाम जाइके अछि।”

काजक धुमसाही सुनि धरमूदास चुप भऽ गेला। किछु समए चुप रहला पछाइत बजला-

“भोरमे जाइसँ पहिने काज कऽ लेब।”

कहि हुनका सभकेँ ओछाइनपर छोड़ि अपने भोजन करए चलि गेला। पीढ़ीपर बैसते बिहुसैत पत्नी लगमे आबि कहलकैन-

“आइ तँ विटामिनेक भोज खुआएब।”

बोलो तँ बोल छी। बोलेमे सभ किछु अछि। एहनो बोल होइए जे खेबेकाल अट्ठा-बज्जर खसबैए आ एहनो बोल होइए जे भोज्य-वस्तुकेँ अमृत सदृश बना दइए। मनुखकेँ भोज्य-वस्तुयेक माध्यमसँ शक्ति-संचयक ऊर्जा भेटैत, जइमे विटामीन सेहो एकटा छी। पत्नीक बात सुनि धरमूदास बजला-

“अपने तँ साक्षात् लछमी छी, कहू जे की सभ परसाद

पेबाएब।”

पतिक बात सुनि, पत्नी बजली-

“अपन सातो गोरेक भोजन वएह सभ कऽ लेलैन। समैक अँटावेस करैत बाड़ीसँ नअ-दसटा बन्धा कोबी काटि अनलौं। नोन-मिरचाइ नइ देने छिऐ। ओ अपना-अपना विचारे जे जेते खाइ।”

लवनचुस जकाँ चुसैत ठोरे धरमूदास बजला-

“अहाँ केना बुझलिऐ जे उमेरगर लोककेँ नोन कम खेबा चाही। नोनेमे जखन रोग अछि, तखन किए ने मधनोन खाइत मीठनोने खाए लगी।”

अन्नक अनुपातमे फूलदार आ पत्तादारक ओजन बेसी हएत। सोल्हओना भुखलो आकि बत्तीसोअना खेनौंसँ तँ नीक नहियेँ होइ छइ। तखन तँ कियो जीबैले खाइए आ कियो खाइले जीबैए। ई तँ मनक विचार भेल। जेहेन अन तेहेन मन।

❍

तिथि : 21 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 1410

ठोररंगू

जहिना जेठुआ बीआ, अधखरूआ रोप, आसिनक सिहकी पाबि अगते कातिकमे रंगवा धान[11] ठोररंगू हुअ लगैत तहिना बीस बर्खक पछाइत परदेशसँ घुमि गाम एलापर सुवोधकेँ भेल। होइतो अहिना छै जे कोनो बात-विचार पेटमे घुरियाइत रहत आ मुँहमे एबे ने करत...। अनभुआर जकाँ सुवोध पत्नीकेँ कहलक-

“जेना किछु भेट रहल अछि तहिना मनमे उठैए।”

‘किछु भेट रहल अछि’ सुनि श्यामाक मन चमकलैन। एतेटा दुनियाँमे एते चीज अछि, तइमे ‘किछु भेट रहल अछि’ ई की भेल? दुनियाँक तँ सभ किछु सोझेमे अछि, तखन हरेलैन कथी जे भेट रहल छैन? श्यामाक मन अपने विचारमे ओझरा गेलैन तँए किछु जवाब फुरबे ने केलैन। चीजक कमी छै जे दुनियाँमे किछु ने भेटत। मुदा एते तँ अनुभव श्यामाकेँ रहबे करैन जे केता बेर लॉटरी टिकटसँ भाग्य अजमाएले छैन, जे किछु ने भेटल आकि भेटैबला अछि। तखन एहेन विचार मनमे उचरलैन केना? उचरब आ उचारब दुनू होइए। एकटा भेल उचड़ीन जे खोंखैर-खांखैर खाइए से आ दोसर भेल रटनमा जे सदैत रटिते रहैए से। मुदा अखैन धरिक, बाइस बर्खक जिनगी, श्यामा

[11] अगहनी रंगवा जेकर नाओं केतौ-केतौ राँगी

सुवोधक संग गुजारि चुकल छेली, तँए तीत-मीठक बहुत किछुसँ परिचित भऽ चुकल छेली। तँए अगुता कऽ किछु बाजऽ नै चाहलैन। मुदा दू गोरेक बीच जँ सवाल-जवाब, उत्तरा-चौड़ी नै भेल, तँ दुनू गोरेक बात-विचारक रस की रहल। मुदा अनरनेबामे आमक रसक सुआद आ केरामे बेलक सुआदो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तखन? तखन की! पतिक विचारक धारकेँ मुँह बान्हब नीक हएत, कनी किनछरि दबि किए ने देख कऽ अजमा ली। बजली-

“ठेकना कऽ देखियौ, अहाँक भेटलाहा की हमर नइ भेल?”

भिनसुरका समए चाहक बैसारपर दुनू परानी सुवोध गप-सप्प उठौने। पत्नीक बात सुवोधकेँ ने तीते लागल आ ने मीठे। मनमे उपकलै- ई की भेल जे ठेकना कऽ देखियौ? ठेकानो की सदैत ठेकाने रहैए, ठेकान-बेठेकानक कोनो आड़ि-धूर छइ। सदैत जिनगीक धारमे चीत-पट, उनटैत-पुनटैत प्रवाहित होइत चलैए। मुदा आड़ा केतौ थोड़े लगै छइ। श्यामो अपन विचार-वाण छोड़ि चुप भऽ गेल छेली। मुदा सुवोधक मन पाछू घुसैक कऽ नाचल। नाचल ई जे जिनगी दू दिशामे प्रवाहित होइए, एक स्वावलम्वी दोसर परावलम्वी।

कियो अपन मनोनुकूल जिनगी तखने पाबि सकैए जखन ओ स्वावलंवी हएत। अपन सभ किछु रहतै, कर्मक संग सदैत विचड़ैत रहत, अपनाकेँ चलबैत रहत। मुदा हमरा तँ से नै भेल। घर छोड़ि जहिया निकललौं तहियासँ कारखानामे नोकरी करैत एलौं। फेर मन आगू बढ़लै, आगू ई बढ़लै जे नोकरी करैक विवशता किए आएल। ऐठाम आबि सुवोध ठमैक गेल। अपने बाजल बातमे जेना किछु भेटए लगलै, वाण बनि आगूसँ आपस आबि छाती खोधए लगलै। जेना रोड़ा-पत्थरक चोट माथमे लगलासँ चौन्ह आबि आँखिमे इजोत छिटकैत, तहिना सुवोधकेँ सेहो भेल। नजैर उठा पत्नीपर गाड़लक तँ

बुझि पड़लै भरिसक पत्नी झुट्ठा बुझि विचारकेँ पाछूए दिस गुड़का देलैन। गुड़काएब उचित भेल? मुदा उचित मनमे अबिते अनुचितो उठि कऽ ठाढ़ भऽ अपन पक्ष रखलक। पक्ष ई रखलक जे अनुचिते की भेल? जे प्रेमी-प्रेमिकाक जिनगीक वादा कऽ हाथ पकैड़ संग आएल, ओ कहाँ पूर भऽ सकलै। सभ दिन किछु ने किछु अभाव रहबे कएल जे से खगता रहल, खगैत रहल। निच्चाँ खसैत सुवोधक मन पाछू खर्ग बनि खगता उनैट तकलक तँ सुवोधकेँ बुझि पड़लै जे खसैत जरूर एलौं, मुदा खसि पड़लौं, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। संग मिलि सृष्टिक सिरजन केबे केलौं, पेटसँ लऽ कऽ बर-बेमारीक बिपैत भगैबते एलौं, फेर मन किए धिक्कारि रहल अछि? हँ एते जरूर भेल जे अनका जकाँ खर्च कऽ बच्चाकेँ नै पढ़बै छी, अनका जकाँ बर-बेमारीक इलाज नै करबै छी, एकर माने तँ ईहो नहियेँ भेल जे बाल-बच्चाकेँ नै पढ़बै छी आकि बर-बेमारीसँ रक्षा नै करै छिऐ। मुदा तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जाएत जे जे सपना सभ देख पुरबऽ चाहैए, से नै भेल। मुदा नै भेल सेहो केना मानल जाएत, आगू-पाछू, अगल-बगल ऊपर-नीचाँ सभतरि तँ सपने लटकल अछि, तैठाम केते सपना लोक पुरौत। मुदा सेहो केना कहल जेतइ, केकरो सपना सपनौती बनि जिनगीक बाट देखबै छै तँ केकरो सपना सपनाइते ससैर जाइ छइ। पुन: सुवोधक नजैर पत्नीपर गेलै तँ बुझि पड़लै जे श्यामा भरिसक निराश भऽ गेल छैथ। जिनगी तँ वएह ने भेल जे आशाक बाट पकैड़ आशावान बनि जीवन गुदस करए। जखने आशा छुटल तखने निराशाक आगमन भेल। निराशे ने मृत्यु सदृश भेल...! एहेन स्थितिमे सुवोध गाम आएल छल। मुदा जहिना श्यामा निराश छैथ तेकर विपरीत तहिना सुवोध आशावान अछि। बीस बर्खक कारखानाक नोकरी सुवोधकेँ जिनगीक बहुत किछु देलक, बहुत किछु लेलक। मुदा दुनू लाभे सुवोधकेँ भेल। पहिल जीबैक ढंग- सीमित आयमे चलब- देलकै, तँ अनकर देखौंस

लेबो केलकै। अवगुण गेने आमदनी केता गुणा बढ़ि जाइ छइ। अखैन सुवोध ओ सुबोधक सीमापर आबि ठाढ़ अछि, जेतए परिवारमे माइक संग पत्नी आ तीनटा बच्चो छइ। आब सुवोध ओ सुबोध नै जे स्कूल-कौलेजक जिनगीमे छल।

आब सुवोधकेँ अपन हारल जिनगीक कथा पत्नीओंकेँ सुना अपन कलंक धोऐमे कनियोँ लाज नै हएत। मन ठमकलै। पिता-पीढ़ीक इतिहास आ अपन इतिहासक बीच विचार आबि लटैक गेल। किम्हरो देखबे ने करै जे परिवार अपन खेतीक उपार्जनसँ समयानुसार[12] हमरा बी.ए. तकक शिक्षा देलैन। ओ परिवार आइ बेठेकान भऽ गेल अछि। अपन पुश्तैनी सम्पैतक संग अपन श्रमकेँ जोड़ि चलैक छल से नै भेल? मुदा से किए ने सोचि पेलौं!

‘किए ने सोचि पेलौं!’ लग अबिते सुवोध ठकमूड़ भऽ गेल। ठकमूड़ ई जे साधारण पढ़ल पत्नी छैथ, अपने तँ से नै छेलौं मुदा चुकलौं तँ दुनू गोरे। दुइए गोरे किए, परिवारे। परिवारक स्तर तँ गवाही दाइए रहल अछि। धिये-पुतेकेँ केहेन पढ़ै-लिखै, खाइ-पीऐक ओरियान कऽ पेलौं अछि। अपन भार फेकैत सुवोध मुस्की भरैत बाजल- “संग मिलि हारब आ संग मिलि जीतब, ने हार भेल आ ने जीत भेल।”

सोझ-साझ पतिक बात सुनि श्यामा सकपकेली। मुदा मुँहमे बोल हेराएले रहैन। की बाजब! मुदा संगिनीक रूपमे तँ हमहीं छिऐन, जँ हंस-हंसिनीक लोलक घोघ नै भरि पेलौं तखन संगीयेँ की? सभ दिनसँ पुरुखक ढाठी रहल जे नीक भेल तँ हम केलौं आ अधला भेल ते पत्नीपर झाड़ि देलौं। मुदा अनठेकानी किछु बाजबो तँ नीक नहियेँ हएत। तखन? हँ तखन किए ने! हार कि जीत की भेल, आ तइमे केते

[12] मिथिलांचलक किसान परिवारक बेवहारिक जिनगीक अनुसार

हम केलौं आ केते ओ- पति- केलैन तइ हिसाबे हार-जीत हएत आकि सहरगंजा..? गर अँटबैत-अँटबैत श्यामा बजली-

“मने-मन गुर-चाउर खेने नइ हएत। नर-मेदक बात छी, जँ कनियों छह-पाँच भेल तँ नरकोमे घीचम-तीर हएत।”

पत्नीक बात सुनि सुवोध अपन पढ़ब-लिखब दिस नजैर बढ़ौलक। गामक स्कूलमे जखन पढ़ैत रही, सभ चटियासँ नीक हमर कियारी रहए। जइमे फूलो-गाछ लगबी आ आनो-आनो चीजक। मिडिल स्कूल अबैत ओ छूटि गेल। मुदा एते तँ मनमे आबिये गेल रहए जे मैट्रिक पास करि कऽ नोकरी करब।

मैट्रिक पास केला पछाइत अपनाकेँ निम्न कोटिक नोकर बुझि आगू पढ़ैक विचार केलौं। पिता दिससँ कोनो बाधा कहियो उपस्थित नै भेल। आने गारजन जकाँ ओहो पढ़ै-लिखैकेँ धर्मक काज बुझि अन्धभक्त छला। बी.ए. केला पछाइत हम अपनाकेँ अपन श्रम बेचैले अपनाकेँ पूर्ण तैयार कऽ लेलौं। ओना पितोजीक एहेन इच्छा नहियेँ रहैन जे बेटा आगू नै बढ़ए। तँए ओ पूर्ण स्वतंत्रता देने रहैथ। सभ माए-बाप चाहैए जे बेटा जेहेन कमासुत हएत तेहेन परिवार हरल-भरल बनत। समए पाबि बिआहो काइए देलैन। जेना अपन सोलहन्नी भारसँ निचेन भऽ गेला। दू सालक पछाइत दुरागमन भेल। तैबीच नोकरीक पाछू रेठान शुरू केलौं। एक तँ अहुना गाम-घरमे जे काज छै ओकरा पढ़ल-लिखल लोक करै ने चाहैए। साल भरि समए निकैल गेल। गाम छोड़ैले बाध्य भऽ गेलौं। मनमे बाध्य अबिते सुवोधक नजैर पुन: दोहरा कऽ श्यामाकेँ निहारए लगलै। अपन तिनवटी जिनगीपर आबि अँटैक गेल। तिनवटी माने एक अपन परिवार, दोसर दिस सासुरक परिवारसँ आएल पत्नी आ दुनू परिवार, दुनू परिवारसँ हटि महानगरक नव परिवार बनाएब। मुदा उमंगक लहैर तीनू परिवारमे।

मनमे अबिते सुवोध बाजल-

“जहिना महानगर जिनगीमे आएल आ गेल तहिना देखते-सुनिते जिनगियो चलि जाएत। तइले जे मनहानि करब तइसँ किछु भेटत।”

सुवोधक बात जेना श्यामाकेँ छातीमे लगलैन। लगिते छाती धकधकेलैन। बजली-

“कहियो ठर-ठेकानसँ केतौ नइ रहलौं।”

पत्नीक बात सुनि सुवोधकेँ नोकरीक बीसो बर्खक समए मनमे नाचि उठल। केते खुशी ओइ दिन अपना संग परिवारोकेँ भेल रहै मुदा भेल की? एना किए भेल? एक तँ कारखानादार अपने बड़का कारखानाक शिकार भेल, तैपर ओहो चलौनिहार- श्रमिक-केँ शिकार कैरते रहए। जइके चलैत तीन बेर हड़ताल भेल। बिना कोनो हँ-निहँसक दू-बेरक हड़ताल समाप्त भेल। मुदा तेसर खेप, जखन श्रमिक ऐगला श्रमिककेँ नोकरी समाप्त होइक समए भेल तखन ओ सभ आगूक अन्हार जिनगी देख अगुआ कऽ तड़तालक संग तालाबंदी केलक। कारखाना बन्द भेल आ नोकरी केनिहारक नोकरियो गेल।

नोकरी छुटला पछाइत सुवोध अपनाकेँ ओहन करताइत बुझलक जे ने दोसर तरहक कारखानामे काज कऽ सकैए आ ने अपन बपौती छह बीघा जमीनकेँ उपयोग कऽ सकैए। पिताक मृत्युक पछाइत खेत-पथारक कोनो थीरी-थमन नै रहलै। मुदा गाम एलाक आठ दिनक पछाइत सुवोधक मन संकल्पक संग उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ ई भेल जे जखन दुनियाँक सभ बाट बन्न भऽ गेल अछि, तैबीच आगू केना जिनगी चलत। मुदा जखन छह बीघा खेतक कीमत अँकलक तखन मनमे बिसवास जगलै जे एते पूजीक मालिक अपने छी जे ठाठसँ अपन कारोबार ठाढ़ कऽ परिवार चला सकै छी। यएह

विचार सुवोधक मनमे उपकल। जोरक उधुक्का मनमे लगिते सुवोध बाजल-

“मूलवान वस्तु भेट गेल। आब खगता अछि दुनू गोरे विचारि कऽ अपन-अपन काजक भार उठा चली। जेहेन चालि चलब तेहेन ढालि धरब। जेहेन ढालि धरब तेहेन माइन पाएब।”

पतिक बात सुनि श्यामा बजली-

“अपन जिनगी जे भेल से भेल, मुदा बालो-बच्चा हँसैत जीबए सएह ने कहब।”

पत्नीक विचार सुनि सुवोध विह्वल भऽ गेल। मुदा अपन हारल लोक बाजए तँ नै चाहैए जे सुवोध बाजत। तरसँ जेना मन उपकलै, उपैकते फुटलै-

“हमरा सन जे छह से हमरो बात सुनह, मानह नै मानह, ई तोहर मनक बात भेलह। मुदा हमरो मनक तँ यएह ने बात भेल।”

पतिक बात सुनि श्यामा सुवोध श्याम देखए लगली। हंस-हंसिनीक जोड़ीक जोड़।

❍

तिथि : 23 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 1531

लगबे ने कएल

फगुआसँ एक दिन पहिने झंझारपुर बजार गेल रही। थाना चौकक काते चाहक दोकानपर देवानन बैसल रहए, साइकिलपर देखते दोकानसँ हल्ला केलक-

“किसुन भाय, आउ-आउ चाह पीब लिअ।”

‘चाह पीब लिअ’ ई तँ सोझे चाह पीब नइ भेल। चाहक संग समैक उपयोगो होएत। चाहे ओ कोनो समाचार सुनब हुअए आकि काज करब। रूकि कऽ चाहक दोकानपर गेलौं।

अपने पँजरा लगा ब्रेंचपर जगह बना बैसैक ओरियान देवानन केलक। ओना जगह सिकेस बुझि पड़ल, बगलक दोसर ब्रेंच खाली रहै, मुदा मनमे भेल जे चाहेक दोकान छिऐ, रंग-बिरंगक लोकक अड्डा छीहे, भऽ सकैए जे कोनो तेहेन विचार देवाननक होइ जे ओ दोसरसँ बचा कानमे फुसफुसा कऽ कहऽ चाहैत हुअए। देह-हाथकेँ पातर बना घोंसिया कऽ बैसलौं। चाहो आबि गेल। ताबे तक देवानन पाबैनक उपहार दैत रहल।

मुदा मनमे ईहो हुअए जे एते उपहारे लऽ कऽ की करब। जखन मोबाइलेसँ बाल-बच्चाकेँ ढाकीक-ढाकी उपहार आ बच्चाक बापकेँ पोस्ट ऑफिसक हाथे बहिन राखी बन्है छैन, तखन जँ शुभे-शुभ नै तँ अशुभ की...।

अदहा गिलास चाह सठैत-सठैत जेना देवानन बुझि गेल जे अपन गप-जोकर चाह गिलासमे छैन्हे। अहुना तँ अपना सभकेँ बुझले अछि जे खाइ-पीबैकाल बाजी नहि। एकतरफा सुनैक काज अछि। तहूमे जेकर नोन खाइऐ, तेकर सरियत सेहो देबे करिऐ। बाजल-

“भाय, एकटा बात सुनि मन बिसाइन-बिसाइन भऽ गेल अछि!”

देवाननक शब्दो आ शक्लोक सुर्खी देख जिज्ञासासँ खढ़िया जकाँ कान ठाढ़ केलौं। पुछलिऐ-

“की बिसाइन?”

देवानन बाजल-

“भाय, बेंगवाकेँ छौड़ा सभ फगुआ पाबैन कहि ताड़ी पीआ देलकै आ मनमे बैसा देलकै जे पाबैनक सभ किछु माफ होइ छै, श्याम भायकेँ अनधुन गरिया, खूब गरियौलकैन!”

चाहक दोकान तँए सभ बात एतए कएलो ने जा सकैए। केना पुछितिऐ जे किए गरियबऽ कहलक। मनमे भेल कोनो कनाइर हेतइ। मुदा चुपे रहलौं।

चाह पीबैक घर छिऐ, एक औत एक जाएत। मुदा तइ बिच्चेमे दोसर ब्रेंचपर मारि-पीटक गप उठि गेल। पास-परोसक मारि-पीट छी, किए भेल? ई जिज्ञासा भेबे कएल। मुदा बजलौं किछु ने, खाली सुनैत रहलौं। सुनलौं जे बगले गाममे एकटा छौड़ा फगुआक उपहार कहि कागजक एकटा पन्नापर लिखि, चौमैतपर साटि देलक। ओइमे सोलहन्नी उनटा-पुनटा बात लिखल रहइ। गाममे जे सभसँ धनीक, ओकरा भिखमंगा आ जे सभसँ बेसी ज्ञानी हुनका मुरुख ललका रोशनाइसँ लिखि देने छेलइ। तहीले लिखनिहारकेँ भँजिया पान-सात थप्पर लगा देलकै। सएह मारि-पीट छल।

मुदा एतबेपर थमि गेल। पाबैनक समए रहने सभ थोम-थाम लगबैत कहलकै, सभ खेने-पीने अछि तँए पाबैनक पछाइत बुझारत हएत। दोकानपर सँ उठि विदा भेलौं। देवानन सेहो संगे विदा भेल। पाबैनक बजार, तहूमे फगुआ सन मध्यमासक उछाही कहियौ कि वसन्तीक वहार कहियौ, गज-गज करैत लोकक भीर। रंग-रंगक लोक, जेबीमे खुदरा पाइ जहिना झनझनाइए तहिना लोको झनझनाइत, तैबीच दोकानसँ रस्ता धरि पसरल फगुआक वस्तु-जात। रंग-रंगक डम्फा, ढोलक, तबला, मिरदंग इत्यादि-इत्यादि ओहन बनि पसरल जे चाहक कप जकाँ पीओ-फेको अछि। कोनो एक दिन टिकत तँ कोनो एक्के दिनमे तीनटा फूटत। तहिना रंग-रंगक वस्त्र-जात, देश-देशक वस्त्रसँ भरल। एहनो-एहनो गंजी-अंगा जइमे पाँच गोरे एक्केटामे अँटि जाएत आ एहनो जे अदहो देह नै हएत। जेकरो झाँपन देब सेहो ने झँपाएत। तहिना माथ परक टोपीओ। कोनो हाथी छाप तँ कोनो घोड़ा छाप। कोनो हीरो संग जीरो छाप तँ कोनो हिरोइन संग जोकर छाप। तहिना रंगो आ अबीरोक बजार। खेबो-पीबोक विन्यासक कमी नहियेँ, मुदा सबहक दाम तेते चढ़ल जे जे पाबैन दहाइमे होइ छल ओइमे हजार-बजार चलि आएल।

चेतन बुझेलासँ बुझियो सकैए मुदा बाल-बोध तँ नै मानत। ओ तँ धिया-पुताक जेरमे अँगने-अँगने टहैल-टहैल रंग-अबीर खेलबे करत। तैठाम जँ ओकरा रंग-अबीर नै रहतै तँ ओ आनक मुहतक्की करत की नहि। तँए ओकरो मन बुझबैले तँ किछु करैए पड़त। तहूमे तेहेन-तेहेन लोक सभ भऽ गेल अछि जे अनेरे कहत फल्लँमाक धिया-पुताकेँ रंगोक उपए नै छइ।

एकटा दोकानपर चीज-वौस मोलबैत रही कि देवानन एक चक्कर लगा घुमि कऽ लगमे आबि बाजल-

“बजारमे आगि लगल छइ।”

‘आगि लगल छै’ सुनि देवानन दिस देखए लगलौं जे चीज-वौसक दाम सभ बाजत। मुदा दोकनदारो उड़नबाज, बिच्चेमे टाँहि देलक-

“एहेन अगिमुत्तू जकाँ गप किए होइ छह।”

दोकनदारक गप सुनि देवानन चुप भऽ गेल। चुपो केना ने होइत, दुनियौं तँ अजीव छइ। कियो जुगानुकूल जीवन स्तरकेँ अगुआएब बुझैए तँ कियो स्वर्गक सुखकेँ। यात्री दुनू दिस अछि। यएह छी पाबन पाबैन। गमैया लोकक फगुआ पाबैन। जहिना पएरक कोनो आँगुरमे घाओ भेने बेर-बेर चोट लगैत तहिना मनपर मनक-मन चोट पड़ैत रहए। मन मानि गेल जे केकर मुँह देख विदा भेल छेलौं जे अशुभे-अशुभ भेटैए। मुदा उपाइए की? चीज-वौस पुरबै दुआरे-संख्याक हिसाबे- कटौती करैत बजारसँ निकललौं। पाबैनक सभ वस्तुक जोगाड़ भेने मनमे, क्षणिके सही मुदा चैन तँ भेबे कएल। जहिना काजक दौरमे लोक अमल पान कऽ किछु थकान मारैए, तहिना मनक थकान कमबे कएल। देवाननकेँ संगैतिया सभ भेट गेल, तँए ओकरो केना कहितिऐ चलैले। असगरे विदा भेलौं। जहिना नख-सिखक वर्णन होइ छै तहिना सिख-नखक वर्णन करैक मन बनेलौं। मन कि बनत जे आरो बगदिये गेल। मन बनब भेल काजमे प्रवृत हएब। चाहे ओ शारीरिक हुअए आकि मानसिक। मन भन-भना गेल। कोन चकरचालिमे पड़ि गेल छी, एक दिस कियो पुरखाक सारापर मन्दिर बना फूल चढ़बैए तँ दोसर दिस हुनकर विचारकेँ जीविते सारामे सजबए चाहैए। फेर जेना मन घुमल। अनेरे कोन रफू करैक चक्करमे पड़ि गेलौं। नइ पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ नइ सम्हारैत चलब तँ जेहो अछि सेहो थोड़े रहत। उपनायनिक मेघ-डम्मरकेँ बड़ुआ केना

बारह इंचक बैगमे राखत? मनमे फेर भेल जे गामपर पहुँचते पहिने श्याम भाइक जिगेसा करबैन। कियो केकरो गारि पढ़लक तँ किए पढ़लक। समाज होइक नाते हमरो दायित्व बनैए जे अनेरे जे कियो केकरो गारि पढ़त तेकरा किए ने विरोध करब। जँ कोनो गारि पढ़ैबला काज केने हुअए तँ गारियो नै पढ़ब अनुचित हएत, मुदा से बुझब केना? फेर भेल जे एक पंथ दू काज। जिगेसो भऽ जाएत आ पुछियो लेबैन। जखने अपन पक्ष रखि बाजब तखने ने ऊहो अपने अपन विचार देबे करता तइ हिसाबे समाजक बीच राखब। चीज-वौसक झोड़ो आँगनमे आ साइकिल दरबज्जापर रखलौं। साइकिलक चालिसँ कने गरमा गेले रही। कपड़ा बदैल विदा भेलौं।

दरबज्जेपर तीन-चारि गोरेक बीच बैसल श्याम भाय ठहाकापर ठहाका मारैत रहैथ। मनमे भेल जे मर्र ई की देखै छी। पीताएल मन रहबे करए, तैपर कनी साइकिलक थकान सेहो भऽ गेल रहए, केतबो मनकेँ थीर करी जे कनी श्याम भाइक गपमे टोकारा दिऐन, मन से राजीए ने हुअए। मुदा तैयो सहैट कऽ लगमे बैस चुपे-चाप बातकेँ घोंटए लगलौं जे कहुना गरम पानिमे ठण्ढा पानि मिलेने ओहो ठण्ढेता। एक दिस श्याम भायकेँ देखिऐन जे चौराहापर गारि सुनलैन आ दोसर दिस देखै छिऐन, हिनका-ले धैन-सन। मनमे हुअए जे ई की भेल? जिनका बेथे हम बेथाएल छी, जे देवोनन कहने रहए, मन बिसाइन-बिसाइन भऽ गेल अछि, आ हिनका-ले कोनो गमे ने! मुदा अनेरे कोनो विचारक दौरमे टभैक जाइ, सेहो नीक नै बुझि पड़ए। बजारसँ अबिते सोझे ऐठाम चलि आएल रही। दिशो-मैदान दिस जाएब पछुआएले अछि। मुदा बीचमे परिस्थिति बदलल। बदलल ई जे रूक्मिणी भौजी पहिने पानिक लोटा-गिलास पहुँचा गेली, पछाइत तस्तरीमे चाहक कप नेने पहुँचली। एक तँ फगुआक रंग लोककेँ ओहिना चढ़ि जाइ छै तैपर जँ किछु खेबा-पीबाक वौस आगूमे आबि

जाइ छै तखन तँ मन आरो बमछऽ लगै छइ। श्यामो भाय पैछला गपक पराग्राफ बदललैन। पत्नीकेँ कहलखिन-

"चाहमे कनी अफीम नै मिला देलिऐ। फगुआक समए छी जहिना राधा संग कृष्ण धुरखेल करै छैथ, रामो जइ सीता-ले बोनमे की-की ने केलैन, ओहो तँ धुर-खेल खेलबे करै छैथ, तखन अपने दुनू गोरे किए बँचब।"

रुक्मिणी भौजी चुपचाप सुनैत रहली। बजली किछु ने। अपन बात रखैत श्याम भायकेँ पुछलयैन-

"भाय, सुनलौं जे चौकपर खूब धुर-खेल केने छेलौं।"

जेना हमर बात श्याम भाय सुनबे ने केलैन तहिना अनमनाएल जकाँ बजला-

"हम कहाँ केने छेलौं। सुनैमे आएल जे छौड़ा सभ बेंगवाकेँ ताड़ी पीआ बकबै छल।"

पुछलयैन-

"एना जँ बका-बकी समाजमे हुअए से नीक हएत?"

उनैट कऽ वएह पुछि देलैन-

"केना नीक हएत, की नीक हएत?"

असमनजसमे पड़ि गेलौं। जे पुछए चाहै छेलिऐन, से वएह उनैट कऽ पुछि देलैन। कोनो गर देखबे ने करी। मनमे जेना छटपटी उठए लगल। कहलयैन-

"ओते बात-विचार करैक अखैन समए नै अछि। ओइ गारिक की हँ-निहँस केलिऐ?"

ले बलैया, हँ-निहँसक उत्तर देबे ने केलैन आ बजला-

"हमरा लगबे ने कएल।"

मनमे हुअए जे ई की कहि देलैन। पुछलयैन-

"केना नइ लागल से कनी हमरो कहू।"

श्याम भाइक मनमे मिसियो हलचल नहि। बजला-

"गारियोक दू रूप होइए। एक होइए अधला काज केला पछाइत सुनब, दोसर होइए अनेरे केकरो ऊपर शब्दवाण फेकब।"

कहलयैन- "कनी फरिछा कऽ कहू।"

जेना ठोरेपर उत्तर रहैन, तहिना धाँइ-दऽ बजला-

"कियो अपन कर्मक कर्ता होइए, जे नीक-अधलाक भागी बनत। मुदा अपन किछु कएले ने अछि, तखन गारि लगत किए। अनेरे जे पढ़लक ओ बकलेले भेल। ओकरा ताड़ी पीआ कियो भूतलग्गू जकाँ बकौलक, तइसँ हमरा की? जँ हमर नामे लेलक तँ लेलक। अपन मन ते अखनो यएह कहैए जे गारि सुनैबला कोनो काजे ने केलौं तँ गारि लागत किए।"

ओना श्याम भाइक विचार जँचल मुदा तैयो मन थीरे ने हुअए। कहलयैन-

"निचेनसँ कखनो आरो गप करब। मुदा एकरा छोड़ब उचित नै बुझै छी।"

हँसैत श्याम भाय बजला-

"बाट चलैकाल कियो अपन जिनगीकेँ नजैरमे रखि चलैए, बाटपर जँ काँटि-कुश आकि गन्दे-मैला रहैए ते ओइसँ बगैल कऽ बढ़बे नीक हएत किने। मुदा अहूँक विचार समाज लेल विचारणीय अछिए।"

❍

तिथि : 25 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 1449

उकड़ू समय

मास डेढ़क करीबसँ सहदेव बाबासँ भेँट नै भेने मन उवियाइत रहए। गाम-घरमे होइतो अहिना छइ। अखनो तँ गाम गामे छी मुदा गामे तँ समाजो छीहे। शहर-बजारसँ फराक अछिए। फराको होइक कारण अछि। जे शहर जेते नमहर तइमे तेते दूर-दूरक लोक आबि बसैए जइसँ ने पैछला कोनो इतिहास रहै छै आ ने वर्तमानक कोनो एकरूपते रहै छइ। सबहक अपन-अपन धंधाक काज, अपन-अपन विधि-बेवहार, जइसँ चालि-ढालिमे दूरी भाइये जाइ छइ। मुदा गाम-समाजक से नै अछि। भूतसँ वर्तमान धरिक उचित-उपकारक सम्बन्ध बनल चलि आबि रहल अछि।

लोकमे एहेन धारणा रहिते अछि जे फल्लाँक बाबा हमरा बाबाकेँ बेरपर काज देने रहथिन तँए हमरो उचित बनैए जे फल्लाँकेँ बेरपर ठाढ़ होइऐ। मुदा से सभ नै रहै, जहिना सभकेँ सभसँ भेँट-घाँट भेने देखा-देखी हूबा बढ़ैए तैसंग मनसूबो बढ़िते अछि। ओना गाम-घरमे चौक-चौराहा भेने पहिलुका अपेक्षा भेँट-घाँट हएब असान भऽ गेल अछि मुदा एहनो लोकक कमी तँ नहियेँ अछि जे अनेरे समए नै गमबै छैथ।

सहदेवो बाबा तेहनेमे सँ छैथ। ओना भेँटो-घाँटक केते उपाय अछिए। आनोसँ भेँट भेने जानकारी भेटते अछि, तैसंग नीक-अधला

काज भेने सेहो चरचामे एने भेँट होइते अछि। मुदा जे भेँट मुहाँ-मुहीं कुशल-छेम बुझने होइए ओ तँ दोसर नहियेँ होइए। तहूमे जे सहदेव बाबा एक-ने-एक बेर दिनमे जरूर भेँट भऽ जइ छला, डेढ़ मास तिनकासँ नै भेँट भेने मन उवियेबे करत। सहए भेल। ओना नै भेँट हेबाक कारणो चोराएल नहियेँ अछि। समैए उकड़ू भऽ गेल अछि। सभ अपने-अपने व्यस्त भऽ गेल छैथ। ओना उकड़ू समए भेने व्यस्तता बढ़ितो अछि आ घटितो अछि। जे सोभाविको अछिए। एक दिस हाथक काज छीना गेने व्यस्तता कमैए तँ दोसर दिस दोसर काज उपस्थित भेने बढ़ितो अछि। सहदेव बाबासँ भेँट करैले मन एते उविया गेल जे कोनो काजमे नजैर सन्हियेबे ने करए। जाबे मनमे काज नै सन्हियाएत ताबे देहो-हाथ अलसाएले रहत। मनमे भेल जे अनेरे माथमे भेँट करैक बोझ बनल अछि, से नै तँ जा कऽ भेँट कऽ अबयैन। मुदा फेर हुअए जे भेँटो करैक तँ किछु बहाना होइ छै, से कथी बहाना बनाएब। अनेरे भेँट करए जाइ आ पुछि दैथ जे 'केमहर आएल छेलह' तँ की कहबैन?

ओना समए जेहेन उकड़ू भऽ गेल अछि तेहेनमे काजक बहाना नइ बल्कि बोल-भरोसक जरूरत तँ अछिए। तकले काजो आ तकले बहन्नो तँ अछिए। विदा भेलौं...।

रस्ता कातमे तीन-चारिटा दोकान एकठाम अछि। सहदेव बाबाकेँ दोकानपर देखलयैन। देखते मनमे खुशी भेल जे रस्तेमे बाबा भेट गेला। भेटला तँ मुदा भेँट होइमे समए लागत। किछु कीनए दोकान आएल छैथ। दोकानक हिसाबे भीड़ बेसी। ओही भीड़मे सहदेव बाबा ठाढ़। हुनका ठाढ़ देख मनमे कनी कठाइनो लागल, कठाइन ई लागल- दोकनदार केहेन अछि जे बुढ़ो-बुढ़ानुसक विचार ने करैए। जुआने-जहान जकाँ ठाढ़ केने छैन। मुदा किए केने छैन से तँ ओ जानए। दोकनदारपर सँ तामस घुसैक कऽ धियो-पुतो आ

चेतनोपर गेल। कहू जे केहेन धिया-पुता आकि चेतने भऽ गेल अछि जे सभ अपने-ले हाँइ-हाँइ करैए। जेना सबहक पेटमे मूस कुदैत होइ। आखिर सभ उजि-माइल किए करैए। कनी आगू बढ़ि देखलौं तँ दोकनदार डण्डी धेने बेसाह जोखैमे एते तवाह रहए जे पाइयोक हिसाब नै जोड़ि होइ। तैठाम बुधि-विवेकक हिसाब तँ आरो भारी अछि। वेचारा दोकनदारे की करत। ओकरे चावस्सी दी जे नगद कि उधार गामक पैत बँचौने अछि। तहीकाल एक दस-बारह बर्खक बच्चिया दोकनदारकेँ कहलक-

“हमरा राइतो ने भानस भेल, तँए पहिने हमरा दू किलो आँटा दिअ।”

बच्चियाक बात सुनि मन सहैम गेल। हाइ-रे मनुख! दस-बाहर बर्खक बच्चियाक जँ पेट जरत तँ ओ केहेन जननी बनत। मुदा उपाय? सहदेव बाबा आगू दिस घुमल ठाढ़ रहैथ, मुदा मुँहमे बोल नै रहैन आकि पेटमे घुरिया रहल रहैन से तँ ओ जानैथ, मुदा हमरा बुझि पड़ल जे भरिसक बेसौहुआ सबहक संग बाबा अपन बेथा ने तँ विलैह रहला अछि। अनका पेटक आगिक संग अपनो पेटक आगि जनु बाँटि-विलैह रहला अछि।

पाँच किलो चाउर आ सात किलो गहुमक चिक्कस कीनि दुनू झोरा दुनू हाथमे नेने सहदेव बाबा पाछू दिस घुमला कि हमरापर नजैर पड़लैन।

नजैर मिलते दुनू हाथ जोड़ि बजलौं-

“बाबा गोर लगै छी।”

मुदा हुनका मुहसँ किछु ने निकललैन। आगू बढ़ैत निच्चाँ एला। खसल चेहरा देख मन कलैप गेल। ताबे लग आबि गेल छला। ओना बाबामे ई आदत छैन जे चिन्हारकेँ देखते किछु-ने-किछु पुछि

दइ छथिन। एहेन मान-रोख मनमे छैन्हे नइ जे जे टोकत तेकरे टोकबै। स्पष्ट विचार छैन जे झगड़ा ने दन तँ चुन-तमाकुल किए बन्न। भाय, झगड़े जँ अछि तँ झगड़ा किए अछि, ओ तँ जे जीबैए, सहए करत। ने पैछला देखए औत आने ऐगला भोगए औत। तखन तँ भेल जे झगड़ा कथीक। जँ वैचारिक झगड़ा रहत तँ ओ विचारि कऽ विचार करए पड़त, तहिना जँ खेत-पथारक रहत तँ ओकरो अपन सूत्र छै, तहिना जँ अधिकारक अछि तइले संविधानो अछि आ संविधान बनौनिहारो। तखन कोन कारण शेष रहल जइले समाजमे विग्रह बनल रहत।

मनमे भेल जे केना बाबाकेँ कहबैन जे अहींसँ भेँट करए जा रहल छी। एक तँ अपने बेसौहुआ छैथ तैपर भार किए देबैन। मुदा मनक जे उमकी रहए ओ तँ रहबे करए, जे विचार विनिमय भेनहि हटत...।

कहलयैन-

“बाबा अहीं घर दिस जाएब।”

मनमे भेल जे से कहलासँ एते मनमे हेबे करतैन जे रस्ते-रस्ते कुशलो-छेम कऽ लेब आ जइ काजे जाइए से काजो...। ओना अपना तँ बुझले अछि जे जखन कोनो विचारक गुण बाबा पकैड़ लइ छैथ तखन सिरा-भट्ठा बिसैर जाइ छैथ। ओना भट्ठामे गुनक कोन खगता छै, ओ तँ अनेरे पानिक वेगमे भँसियाइत चलत, मुदा सिरा दिस चढ़ने तँ धारक वेग बुझिये पड़ै छइ। गुणियो तँ गुणीए छी, जखने मनमे गुणकेँ रोपि लेत अनेरे ने गुणीसँ गुनी भऽ जाएत। घर दिस विदा होइते कहलयैन-

“बाबा अहाँक दुनू हाथ बरदाएल अछि चलैमे बाधा हएत।”

ओना बाबाक मनमे जे रहल होइन मुदा बजला-

“कोनो बेसी भारी कहाँ अछि, सात किलो आँटा आ पाँच किलो चाउर अछि।”

बाबाक बात सुनि ओना बहुत आश्चर्य नहियेँ भेल, किएक तँ अपने सेहो ओही रमा-कठोलामे छी। मुदा जबरदस आश्चर्य ई भेल जे जे बाबा अपने सभ दिन अन्न बेचै छैथ, आइ ओ कीननिहार भऽ गेल छैथ, मुदा जिनगीसँ तेते प्रेम छैन, तँए दुखे-कि-सुखे जीबए चाहिते छैथ। रस्ता दुआरे आकि की, अपन घर लग तक गामेक चर्च बाबा करैत रहला अपन बात किछु ने बजला। घर लग तक अपन बात किछु ने सुनि भेल जे समए तँ रीब-रीबेमे चलि गेल। बाबा अपन कहाँ किछु कहलैन। जे सोचि आएल छेलौं सहए हेराएल रहि गेल।

मुदा सुतरल, सुतरल ई जे घर लग अबिते बाबा बजला-

“बहु दिनसँ भेँट नइ भेल छेलह दरबजेपर चलह किछु आरो गप करैक अछि। अखैन कि कोनो काज-परोजन अछि, भने किछु समैयो कटि जाएत। समए तँ काजे काटि लेलक, मुदा अपनो तँ ओकरा काटक अछिए। जाबे से नै हएत, ताबे जीब केना पाएब।”

आँगनमे झोरा रखि सहदेव बाबा दरबज्जापर एला। ताबे चाहो आबि गेल। दुनू गोरे चाह पीबए लगलौं। मनमे हुअए जे बाबाकेँ किछु पुछिऐन, मुदा बाबा अपने बजैमे ओझरा गेल रहैथ, जइसँ अपन घरक बाते हेरा जाइन।

मुदा गर लगल। बजला-

“बौआ, गामक दूरदिन आबि गेल।”

बाजि कऽ कनीकाल चुप भऽ फेर बजला-

“जखन गामेक दूरदिन आबि गेल, तखन गामक लोक बँचि केना सकैए।”

गामक की दूर्दिन आबि गेल से बुझिये ने पेलौं। मुदा जँ कोनो विचारक कोनो शब्द भरियाएल रहत तँ ओकरा हल केला पछाइते ने आगू नीक होइ छइ।

पुछलयैन-

“बाबा की दुरदिन?”

शब्दकेँ महियबैत बजला-

“दूरदिनमे दू शब्द छै, दूर आ दिन। दूरदिनक एक माने भेल भविसक दिन, आगूक दिन आ दोसर माने दुतकारैबला दिन सेहो भेल।”

बाजि सहदेव बाबा जेना किछु सुनैक जिज्ञासामे चुप भऽ गेला। मनमे हुअए जे केना काटलपर नोन छीटब। माने जे एक तँ सहदेव बाबाक दिन एते घटि गेलैन जे बेचनिहार से कीननिहार भऽ गेला तैपर अन-पानिक चर्च करब नीक थोड़े हएत। मुदा ईहो हुअए जे ई तँ जिनगीक सत् छी, एकरा छोड़बो नीक नहियेँ...।

अही अग-दिगमे मन पड़ल रहल। मुदा जेना अपने मनमे उचरलैन। बजला-

“अपन गाम नाश भऽ गेल।”

‘नाश भऽ गेल’ तैपर नजरिये ने पहुँच सकल। किसान लेल पानिक की महत अछि आ ओकर दुरूपयोग भेने केते पैघ खतरा सेहो छइ। तइ दिस नजरिये ने गेल। मुदा एते तँ आश्चर्य लगबे कएल जे गामे नाश भऽ गेल, की नाश भेल? पुछलयैन-

“की नाश भेल?”

बजला-

“गाम देने जे कोसी नहरक शाखा अछि, ओ भारी नोकसानदेह

बनि गेल अछि। जहिया गाममे नहरक खुनाइक नाओं लेल गेल तहिया भरि दिन देखते-सुनिते, अपन भूत-वर्तमान आ भविसक विचार करैमे दिन बित गेल, तेते मनक आशाक श्रृंग उपकने खुशीसँ ह्रदए नाचि गेल रहए जे...। मन भेल रहए अपने नै गामोक सुदिन आबि रहल अछि मुदा सुदिन केना कुदिन भऽ गेल।"

बाजि कऽ बाबा जेना ठमैक गेला। बकार बन्न भऽ गेलैन। मुदा अपन जिज्ञासा एते बढ़ि गेल जे अनेरे मुहसँ निकैल गेल-

"जँ सुदिन कुदिन बनि सकैए तँ कुदिनो तँ सुदिन बनियेँ सकैए।"

सहदेव बाबा बजला-

"हँ निसचित बनि सकैए। अपने गामक जे चुहचुही अछि ओ अहिना रहितए। देखते छहक जे नहैरक एहेन बेवस्था अछि जे धानो दहा जाइए आ गहुमो दहा गेल। ऐबेर की कोनो धारक बाढ़ि आएल कि नहरेक पानिसँ दहार भेल!"

कहलयैन-

"हँ से तँ भेल।"

हमरा बातमे बाबाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा जेना ह्रदैक धड़कन तेज भेलैन। मुँहक सुरखीमे एकाएक खूनक लाली पसरए लगलैन। बिहुसैत बजला-

"बौआ, जाके मतिभ्रम होइ खगेसा, सो कह पच्छिम उगे दिनेशा।"

❍

तिथि : 27 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 1467

चास-बास दुनू गेल

बहुत दिनक पछाइत देवलाल काका भेटला। तइ भेटैमे देवलालो कक्काक दोख नै छैन, से बात नइ। ओना दोख अपनो नै अछि सेहो नहियेँ कहल जेतइ। ई तँ कहले जाएत जे गामक जुआन-जहान जँ बुढ़-बुढ़ानुसक हाल-चाल नै पुछैन, तँ की ओ रजे-दैवक भरोसे रहि जाइथ तेकरो तँ नीक नहियेँ कहल जाएत। मुदा दोखो किए लागत, किए ने टहैल-बूलि कऽ सभसँ भेँट-घाँट करैत, हाल-चाल बुझैक कोशिश करब। तीन किलोमीटर चक्कर मारैले पएर दुरुस अछि, मुदा ओही पएरे किनकोसँ भेँट करब से मनहानि हएत। मुदा तइमे देवलालो बाबाक दोख ई तँ छैन्हे जे हुनका लग समैक ठेकान नै छैन। आब कहू जे सभ चाहैए जे लखिया छी तँ करोड़िया बनी, करोड़िया छी तँ अरबिया बनी आ हम काका लग बैस जे समए गमाएब से उचित हएत। गोर लागि पुछलयैन-

"काकाजी, की हाल-चाल रखने छी?"

जेना पहिनेसँ बुझैत रहथिन कि की, ऐगला बात अपन पछुआएले रहए जे 'किछु हमरो सभकेँ दिअ' मुदा बिच्चेमे बजला-

"चास-बास दुनू गेल।"

देवलाल काका सरकारी नोकरीसँ निवृत साहित्यसँ रूचि रखैबला छैथ। ओना जहिना अपन कीर्तमे रंग-रंगक नाउओं आ

आभूषणो पहिरा-पहिरा ठाढ़ करै छैथ तहिना गामोक लोक नाउओं आ आभूषणोसँ हुनका सजौनहि छैन। माने ई जे साइयो नाओंसँ अपनो विभूषित छैथ, कखनो जोगिया तँ कखनो भोगिया कहले जाइ छैथ। तइमे मिसियो भरि कुवाथ मनमे नै होइ छैन। जहिना लोकक नाओं हम बीछिलौं तहिना हमरो बीछलक। ओना नाओं तँ कतेको लोक पहिरौने छैन मुदा बेसी लोक कविजी कहै छैन। ओना कियो झामोलाल कहै छैन तँ कियो कथाकार। कियो नटकिया कहै छैन तँ कियो फटकिया सेहो कहिते छैन। मुदा तइ सभले मन साफ छैन, भाय! भगवान जखन बजैले सभकेँ मुँह देने छथिन तँ कियो अपना मुहेँ बाजत किने, तइले अनका तामस किए उठत। जे कियो हमर कविता पढ़लक आकि सुनलक, ओ जँ कवि कहलक, तँ कोन अनरगल कहलक। तहिना जँ कियो नाटक पढ़ि नटकिया कहैए तँ कोन अनुचित कहैए। आ जे किछु ने पढ़लक ओ जँ झामेलाल कहैए तँ कोन बेजए कहैए। कियो नाटक देखलक मुदा पढ़लक नै, ओ जँ फटकिये कहैए तँ कोन अनुचित कहैए। तहिना जँ कियो कथोकारे कहैए तँ किए लागत। गौंआँ-घरुआ जकाँ हम की कथाकेँ गारि बुझै छी जे हमरा लागत।

तीन साल पहिने देवलाल काका जिला कार्यालयसँ सेवा-निवृत भेला। गाममे रहै छैथ। ओना नोकरियो-समए गामसँ सम्बन्ध बनौने रहला, मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत सोलहन्नी गाममे रहै छैथ। स्पष्ट विचार छैन जे जइ जगहक चर्च रचनामे करै छी, जँ ओइ जगहपर ठाढ़ भऽ रची तँ ओ बेसी नीक हेबे करत। किरानीक नोकरीमे रहितो देवलाल कक्काक मन कहियो ने अलसेलैन। जे भरि दिन ऑफिसक फाइल तैयार करैत-करैत हाथक पाँचो आँगुर काजे ने करैए। भरि दिनक तेते थकान अछि जे ने पेन दिस आँखि उठैए आ ने कागज दिस। मुदा तइसँ फराक जिनगी देवलाल कक्काक रहलैन। अपन

नियमित काजक सिलसिला रखने छला जइसँ ऑफिसोक काज नै बेसिआइ छेलैन। तइमे एकटा ईहो गुण बनौने छला जे आन संगी-साथी जकाँ नै जे आनो-आनो ऑफिसक फाइलक ठिकौती लइ छला। दरमाहापर संतोख छेलैन। ओना घूस कहि कऽ घूस नइ लइ छला, मुदा जहिना सरकारी रेट काजमे बान्हल अछि तहिना ऑफिसक कर्मचारीक फीस काजे-काज बान्हल रहिते अछि। जे सभ बुझै छैथ। तेकरा देवलाल काका अधला नै बुझि उलफी कमाइ करैत रहला, आ स्पष्ट बजबो करै छला जे खाइते-पीविते रामलला। जे आएल से खाइ-पीबैमे गेल। दरमाहा दिन दरमाहा भेटबे करत। तइसँ ई छेलैन जे ऑफिसक जेते साहित्यसँ रूचि रखैबला छला तिनका सबहक बैसार एकठाम कैरते छला। जे से एकटा समदर्शी समाज बनले छेलैन। तइमे खर्चो होइते छेलैन, तैसंग ईहो छेलैन जे अपनो पत्र-पत्रिका आ किताब पढ़ैक चसकी लगले छैन। परिवारक लेल एते जरूर केलैन जे बेटा-बेटीकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ आ बिआह-दान दरमाहाक पैसासँ करा कऽ निचेन भऽ गेल छैथ। अपनो बुझले छेलैन जे फल्लाँ दिन तक दरमाहा भेटत, पछाइत पेंशन भेटत। तैसंग जे जमा-जिगिर अछि सेहो भेटबे करत, निचेनसँ जिनगी खेप जाएब। तँए जहिया तक सेवा निवृत भेला तहिया तक ने मनमे मलिनता आ ने मुँहमे उदासी आएल छेलैन। एबो केना करितैन। दरमाहा अधिया हएत, तेकर भरपाइ तँ जमासँ भाइये जाएत। सोझ हिसाब रहैन जे बैंकक सूदि ओकरा भरि देत, तँए जिनगीमे केतौ टुट-फाँट नै बुझि पड़ैन। जखन टुटे-फाँट नै तखन मुहेँ किए मलिन। मुदा से भेलैन नै, कचहरिया जमाए, धुरुफन्दा लोक, अपन हिस्सा-ले विरोध कऽ देलकैन। भाय, सर्वे भवन्तु सुखिन: ई सूत्र भेल, मुदा अपन बेटो-भातिज आकि दियादोवाद किए बेइमान कहैए, घेँटकट कहैए? जखन बेटा-बेटीक बीच बाप एकरूपता नै आनि सकैए तखन दुनियाँक सभ

मनुख मनुखे छी से केना भऽ सकैए? आ केते सम्भव अछि? जखने जमाए विरोध केलकैन कि दुनू बेटा फाँड़ बान्हि विरोधमे तैयार भऽ गेलैन। किछु छी तँ माल-पत्तर छी किने। अपने देवलाल काका पाछू हटि देखैथ तँ हिसाब केतौ ने गड़बड़ बुझि पड़ैन। तहूमे रामायणमे पढ़नहि छैथ जे रावणकेँ एक लाख बेटा, सवा लाख नाइत छेलैन। बेटा-नातिक चर्च अछि नइ कि बेटा-पोता आकि बेटी-नातिक। माने ई जे बेटा संग पुतोहु तेकर धिया-पुता पोता-पोती भेल, तहिना बेटी संग जमाए आ धिया-पुता नाइत-नातिन भेल। दुनू तँ एकरंगाहे भेल तैबीच अपने पड़ि गीजम-गीज हएब से नीक नै बुझलैन, जे से दुनूकेँ-बेटो आ बेटीओकेँ- कहि देलखिन जे अहाँ सभले कमेबो केलौं आ जमो केलौं हमरा ओइसँ कोनो मतलब नहि। जमा छोड़ि पाछू ऐ खियालसँ हटला जे दरमाहा जकाँ नै महीने-महिना पेंशन भेटबे करत तखन चिन्ते कोन अछि। अनेरे जे बूढ़ देहकेँ कोट-कचहरीमे रगड़नियाँ देब तइसँ नीक ने भेल जे कमसँ कम केकरोसँ ने मुहाँ-ठुठी हएत आ ने अपन दौड़-धुप। बुझले अछि जे कोट-कचहरीक रगड़ केहेन होइ छइ। नामक एकटा अक्षरक गलती सही करैमे तीन बर्ख लगै छइ। तहूमे पाइ-कौड़ीक बात छी रगैड़ते-रगैड़ते सभटा झाड़ि लेत। अनेरे फेड़मे पड़ब हएत।

मनमे भेल जे जहिना मन खसल छैन तहिना मुहसँ निकललैन जे 'चास-बास दुनू गेल।' गिरहस्तक चास जोता जमीन भेल आ बास धराड़ी भेल मुदा जे जिनगी भरि नोकरी केलैन, नोकरी जीवनक आधार छेलैन, तिनका मुहसँ निकैल रहल अछि जे 'चास-बास दुनू गेल!' हिनकर चास भेलैन दरमाहा आ बास भेलैन भाड़ाक डेरासँ लऽ कऽ अपन घर-दुआर, तखन किए एहेन बात बजला? फेर मन चनकल, चनकल ई जे साहित्यिक लोक छैथ, जँ किछु घुमा कऽ कहि देने होइथ जे बुझिये ने पबैत होइ। मुदा अनेरे एते मनकेँ बोन-झाँखुरमे

किए वौआएब, जखन सोझहेमे छैथ तखन पुछिए किए ने ली जे अनेरे गुन-धुनमे पड़ल रहब। पुछलयैन-

"काका, की चास-बास चलि गेल। देखै छी जे केहेन निरोग बनि सेवा-निवृत भेलौं, अनका जकाँ ने कहियो घूस-घास दुआरे जहल गेलौं, आ ने कहियो एको दिनक दरमाहा कटेलौं आ ने एकोबेर सस्पेंड-डिसचार्ज भेलौं, तखन किए एहेन अशुभ बात मुहसँ खसल?"

हमर बात केते नीक लगलैन आकि अधला लगलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन छ-पाँच करए लगलैन से बुझि पड़ल। किछु बाजि नै रहला अछि, एना किए भऽ गेलैन, से नै बुझि पबै छेलौं। ओना देवलाल काका बजैक वेगमे तँ बाजि गेला जे 'चास-बास दुनू गेल' मुदा पछाइत मनमे एलैन जे अनेरे एहेन बात किए बजलौं। जैठाम मुहेँसँ सभ काज होइ छै तैठाम अधला काजक चर्चे फाजिल। केकरो कियो एक साँझ खाइयोले दइ छइ जे पेट जुड़ेने मनो जुड़ाएत, आ जुड़ेलहा मने नीक-अधलाक विचार करत। मुदा देवलाल काकाकेँ जिनगीक संघर्ष तोड़ि देने छेलैन। बाल-बच्चाकेँ पोसै-पालैसँ लऽ कऽ पढ़बै-लिखबै, बिआह-दान करैमे कहियो अर्थक अभाव नै खटकलैन, तेकर कारणो छेलैन जे जाबे तक परिवारमे रहि बाल-बच्चा पढ़लकैन ताबे तक कोनो बेसी भारो ने बुझि पड़लैन, तहिना कौलेजक शिक्षामे सरकारी लोन उठा पढ़ेबो-लिखेबो केलैन आ बिआहो-दान केलैन। ओना लोनक असुली दरमाहामे सँ होइन मुदा सबदिना आमदनी रहने कहियो बुझि नै पड़ैन। मनोमे बेसी भार कहियो ने पड़लैन जे से कनी ठेकानसँ जिनगीक बात बुझितैथ, ऊपरे-ऊपर चलैत रहलैन। हँसी-खुशीसँ मन मगन रहलैन। मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत जेना अट्ठा-बज्जर मनमे खसलैन। केतबो बेटा-पुतोहु आ बेटी-जमाइक बीच अपनाकेँ समान्य राखए चाहलैन ओ नै रहलैन। नै रहैक कारण ई भेलैन जे जखन बेटा आ जमाइक बीच, जमा रूपैआक हिस्सा-ले

मुकदमाबाजी भेलापर सबहक मुहसँ यएह निकलै जे सभटा बुड़हेक चकरचालि छिऐन। एमहर बेटा-पुतोहुक तर्क होइ जे दुनियाँमे कोन बापक सम्पैत बेटी-जमाएकेँ भेल जे हमर नै हएत। जँ बुड़हा स्वीकारि लितैथ तँ की होइतै। तहिना बेटी-जमाइक तर्क होइत जे सभ दिन ऑफिसेमे रहला आ कानून-कायदासँ भेँटे ने भेलैन। परिवारक सबहक मुहेँ गंजन सुनि मन गीजम-गीज भऽ गेल रहैन। तहूमे जहिना लूटमे चरखा नफा होइए तहिना दोसर नफा ईहो भेलैन, ने बेटा-पुतोहु घुरि कऽ तकै छैन आ ने बेटी-जमाए। मुदा तैयो जँ भरि पोख अन्न, भरि पोख अराम भेट गेलापर मन थीर होइत-होइत थीर भऽ जाइए, सेहो ने भेलैन। बेर-बेर पत्नी कहैन-

"सभ दिन हमरा नवकिये कनियाँ बनौने रहब आकि साउसो बनए देब?"

मुदा देवलाल कक्काक कोन शक जे मन मानि गेल छेलैन जे देहसँ लऽ कऽ परिवार-समाज सभटा तँ लंके छी। मनुखक सूत्र सबहक मनसँ लंक लऽ कऽ पड़ा गेल अछि। घोर-मट्ठा भेल मने देवलाल काका बजला-

"बौआ, एतेटा जिनगीमे जे कमेलौं, सबटा चलि गेल।"

मसुआएल बोले देवलाल कक्काक बात सुनि अपनो मन मसुआ गेल। पुछलयैन-

"केना चलि गेल?"

बेथाएल मन देवलाल कक्काक, कुहैर-कुहैर बजला-

"बौआ, तीनटा अपन चास छल आ तीनटा बास छल, मुदा सब चलि गेल।"

'तीनटा चास आ तीनटा बास'क अरथे ने बुझलौं, जे दृष्टिकूटमे काका की बाजि गेला? मुदा हमर अकबकी देख ओ बुझि गेला। बुझि

ई गेला जे तीन चास आ तीन बासक अर्थ नै बुझलक। व्याख्या करैत बजला-

"तीन चासक माने भेल, तीन सीराउ, जइमे एकटा भेल परिवारिक जिनगी, दोसर भेल- अपन श्रम लगा जे पाइ कमेलौं आ तेसर भेल- साहित्यसँ रूचि रहने जे किछु सिरजन केलौं।"

सोझ-साझ कक्काक बात सुनि कहलयैन-

"केहेन बढ़ियाँ तँ तीनू चासो अछि आ तीनू बासो अछि।"

मुदा जेना ओ बुझि गेला तहिना बजला-

"परिवारमे तेहेन कटौज शुरू भऽ गेल अछि जे बेटा बेटी दिस टाड़ैए आ बेटी बेटा दिस। सूप महक बैंगन भेल छी। तहिना की कहियह पाँच रंगक किताब नोकरी-समए छपबौने छेलौं आ हाथसँ लिखि घरोमे रखने छेलौं। पाइक कहियो अभाव नै रहल तँए उद्गारसँ जे छपेलौं, विलैह देलिऐ। अपना-ले किछु ने बँचल, सभटा हेरा गेल। दोहरा कऽ छपबैक तागत आब रहल नै जे छपाएब...।"

कहि जेना किछु सोचए लगला। मुदा सोचो तँ सोच छी केमहर बहैक जाएत तेकर ठीक नहि। तँए पुछलयैन-

"बास की कहलिऐ?"

'बास' सुनि देवलाल विस्मित होइत विह्वल भऽ गेला। बिहुसैत बजला-

"बौआ, कोन मुँह लऽ कऽ अपना बासपर[13] जाएब। किछु ने रहल।"

❍

तिथि : 29 जनवरी 2015, शब्द संख्या : 1615

[13] साहित्यिक समाजक

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-08-7